मरुभूमि
(उपन्यास)

मरुभूमि

शंकर



सुख-दुख के दैनन्दिन साथी
डॉक्टर शिशिर घोष
श्रीमती नन्दरानी घोष
के
कर-कमलों में !

"इसीलिए सब कुछ लगता है मिथ्या
मैं अकेला व्यर्थ पंगु संगीहीन हताश्वास निःस्व मरुभूमि"

—अचिंत्य कुमार सेनगुप्त

मरुभूमि

उपन्यास का पूर्ववर्ती अध्याय

'जनारण्य'

आज बहुत दिनों के बाद फिर से कलकत्ते के आसमान में काले-काले बादल उमड़-घुमड़ रहे हैं। सूर्य डूबने के निश्चित समय के पहले से ही आकाश-पथ में अनगिन गतिमान बादलों की छोटी-छोटी जमातों की शोभा-यात्रा निर्धारित गन्तव्य की ओर बढ़ती जा रही है। इस उदास आसमान को शहीद मीनार पर की एक ऐतिहासिक जमात के आह्वान के कारण जो सफलता हासिल हुई है इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। गगन के मुक्त आँगन में अभी कहीं तिल रखने की भी जगह नहीं है।

गड़ियाहाट (साउथ) रोड के पश्चिम, पोस्ट ऑफिस और तालाब पार करने के बाद, पार्क के दक्खिन-पश्चिम कोने में, पानी की टंकी के पास वनश्री भवन के दोमंजिले पर सांध्य प्रदीप जलाने के लिए आने पर कमला भाभी एक क्षण के लिए ठिठककर खड़ी हो गयीं। बहुत दिनों के अभ्यास के अनुसार कमला भाभी ने सांध्य स्नान के बाद माथे पर घूँघट डाल लिया है। अब वह गंगाजल से हाथ धो, गले में आँचल लपेटकर पूजाघर के शंख को पुजारिन की तरह विनम्रता के साथ हाथ में उठा लेंगी।

लेकिन सीढ़ियाँ तय कर बालकनी में कदम रखते ही चिर विनम्र कमला भाभी की आँखें आसमान की ओर चली गयीं। मेघलोक के मुखर नागरिकों की ओर दृष्टि जाते ही कमला भाभी के स्निग्ध शान्त मन में चंचलता की एक लहर फैल गयी। मध्यवयस्क मन की गहराई में बहुत दिनों से सोये दो-चार वर्षागीतों के बोल उनके संगीहीन वक्षस्थल में कसमसाने लगे।

कमला भाभी ठिठककर खड़ी हो गयीं, उसके बाद ढँकी हुई बालकनी के ग्रिलों को दोनों हाथों से पकड़ उत्तर दिशा के आकाश की ओर तनिक झुककर खड़ी हो गयीं। कमला भाभी की कोमल दृष्टि ने कुछ ही क्षणों के बीच पूरे आकाश की परिक्रमा पूरी कर ली—पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्खिन कहीं तिल-भर भी स्थान खाली नहीं है।

कमला भाभी कुछ क्षण तक आकाश की ओर ताकती रहीं, उसके बाद दूर दिगन्त की चपला की चकित कौंध ने उन्हें एक दूसरी ही बात की याद दिला दी। कमला भाभी को लगा, आकाश से जैसे आज पुनः आषाढ़ का संदेश मिल रहा है। हालांकि आषाढ़ तो कुछ मास पूर्व ही विदा हो चुका है।

ढीठ हवा की शरारत से परेशान हो धैर्यशील कमला भाभी ने शरमीले आँचल को अपने कावू में किया। आपाढ़ मास की स्मृति ने उनके संसारी मन को फिर से चंचल वना दिया।

आपाढ़ का मतलव ही है वहुत सारा काम—ऐसे-ऐसे काम जिनकी कमला भाभी कभी उपेक्षा नहीं कर सकतीं। आपाढ़ का मतलव ही है इस तरह की जिम्मेदारियाँ जिन्हें कमला भाभी ने घर की वड़ी वहू के नाते वहुत दिन पहले ही सहर्ष स्वीकार लिया है।

आपाढ़ की स्मृति ने कमला भाभी को चिन्ता में डाल दिया। अभी तुरन्त सोमनाथ के कमरे में जाकर उससे मिलना जरूरी है।

●

कमला भाभी के अलावा और किसी दूसरे व्यक्ति को आजकल सोमनाथ के कमरे में जाने में वेचैनी का अहसास होता है।

मँझले भाई अभिजित की पत्नी वुलवुल ने तो उस वार कमला भाभी से कह ही दिया था, "प्लीज मुझे कोई दूसरा काम करने का आदेश दें, पाँच सेकेण्ड में ही कर दूँगी; लेकिन दीदी, मुझे सोम के पास जाने के लिए न कहें।"

कमला ने कोई उत्तर देने के वजाय चेहरे पर मीठी मुसकराहट लाकर वुलवुल की ओर देखा था।

उस मुसकराहट को देखकर वुलवुल ने विस्मय के साथ कहा था, "आपको समझना मुश्किल है दीदी। अवकी दुर्गापुर अस्पताल के डॉक्टर सेन से आपका थॉरो इन्वेस्टिगेशन कराना होगा।"

"मुझे क्या हुआ है ?" रसीली कमला भाभी शान्त भाव से यह जानना चाहती हैं। "मझले वावू ने तो वताया कि तुम्हारा वह वहुत कुछ इन्वेस्टिगेशन करा चुके हैं।" वह जाँच जननी-जठर से ही सम्वन्धित थी और कमला इस वात से अपरिचित नहीं हैं।

वुलवुल ने तत्क्षण जवाव दिया था, "मेरे अन्दर तो हजारों तरह की वीमारियों का पता चला है। आपका दूसरा ही इन्वेस्टिगेशन किया जायेगा—हम जानना चाहते हैं कि आपके शरीर में क्रोध का वास कहाँ है। और यह भी कि क्रोध के विना किसी मनुष्य की सृष्टि सम्भव कैसे हुई।"

कमला भाभी के गोरे मुखड़े पर हल्की-सी लाली दौड़ गयी थी। मगर फिर भी स्थिर स्वर में उन्होंने कहा था, "यह सब बातें जाने दो। हर मर्द अपनी-अपनी औरत के जिस्म की खोज-खबर लेगा ही, जरूरत पड़ने पर डॉक्टर को भी बुलवा भेजेगा। तुम अभी जरा सोम के पास चली जाओ, वह बेचारा बहुत ही एकाकीपन का अनुभव कर रहा है।"

बुलबुल ने कहा था, "प्लीज! मैं कुछ ही क्षणों पूर्व वहीं आयी हूँ, फिर से अपना मूड बिगाड़ने वहाँ क्यों जाऊँ?"

"अहा हा! वह तो तुम्हारा क्लास-मेट रहा है," कमला भाभी ने याद दिला दिया। "एक ही साथ तुम दोनों कॉलेज में पढ़ते थे, एक ही साथ पिक-निक पर गये थे, एक ही थियेटर में मंच पर भी उतरे थे। भाभी के पद के लिए तुम्हारा चुनाव करने में सोम ने ही तो सबसे अधिक उत्साह दिखाया था।"

बुलबुल की आँखें फैल गयी थीं। उत्तर दिया था, "मेरे पेट में कोई सेफ डिपॉजिट वॉल्ट नहीं है दीदी, कि बात को दबाकर रख लूँ। सारी बात जबान पर चली आती है। सोम के बारे में भी लाचार होकर यही बात बता रही हूँ। भूतपूर्व मित्र संयोगवश देवर हो जाएगा ऐसा किसने सोचा था, भूतपूर्व सहेली बाद में चलकर ननद हो गयी हो, इसकी तो ढेरों मिसालें हैं—लेकिन सहपाठी का देवर बनना एक नयी ही किस्म का तजुर्बा है।"

"ठीक ऐसा ही तो हुआ भी। सोम तो हमेशा तुमसे हँसी-ठिठोली कर वातावरण को जीवन्त बनाये रखता था।"

कमला के मुँह पर ही बुलबुल ने कह दिया था, "यह वन्स अपॉन ए टाइम की बात है दीदी। उस समय सोमनाथ बैनर्जी अनएम्प्लॉयड यंगमैन था। नौकरी न मिलने पर भी तबीयत खुश थी। कॉलेज की छोटी-मोटी स्मृति से इस बुलबुल के साथ शिशु सुलभ कलह करने का भी सोमनाथ के पास वक्त था—कब किस युवक ने मेरी ओर तिरछी निगाहों से देखा था, कब किसने मुझे एक दर्द-भरी चिट्ठी लिखी थी और उसका ड्राफ्ट दो-चार मित्रों से संशोधित कराया था, कब कॉलेज स्ट्रीट के कॉफी-हाउस के हाउस ऑफ लॉर्ड्स में किसके साथ मुझे कॉफी पीते देखा था।" यही सब दोहरा कर वह अपनी तबीयत बहलाता था।

कमला भाभी ने सीधी लड़की की तरह कहा, "अरे कॉफी-हाउस वाली वो बात! सो तो सुन चुकी हूँ। मगर तुमने तो बताया था कि वह तुम्हारे मौसेरे भाई थे।"

बुलबुल बोली, "बाबूजी सोमनाथ के मुँह में तब लगाम न थी। खुल पा

दोपापरोपण करते हुए कहा था : वह सब बात मुझे मालूम है। पकड़े जाने पर सभी मौसेरे भाई का ही बहाना बनाती हैं।"

"मैंने कहा था : इस तरह ऊल-जलूल मत बका करो सोम। यह बहुत ही गम्भीर बात है। मेरे मौसेरे भाई नेवी में काम करते हैं। अबकी कलकत्ता आने पर निमन्त्रण देकर बुलाऊँगी और तभी सुनी और आँखों देखी बात का फैसला कराऊँगी।"

"सोम उस समय भी ऐसा ही फक्कड़ था कि उसने कहा था : बहुत पहले जो हो चुका सो रहने दो—अब निमन्त्रण की नहर खोदकर मौसेरे भाई रूपी घड़ियाल को घर पर लाने की कोई जरूरत नहीं।"

बुलबुल जरा रुकी, उसकी आँखें छलछला आयी हैं। व्यतीत की बातों का स्मरण करते हुए उसने कहा, "वे दिन कहाँ चले गये! सोम भले ही मेरे पीछे पड़ा रहता था, झगड़ा-टण्टा भी करता था मगर वह सब बुरा भी तो नहीं लगता था।"

बुलबुल को सब तरह की बातें याद आ रही हैं। बुलबुल ने तर्क करने की झोंक में ईंट का जवाब पत्थर से दिया था, "तुम्हारे भैया भी दूध के धुले हुए नहीं थे। मेरी ममेरी बहन की सहेली के सेफ कस्टडी में अब भी उनके द्वारा लिखे गये प्रेम-पत्र ढेरों मौजूद हैं। जरूरत पड़े तो एक दिन के लिए माँगकर ला सकती हूँ और दिखा दे सकती हूँ।"

"यह तो एकबारगी हो दूसरा ही पॉएन्ट हो गया बुलबुल," सोमनाथ ने मुसकराकर अनुभवी विधिवेत्ता की तरह सवाल किया था। "सीता के तथाकथित मौसेरे भैया के बारे में विशेष रूप से खोज-पड़ताल चल रही है, ठीक उसी समय राम के अतीत के बारे में गवाह पेश करने से क्या होगा? क्रेडिबिलिटी शेक करने का इरादा है क्या?"

बहस में हार जाने पर बुलबुल ने गुस्से में जवाब दिया था, "ठीक है भैया, बिलकुल ठीक। सारी बातों का पता था ही तो फिर ऐसी हालत में आगे बढ़ने की ही जरूरत क्या थी? रिश्ता तोड़ सकते थे, खबर भेज दे सकते थे कि लड़की पसन्द नहीं आयी।"

सोमनाथ हँस दिया था। "पॉएन्ट बिलकुल सिम्पल है। हम लोगों की निगाह में 'नोन डे विल इज बेटर दैन अननोन एंजिल' वाली बात थी। दूसरे मुहल्ले की अनजानी मैना से अपने मुहल्ले की गोरैया कहीं निरापद लगी और हमने चारा डाल दिया।"

"यहाँ सोमनाथ धीरे-धीरे कैसा तो हो गया," बुनबुन ने शिकायत की थी। "शुरू में फ्रेंड बाद में देवर—उसके बाद फिर क्या कहूँगी ?"

"बेट !" कमला भाभी ने जवाब दिया था।

"आपने सौ में एक सौ दस प्रतिशत सही उत्तर दिया है दीदी। दरअसल बेट के सामने भी मुझे उतनी बेचैनी का अहसास नहीं होता है।" बुनबुन ने अपने मनोभाव को दबाकर नहीं रखा था।

इसके बाद बुनबुन कई दिनों के लिए अपने पति के पास दुर्गापुर चली गयी थी। आजकल वह पति के साथ दुर्गापुर में रहना ही ज्यादा पसन्द करती है।

दुर्गापुर में किसी तरह की असुविधा का सामना नहीं करना पड़ता है। चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट अभिजित बैनर्जी को किसी खास समस्या के निदान के लिए अचानक मुख्यालय से दुर्गापुर कारखाने में भेज दिया गया है। लगता है, समस्या को सही रास्ते पर लाने में कुछेक महीने लग जायेंगे। सप्ताहान्त में अभिजित बैनर्जी कलकत्ता चला आता था मगर आजकल बुनबुन ही दुर्गापुर जाकर हाजिर हो जाती है।

इसमें ज्यादा झंझट भी नहीं है। बुनबुन ने कहा था, "गेस्ट-हाउस में डबल बेड है। ब्वॉय, बावर्ची हर वक्त हाजिर रहते हैं—किसी चीज का ऑर्डर दो तो पाँच मिनट में मिल जायेगा। फिर बिल का भी कोई सवाल पैदा ही नहीं होता। बस, गेस्ट-हाउस के खाते में हस्ताक्षर करके लिख दो—ऑफिशियल।"

कमला भाभी को इतनी पेचीदा बात समझ में नहीं आती। उन्हें आश्चर्य हुआ था, "बाप रे! फिर पर्सनल नामक कौन-सी चीज रह जाती है। पत्नी को खाना खिलाना भी ऑफिशियल काम समझा जाता है ?"

बुनबुन आघात किये गये सिगरेट लाइटर की तरह झट से भड़क उठी थी। "जरूर! एक नहीं, सौ बार। अग्नि को साक्षी बनाकर ब्याही हुई पत्नी कहीं अन-ऑफिशियल हो सकती है ?"

पत्नी के मामले में ऑफिशियल नॉन-ऑफिशियल जैसी चलने वाली बातों ने भाभी को बेचैनी में डाल दिया। "बाप रे, दफ्तर के मामले में पत्नी को घसीटने की जरूरत ही क्या है ?"

बुनबुन ने मीठी झिड़कियाँ सुनायी थीं। "उफ दीदी, आपको समझा सकना मुश्किल है। भैया भी तो इतने बड़े अफसर हैं, एक नामी कम्पनी के ईस्टर्न रीजनल मैनेजर। मगर सीनियर एक्जीक्यूटिव के साथ इतने दिनों तक दूरन्दी

चलाने के बावजूद आप ऑफिस की कोई बात समझने की कोशिश नहीं करतीं। आप तो बिलकुल क्लर्क की पत्नी जैसी ही रह गयीं। एकदम घरेलू।

सीधी-सादी कमला ने अब प्रतिवाद करने की कोशिश की। "नहीं बहिन, पत्नी कभी ऑफिशियल नहीं हो सकती। नौकरी न रहेगी तो भी पत्नी तो पत्नी ही रहेगी। ऑफिशियल होने से तो नौकरी के साथ पत्नी भी छोड़नी पड़ेगी।

बुलबुल को बड़ा मजा आ रहा था।" मैं कहना कुछ चाहती थी और कह बैठी कुछ और ही। सुनिये दीदी। बीच-बीच में दुर्गापुर जाकर देख आयी हूँ। कितने ही अधिकारियों की ऑफिशियल बीवियां लापता हैं—वे बच्चों के स्कूल, लड़की के नाच और अपने संगीत के कारण कलकत्ते में किराये के मकान में व्यस्त रहती हैं; और विरही साहबों ने अन-ऑफिशियल बीवी का इन्तजाम कर लिया है। मिक्स्ड एकोनॉमी एण्ड ज्वॉइन्ट सेक्टर।"

सरला कमला भाभी पुनः अचकचा उठीं। "छिः छिः। प्रभो! यह सब कैसी बुरी बात है। सुनने से भी पाप लगेगा।"

चटुल वार्तालाप से जेठानी को शर्मिन्दगी में डालने के बाद बुलबुल ने बातचीत के क्रम को नया मोड़ दे दिया। "हाँ, तो मैं कह रही थी दीदी, कि अफसर हुए तो इसका मानी यह नहीं कि अपने को बेच दिया है। कम्पनी काम की सुविधा के लिए पति को उसकी घर-गृहस्थी से दूर हटाकर बन्दी बनाकर रखेगी, वैसी हालत में यदि उसकी बीवी दो दिन के लिए बनवास में मिलने के लिए आये तो क्या उसे दाल-भात का खर्च भी जेब से करना पड़ेगा, यह चल नहीं सकता।"

कमला भाभी के पिता जी बिहार में इन्सपेक्टर ऑफ स्कूल्स थे, दौरे पर निकलना ही उनका काम था लेकिन पत्नी को सरकारी खर्च पर दौरे पर ले जाने का सवाल पैदा नहीं होता था। उस समय कोई इस तरह की बात सोचता भी नहीं था।

इस बात से बुलबुल अनजान नहीं है। उसने कहा, "वह सब बात भूल जाइये दीदी। अब जमाना कुछ और ही है। बीवी को पूरी सुविधा नहीं दी जायेगी तो आज के काम-काजी आदमी नौकरी छोड़कर कनाडा, अबूधाबी, दुबाई या इराक चले जायेंगे। वैसे हालात में इन देशी कम्पनियों के कोल्हू में कौन जुतने आयेगा?"

बुलबुल के दफ्तर-सम्बन्धी ज्ञान की गहराई देख कमला भाभी अवाक् हो जाती हैं। बुलबुल के अलावा इन बातों की सूचना उन्हें कोई और नहीं दे सकता है। उनके पति दफ्तर की किसी बात की चर्चा घर पर नहीं करते हैं।

बुलबुल बोली, "आप के देवर के दफ्तर में भी तरह-तरह की बेइन्साफी है। विलायती और देसी चार्टर्ड एकाउन्टेन्टों के बीच जो फर्क है, वह सब अगर आप देखें तो लगेगा हिन्दुस्तान अब भी आजाद नहीं हुआ है। ऐसा लगेगा जैसे आपके देवर एक अनटचेबल हरिजन हैं, क्योंकि वे अपने मुल्क के सी० ए० हैं।"

सहसा कमला भाभी फिर बेचैन हो उठी। "बाप रे! साहबों को क्या यह मालूम नहीं कि बैनर्जी हरिजन नहीं हुआ करते?"

बुलबुल बोली, "हम बहुत गुस्से में आ गयी हैं—हम यानी इंडियन चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट की बीवियाँ। उन लोगों के यहाँ चीब नामक एक विलायती चार्टर्ड है—वह टूर पर निकलता है तो हर रोज अपनी बीवी को ट्रंककॉल करता है। बाद में पता चला, कंपनी के खर्चे पर वह हर रोज दस मिनट अपनी बीवी को ट्रंककॉल कर सकता है। कितनी बेइन्साफी है। विलायती चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट की बीवी ट्रंककॉल पर खसम से हँसी मजाक करेगी और हमने चूँकि देसी एकाउन्टेन्ट से शादी की है इसलिए देवता जैसे पति की मङ्गल-कामना करते हुए बिस्तर पर करवटें बदलने के सिवा हमारे लिए और कोई चारा नहीं है?"

कमला भाभी ने बुलबुल को शान्त करने के ख्याल से कहा था, "इतनी बातों की जरूरत ही क्या है? तुम हर रोज अपने पति को दुर्गापुर फोन किया करो, पैसा मैं दूंगी।"

बुलबुल ने सूचित किया था, "फोन की जरूरत नहीं पड़ेगी। यह कल सुबह ही खुद दुर्गापुर चली जायेगी।"

जाने की बात सुनकर कमला भाभी चिंतित हो उठी। "क्यों? सोमनाथ के व्यवहार से क्या तुम चिढ़ गयी हो बुलबुल?"

बुलबुल ने सूचना दी, "मैं चिढ़कर नहीं जा रही हूँ दीदी। सोमनाथ से चिढ़ने का मतलब है छत के कौवे से चिढ़ना। मैं दूसरी ही वजह से जा रही हूँ।"

बुलबुल ने सूचना दी, उन लोगों के दुर्गापुर में अशान्ति का वातावरण फैल रहा है। मजदूर लोग वेतन में दस रुपये की बढ़ोतरी के लिए हंगामा मचा रहे हैं।"

बुलबुल ने होंठ बिचकाकर अपनी राय जाहिर की, "इस देश के वर्कर कितने नासमझ हैं। इतना अधिक पैसा कहाँ से आयेगा? इसके फलस्वरूप कंपनी की फाइनेन्शल हालत कितनी खराब हो जायेगी, यह बात वे लोग नहीं समझ रहे हैं।"

बुलबुल बड़ी ही साहसी औरत है। उसने कहा, "दस रुपये की खातिर ये बंनले जीव अगर हड़ताल करने पर उतर आयें तो ऐसी हालत में मैं उनके साथ रहना चाहती हूँ। वर्कर लोग साहबों की परवाह करें चाहे न करें मगर साहबों की बीवियों से वे अब भी डरते हैं।" कई दिनों तक दुर्गापुर में रहने के बाद बुलबुल ने इस मूल्यवान् सत्य को खोज ही निकाला है।

हड़ताल का भय दिखाकर बुलबुल दुर्गापुर जो गयी तो फिर उसकी कोई खोज-खबर ही नहीं मिली। यहां तक कि उसने एक खत भी नहीं भेजा।

हालांकि खत वगैरह आने पर कुछ दिन पहले तक घर में कितनी अशांति छा जाती थी। द्वैपायन बैनर्जी अब तक पिंजरे में कैद शेर की तरह अविराम चहल-कदमी करते हुए कमला को पुकार पर पुकार लगा चुके होते। पूछते, "बहू, सोम घर पर है? उसे पोस्ट ऑफिस जाकर यह टेलीग्राम दुर्गापुर भेज देने को कहो।"

अपनी ऊब दबाकर द्वैपायन बोले, "काम के दबाव की वजह से कोई आदमी अपने घर चिट्ठी तक नहीं भेज सके, इसकी मिसाल दुनिया में कहीं नहीं मिलेगी। लोग-बाग लड़ाई के मैदान से भी अपने सगे-संबंधियों को निरन्तर पत्र लिखते रहते हैं। तुम खुद विख्यात ब्रिटिश, जर्मन, अमरीकी जनरलों के बाद मेमोरियल्स पढ़कर देख लो।"

कमला ससुर का लिखा हुआ तार का ड्राफ्ट और पांच रुपये का एक नोट लिए सोमनाथ के कमरे में आयीं।

लाड़ले बेकार छोटे देवर ने सब कुछ सुनने के बाद पलंग पर उठकर बैठते हुए कहा, "इस टेलीग्राम का कोई मतलब नहीं निकलेगा भाभी जी। सरकार को सलामी देने के बजाय इस रुपये से सिनेमा देख आना कहीं ज्यादा बेहतर है।"

"सिनेमा देखने की इच्छा हो तो उसके टिकट के लिए मैं अलग से पैसा दूंगी, लेकिन उसके साथ-साथ तार भी कर आओ भैया। बाबूजी बेहद चिंतित हैं।"

"दिन-रात लड़कों के बारे में फिक्र करने के अलावा बाबूजी को क्या कोई दूसरा काम नहीं है भाभी जी? फिक्र करने से इस दुनिया में कहीं कुछ होता है?" अविश्वासी सोमनाथ ने स्नेहमयी भाभी के सामने अपना मनोभाव छिपाकर नहीं रखा था।

"बाप रे ! तुम यह सब क्या कह रहे हो सोम ? माँ-बाप का आशीर्वाद जल-स्थल-अन्तरिक्ष सब जगह हमारी रक्षा करता है। मेरे बाबूजी की ही बात लो। भागलपुर में बैठे-बैठे मेरे बारे में सोचते रहते हैं तो उससे क्या मेरी कोई भलाई नहीं होती ?"

"उफ् भाभी जी, ईश्वर ने आपका निर्माण किस धातु से किया है ? इस बीसवीं सदी में भी आप अचल हैं। सबको प्यार देकर, सब पर विश्वास रखे, बैठी हुई हैं। भाभी, आप ही एकमात्र ऐसी औरत हैं जिसे समझ सकना मेरे लिए मुश्किल है।"

कमला भाभी ने कहा था, "तुम लौटोगे तो एक प्याली स्पेशल चाय तुम्हारा इन्तजार करती रहेगी। उसके बाद तुम किसी सिनेमा का टिकट कटा सकते हो।"

"बाबूजी से कहिये, कुछ खबर न आने का मतलब ही है कि समाचार बिलकुल ठीक है—नो न्यूज इज गुड न्यूज। अभिजित बैनर्जी अपनी आधुनिक वाइफ बुलबुल बनर्जी के साथ दुर्गापुर में बिलकुल ठीक हैं। यह जानने के लिए यह अर्जेन्ट टेलीग्राम दुर्गापुर भेजने की कोई जरूरत नहीं है।"

देवर को बिस्तर से उठाते हुए कमला भाभी ने कहा था, "जरूरत है सोम, बड़े होओगे तब यह बात तुम्हारी समझ में आयेगी।"

सोमनाथ ने जरा आश्चर्य में आ कौतुक के साथ कमला भाभी की ओर देखते हुए कहा था, "क्या बोली ?"

कमला भाभी ने गंभीरता के साथ उत्तर दिया था, "जोधपुर पार्क का यह बैनर्जी भवन, दोमंजिले की यह बालकनी, वह ईजी चेयर, वह छोटी टेबल—यह सब चीज तो रह जायेंगी। वे ही गवाह रहेंगी कि एक दिन तुम भी यहाँ बैठे-बैठे बाल-बच्चों के लिए इसी तरह चिन्ता से व्याकुल होगे या नहीं।"

निरुपाय सोमनाथ ने सिर हिलाकर उस समय कहा था, "राम के जन्मने के पहले ही आप रामायण की बात लेकर बैठ गयीं ? गृहस्थी के कामों में इस तरह अपने को बर्बाद करने के बजाय आप कविता लिखतीं तो कहीं अच्छा रहता। आप में इमोशन है भाभी जी। फिलहाल मैं बेकार हूँ—अनएम्प्लाएड ग्रेजुएट। लेकिन आपने मेरे पोता-पोती तक की तसवीर बना डाली है। वाह !"

सोमनाथ ने कमला भाभी के चेहरे की ओर ताका था। "भाभी जी, आपको एक बात की गारण्टी दे रहा हूँ। बाबू जी की तरह मैं दुनिया के किसी आदमी के लिए इतना चिन्तित नहीं रहूँगा। बर्बाद करने के लिए इतना सरप्लस वक्त मेरे पास कभी नहीं रहेगा।"

भाभी की आंखें छलछला आयी थीं। दांत से जीभ काटते हुए कहा था, "छिः, ऐसी बात नहीं कहते। ईश्वर ने समय दिया है किसलिए ? अपने लोगों को प्यार करने के लिए ही न ? मां नहीं हैं, इसलिए बाबूजी को अकेले ही दो व्यक्तियों की चिन्ता करनी पड़ती है। सोम, हम लोग कितने भाग्यवान् हैं ! हम लोगों के लिए चिन्ता करने के लिए अब भी दुनिया में एक व्यक्ति मौजूद हैं। हम उनके लिए चिन्तित रहते हैं या नहीं, इसकी खोज-खबर वह एक बार भी नहीं लेते। मां की तसवीर की ओर ताकते हुए इतना ही कहते हैं : प्रतिभा, इन लोगों को सुख-शान्ति से रखकर मैं यहां से चला जाना चाहता हूं, इसके अलावा मेरी कोई दूसरी प्रार्थना नहीं है।"

बहुत दिनों के बाद आज इस मेघाच्छादित शाम में कमला भाभी को सोम को उस दिन की बात याद दिला देने की इच्छा हो रही है। मगर सोम कहां है ?

कमला भाभी ने पूजाघर जाने के रास्ते में सोमनाथ के कमरे में झांक कर देख लिया। सोमनाथ पहले नीचे के कमरे में रहता था। एक महीने पहले कमला भाभी ने उसकी प्रोन्नति कर दी है।

सोम शुरू में उपरले कमरे में आने को इच्छुक नहीं था। उसने कहा था, "भाभी जी, आप ही बल्कि दोमंजिले के कमरे में चली जायें।"

'क्यों, इतने बड़े कमरे में तुम्हारा रहना शोभा नहीं देगा ?" कमला भाभी ने कारण जानने के लिए अनुमान लगाने की कोशिश की थी।

बुलबुल हमेशा बातूनी और मुंहफट रही है। वह भी उस समय घटना-स्थल पर मौजूद थी। मुंह बनाकर बुलबुल ने मुसकराते हुए कहा, "जानती हैं दीदी, हम लोगों के कॉलेज की श्रीमयी जो-सो कहानी इधर-उधर से बटोरकर ले आती थीं। बड़े कमरे की बात से मुझे बड़ी खाटवाली कहानी की याद आ रही है।"

कमला भाभी को बात समझ में नहीं आयी थी। वह बेवकूफ की तरह बुलबुल की ओर ताकने लगी थीं।

बुलबुल बोली, "एक वयस्क युवक को शादी करने की बेहद ख्वाहिश थी हालांकि घर पर कोई इस बात की चर्चा तक नहीं करता था। आखिरकार युवक ने एक दिन सवेरे-सवेरे आरी लेकर अपनी खाट काटना शुरू कर दिया। उसकी भाभी घबराकर दौड़ती हुई आयी और कहा : अयं यह क्या कर रहे

हो ? युवक ने गम्भीरता के साथ कहा : इतनी बड़ी खाट रखकर क्या करूँ ? तब भाभी ने कहा : नहीं देवर जी, खाट को काटो नहीं, खाट का पूरी तरह से उपयोग हो सके, इसके लिए अगले महीने ही इन्तजाम कर दूँगी।"

कहानी कहकर बुलबुल ठठाकर हँस पड़ी थी। लेकिन सोमनाथ का चेहरा पत्थर की तरह गंभीर ही बना रहा। बुलबुल का मजाक उसके दिमाग का स्पर्श किये बगैर निकल गया था।

कोई उपाय न देखकर बुलबुल झट से कमरे से बाहर खिसक गयी। कमला भाभी ने कहा, "उसकी बात को अन्यथा मत लेना सोम।"

"पता नहीं क्यों आजकल मुझे घटिया मजाक पसन्द ही नहीं आता, भाभी जी," घुटनभरी परिस्थिति में सोमनाथ ने अपना मनोभाव प्रकट किया था।

भाभी जी को मालूम है, सोमनाथ आजकल बहुत अधिक गंभीर हो गया है। सोमनाथ अब पहले का वह छोटा देवर नहीं है जो भाभी के साथ उनके मायके जाने के लिए हठ ठानने लगता था।

कमला भाभी फिर कमरे की बात पर लौट आयी थी। "मैं कह रही थी सोम, कि उपरले कमरे में तुम्हीं जाकर दखल जमा लो।"

"वहाँ आपका रहना ही शोभा देता है भाभी जी। इस घर के किसी और व्यक्ति में वहाँ जाने की योग्यता नहीं है।" सोमनाथ एकाएक कह बैठा था।

कमला भाभी की तीव्र इच्छा थी कि घर के सबसे अच्छे कमरे में सोमनाथ ही रहे। सोम अभी जिस कमरे में रहता है वह उतना बड़ा और अच्छा नहीं है।

कमला भाभी के अलावा किसी के वश की बात नहीं थी कि सोमनाथ को उपरले कमरे में रहने को भेज देता। सब कुछ सोचने-विचारने के बाद कमला भाभी बोली थी, "दोमंजिले पर चले जाने से बार-बार ऊपर-नीचे करने में मुझे तकलीफ होगी सोम। बार-बार कॉलिंग बेल का प्रत्युत्तर देने और दरवाजा खोलने के लिए कोई आदमी नहीं है।"

सोमनाथ ने इसके बाद आपत्ति नहीं की थी। कहा था, "आपके साथ बहुत बड़ा अत्याचार हो रहा है। दरवाजा खोलने के लिए कोई नौकर रखना चाहिए।"

भाभी ने मना किया था। सोमनाथ ने कहा था, "नौकर के पीछे जो [illegible] खर्च लगेगा, मैं दूँगा—यानी आपका यह हरवक्ती पर्सनल असिस्टेन्ट।"

"इससे मेरी मेहनत में कोई कमी नहीं आ पायेगी, सोम [illegible] वेतन भोगी नौकर से हो सकता है?"

कमला भाभी को उम्मीद थी कि इसके बाद उन्हें एक सुयोग मिलेगा। सोचा था, कहेंगी, वेतनभोगी पर्सनल असिस्टेन्ट के अतिरिक्त सोमनाथ चाहे तो एक दूसरी तरह की असिस्टेन्ट लाकर दे सकता है।

लेकिन सोमनाथ ने उस ओर कदम ही नहीं बढ़ाया बल्कि वह अजीब ही तरह के अनमनेपन में डूब गया। उसके चेहरे की कठिन उदासीनता देख कमला भाभी को उस दिन आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं हुई।

अभी सोमनाथ के दोमंजिले के कमरे में रोशनी जल रही है। लेकिन परदे की फांक से कमला भाभी को वह दिखायी नहीं पड़ा। सोमनाथ जरूर ही गुसलखाने के अन्दर है। इस घर के मात्र एक कमरे ही में संलग्न गुसलखाना है।

कमला भाभी अब सीधे पूजाघर के भीतर चली गयीं। सास के द्वारा खरीदे गये कमण्डल से गंगाजल ढाल हाथ शुद्ध कर लिया। उसके बाद शान्त जोधपुर पार्क का बैनर्जी भवन शंखध्वनि से मुखरित हो उठा था।

कमला भाभी ने परम श्रद्धा के साथ गृह-देवता को प्रणाम किया "प्रभो, इन लोगों पर दया-दृष्टि रखो।"

गृह-देवता ही कमला भाभी को बंदिनी बनाये हुए हैं। कहीं जाने पर वे अधिक देर तक रुक नहीं पाती हैं। घर में संध्या-प्रदीप न जले, यह कैसे हो सकता है भला।"

बुलबुल कलकत्ते के बाहर रहती है तो कमला को इसी असुविधा का सामना करना पड़ता है। बहुत दिन पहले सास ने कहा था, "दाई-नौकर से शाम का यह काम कभी नहीं कराना बहू। कभी अगर अपने हाथ से नहीं कर सको तो घर के मालिक या बाल-बच्चों को बुला लेना।" सास की समझ में शायद यह बात आ गयी थी कि इस घर में सांध्य-प्रदीप जलाने के लिए वह दुनिया में ज्यादा दिनों तक नहीं रहेंगी।

पूजाघर से बाहर आ कमला भाभी सीधे सोमनाथ के कमरे के अन्दर चली गयीं। टेबल-लैंप जलाकर सोमनाथ टेबल पर झुककर कुछ काम कर रहा था।

"लो, प्रसाद ले लो।" कमला भाभी ने दो अदद बताशे सोमनाथ की ओर बढ़ा दिये।

'वन मिनट, भाभी जी। बड़े ही क्रिटिकल पॉएन्ट पर पहुँच गया हूँ। जरा इधर-उधर हो जाये तो बहुत बड़ा नुकसान उठाना पड़ेगा," सोमनाथ टेबल पर

झुक पड़ा और कमला भाभी ने समय बचाने के खयाल से ही देवर के मुँह में एक बताशा ठूँस दिया।

अब कमला भाभी स्वयं मेज की ओर झुककर खड़ी हो गयी। "बाप रे; यह तो हिसाब का खाता है। मैंने सोचा था, इस मेघिल दिन में तुम शायद....."

"आपने सोचा, अस्ताचलगामी सूर्य के प्रकाश में आपका देवर खिड़की के किनारे कोई कविता या कहानी पढ़ रहा है।" सोमनाथ ने चपल होने की कोशिश की।

इस प्रकार की मेघिल संध्या में सोमनाथ जमा-खर्च के खाते में कैदी बनकर पड़ा है, यह बात कमला भाभी को सचमुच ही अच्छी नहीं लगी।

इस घर की सन्तानों के बीच सोमनाथ ही अलहदा किस्म का था। उसका मधुर कवि-मन साहित्यानुरागिनी कमला को अपनी ओर खींचता था। कमला की तीव्र अभिलाषा थी कि उसका देवर नामी कवि बने। तभी न इस दुनिया के तमाम लोगों से गर्व के साथ यह कहा जा सकेगा कि कवि सोमनाथ बद्यो-पाध्याय मेरा देवर है। मेरे द्वारा बनायी गयी चाय के घूँट लेते हुए ही उसने यह अविस्मरणीय कविता लिखी है: 'मानव की वाणी—नहीं मानता हूँ बाधा मैं।' रवीन्द्रनाथ की एक पंक्ति से सहायता लेकर उस बार सोमनाथ ने कितनी अच्छी कविता लिखी थी। उस समय सोमनाथ कॉलेज का ही छात्र था। उसके बाद पासकोर्स से किसी तरह बी० ए० की परीक्षा में कामयाबी हासिलकर, बेकारी की आग में दिन-ब-दिन झुलसकर सोमनाथ ने स्वयं को, पिताजी और पूरे घर-बार को क्षत-विक्षत कर दिया। ऐसे भी दिन गुजरे हैं जब कमला को लगा है, सोमनाथ सचमुच ही कुछ नहीं कर पायेगा। दूसरे के माथे का बोझ बनकर ही उसे सारी जिन्दगी बितानी होगी।

लेकिन अन्ततः ईश्वर ने उसकी ओर भी दया की दृष्टि से निहारा था। पिताजी को मालूम है, उनका छोटा बेटा सोमनाथ अब बेकार नहीं है। यह सच है कि नौकरी उसे नहीं मिली है मगर उसे नौकरी की जरूरत भी नहीं है। द्वैपायन बैनर्जी का कनिष्ठ पुत्र सोमनाथ बैनर्जी अन्ततः बिजिनेसमैन बन गया। जेन्यूइन बिजनेसमैन कहने से जो बात समझ में आती है—बेकारी का बखेड़ा अब उसके साथ नहीं है, वह वास्तविक व्यवसायी हो गया है।

कमला भाभी की आँखों की ओर देखकर सोमनाथ यह बात भलीभाँति समझ रहा है कि उन ममतालु आँखों की प्रत्याशा के सम्मुख वह संभवतः बौना होता जा रहा है।

कमला भाभी को उम्मीद थी कि इसके बाद उन्हें एक सुयोग मिलेगा। सोचा था, कहेंगी, वेतनभोगी पर्सनल असिस्टेन्ट के अतिरिक्त सोमनाथ चाहे तो एक दूसरी तरह की असिस्टेन्ट लाकर दे सकता है।

लेकिन सोमनाथ ने उस ओर कदम ही नहीं बढ़ाया बल्कि वह अजीव ही तरह के अनमनेपन में डूब गया। उसके चेहरे की कठिन उदासीनता देख कमला भाभी को उस दिन आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं हुई।

अभी सोमनाथ के दोमंजिले के कमरे में रोशनी जल रही है। लेकिन परदे की फाँक से कमला भाभी को वह दिखायी नहीं पड़ा। सोमनाथ जरूर ही गुसलखाने के अन्दर है। इस घर के मात्र एक कमरे ही में संलग्न गुसलखाना है।

कमला भाभी अब सीधे पूजाघर के भीतर चली गयीं। सास के द्वारा खरीदे गये कमण्डल से गंगाजल ढाल हाथ शुद्ध कर लिया। उसके बाद शान्त जोधपुर पार्क का बैनर्जी भवन शंखध्वनि से मुखरित हो उठा था।

कमला भाभी ने परम श्रद्धा के साथ गृह-देवता को प्रणाम किया "प्रभो, इन लोगों पर दया-दृष्टि रखो।"

गृह-देवता ही कमला भाभी को बंदिनी बनाये हुए हैं। कहीं जाने पर वे अधिक देर तक रुक नहीं पाती हैं। घर में संध्या-प्रदीप न जले, यह कैसे हो सकता है भला।"

बुलबुल कलकत्ते के बाहर रहती है तो कमला को इसी असुविधा का सामना करना पड़ता है। बहुत दिन पहले सास ने कहा था, "दाई-नौकर से शाम का यह काम कभी नहीं कराना बहू। कभी अगर अपने हाथ से नहीं कर सको तो घर के मालिक या बाल-बच्चों को बुला लेना।" सास की समझ में शायद यह बात आ गयी थी कि इस घर में सांध्य-प्रदीप जलाने के लिए वह दुनिया में ज्यादा दिनों तक नही रहेंगी।

पूजाघर से बाहर आ कमला भाभी सीधे सोमनाथ के कमरे के अन्दर चली गयीं। टेबल-लैंप जलाकर सोमनाथ टेबल पर झुककर कुछ काम कर रहा था।

"लो, प्रसाद ले लो।" कमला भाभी ने दो अदद बताशे सोमनाथ की ओर बढ़ा दिये।

'वन मिनट, भाभी जी। बड़े ही क्रिटिकल पॉएन्ट पर पहुँच गया हूँ। जरा इधर-उधर हो जाये तो बहुत बड़ा नुकसान उठाना पड़ेगा," सोमनाथ टेबल पर

झुक पड़ा और कमला भाभी ने समय बचाने के खयाल मे ही देवर के मुँह मे एक बताशा ठूँस दिया।

अब कमला भाभी स्वयं मेज की ओर झुककर खडी हो गयी। "बाप रे; यह तो हिसाब का खाता है। मैंने सोचा था, इस मेघिल दिन में तुम शायद....."

"आपने सोचा, अस्ताचलगामी सूर्य के प्रकाश में आपका देवर खिड़की के किनारे कोई कविता या कहानी पढ़ रहा है।" सोमनाथ ने चपल होने की कोशिश की।

इस प्रकार की मेघिल संध्या में सोमनाथ जमा-खर्च के खाते मे कैदी बनकर पडा है, यह बात कमला भाभी को सचमुच ही अच्छी नही लगी।

इस घर की सन्तानों के बीच सोमनाथ ही अलहदा किस्म का था। उसका मधुर कवि-मन साहित्यानुरागिनी कमला को अपनी ओर खींचता था। कमला की तीव्र अभिलाषा थी कि उसका देवर नामी कवि बने। तभी न इस दुनिया के तमाम लोगों से गर्व के साथ यह कहा जा सकेगा कि कवि सोमनाथ बन्दो-पाध्याय मेरा देवर है। मेरे द्वारा बनायी गयी चाय के घूँट लेते हुए ही उसने यह अविस्मरणीय कविता लिखी है : 'मानव की वाणी—नही मानता हूँ बाधा मैं।' रवीन्द्रनाथ की एक पंक्ति से सहायता लेकर उस बार सोमनाथ ने कितनी अच्छी कविता लिखी थी। उस समय सोमनाथ कॉलेज का ही छात्र था। उसके बाद पासकोर्स से किसी तरह बी० ए० की परीक्षा में कामयाबी हासिलकर, बेकारी की आग मे दिन-ब-दिन झुलसकर सोमनाथ ने स्वयं को, पिताजी और पूरे घर-बार को क्षत-विक्षत कर दिया। ऐसे भी दिन गुजरे हैं जब कमला को लगा है, सोमनाथ सचमुच ही कुछ नही कर पायेगा। दूसरे के माथे का बोझ बनकर ही उसे सारी जिन्दगी बितानी होगी।

लेकिन अन्ततः ईश्वर ने उसकी ओर भी दया की दृष्टि से निहारा था। पिताजी को मालूम है, उनका छोटा बेटा सोमनाथ अब बेकार नहीं है। यह सच है कि नौकरी उसे नही मिली है मगर उसे नौकरी की जरूरत भी नहीं है। द्वैपायन बैनर्जी का कनिष्ठ पुत्र सोमनाथ बैनर्जी अन्ततः बिजिनेसमैन बन गया। जेन्यूइन बिजनेसमैन कहने से जो बात समझ में आती है—बेकारी का बखेड़ा अब उसके साथ नहीं है, वह वास्तविक व्यवसायी हो गया है।

कमला भाभी की आँखों की ओर देखकर सोमनाथ यह बात भलीभाँति समझ रहा है कि उन ममतालु आँखों की प्रत्याशा के सम्मुख वह संभवतः बौना होता जा रहा है।

कमला भाभी ने कहा, "अब घर पर भी तुमने दफ्तर का काम काज लाना शुरू कर दिया ?"

सोमनाथ को पता है, उसके बड़े भैया या छोटे भैया दोनों में से कोई दफ्तर की फाइल घर पर नहीं लाते हैं। मगर सोमनाथ के सामने कोई दूसरा उपाय नहीं है। खाते से आंख हटाये बगैर उसने कहा, "आपका छोटा देवर अब जेन्टलमैन नहीं, बिजनेसमैन है।"

कमला भाभी देवर के मजाक से खुश नहीं हुईं। अब वह सोमनाथ से बहुत कुछ प्रत्याशा करती हैं। "बाप रे, व्यवसायी भले आदमी नहीं होते, इस तरह की बात कहाँ लिखी हुई है ?"

सोमनाथ बोला, "व्यवसाय में दूसरे की गुलामी से छुटकारा पाने की एक क्षीण संभावना अवश्य दीख पड़ती है, लेकिन अपने आपकी गुलामी से भागने का कोई रास्ता इसमें भी नजर नहीं आता, भाभी जी। बिजनेसमैन की जात रेशम के कीड़े की तरह होती है—अपनी ही लार से वे लोग स्वयं को जीवन-भर के लिए कैदी बना लेते हैं।"

"बहुत बड़े व्यवसायी होकर जब आत्म-कथा लिखोगे तो यह बात उसमें जरूर लिखना" कमला भाभी सोम की बुद्धि की दमक से संतोष का अनुभव करती हैं। उसके मन की बैटरी अब भी जलकर खत्म नहीं हुई है।

सोम दुबारा हिसाब के खाते पर झुक पड़ा। "यह सब बहुत ही सीक्रेट काम है भाभी जी—धर्मशालानुमा दफ्तर में बैठकर काम किया नहीं जा सकता।"

क्यों ? सोमनाथ का दफ्तर तो अब धर्मशालानुमा नहीं है। वैसी बात तब थी जब वह विशु बाबू के कनोरिया कोर्ट के बहत्तर नम्बर कमरे की एक मेज पर वह बैठा करता था। हर मेज पर दो-तीन दफ्तर रहा करते हैं। किसी-किसी दफ्तर में तीन-चार नाम के लेटरहेड लगे हुए हैं। सामयिक आश्रयदाता विशु बाबू ने सोमनाथ से कुछ भी नहीं कहा था। मगर सोमनाथ का ध्यान इस बात पर गया था कि एक पुराने किरायेदार के लौट आने के कारण विशु बाबू थोड़ी-बहुत झिझक महसूस कर रहे थे, क्योंकि सोमनाथ उसी की जगह पर दखल जमाकर बैठा हुआ था। विशु बाबू के प्रति बार-बार आभार प्रकट करते हुए सोमनाथ ने ज्यादा किराये पर कनोरिया कोर्ट के ८१ नम्बर कमरे में एक बड़ी जगह ले ली है। वहाँ प्राइवेसी के लिए सोमनाथ ने स्वयं लकड़ी का एक क्यूबिकल बनवा लिया है। मर्जी हो तो वह दफ्तर से बाहर जाने के समय ताला बन्द करके भी निकल सकता है।

खाते पर अपनी निगाह पूर्ववत् रखकर सोमनाथ ने भाभी से कहा, "लॉ

ऑफ द जंगल है, भाभीजी। कलकत्ते के व्यावसायिक मुहल्ले मे जंगल का कानून लागू है। दीक्षित जी के हिसाब के खाते की चोरी हो गयी है। ओरिजिनल हिसाब के खाते का मतलब है—बिजनेसमैन के प्राणों का भँवरा। खाता किन लोगों ने गायब किया है, अब तक पता नही चला। अगर उस तरह के किसी आदमी के हाथ मे खाता चला जाये तो क्या हो सकता है, इसकी आप कल्पना तक नही कर सकती हैं ?"

कमला की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा है। व्यवसाय की अन्दरूनी गंदगी को न समझना ही भाभी जी के लिए अच्छा है, सोमनाथ ने सोचा। कमला भाभी ने सोमनाथ का दफ्तर एक बार अपनी आँखों से देखने की इच्छा जाहिर की थी। मगर सोमनाथ ने उन्हें प्रोत्साहित नहीं किया था। सोमनाथ को भय होता है कि वह सब जगह कमला भाभी के लायक नहीं है।

"थोड़ा-सा और वक्त चाहिए भाभी जी। आपको दिखाने लायक दफ्तर बन जाये उसके बाद मैं खुद आपको सब कुछ दिखलाऊँगा।" सोमनाथ ने समय विशेष के लिए भाभी को रोक दिया था।

भाभी नहीं जानतीं कि सोमनाथ के मन में क्या योजना है। अगर किसी दिन सोमनाथ का व्यवसाय फल-फूल उठे, अपनी कंपनी की बिल्डिंग वह बनवा सके तो ऐसी हालत में वह भवन के प्रवेश द्वार पर ही श्वेत पत्थर से पद्मासना कमला की ऊर्ध्वाङ्कित मूर्ति किसी शिल्पी से गढ़वा लेगा। शिल्पी से सोमनाथ एक ही अनुरोध करेगा—कमलदलवासिनी कमला का मुख-मंडल वास्तव में कमला भाभी की ही तरह हो।

कमला भाभी अब भी सोमनाथ के हिसाब के खाते की ओर ताक रही हैं। उनके स्वर में अभियोग का पुट है। "उफ्, कविता लिखने के समय भी तुम्हें इतनी माथा-पच्ची करनी पड़ती है, सोम ?"

सोमनाथ ने हँसते हुए कहा, "पहले आदक बाबू से सुना करता था और अब अपनी आँखों से भी देख रहा हूँ, महाकाव्य में भी हिसाब के खाते जैसा कल्पना का स्कोप नहीं है। उस दिन आदक बाबू ने एक अच्छी बात बताई थी। वह यह कि आजकल अच्छे कहानी-उपन्यास इसलिए नहीं लिखे जा रहे हैं क्योंकि तमाम फिक्शन राइटर्स एकाउन्टेन्ट होते जा रहे हैं।"

कमला भाभी को जरा-जरा भय लगने लगा। "नहीं भाई, जिसका जो काम है उसको वही शोभा देता है। उन झमेलों में न पड़ना ही ठीक है। "इस युग मे कोई भी काम क्या सच्चाई के रास्ते पर चलने से होता है, भाभीजी ?"

सोमनाथ ने सर झुकाये हुए ही पूछा। दुनिया में कमला भाभी के अलावा किसी और से वह इस तरह जी खोलकर बातचीत नहीं कर सकता है।

कमला भाभी देवर के लिए चाय लाने जा रही थीं। सोमनाथ की बात कान में जाते ही मुड़कर खड़ी हो गयीं।

सोमनाथ के चेहरे की ओर ताकती हुई मीठी मुसकान के साथ कमला भाभी बोलीं, "जो लोग अन्याय करते हैं, वे ही अपने बुरे कामों पर परदा डालने के लिए चुपचाप इन बातों का प्रचार करते रहते हैं, सोम। बाबूजी अकसर कहा करते थे : महान् व्यक्तियों की जीवनी पढ़कर देखो—दुनिया का बहुत सारा काम सच्चाई के रास्ते पर चलने से ही होता है। तुम अपनी ही बात लो। बेकार होकर रास्ते में मारे-मारे फिरते थे, भाई या पिता किसी ने नौकरी के मामले में कोई मदद न की। लेकिन तुममें चिनगारी थी इसीलिए तुम अपनी कोशिश और गुण के बल पर व्यवसाय में पाँव रोपकर खड़े हो गये। तुम्हें कोई अन्याय नहीं करना पड़ा।"

इतना कहकर ही कमला भाभी चाय लाने चली गयी थीं। किस्मत अच्छी थी कि उन्होंने मुड़कर नहीं देखा।

भाभी जैसे ही आँखों से ओझल हुईं, सोमनाथ का शरीर झनझना उठा। कुछ ही क्षणों के भीतर जैसे सब कुछ एकाएक अँधेरे में डूबता जा रहा हो।

"सोमनाथ, सोमनाथ"—कोई जैसे पातालपुरी के गहरे अँधेरे से सोमनाथ बैनर्जी को सम्मोहन भरे स्वर में पुकार रहा है।

सोमनाथ बैनर्जी महसूस कर रहा है, उसके पूरे जिस्म में हठात् पसीने की बाढ़ आ गयी है। बिजली के लिफ्ट के पिंजरे में कैद सोमनाथ जैसे कोयले की खान के सुरंग-पथ से आहिस्ता-आहिस्ता नीचे उतरता जा रहा हो।

सोमनाथ का नीचे उतरने का जैसे कोई अन्त न हो—पूरा पिंजरा अतलांत अँधेरे के पातालगर्भ में समाता जा रहा है। कोई एक रहस्यमय, लेकिन परिचित स्वर, बन्दी सोमनाथ को कापालिक की तरह पुकार रहा हो और यह जानते हुए भी कि उसका सर्वनाश निश्चित है, सोमनाथ उस पुकार को ठुकरा नहीं पा रहा हो।

इस क्षण सोमनाथ 'आषाढ़स्य प्रथम दिवस' का वही दृश्य देख रहा था—ग्रेट इंडियन होटल के सामने वह एक टैक्सी से उतरा। साथ में थी उसी के मित्र सुकुमार की बहिन कणा।

कोई अब सोमनाथ से जिरह कर रहा था, "तो फिर तुम्हीं वह भद्र, सुसभ्य और सुशिक्षित सोमनाथ बैनर्जी हो जो ऑर्डर पाने के लोभ में ग्रेट इंडियन

होटल के एकान्त कक्ष में सुदर्शन गोयनका को तोहफा देने के लिए पैसे के विनिमय में कणा को ले गये थे ?"

सोमनाथ ने दयनीय स्वर में आत्म-रक्षा के लिए दलील दी। "मुझे गलत न समझें। प्लीज आपके पैरों पर गिरता हूँ। मेरी बात सुनिये। पार्क स्ट्रीट से दलाल नटवर मित्तिर की जानी-पहचानी पार्टी के द्वारा अभिस्तावित लड़की को गाड़ी पर बिठाकर मैंने उसका नाम पूछा था। उसने अपना नाम शिउली बताया था, कणा नाम को उसने उच्चारण तक नहीं किया था।"

अँधेरे का काला गाउन पहने कोई कुत्सित कापालिक ओट में खड़ा होकर अट्टहास करने लगा। उस क्षण सोमनाथ पर कोई भी विश्वास नहीं कर रहा था।

उस आदमी की हँसी की प्रतिध्वनि तब उस अन्धपुरी की दिशा-दिशा में टकराने लगी थी।

"सोमनाथ, सन ऑफ द्वैपायन बैनर्जी, तुम हमें क्या समझाना चाहते हो ? यही न कि तुम्हारी कोई गलती नहीं थी। तुम्हारा कोई अपराध नहीं था, निरे बालक की तरह तुम अपनी दिली दोस्त सुकुमार की बहिन को टेलीफोन ऑपरेटिंग स्कूल से गोयनका के होटल के कमरे में पहुँचाने के लिए ले आये थे ? यानी तुम निर्दोष हो, अगर गलती किसी की है तो वह कणा की ही है—सुकुमार की बहिन कणा थी। वह क्यों उस समय उस तरह घर से छिपकर बाहर आयी थी और चरणदास के अड्डे पर गयी थी ?"

अब वह अट्टहास संभवतः सैकड़ों टुकड़ों में चूर-चूर होकर पातालपुरी के रास्ते पर प्रलय का सृजन करेगा। अँधेरे का कापालिक अब तीखे व्यंग्य से मुजरिम सोमनाथ की चिन्दी-चिन्दी कर डालेगा।

"सोमनाथ तुम वकील क्यों नहीं बने ? द्वैपायन बैनर्जी का एक लड़का आइ० आइ० टी० का इन्जीनियर, दूसरा लड़का एफ० सी० ए० और यह तीसरा लड़का वकील ! बहुत ही फबता। कितनी सहजता से तुम अपनी सारी जिम्मेदारी दूसरे के मत्थे मढ़कर, कणा को बेचकर, अपने भविष्य की निरापद नींव डालकर चले आये ! मिस्टर सुदर्शन गोयनका, परचेज ऑफिसर किस सहजता के साथ कणा को अपने साथ ले ग्रेट इंडियन होटल के डब्ल बेडरूम के अन्दर चले गये थे ! दरवाजे के सामने रोशनी जल उठी थी, जिसमें साफ-साफ पढ़ा जा सकता था—प्लीज डोन्ट डिस्टर्ब। कणा को एक जानवर के हाथों में सौंपकर, तुम खड़े-खड़े उस लाल रोशनी का जलना देखते रहे, पालतू बकरे की तरह लाउंज में आकर कुछ देर तक छटपटाते रहे, उसके बाद निश्चित

समय पर मिस्टर गोयनका को तुमने रिसेप्सन से फोन किया। मिस्टर गोयनका ने कितनी सहजता के साथ कहा था : यू हैव फिनिश्ड। तुम मन ही मन कुछ बुदबुदाते रहे, उसके बाद लालची कुत्ते की तरह पूंछ हिलाते-हिलाते ऊपर चले गये थे·····"

सोमनाथ से अब बरदाश्त नहीं हो पा रहा है। कोई कैसे उसके हाथ-पैर बांध, आग से लहकती सलाख जैसे शब्दों को उसके सीने में दाग रहा हो। यातना से छटपटाते सोमनाथ से अब बरदाश्त नहीं हो पा रहा है।

"प्लीज····योर ऑनर प्लीज····मेरी उस समय की हालत की आप कल्पना कर सकते हैं।" उसके यह कहते ही काले गाउन के काले कापालिक ने सिर उठाकर देखा था।

कातर सोमनाथ कहने लगा था, "लाख प्रयत्न करके भी मुझे नौकरी नहीं मिली, घर पर मेरी कोई इज्जत नहीं थी। मैं जिसे प्यार करता था उसी तपती ने मुझे नोटिस दिया था। अपनी भाभी के द्वारा इकट्ठे किये गये पैसों को मैंने व्यवसाय में बर्बाद कर डाला था। उस समय मिस्टर गोयनका ही मेरी एकमात्र उम्मीद थे। वे ही उस बार मुझे केमिकल्स का एक बड़ा-सा ऑर्डर देकर जिन्दा रख सकते थे। मगर उसके पहले उन्हें 'माल' चाहिए था—जन-संपर्क विशेषज्ञ नटवर मित्तिर ने अपने लम्बे अनुभव के बल पर कहा था : लड़की के तोहफे के बिना गोयनका किसी भी हालत में ऑर्डर नहीं देगा और मुझे कुछ करना भी नहीं है। ऐज ए स्पेशल केस मिस्टर नटवर मित्तिर ने खुद ही मेरे लिए सारा इन्तजाम कर दिया था।"

"रहने दो, बहुत हो चुका। लेक्चर तुम अच्छा दे लेते हो, सोमनाथ। उसके पहले मेरे जिस वाक्य को तुमने बीच में ही काट दिया है, उसे पूरा कर लेने दो।"

"बहुत खूब! सुपर्ब!! तुम्हारी कोई मिसाल नहीं, मिस्टर सोमनाथ बैनर्जी! तुम उस भूली-सभ्य गुड़ी-गुड़ी भाभी के देवर सोमनाथ ही हो। तुम तो मात्र निमित्त हो—तुम्हें कुछ भी मालूम नहीं—यहां तक कि तुम्हारे तोहफे को भी मिस्टर नटवर मित्तिर ने सजा दिया था। अन्तिम क्षण में ही कुछ गड़बड़ हो गयी। उस समय लाचार हो तुमने ही पार्क स्ट्रीट में चरणदास के हाथ से कणा को·····"

"कणा को नहीं·····" सोमनाथ कराह रहा था।

"आई बेग योर पारडन। शिउलु। जानने के बावजूद तुम 'कणा' नाम को बरदाश्त नहीं कर पाते। खैर, उसे सजाकर, एडवान्स पेमेन्ट कर, ग्रेट इंडियन

होटल में गहराती शाम में तुम जाकर हाजिर हुए थे। शिउली का सर्वनाश करने के बाद गोमनका ने जब तुम्हें बुलाया था तो उस वक्त भूखे कुत्ते की तरह तुम दोमंजिले पर चले गये थे। तुम्हारी आँखों के सामने ही लुटी-पिटी शिउली सिर झुकाये होटल से बाहर चली गयी थी। तुमने उससे कोई बातचीत तक नहीं की थी। क्यों? इसलिए कि तुम भले मानस हो, सन ऑफ द्वैपायन बनर्जी डब्ल्यू० बी० सी० एस०। तुम्हारे प्राण तब सुदर्शन गोयनका के बुक-पॉकेट में उखड़ी-उखड़ी साँसें ले रहे थे। तुम कणा को देखकर भी अनदेखा कर गये थे क्योंकि तुम्हारा काम बन गया था। तुम सीधे मिस्टर गोयनका के श्री चरण-कमलों में स्वयं को निवेदित करने चले गये। गोयनका ने सन्तुष्ट होकर कहा था : मैं सैटिसफाइड हूँ—लीजिए यह रहा आपका परचेज आर्डर। महात्मा कॉटन मिल्स को अब आप ही हर महीने केमिकल्स सप्लाई कीजिएगा।"

"उफ्!" सोमनाथ अव्यक्त यातना से कराह रहा था।

मगर उसे छुटकारा नहीं मिल रहा था। काले गाउन का कापालिक जैसे अब भी कहे जा रहा हो, "परचेज ऑर्डर को पॉकेट के हवाले कर, बिजनेस में पाँव जमाकर, बाहर निकलने के बाद ही तुम्हें पता चला कि अपनी उन्नति के पागलपन में तुमने मित्र की बहिन को बेच दिया था।"'''कणा, कणा कहते हुए तुम नटवर मित्तिर को पीछे छोड़ते हुए पोर्टिको तक भागे-भागे चले आये थे। लेकिन तब कणा वहाँ कहाँ थी? तब तक तो कणा कलकत्ते के जनारण्य में शामिल हो चुकी थी, और खुद मरकर तुम्हें जिला गयी थी, क्यों मिस्टर सोमनाथ बैनर्जी।"

सोमनाथ ने सोचा था, वह आदमी शायद अब खामोश हो जायेगा। लेकिन अब भी उसे मुक्ति नहीं मिल रही थी।

उसके कानों में दुबारा आवाज आयी, "फाइन परफॉर्मेन्स मिस्टर बैनर्जी। सुपर एक्सेलेन्ट ऑपरेशन! तुम एकदम पाक-साफ रहे! तुम्हारे गालों पर एक भी खरोंच नहीं आयी। किस पवित्रता के साथ तुम एक बिजनेसमैन हो गये। तुम्हारे पिताजी और भाभीजी तक को पता न चला।"

"मुझे जिन्दा रहने दें'''प्लीज मेरी बात सुनिये। मेरे लिए कोई दूसरा उपाय नहीं रह गया था।" सोमनाथ ने दयनीय आवेदन किया था।

"जरूर-जरूर, सब कुछ सुनूँगा। लेकिन हाँ, इसके पहले, दुनिया में जिसे तुम सबसे अधिक श्रद्धा की दृष्टि से देखते हो, तुम्हारी उसी कमला भाभी को पूरी घटना बता दी जाये। उनकी राय '''"

कमला भाभी के नाम ने सोमनाथ के जिस्म पर बिजली के

काम किया था। "नहीं····प्लीज···आपके पैरों पर गिरता हूँ····मुझ पर रहम कीजिये।" वह परिणाम-भय से कातर था।

अँधेरे से घिरे सोमनाथ की आंखों के सामने अन्ततः प्रकाश का संकेत आ ही गया।

कमला भाभी की आवाज सुनायी पड़ रही थी। "ए सोम, क्या बात है ? कमरे का टेवल-लैंप बुझाकर इस तरह भुतहे अँधेरे में क्यों बैठे हो ?"

लाल साड़ी पहने कमला भाभी चाय की प्याली हाथ में लेकर खड़ी थीं। भाभी ने खुद ही दीवार की बत्ती जला दी थी।

कमला भाभी ने देखा, सोमनाथ उनकी ओर फटी-फटी आँखों से ताक रहा था।

"क्या हुआ तुम्हें ? इस तरह क्यों ताक रहे हो सोम ?"

सोमनाथ ने हँसने की कोशिश की थी। "आप कुछ समझ रही हैं भाभी जी ?"

"उफ् ! समझूंगी क्या ? तुम्हें समझना क्या इतना आसान है ?" कमला भाभी ने शिकायत की थी।

सोमनाथ बेवकूफ की तरह हँस रहा था।

तभी भाभी ने पूछा था। "हिसाब मिला ?"

"बड़ा ही गड़बड़ हिसाब है भाभी जी। बगैर हेर-फेर किये इस युग में व्यवसायियों का हिसाब कभी नहीं मिलता।"

"तो रोशनी बुझा दूं ? अँधेरे में ही शायद तुम्हारा हिसाबी दिमाग तेज काम करेगा ?"

कमला भाभी स्विच की ओर बढ़ गयी थीं। लेकिन अँधेरे की खाई में दुबारा प्रवेश करने में सोमनाथ को बेहद भय महसूस हो रहा था। उसने दयनीय स्वर में अनुरोध किया, "प्लीज भाभीजी, बत्ती मत बुझाइए।"

•

बाहर अब बादलों की गड़गड़ाहट और पागल दरख्तों में आपस में होड़ लग गयी थी। सोमनाथ के कमरे से बाहर आकर कमला भाभी चुपचाप बालकनी में आकर खड़ी हो गयीं। उनके पतिदेव आज बम्बई गये हुए हैं। लौटने में दो दिन लगेंगे।

कमला भाभी ने सोचा, आज ही वह सोमनाथ से विचार-विमर्श करेंगी। सोम से कहने लायक बहुत सारी बातें जमा हो गयी हैं।

अस्वस्थ हालत में बाबूजी ने भी कमला से कहा था, "बहू, तुम्हीं कोशिश करो न ? एकमात्र तुम्ही से वह बातचीत करता है। मुझसे तो लड़कों का जैसे संपर्क ही स्थापित नहीं हो सका, वे मेरे सामने हमेशा स्टैच्यू-से बने रहते हैं। जैसे मैं कोई शेर होऊँ।"

"नहीं बाबूजी, आप यह सब सोचकर मन उदास न करें। लड़के आपका सम्मान करते हैं।" कमला ने ससुर को सांत्वना दी थी।

"लड़कों से मैंने सम्मान की चाह नहीं की थी, बहू। मैंने उनका मित्र बनना चाहा था। इसके अलावा जो चाहा था, मुझे वह मिल गया है। मुझे कोई क्षोभ नहीं है। मैंने चाहा था, मेरे लड़के वंश की मर्यादा कायम रखते हुए नामी-गिरामी आदमी बनें। सोम के कारण ही मैं जिन्दगी के आखिरी दौर में चिंतित था। लेकिन वह भी इस तरह अपने पैरों पर खड़ा हो जायेगा, इसकी भी मैंने कल्पना नहीं की थी। मृत्यु-पथ के पथिक द्वैपायन जरा रुक गये थे।

थोड़ा-सा पानी पीकर बोले थे, अब तुम्हारी सास के सामने खड़े होने में मुझे तनिक भी भय नहीं लगेगा, बहू। प्रतिमा लाख कोशिश करेगी तो भी मेरी कोई गलती नहीं निकाल पायेगी। सिर्फ एक ही काम बाकी बच गया है, ससुर की ओर से तुम्हीं इस जिम्मेदारी को अपने सर पर ले लो न।"

कमला की आँखों में आँसू भर आये थे। द्वैपायन ने कहा था, "कब क्या हो जाये, कहा नहीं जा सकता, बहू। सोम की शादी करा दो। बहुत देर हो गयी है, मुझे कहीं दोषी न बनना पड़े।"

"आप यह सब क्या कह रहे हैं, बाबूजी ?" कमला ने बाबूजी को संयत करने की कोशिश की थी।

लेकिन द्वैपायन ने बाधा पर कान नहीं दिया था। बोले थे, "कब क्या हो जाये, कुछ ठीक नहीं। तुम्हें आदेश दिये जा रहा हूँ, अशौच के कारण सोमनाथ की शादी में कोई रुकावट नहीं आनी चाहिए। तुम कहना, पिता की यही आज्ञा है, शादी में एक दिन की भी देर नहीं होनी चाहिए। तभी प्रतिमा और मैं, चाहे जहाँ भी रहें, सुखी हो पायेंगे।"

बरामदे पर खड़ी हो पिछले कई महीनों की स्मृतियाँ कमला भाभी दुहरा गयी। बहुत उद्विग्नता के बाद सोमनाथ खड़ा हो सका था। दिन अब भी याद

है—पहला आषाढ़। माँ का मृत्यु दिन और सोमनाथ का जन्म दिन। सोमनाथ कामयाबी के साथ लौट आया, उसके नौकरी की तलाश के अध्याय का अन्त हुआ। अब वह नौकरी के लिए उम्मीदवार नहीं बनेगा। व्यवसाय में उसे एक सलीके का आदेश प्राप्त हो चुका था।

द्वैपायन स्वयं भी बहुत खुश हुए थे। उसी दिन उन्होंने बहू को अपने पास बुला भेजा था। आराम-कुरसी पर लेटे-लेटे द्वैपायन ने कहा था, "आज बहुत ही हल्केपन का अहसास हो रहा है, बहू। छाती पर से जैसे डेढ़ मन वजन का पत्थर हट गया।"

बहू समझती हैं कि बाबू जी बेहद खुश हैं। इस मामले में कमला नीरव श्रोता की भूमिका अदा करती हैं। बाबू जी की किसी बात का विरोध करें, यह वे सोच भी नहीं सकतीं।

द्वैपायन बोले, "जानती हो, मेरे लिए सबसे ज्यादा खुशी की बात कौन-सी है ? सोमनाथ ने अपनी चेष्टा ही से अपनी समस्या का निदान खोज निकाला है। तुम सोम से कहो मुझे खूऽब खुशी हुई है। बहू, ईश्वर की लीला भी कैसी है, देखो न—इतनी बड़ी समस्या का समाधान इतने सलीके से हो जायेगा, यह बात कल तक मेरे ध्यान में भी नहीं आई थी। नारायण-नारायण," द्वैपायन ने हाथ उठाकर गृह-देवता को प्रणाम किया था।

"सोम कहाँ है ? नीचे शोरगुल कर रहा है ?" द्वैपायन आज से ही सोमनाथ को पूरी आजादी देना चाहते थे। उसे जो मर्जी हो, करने दो। घर लौट कर बाबूजी को किसी तरह व्यवसाय जमने की सूचना देकर सोमनाथ जो लापता हुआ तो उसके बाद फिर उससे मुलाकात ही नहीं हुई।

बाबूजी की बातचीत का तरीका देखकर कमला ने समझ लिया था कि बाबूजी की इच्छा है, लड़का उनके पास आकर बैठे। उनसे व्यवसाय के बारे में दो-चार बातें करे। सरकारी दफ्तरों, विलायती मर्चेन्ट ऑफिसों, कल-कारखाने वगैरह के संबंध में द्वैपायन की कुछ निजी धारणाएँ हैं पर व्यवसाय के संबंध में उन्हें तनिक भी जानकारी नहीं है।

सोमनाथ की तलाश में निकलने पर बुलबुल के द्वारा पुकारे जाने पर कमला खुद जाकर वह अजीब-सा दृश्य देख आई थी। सोमनाथ के कमरे की बड़ी बत्ती बुझी हुई थी। छोटा-सा एक नाइट लैम्प जल रहा था। और आज की इस स्मरण-योग्य सफलता के बावजूद, अपनी सालगिरह के दिन भी उनके स्नेह का पात्र देवर तकिये में मुंह छिपाये सोमनाथ रो रहा है।

रोने की बात का पता पहले बुलबुल को ही चला था और खुद की समझ

में कुछ न आने के कारण ही उसने कमला का ध्यान उस ओर आकर्षित किया था।

पहला आषाढ़ सोमनाथ की माँ का मृत्यु-दिन भी तो है। कमला ने माँ से सुना था, बड़े होने पर अगर कोई रोये तो उसे रोकना नहीं चाहिए। इसीलिए कमला भाभी ने बुलबुल से कहा था, "शायद माँ की याद आ रही है। तुम लोग उसे तंग मत करो। उसे रो लेने दो।"

थोड़ी देर बाद ही कमला भाभी द्वैपायन की बुलाहट पर ऊपर चली आई थी। देवर के रोने की बात उन्होंने ससुर को नहीं बतायी थी। रोना बड़ी ही संक्रामक चीज होती है—बहुत साल पहले इसी तिथि पर मौत चुपके से आई थी और सबको निःस्व बनाकर चली गई थी। जन्म के आनन्द की उतनी याद नहीं रहती लेकिन मृत्यु की याद तीव्रतर हो उठती है।

कमला ने कहा था, "सोम शायद बेहद थका हुआ है। बत्ती बुझाकर चुपचाप लेटा है।"

द्वैपायन ने कहा था, "मेरी धारणा थी, सोमनाथ जिस दिन कामयाब होगा और उस दिन वह बेहद शोर-शराबा मचायेगा। बहुत दिनों के बाद तब मैं उसके बचपन का खुशहाल चेहरा देख पाऊँगा। परन्तु अब देख रहा हूँ, बात उल्टी ही है। आदमी के हिसाब में भी कितनी गलती हो जाया करती है।"

"आज भले ही उसको थोड़ी थकान हो लेकिन कल ही उसकी खुशमिजाजी फिर लौट आयेगी बाबूजी।" कमला ने जोरदार स्वर में आश्वासन दिया था।

यद्यपि बाबूजी उससे निश्चिन्त तो नहीं हो सके थे लेकिन वह निराश भी नहीं हुए थे। होंठ बिदकाकर हाथ हिलाते हुए शान्त स्वर में कहा था, "देखो बहू, इस घर के किसी आदमी के बारे में जोर देकर कुछ भी नहीं कह सकता। किसी समय भी कुछ भी हो सकता है। ये लोग हमेशा अपने आपको मेरी निगाह से छिपाकर रखना चाहते हैं। दुख के वक्त भी मुँह फेर लेते हैं और खुशियों के मौकों पर आँसू बहाते हैं।"

ससुर की आखिरी बात पर कमला चौंक उठी थी। उनकी और बुलबुल की बातचीत क्या बाबूजी यहीं बैठे-बैठे सुन रहे थे? असंभव तो कुछ भी नहीं है। बुलबुल की आवाज भी बड़ी तेज है। किसी जमाने में वह खयाल की तालीम लिया करती थी।

कमला भाभी पत्थर की मूर्त्ति की तरह खड़ी थीं। द्वैपायन को बहू की हालत समझ में आ गई। आँखों से चश्मा उतारते हुए बोले, "तुम फिक्र मत करो। दूसरे घर से आकर इस घर के लिए तुम कितना दुःख बर्दाश्त करोगी?

जानती हो वहू, इस दुनिया में सब कुछ होता है। सबसे बड़े दुःख की घड़ी में भी आदमी हँसता है और खुशियों की घड़ी में उसे रुलाई आने लगती है।"

यह बात झूठी नहीं थी, कमला को इसकी सबूत भी कुछ दिन बाद ही मिल गया था। बहुत सारी तकलीफों के बाद जब इस घर में सुख का वास होने जा रहा था तभी बाबूजी अचानक विदा हो गये।

आसन्न मृत्यु की पदध्वनि बाबूजी की सतर्क दृष्टि को धोखा नहीं दे सकी थी। उस दिन दोपहर के समय घर में कमला के अलावा कोई दूसरा व्यक्ति नहीं था। बड़ा लड़का दफ्तर गया था, अभिजित दुर्गापुर में था और सोम व्यवसाय के सिलसिले में कनोरिया कोर्ट गया हुआ था। एकमंजिले से दोमंजिले पर दौड़ती हुई आकर कमला ने ही ससुर को सँभाला था और मोक्षदा की माँ को डॉक्टर बुला लाने भेज दिया था।

द्वैपायन एकाएक प्रफुल्लित हो उठे थे। कहा था, "वहू अब शायद मैं विदा हो रहा हूँ। वहू, मौत से मैं बहुत डरता था। लगता था, मौत अँधेरा, लोड शेडिंग जैसी ही कोई चीज है। लेकिन अभी, इस क्षण मुझे डर नहीं लग रहा है, वहू। मैं प्रतिभा को भी देख पा रहा हूँ। लाल किनारी की टसर की साड़ी पहने वह आकर खड़ी हो गई है। मुझे ले जायेगी—शायद अब मुझे छुट्टी मिल गई है।

"प्रतिभा, जरा-सा रुक जाओ। सोम के बारे में वहू से एक बार फिर तो कह लूँ मैं।"

"वहू, जितनी जल्दी हो सके तुम उसे गृहस्थ बना देना। इसके कारण मेरे अशौच को भी बाधा मत मानना।"

इसके बाद ही बाबूजी होश खो बैठे थे। डॉक्टर साहब आ गये थे पर उसके बाद फिर होश लौटकर नहीं आया। तीसरे पहर बड़े और छोटे लड़के की उपस्थिति में द्वैपायन सोये हुए शिशु की तरह अमृतलोक के रास्ते में अनन्त यात्रा पर निकल पड़े थे।

द्वैपायन की अन्तिम इच्छा और अनुरोध अब भी काँटे की तरह कमला के सीने से विंधा हुआ था।

मृत्यु में वैराग्य और विवाह में बंधन है; पारलौकिक कर्म में त्याग और

विवाह में भोग की गंध है—इसीलिए शोक के प्रथम अध्याय में कमला ने ससुर की अन्तिम इच्छा की चर्चा न तो सोमनाथ से की, न ही किसी दूसरे आदमी से। लेकिन वक्त तेजी से गुजरता जा रहा था। अब और देर नही की जा सकती।

कमला भाभी को भय होता है, बाबूजी और माँ दोनों ही किसी दिन हो सकता है, एक ही साथ सपने में आकर उपस्थित हो जाये।

"माँ पूछेंगी : बहू वो क्या तुमसे कुछ कह गये थे ? या फिर जाने के वक्त भी माल-असबाब सहेजने की व्यस्तता में असली बात भूल गए थे ?"

आज बरसात से मुखर इस रात में कमला भाभी को खासी बेचैनी महसूस हो रही थी। सोम के पास वह क्या अभी हो जायें ? सोम क्या फिर मोटे-मोटे हिसाब के खातो में डूब गया।

उस समय सोम के कमरे के अन्दर न जाकर कमला भाभी ने अच्छा ही *किया था। वह कुत्सित कापालिक तभी जरा देर पहले खाते की ओट में ओझल* हुआ था।

लेकिन सोमनाथ काम मे अपने मन को तल्लीन नही कर पा रहा था। तरह-तरह की असंलग्न चिन्ताओं के बादल उसे घेरते जा रहे थे। बाहर इतनी जोरो की बारिश हो रही थी मगर सोमनाथ का अन्तर्मन शुष्क मरुभूमि में परिणत होता जा रहा था। व्यर्थ, पंगु, संगीहीन, हताश्वास, निःस्व सोमनाथ का गला सूखकर रूखे काठ जैसा हो रहा था, आसपास कही बूँद-भर भी तो पानी नही था।

बारजे में खड़ी कमला भाभी को इन बातो का पता नही चला। उन्हें सिर्फ इतना ही पता चला कि सोम के कमरे से ट्रांजिस्टर की आवाज आ रही थी।

आकाशवाणी के लोगो मे रुचिबोध है। कमला भाभी ने सुना, कोई ईयर वाहित स्वर में अपने आपको निःस्व करके गा रहा था—'ऐसे दिन मे कहाँ उसे खोजा जा सकता है, ऐसी घनघोर वृष्टिधारा में।"

जोधपुर पार्क के बैनर्जी भवन के बारजे पर खड़ी कमला भाभी चुपचाप सोचती रही। कमरे के अन्दर बिजली बत्ती की मद्धिम रोशनी मे सोमनाथ बैनर्जी एकान्त मे अपने आपसे विचार-विमर्श करता रहा।

"सुकुमार मित्र, बी० ए० (सी० यू०), हाउस ईटर, एफ० बी० सी०, सन
क दशरथ मित्र, ब्रदर ऑफ कणा मित्र एण्ड अदर्स, फ्रेण्ड ऑफ सोमनाथ
र्जी, रजिस्टर्ड एट इम्प्लॉएमेन्ट एक्सचेंज विथ अनलिमिटेड लाइबिलिटी ।"
त दिनों पहले अपने मित्र सोमनाथ को लिखे गये एक पत्र के शीर्षक में सुकु-
र ने इसी तरह का अपना परिचय दिया था ।

परिचय देखकर सोमनाथ ने सुकुमार को कसकर लथेड़ा था । "अबे, यह
कस किस्म का पागलपन है ?"

सुकुमार के दिमाग में गड़बड़ी आने के लक्षण तब भी ठीक-ठीक पकड़ में
नहीं आये थे, इसीलिए दिमाग खराब होने का मजाक किया था ।

सुकुमार छोड़नेवाला जीव नहीं । उत्तर दिया था, मुझसे जीत सकना
मुश्किल है । बड़े-बड़े डॉक्टर और नामी-गरामी प्रोफेसरों का लेटरहेड तूने नहीं
देखा है ? उसमें कितना-कुछ लिखा रहता है । तो फिर मैं ही क्यों पीछे रहूँ ?
डॉक्टर लोग कैलकटा युनिवर्सिटी के ग्रेजुएट हैं, मेरे साथ भी यही बात है ।
उन लोगों के पास रजिस्टर्ड नंबर रहता है, मेरे पास भी इम्प्लॉएमेन्ट एक्सचेंज
का नंबर है । सोच रहा हूँ, अब पूरा रजिस्टर्ड नंबर ही लेटरहेड में छपवा लूँ ।"

"उफफोह सुकुमार, तुझसे पार पा सकना मुश्किल है । सब तो समझ गया
लेकिन यह 'हाउस-ईटर' कौन सी बला है ?"

"तेरे दिमाग में कम-से-कम ६७% गोबर ही है !" सुकुमार ने जवाब
दिया था । डॉक्टरों का पैड तूने नहीं देखा कि उसमें लिखा रहता है, एक्स-
हाउस-सर्जन अमुक मेडिकल हास्पिटल । मैं हाउस सर्जन नहीं, 'हाउस-ईटर'
हूँ । सच्ची बात ही लिख दी है । कैलकटा युनिवर्सिटी का रबर स्टैम्प रहने
के बावजूद घर का आटा गीला कर जंगल की भैंस भगाता रहता हूँ—'हाउस-
ईटर' एण्ड फॉरेस्ट बफलो चेजर, एम० आर० सी० एस० की तरह संक्षेप में
एफ० बी० सी० ।"

सुकुमार ने कहा था, "कुछ पैसा मिल जाता तो एकाध हजार विजिटिंग
कार्ड छपवा लेता । नौकरी के धंधे के लिए सभी जगह जाकर अपनी क्रूसि-
फल पारिवारिक स्थिति का डिस्क्रिप्सन देकर कहना नहीं पड़ता कि सर मेरे
पिताजी रिटायर हो गये हैं, मेरी तीन बहिनें अविवाहित और दो भाई नाबा
लिग हैं ।"

"तेरी बात सुनकर सचमुच ही हँसने का मन करता है, सुकुमार । क्रूसि
फल नहीं, क्रूशल । अपने लेटरहेड में कोई अपनी बहिनों का विवरण छपवा

हो, ऐसा तो सुनने में नहीं आया। तेरे नाम को तो गिनेस बुक ऑफ़ रेकार्ड में छपाया जा सकता है, "सोमनाथ ने कहा था।

"दिमाग खपाना पड़ता है, समझे!" सुकुमार ने आत्म-संतोष प्रकट किया था। एटलीस्ट तीन दिनों तक सावधानी से इसके बारे में सोचना पड़ा है। अगर लिखूं तीन वयस्क कुमारी बहिन और दो नाबालिग भाइयों का बड़ा भाई हूँ तो फिर बहुत सारे नौकरी देने वाले घबरा जायेंगे। सोचेंगे, इस साले को नौकरी देने से तो यह दो महीनों में ही तनख्वाह बढ़ाने के लिए दबाव डालने लगेगा। इसीलिए छपा रहेगा—ब्रदर ऑफ कणा एण्ड कंपनी—'अश्वत्थामा हतो नरो व कुंजरो'। सच्ची बात भी कहना हो गया, साथ ही साथ पार्टी को घबराने का मौका नहीं दिया।

"इस तरह के मुल्क में रहने की वजह से ही अभी तक इस ब्रेन की कद्र नहीं की गयी। किसी फॉरेन कण्ट्री में होता तो जमाना सुकुमार मित्तिर को सिर आँखों पर रखता।" सुकुमार हँस पड़ा था।

मानसिक चिकित्सालय में आने पर भी सुकुमार को यह सब बातें अच्छी तरह याद थीं। नौकरी के लिए पागल हो वह कलकत्ते के ऑफिस मुहल्ले में मारा-मारा फिरता था; सुकुमार यह सब बात भी भूला नहीं था। सिर्फ बीच की कुछ स्मृतियाँ ही विस्मरण की मलिन धूप-छाँह में धुंधली पड़ गयी हैं। जैसे सिनेमाघर के परदे पर गतिमान तसवीरें एकाएक धुंधली हो जाती हैं। प्रोजे-क्शन रूम के आर्कलैंप की परमायु किसी कारणवश समाप्त हो जाती है और अचानक हॉल में उत्कंठित दर्शकों की चिल्लाहट गूंज उठती—फोकस प्लीज।

फोकस। हाँ, फोकस शब्द ही ठीक रहेगा। सुकुमार मित्तिर अपनी स्मृतियों पर जैसे ठीक से फोकस नहीं डाल पा रहा था।

उसे इतना ही याद आ रहा है कि एक दिन तीसरे पहर मानसिक चिकि-त्सालय के सामने कणा रिक्शे से नीचे उतरी थी।

ऑफिस रूम के पास कणा को देखकर सुकुमार आश्चर्य में आकर उसकी ओर देखने लगा था।

"तुम्हें क्या हुआ? भैया, इस तरह ताक क्यों रहे हो?" कणा को जरा बेचैनी महसूस हुई थी। हो सकता है, उसे मालूम हो चुका हो कि फटी-फटी निगाहों से ताकना ही उसके भैया के मानसिक रोग का लक्षण हो।"

"तुझे ही देख रहा हूँ।" सुकुमार ने कहा था। "देखने में तू कितनी खूब-सूरत लग रही है।"

भैया की प्रशंसा का कणा ने कोई विरोध नहीं किया था। वह शान्तिपूर्वक अपने भैया की ओर ताक रही थी।

भैया ने कहा था, "मित्तिर घर का लो-कैलरी अड्डा तुझे रोककर नहीं रख सका कणा। वेरी गुड।"

इस बार भी कणा ने कुछ नहीं कहा था।

सुकुमार ने कहा था, "आज तू बड़े सलीके से सजकर आयी है, कणा तेरी चोटी, माथे की बिंदी, आंखों का काजल, गले का हार, ब्लाउज, साड़ी की किनारी—सब कुछ बहुत ही मैच कर रहा है। सब कुछ जैसे 'मेड फार ईच अदर' हो।"

सुकुमार नहीं जानता कि क्यों कणा इस तरह सज-सँवरकर भैया को देखने मानसिक चिकित्सालय आयी है। उसके पास जरा भी वक्त नहीं है। भैया को देखकर कणा यहां से सीधे पार्क स्ट्रीट के चरणदास के टेलीफोन स्कूल में चली जायेगी। वहां सलकिया, शिवपुर, लिलुआ, श्रीरामपुर, दत्तपुकुर और हावड़ा से बहुत सारी लड़कियां आती हैं। आपस में बेहद प्रतिस्पर्धा की भावना है, जिन्दा रहने के प्रबल तकाजे के कारक ही वहां सजने-सँवरने की पुरजोर प्रतियोगिता चलती रहती है।

यह सब बात अन्तर में जमा करके रखने के अलावा कणा के लिए दूसरा उपाय ही क्या था? इसलिए बेवकूफ की तरह भैया की बातें सुनने के सिवा उसके पास और कोई चारा नहीं था।

कणा भैया के चेहरे की ओर ताकती रही। भैया को मानसिक चिकित्सालय का मरीज कौन कह सकता था?

कणा की आंखों में पानी भर आया था। लेकिन यहां रोना वर्जित है। डॉक्टर मजूमदार ने कहा था, डिप्रेशन का मरीज है, अतः आप लोग डिप्रेस्ड भाव नहीं दिखायें। ऐसा होने से मरीज के स्वस्थ होने में देर लगेगी।" इसीलिए कणा ने चेहरे पर झलमलाती हँसी लाने का अभिनय किया था।

"तुम अच्छा महसूस कर रहे हो?" कणा ने कहा था। "तुम लोग घर पर इस तरह 'डल' माटी की मूरत जैसी क्यों रहती हो? तुम लोग चाहो तो कितनी खूबसूरत हो सकती हो। घर से बाहर निकलती हो तभी तुम लोगों का यह भाव समझ में आता है।"

रुलाई के वेग को किसी तरह दबाकर कणा मुसकरा दी थी।

सुकुमार ने कहा था, "तू इस साड़ी में बड़ी फब रही है कणा। नौकरी मिलने पर पहले महीने की तनख्वाह में तुझे जो कपड़ा खरीद देने की बात मैंने

सोची थी, उस कपड़े में यह कपड़ा हू-बहू मेल खा रहा है। हस्पताल के शो-केस में मैं उस कपड़े को देख भी आया था, कणा। सोचा था, उन लोगों से 'रिक्वेस्ट' करूँगा कि उस कपड़े को शीशे के केस से हटाकर अन्दर रख दें, मैं बहुत ही जल्द इसे ले जाऊँगा।"

"भैया, मैं उसी कपड़े को तो पहने हूँ फिर तुम्हारे लिए दुख की कौन-सी बात है?"

"मुझे दुख हो सकता है क्योंकि उसी कपड़े को तू पहने है हालांकि मैं लाकर दे नहीं सका। लेकिन मुझे यहाँ एक बहुत बड़ी सुविधा हासिल हुई है।"

"कौन-सी सुविधा?"

"यहाँ पता नहीं क्या-क्या दवा देता है कि मुझे किसी तरह का दुख ही नहीं होता। दिमाग हमेशा फ्रिज में रखे दही की मानिन्द ठंडा रहता है। लगता ही नहीं कि यहाँ चाय के पानी की तरह गरम लोहू भी कभी खौल रहा था।"

कणा अपने साथ कुछ फल और मिठाइयाँ ले आयी थी। सुकुमार को भी वह सब खाने में कोई बुरा नहीं लग रहा था।

कुछ दिन पहले सब कुछ आहिस्ता-आहिस्ता वैसा-वैसा तो होता आ रहा था। बाबूजी का दिमाग यों भी गरम रहता था मगर तब उसकी गर्मी बढ़ गयी थी, माँ के मुखड़े पर घनी अमावस का अँधेरा छा गया था, छोटी बहिन तक सुकुमार की बात नहीं मानती थी, बाहर से लौटकर चिल्लाने पर भी दस मिनट तक दरवाजा खोलने की नौबत नहीं आती थी। उसके बाद न जाने क्या हुआ कि लोग सुकुमार को ले आये। कौन-कौन उसे यहाँ ले आये, किस तरह ले आये—रिक्शा, बस या टैक्सी से ले आये, सुकुमार को कुछ भी तो याद नहीं।

इतना ही याद आ रहा है कि उसने बाबूजी के चेहरे को दो-चार बार देखा था। बाबूजी का मिजाज पहले जैसा नहीं। बिजली की गरम इस्तिरी अचानक ठंडी हो गयी थी। बाबूजी मीठे स्वर में पूछ रहे थे, "कैसे हो मुन्ना?"

यह बात याद आते ही सुकुमार हँसने लगा था! कणा की समझ में नहीं आया था कि एकाएक इस हँसी का कौन-सा कारण हो सकता था। पूछा था, उसने "भैया तुम हँस क्यों रहे हो?"

"हँसने का कारण न रहने पर भला सुकुमार मित्तिर हँसेगा ही क्यों? हँसी आजकल इतनी सस्ती चीज नहीं रही, कणा।"

कणा का चेहरा अज्ञात आशंका से दयनीय जैसा हो गया। सुकुमार ने कहा, "ऐसा सोचा भी नहीं जा सकता। बाबूजी ने मुझसे कहा : कैसे हो? ऐसा लगा जैसे कान से खजूर के गुड़ का सन्देश खा रहा होऊँ।"

सुकुमार जरा रुका। "हो सकता है हम लोग खजूर-गुड़ के सन्देश का टेस्ट भूल चुकी हों। लेकिन झूठी वात क्यों कहने जाऊँ कणा, मैं अपने फ्रेण्ड सोमनाथ के घर पर कई वार उस तरह का सन्देश खा चुका हूँ। तेरी कसम, बड़ी ही अच्छी फैमिली है। तुझे साथ ले चलूँ तो उसकी भाभी बहुत ही आदर-खातिर करे।"

क्या हुआ ? कणा इस तरह चिहुँक क्यों उठी ? उसका चेहरा आग से जली लकड़ी की हांड़ी की तरह काला क्यों पड़ गया ?

सुकुमार बीमारी की इस हालत में ज्यादा दिमाग नहीं खपा पाता है। लेकिन उसने अन्दाज लगाया, कणा के सम्मान को चोट लगी है। इस यादवपुर कॉलोनी में जो जितना ही गरीब है उसमें सम्मान की भावना उतनी ही अधिक है। गरीब की लड़की कणा को वहुत दिनों से सन्देश खाने को नहीं मिला है, मगर वह सन्देश खाने सोमनाथ के घर क्यों जायेगी ?

कोई दूसरा वक्त होता तो सुकुमार कणा के सम्मान के लिए इतनी परवाह नहीं करता। लेकिन अभी वह कणा के चेहरे पर तनिक भी दुख देखना नहीं चाहता। सुकुमार को दुख से भय लगने लगा है। सुकुमार चाहता है, उसके भाई-वहिन, पिता-माता, दोस्त-मित्र, अपने-पराये, दुनिया के जो लोग जहाँ भी हैं—जीवाः, खगाः, नगाः, सभी खूब सुख से रहें, अच्छी तरह रहें।

सुकुमार ने तत्क्षण कहा, तू अन्यथा मत लेना, कणा। सोमनाथ के घर पर सिर्फ संदेश खिलाने के लिए तुझे ले जाने की वात ही पैदा नहीं होती। उन-लोगों ने तुझे इनवाइट ही कहाँ किया है ?

फिर भी कणा के गुस्से में कोई कमी नहीं आयी। उसके चेहरे पर जरा भी मुसकान की छाया नहीं झलकी। सुकुमार ने ही फिर कहा, "समझ गया, तेरे सम्मान को वेहद ठेस पहुँची है। इनवाइटेड होने पर भी तू सोमनाथ के यहाँ सन्देश खाने नहीं जायेगी। क्यों ?

कणा ने अव वैग से रूमाल निकाल मुंह पोंछ लिया।

उफ् ! इत्ती-सी लड़की, मगर साज-सज्जा के कितने उपकरण हैं इसके पास ? सुकुमार की जेव में तो अकसर ही रूमाल नहीं रहता। और कणा की कमर से साड़ी की कमर से साड़ी की किनारी तक मैच करता हुआ एक नीला जनाना रूमाल झांक रहा है। इसके अलावा वैनिटी वैग से भी एक रूमाल निकालकर कणा ने अपना मुंह पोंछा है।

"अरे, इतने-इतने रूमालों को लेकर क्या करती है ?" सुकुमार पूछता है।

"छोटा मेक-अप वगैरह करने के लिए है और वड़ा मुंह पोंछने के लिए।"

"ऐसी हालत में कम-से-कम और दो रूमालों की जरूरत है।" सुकुमार हिसाब करने लगा। बस-ट्राम की सीट झाड़कर साड़ी के बचाव के लिए एक और भी रूमाल चाहिए; इसके अलावा सुँघनी लेने की आदत हो तो चौथा रूमाल चाहिए नाक पोंछने को।

लेकिन कणा का मूड स्वाभाविक नहीं हो रहा था। उसने कितने सुन्दर ढंग से हँसते हुए कहा था, "भैया, तुम कैसे हो?" उसके बाद फिर न जाने, क्या हो गया।

सुकुमार अभी अपनी बहिन के चेहरे पर दुख या क्रोध नहीं देखना चाहता। यही बहिन, यही कणा तो हर रोज उसे देखने आती है।

"कणा आज तू खूब सुन्दर दीख रही है", सुकुमार ने दुबारा सस्नेह कहा।

कणा अनमनेपन के साथ बात को पचा गयी।

सुकुमार को थोड़ा दुख हुआ। "मैं मेंटल हॉस्पिटल का पागल हूँ, मेरी बात की कीमत ही क्या? मगर कणा तू आहिस्ता-आहिस्ता बेहद एट्रैक्टिव होती जा रही है। तुझे देखकर कौन उल्लू का पट्ठा कहेगा कि तू टीन की चाल के हाफ-पक्के मकान में रहती है?

कणा ने जरा भी क्रोध का प्रदर्शन नहीं किया। पहले तो यह सब बातें कहने से कणा लहक-सी उठती थी, लेकिन आजकल उसमें एक नया आत्म-विश्वास पैदा हो गया था। सिलवर टॉनिक ऐसी ही वस्तु हुआ करती है, सुकुमार मन ही मन सोचता है। सुकुमार ने सुना है, कणा ने अपने लिए एक नौकरी ढूँढ़ ली है। कणा नौकरी कर रही है तो फिर उसके आत्म-विश्वास में वृद्धि क्यों नहीं होगी?

कणा कलाई में बँधी घड़ी की ओर ताक रही थी। सुकुमार इस कलाई-घड़ी को पहले-पहल देख रहा था—उन लोगों के घर पर तो घड़ी की कोई गुंजाइश ही नहीं थी। सवेरे वक्त का पता लगाने के लिए बाबूजी सुकुमार के छोटे भाई को पड़ोस के घर में ताक-झाँक करने के लिए भेज देते थे।

कणा की उपस्थिति सुकुमार को बहुत ही अच्छी लग रही थी। लेकिन कणा इस तरह घड़ी की ओर क्यों ताक रही है?

"इतनी व्यस्त क्यों दीख रही हो?" सुकुमार ने जानना चाहा था।

वाह, ड्यूटी नहीं करनी है? न जाऊँगी तो कैसे चलेगा?" सच्ची बात कहने में भी कणा में इस तरह का असमंजस क्यों दीख रहा है? सुकुमार मन ही मन सोचने लगा, पर उसने प्रकट में कुछ भी कहा नहीं। क्या मालूम, —फिर गुस्सा हो जाये।

चरणदास कहता है, "गृहस्थ घर की लड़कियों की सहूलियत के खयाल से ही हम रात के नौ बजे के बाद स्कूल बन्द कर देते हैं। इससे हो सकता है, हमें पैसे का नुकसान हो, मगर हमारी लड़कियों की आबरू बची रहती है, यही हमारे लिए बहुत है।"

मानसिक चिकित्सालय से निकलकर यह सब बातें सोचने पर कणा का शरीर एक अजानी आशंका के कारण पसीने से भीग गया है। आज भैया के साथ उसे और कुछ देर तक रहने की इच्छा थी। लेकिन उपाय नहीं था। पार्क स्ट्रीट का कीमती वक्त जो बीता जा रहा था।

स्टेट बस के इन्तजार में सड़क पर खड़ी होने के कारण कणा और भी ज्यादा नर्वस हो गयी। अचानक जैसे उसे भैया की आवाज सुनायी पड़ रही थी। भैया जानना चाहता था, "तू क्या काम करती है?"

कणा को लगा, भैया के सामने झूठ बोलते हुए उसके मुँह में ताला लग गया था—वह किसी भी हालत में जबान नहीं खोल पा रही थी।

फिर भी कोई उपाय नहीं था। जबान चाहे न खुले मगर समय के सर्व-नाशक बंधन से कणा जैसी लड़कियाँ किसी भी हालत में छुटकारा नहीं पा सकतीं। कलकत्ते के जनारण्य में शाम उतर आयी थी, मांसखोर जानवरों के क्षुधार्त्त गर्जन से पार्कस्ट्रीट अब पूर्णतः मुखरित हो उठी थी।

दूर एक बस दिखायी पड़ी। वही बस कणा को इस शाम जहाँ बहाकर ले जायेगी वहाँ सबका जाना कोई जरूरी नहीं है। सोमनाथ और नटवर मित्तिर के साथ हम एकबार उस नरक के दर्शन कर ही आये हैं। उसी अँधेरे टेलीफोन ऑपरेटिंग स्कूल के गह्वर में हर रोज की नाईं आज भी कलकत्ता और मुफस्सिल की कितनी असहाय लड़कियाँ अपनी बर्बादी को बुलावा भेजेंगी, सुप्रतिष्ठित धनाढ्य नागरिकों के अलिखित कलंक के कंकाल-स्तूपों के अतिरिक्त और कहीं उसका हिसाब-किताब नहीं रहेगा।

चरणदास के ऑपरेटिंग स्कूल में भले ही कुछ भी हो रहा हो, एक बार और जोधपुर पार्क के बैनर्जी भवन में घूम-फिर आना बुरा नहीं रहेगा।

•

दुर्गापुर में कई रातें गुजारने के बाद बुलबुल आज तीसरे पहर फिर से जोधपुर पार्क लौट आयी है। कमला भाभी ने सस्नेह बुलबुल से कहा था, "इतनी

जल्दी क्यों लौट आयी ? और कुछ दिन वहाँ नहीं गुजार सकती थी। औरतों के लिए यही तो आजादी का वक्त होता है। शादी हो चुकी है और बाल-बच्चों को पढ़ाने-लिखाने की जिम्मेदारी भी नहीं है।"

बुलबुल ने जवाब दिया था, "सिर्फ आपसे ही सच्ची बात बता रही हूँ, दीदी। आयी नहीं, आना पड़ा। कंपनी के गेस्ट-हाउस में लगातार सात दिनों से अधिक रहने से पूरा खर्च उन्हें अपनी जेब से भरना होता न ?"

"कितना पैसा लगता भला ? देना पड़ता तो दे देते। उसके चलते स्वेच्छा से विरह की यातना भोगना यह कहाँ की अकलमन्दी है ?" कमला भाभी देवर और देवरानी की हिसाबी अक्ल की तारीफ नहीं कर सकीं।

बुलबुल बोली, "कंपनी के खर्च से दोनों जनों को दुर्गापुर से कलकत्ता बाई रोड से आने का एक सुयोग भी मिल गया। उन्हें दमदम एयरपोर्ट पर उतार आयी। दिल्ली ऑफिस में रिपोर्ट पेश करने जा रहे थे। और मैं यहाँ चली आयी। वक्त रहता तो वह आपसे मिलकर जाते, लेकिन रास्ते में ही इतना वक्त बर्बाद हो गया कि क्या कहूँ।"

"जिसके लिए वक्त है, वही साथ रहे तो वक्त कट ही जाता है।" देवरानी से मजाक करने में कमला भाभी को कोई झिझक नहीं हुई।

बुलबुल ने बड़े भैया के बारे में पूछताछ की। भैया फिर दौरे पर निकले हैं, यह सुनकर बुलबुल बोली, "आप सुनहले अवसरों की अवहेलना कर जाती हैं, दीदी। आप भैया के साथ क्यों नहीं जाती ? देखिएगा, बहुत ही अच्छा लगेगा और धीरे-धीरे पूरे मुल्क का देखना भी हो जायेगा।"

कमला भाभी फिर भी उत्साह या उत्सुकता नहीं दिखा पातीं। बुलबुल बोलीं, "आप शायद खर्च की चिन्ता कर रही हैं। लेकिन देखिएगा, कोई खर्च नहीं लगेगा। रिजिनल मैनेजर की बीवी साथ निकलेगी तो एक ही खर्च से दोनों का काम निकल जायेगा।"

"मैं पैसे की बात नहीं सोच रही हूँ बहिन," कमला भाभी ने उत्तर दिया। कमला पैसे की बात नहीं सोचतीं, यह बात इस घर के सभी को जान लेनी चाहिए। बुलबुल भी जानती हैं, सिर्फ मजाक करने के खयाल से इस प्रसंग की चर्चा की थी।

"कभी-कभी पति के साथ बाहर निकलने की इच्छा न होती हो, ऐसी बात नहीं। लेकिन निकलना चाहने से भी निकल नहीं पाती हैं। सोम बेचारे को अकेले छोड़कर कहाँ जाऊँ ?"

सोम की चर्चा छिड़ते ही बुलबुल सतर्क हो गयी। "अब उसका क्या हाल-चाल है ?" बुलबुल पूछती है।

"लगता है, मन लगाकर व्यवसाय कर रहा है। किसी-किसी दिन सवेरे ही निकल जाता है और आधी रात में वापस आता है।"

"और आपको चुपचाप दरवाजा खोलने के लिए बैठे रहना पड़ता है।" यह बात बुलबुल के मनोनुकूल नहीं है।

"मैं होती तो सदर दरवाजे पर गोदरेज नाइट लैच लगाकर रखती। जेब में चाबी रखो, जब जिसकी मर्जी हो, पॉकेट की चाबी से दरवाजा खोलकर अन्दर आओ। कुण्डी खटखटाकर छिटकनी खुलवाने का झमेला ही न रहेगा।"

बुलबुल को पता नहीं कि कुछ दिन पहले सोम ने स्वयं ही दरवाजे पर इस तरह की व्यवस्था कर ली थी। लेकिन इसका नतीजा कुछ भी नहीं निकला। कमला भाभी अन्दर से लैच लॉक करके रखती हैं, नतीजा यह हुआ है कि बाहर से चाबी काम ही नहीं करती। घण्टी बजानी ही पड़ती है और तब कमला भाभी स्वयं आकर दरवाजा खोल देती हैं।

यह व्यवस्था कमला भाभी के मनोनुकूल नहीं थी। बुलबुल से उन्होंने कहा, "माँ जिन्दा रहतीं तो क्या चाबी वाली इस व्यवस्था से कभी सहमत होतीं ? ...न-भर काम-काज करने के बाद आदमी घर वापस आयेगा और औरतें दरवाजा तक नहीं खोल देंगी ? फिर घर और होटल में फर्क ही क्या रहेगा ?"

बुलबुल ने पूछा, "सोम की शादी के बारे में क्या हुआ ? व्यवसाय कैसा चल रहा है ?"

कमला भाभी ने कहा, "व्यवसाय कुल मिलाकर बुरा नहीं है। शुरू में एक सेकेंडहैण्ड स्कूटर खरीदा था। कल एक नया यातायात-वाहन आया है। मैं रुपया देना चाहती थी लेकिन सोम ने हँसकर कहा, "मुझे अपने पैरों पर खड़ा होने दो भाभीजी।"

बुलबुल ने राय जाहिर की, "इसीलिए व्यवसाय का इतना नाम है। किसी और चीज में इतनी जल्दी भाग्य नहीं पलटता। आप देखिएगा, सोम जल्दी ही अपने दोनों भाइयों से अधिक उन्नति कर जायेगा।"

यह सुनकर कमला भाभी बहुत खुश हुईं। "हे देवता, ऐसा ही हो ! सोम के लिए बाबूजी सबसे अधिक चिन्ता में रहते थे। जब वह बेकारी की हालत में महीनों तक घर में चुपचाप पड़ा रहता था तो बाबूजी तमाम आत्म-विश्वास खो बैठते थे कहते थे : बहू, लगता है, सोम का कुछ भी नहीं हो पायेगा। इसी तरह घर पर बैठे-बैठे जिन्दगी बीत जायेगी।"

कमला को याद आया, इसके बाद बाबूजी चुप हो जाते थे। माँ की तस्वीर की ओर ताकते हुए कहते थे, "वह जरूर ही सोच रही होगी कि गलती मेरी ही है। बाप के आलस के कारण ही लड़के को नौकरी नहीं मिल रही है। लेकिन उसे कैसे समझाऊँ कि जमाना बदल गया है। इस जमाने में शिक्षित मध्य वित्त वर्ग जैसे उजड़ जायेगा—उसका अस्तित्व भी नहीं रहेगा।"

कमला कोई राय जाहिर नहीं करती थी। मुँह पर ताला लगाकर ससुर की बात सुन लेती थी।

बहू के चेहरे की ओर ताकते हुए असहाय द्वैपायन बैनर्जी ने कहा था, "शायद ऐसा भी हो सकता कि सोमनाथ को कभी नौकरी न मिले। मैं हमेशा तो रहूँगा नहीं। बहू, तुम्हारे सिवा और किससे कहने जाऊँ? सोम बड़ा ही अभिमानी लड़का है। देखना उसे दो रोटी खाने को मिल जाये। चाहे वह कुछ भी करे, तुम उसे त्याग मत देना।"

कमला ने देखा था, ससुर की आँखें आर्द्र हो गयी हैं। बाबूजी की वह हालत देख कमला को भी रोने का मन करने लगता था। ससुर को सांत्वना देने की बात उसे याद नहीं रहती थी।

दीये की रोशनी बुझने के पहले जैसे भभक उठती है, द्वैपायन पूरी तरह निराश होने के पहले अधीर हो उठे थे। दयनीय स्वर में कहा था, "बहू, अब भी समय है। सोम को जी-जान से कोशिश करने को कहो। उसे मन लगाकर परीक्षा देने को कहो। परीक्षा देने के बाद लोगों को नौकरी मिल ही जाती है।"

द्वैपायन को थोड़ा-बहुत पसीना आ गया था। उसके बाद बोले थे, "तुम्हारे अलावा और कोई उस पर दबाव नहीं डाल सकता है, बहू।"

ऐसी बात नहीं कि दबाव डालने की बात कमला के मन में न आयी हो। तय किया था, देवर से कहेंगी, "सोम, तुम और मन लगाकर पढ़ो। नौकरी की परीक्षाओं के लिए इस तरह तैयारी करो कि दुनिया का कोई आदमी तुम्हारे सामने टिक ही न सके। पढ़ाई-लिखाई में तल्लीन हो जाओ, सोम।" लेकिन उसी समय कमला को सुकुमार के बारे में पता चला। पढ़ते-पढ़ते, सामान्य ज्ञान के प्रश्नों को रटते-रटते, बेचारा एकदम पागल हो गया था।

कमला ने अपने मन की आँखों के सामने क्षण-भर के लिए अपने देवर का वही रूप देखा था। न सोने की वजह से आँखें अड़हुल फूल के समान लाल हो गयी हैं, उद्विग्नता के कारण चेहरा उतर गया है और सोम बेढब जैसा दीख रहा है। सोम इसी हालत में कमला के कमरे के अन्दर जाकर कह रहा है :

सर्वनाश हो गया, भाभी। मुझे किसी चीज का स्मरण नहीं रहा। मैंने बी० ए० पास किया है या नहीं, याद नहीं आ रहा। तुम बताओ मैं क्या करूँ ?"

कमला भाभी को लगा था, सोमनाथ के पीछे खड़े होकर सुकुमार उसकी बातें सुन रहा हो और हँस रहा हो। वह चिहुँक उठी थी। कमरे से निकलकर सीधे सोम के कमरे में आकर देखा था। सोम गहरी नींद में डूबा हुआ था। कमरे की रोशनी जल रही थी और कुछ किताबें बिखरी हुई थीं। कमला भाभी ने उस समय सोम को तंग नहीं किया था। बिस्तर से किताबों को हटाकर कमरे की रोशनी बुझा दी थी और चुपचाप देवर के कमरे से बाहर निकल आयी थीं।

यह सब मात्र उस दिन की ही स्मृति है। लेकिन इसी बीच लग रहा है जैसे बहुत दिन पहले की बात हो। बुलबुल की बात से कमला भाभी की चेतना वापस आयी। "आप ऐसा क्या सोच रही हैं ?"

कमला भाभी ने मीठी हँसी हँसकर लज्जा ढँकने की कोशिश की। बोलीं, सोचा था, "आर्थिक झमेला मिटते ही सोम के बारे में कोई चिन्ता नहीं रह जायेगी। लेकिन ऐसा कहाँ हो पाया ?"

तभी बाहर स्कूटर की आवाज हुई। स्कूटर ठेलता हुआ सोमनाथ घर के अन्दर आया।

कमला भाभी के निर्देशानुसार बुलबुल थोड़ी देर बाद ही हाथ में गरम चाय लिए सोमनाथ के कमरे में गयी।

"कब आयीं ?" भूतपूर्व कॉलेज-बांधवी से सोम ने सहज ढंग से ही बात-चीत की।

बुलबुल बोली, "बिजनेस में पैसा कमाने से ही लोग शायद मक्खीचूस हो जाते हैं ?"

"क्यों ?" सोम पूछता है।

"कॉलेज में तुम कितने भड़कदार कपड़े पहनते थे। अब देख रही हूँ, अपने कपड़े-लत्तों की ओर तुम्हारा ध्यान ही नहीं है।"

सोम मुसकरा दिया।

बुलबुल बोली, "सोम, तुम्हें क्या हो गया है ? हर वक्त बिजनेस की चिन्ता में ही डूबे रहते हो। न तो सिनेमा जाते हो, न गपशप करते हो और न ही अड्डेबाजी करते हो।

बुलबुल ने झूठ नहीं कहा था। किन्तु इन प्रश्नों का सामना करे, सोमनाथ की ऐसी हालत नहीं थी। बुलबुल को बहस की लड़ाई में पछाड़ दे, सोमनाथ में अब वह ताकत भी नहीं थी। वह उसे नजर-अन्दाज करना चाहता था।

बुलबुल बोली, "तुम्हारा हाल-चाल एकदम ठीक नहीं लग रहा है। सोचती हूँ कि दीदी से कहूँ तुम पर नजर रखा करें।"

नजर रखने का सन्दर्भ आते ही सोमनाथ जरा सतर्क हो गया था। बुल-बुल बोली, "बात क्या है ? तुम तो कभी इस तरह उदास नहीं रहा करते थे।"

बुलबुल ने तय किया था, इसके बाद ही वह तपती की चर्चा करेगी। तपती *अभी कहाँ है, उसका मौजूदा हाल-चाल क्या है, यह सब पूछकर रहेगी।* कहेगी तपती बड़ी ही भाग्यशालिनी है। जिस लड़की ने हिम्मत बाँधकर सोमनाथ पर भरोसा किया था, वह छली नहीं गयी है।

लेकिन बुलबुल को कुछ कहने का अवसर ही नहीं मिला। सोमनाथ ने कहा, "अन्यथा नहीं लेना बुलबुल। मेरे सर में बेहद दर्द है। एक अदद टैबलेट खाकर मैं अभी एक घण्टे तक लेटा रहना चाहता हूँ। प्लीज।"

इस 'प्लीज' शब्द ने ही जैसे बुलबुल को आघात पहुँचाया। बुलबुल को लगा, सोमनाथ उसे सीधे कमरे से बाहर जाने को कह रहा है।

बुलबुल जरा अभिमान के साथ ही कमला के पास लौट आयी। बोली, "दिमाग अभी ठिकाने नहीं है। प्यार वगैरह की चर्चा छेड़ते ही सारिडॉन माँग बैठा। बात क्या है ? आपको कुछ मालूम है ?"

"मुझे तो बहिन, कुछ भी नहीं मालूम। आजकल सोम इसी तरह आते ही अपने कमरे में चुपचाप पड़ा रहता है। रसोई हो जाती है तो बुलाकर खिला देती हूँ। खाने के वक्त भी कोई खास बातचीत नहीं करता। दोस्त-मित्र भी नहीं आते हैं।"

बुलबुल बोली, "तपती के बारे में क्या हुआ ? उसी को लेकर तो कोई बखेड़ा खड़ा नहीं हो गया है ?"

बुलबुल ने खुद ही उत्तर दिया, *"बखेड़ा खड़ा होने की कोई बात तो है* नहीं। हम लोगों की कॉमन फ्रेण्ड सुदीप्ता से तपती की काफी घनिष्ठता है। कुछ महीने पहले सुनने को मिला था, तपती ने उससे कहा है कि वह सोम से शादी करना चाहती है। जो भी थोड़ी-बहुत असुविधा थी वह भी अब खत्म हो गयी। एकदम बेकार के गले में वरमाला डालकर लोगों को हँसने का मौका देने की बात भी अब नहीं रही।"

"तपती यहाँ कहाँ है ?" कमला भाभी ने जवाब दिया। "वह शायद फॉरेन

गयी हुई है।" तपती ने अमरीका से दो-तीन पत्र भेजे थे—उन्हें कमला भाभी ही लेटर-बॉक्स से निकालकर सोम की मेज पर रख आयी थीं।

उसके बाद वाली बात बुलबुल से कहने की कमला भाभी को हिम्मत नहीं हुई। कुछ दिन पहले सीधे कमला भाभी को ही तपती ने पत्र भेजा था। वह जानना चाहती थी कि सोम का क्या हुआ? लगातार कई चिट्ठियाँ भेजने के बावजूद उसे उत्तर क्यों नहीं मिला?

अब भी कमला भाभी उसके बाद वाले दृश्य को अपनी आँखों के सामने देख रही थीं। बुलबुल तब मुहल्ले में घूमने-फिरने के लिए निकल गयी थी। इसी मुहल्ले में उसकी बहुत-सी सहेलियाँ भी थीं।

कमला भाभी को याद आया, तपती के पत्र को उन्होंने बार-बार पढ़ा था। उसके बाद सीधे सोम के कमरे के भीतर चली गयी थीं "तपती" इस नाम का उच्चारण करके ही कमला भाभी ठिठककर खड़ी हो गयी थीं।

नाम सुनते ही सोमनाथ की आँखें सीधे भाभी की ओर चली गयी थीं। "तपती शायद बाहर गयी हुई है?" कमला भाभी ने सवाल किया था।

"यह तो कई महीने पहले की बात है, भाभी।"

सोमनाथ का उत्तर कमला भाभी को पसन्द नहीं आया था, सोमनाथ को भी इसका अनुमान था।

"बात-बात में दूर चले जाने का रिवाज चल पड़ा है।" कमला भाभी ननदों के इस तरह चले जाने से खुश नहीं थीं।

कमला भाभी को सारी बातें मालूम नहीं। अगर उन्हें सुनने को मिले कि स्कॉलरशिप लेकर तपती के विदेश चले जाने के पीछे सोमनाथ के ही समर्थन और उत्साह का हाथ था तो कमला भाभी शायद बहुत ही चिढ़ जातीं। सोमनाथ ने एक तरह से दबाव डालकर ही तपती को विदेश भेज दिया था।

उसके बाद नियमित तौर पर पत्र आता रहा। इस बात से कमला भाभी अनजान नहीं।

"तपती को तुम पत्र नहीं लिखते?" कमला भाभी ने गंभीरता के साथ पूछा था। वह सोमनाथ की भर्त्सना नहीं करना चाहतीं। लेकिन उनके स्वर में तपती के लिए दुख और संवेदना टपक पड़ी।

"विदेश में जाने से आदमी का मन बहुत बेचैन हो उठता है। विदेश में रहने वाले पत्र के उत्तर की प्रत्याशा करते हैं।

"लगता है, आपसे किसी ने कुछ कहा है।" सोमनाथ तनिक घबरा उठता है।

"तुम्हारा उत्तर न पाकर बेचारी ने आखिरकार मुझे ही खत लिखा है।" कमला भाभी ने कोई बात छिपाकर नहीं रखी।

सोम ने एक क्षण कुछ सोचा, उसके बाद कहा, "मैंने उसे उत्तर भेज दिया है, भाभी। अब वह आपको परेशान नहीं करेगी।"

कमला भाभी ने इत्मीनान की साँस लेते हुए जाने के पहले कहा, "मैं होती तो उसे लिख देती कि अब वक्त बर्बाद न कर और वापस चली आ।"

सोमनाथ कुछ उत्तर देने का साहस नहीं कर सका। बहुत सोचने-विचारने के बाद उसने तपती को जो कुछ लिखा है वह अगर कमला भाभी को मालूम हो जाये तो अभी तुरन्त उनका चेहरा बुझ जायेगा। हो सकता है चिन्ता के कारण उन्हें रात में नींद ही न आये।

सोमनाथ को एक बार तपती के चेहरे की याद आयी। "अब तक तुम्हें मेरा खत अवश्य ही मिल चुका होगा, तपती। इस खत को पाने के बाद तुम अवश्य ही मेरी सूचना प्राप्त करने के लिए जोधपुर पार्क के किसी व्यक्ति को कभी खत नहीं लिखोगी।"

मुहल्ले में घूमने-फिरने का कार्यक्रम अधूरा रखकर ही बुलबुल घर लौट आयी। कमला उदास हो खुली खिड़की की ओर ताक रही थी।

"सोम आपको बहुत तंग करता है न, दीदी?" बुलबुल कमला भाभी का दुख समझने की कोशिश कर रही थी।

कमला भाभी ने कोई जवाब नहीं दिया। बुलबुल ही फिर बोली, "आप उसे उतना लाड़-प्यार क्यों करती हैं? अब वह उम्रदार हो चुका है, यह बात भी भूल मत जाइये।

कमला भाभी बोली, "उसे क्या यों ही लाड़-प्यार करती हूँ। जिसकी माँ की मौत कम उम्र में हो गयी हो, जिसके पिताजी जीवित नहीं हैं, उसके बारे में किसी न किसी को तो सोचना ही होगा।"

बुलबुल स्तब्ध रह गयी। कमला भाभी ने मन के दुख के कारण कहा, "क्या हो गया! प्रथम आषाढ को सोम बिजनेस की बड़ी खबर लेकर घर आया, उसके बाद से ही सिलसिला जैसे बिखर-सा गया। कभी-कभी मुझे डर लगता है, जो युवक उस दिन व्यवसाय करने निकला था वही फिर घर लौटकर ही नहीं आया। ऊपर जो युवक अभी चुपचाप बैठा है वह जैसे कोई दूसरा ही आदमी है।"

बुलबुल ने देखा, दुश्चिन्ता और उद्विग्नता से कमला का चेहरा काला पड़ गया था।

कणा ने अपने वचन की रक्षा की थी। डॉक्टर से कहकर सुकुमार को मानसिक चिकित्सालय से बाहर निकाल लायी थी।

कणा जैसी लड़की वास्तव में मिलना मुश्किल है। आज बिस्तर पर लेटे-लेटे सुकुमार अपनी स्वतन्त्रता के अध्याय के कुछेक दिनों का लेखा-जोखा कर रहा था। अभी हाथ में काम-काज नहीं है, इसलिए बिस्तर पर लेटे-लेटे आकाश पाताल की परिक्रमा करने में कोई बुरा नहीं लगता।

अस्पताल से निकल रिक्शे पर बैठते ही कणा के प्रति सुकुमार के मन में गहरा प्यार उमड़ आया था। उसी समय से उसे बड़ा ही अच्छा लग रहा था। बहुत दिनों तक बन्दी की हालत में पड़े रहने के बाद मुक्ति की सांस लेने का मौका जो मिला था। सुकुमार की देह और मन एक अनास्वादित आनन्द से भर उठे थे।

मानसिक चिकित्सालय का हिसाब-किताब चुकाने के बाद रिक्शे पर बैठने के समय ही भैया का यह प्रसन्न-भाव कणा के ध्यान में आया था।

"तुम्हें क्या हुआ ?" कणा ने पूछा था।

"तुमसे सही बात बताऊँ ? कणा इस क्षण मैं मन की कोई बात दबाकर नहीं रख पा रहा हूँ।"

"जो मर्जी हो, कहो।" कणा ने भैया को उत्साहित किया था। बहुत दिनों के बाद भैया को इस मनःस्थिति में देखकर कणा का हृदय भी आनन्द से परिपूर्ण हो उठा था।

"कणा, अब तू कणिका नहीं है—तू सचमुच ही सोने की एक तलैया है। वजह-बेवजह तुझे छुटपन में डाँटा-फटकारा है, इसके लिए मुझे बहुत कष्ट हो रहा है। तूने वह सब याद तो नहीं रखा है न, कणा ?" सुकुमार आज बहिन के समक्ष अपने को समर्पित करना चाहता है।

"यह सब बात रहने दो। भैया, अभी तुम घर चलो। माँ सवेरे से ही तुम्हारा इन्तजार कर रही हैं।"

इस बात पर उसे पूरे तौर पर विश्वास नहीं हो रहा था। सुकुमार का उत्साह जरा ढीला पड़ा।

"मेरे लिए भी कोई कहीं इन्तजार करता है ? बेकारी की हालत में कब घर के अन्दर जाता था, कब बाहर निकल जाता था, इस पर माँ तो कभी माथा-पच्ची नहीं करती थीं। कभी-कभी मैं सोचता था, अगर मुझे कभी बहुत

देर हो जाये, यहाँ तक कि अगर मैं घर वापस ही न आऊँ तो भी कोई इस बात का खयाल नही करेगा।"

"उफ् भैया," कणा ने सुकुमार को संयत करने की कोशिश की थी। "तुम सिर्फ अपनी ही बात सोचते हो, एक बार माँ-बाबूजी के बारे में भी तो सोचकर देखो। इतनी बड़ी गृहस्थी, इतनी-इतनी जिम्मेदारियाँ, इतना कम पैसा—ऐसी हालत में आदमी का दिमाग ठीक रह सकता है भला?"

"कणा, तू तो बिलकुल बदल गयी है।" सुकुमार अपने मनोभाव को दबाकर नही रख सकता। वह बहिन के चेहरे की ओर ध्यान से देखते हुए कहता है। "कणा, तू भी इतना सोचती है? पहले तो सिर्फ अपना रूज, फेस पाउडर लिपस्टिक और नेल पालिश लेकर ही व्यस्तता मे डूबी रहती थी। मैं सोचता था, दुनिया के किसी भी व्यक्ति के लिए कणा को कोई फिक्र नही है। हालांकि……"

कणा सचमुच ही अब पहले की कणा नही थी। किसी और वक्त भैया की जबान से यह सब बात सुनती तो अपना मुँह घुमा लेती। उसके बाद फन काढ़कर चोट करती, रोजगार तो कुछ करते नहीं, उस पर भी यह शेखी! नौकरी का इन्तजाम करने की सामर्थ्य तो है नही लेकिन बात-बात मे बहिन की आलोचना जरूर करेंगे।"

रिक्शे पर बैठ घर लौटने के रास्ते में कणा को आज जरा भी गुस्सा नही आया। उसने हँसकर भैया से कहा, "तुम्हें जो कुछ कहना है, कह डालो।"

सुकुमार ने शान्त स्वर मे कहा, "नौका जब डूबने-डूबने पर थी तो तुमने लिपस्टिक फेंक गृहस्थी की पतवार सँभाल ली। और जिसे जिम्मेदारी उठानी चाहिए थी वही मैं अब भी बेकार हाउस-ईटर, एफ० बी० सी० बनकर पड़ा हुआ हूँ।"

"वह सब बात मत सोचो, भैया। तुम्हारे लिए भी किसी-न-किसी काम का इन्तजाम हो जायेगा। देखूँ, कहाँ तक क्या कर पाती हूँ।" कणा अपने भैया को भी उम्मीद की रोशनी दिखा रही है।"

सुकुमार को इन बातों पर यकीन नही हो रहा था। "तू इन्तजाम कर देगी? सचमुच, दिन-दिन कैसी हालत होती जा रही है। हमारे मुल्क की लड़कियाँ सचमुच ही अब मर्दों से आगे बढ़ती जा रही हैं।"

रिक्शा गली-कूचों से होता हुआ भागा जा रहा था। कणा के मुँह मे अब

कोई शब्द नहीं था।

वहिन की ओर गरदन घुमाकर सुकुमार ने पूछा, "दफ्तर में तेरा क्या बहुत बोल-बाला है ? सब कोई क्या तेरी ही बात मानते हैं ?"

कणा सिर्फ मुसकरा दी। कणा आज भी इस तीसरे पहर झलमलाते वस्त्रों में है। भैया को घर पर उतारने के बाद सजने-सँवरने के लिए एक क्षण का भी समय नही मिलेगा। हालांकि पार्क स्ट्रीट के दलाल चरणदास ने स्पष्ट तौर पर कह दिया है, जरा भड़कदार ड्रेस पहन पांच के पहले ही आ जाइएगा, दीदीजी। आज बहुत ही अच्छी पार्टी दूंगा। मिस्टर बागड़िया पांच बजे दफ्तर से निकलकर पांच बजकर आठ मिनट के दरमियान ही स्कूल आ धमकेंगे।"

"अरी कणा, ऑफिस में जब तेरा इतना बोलबाला है तो फिर अपनी ड्यूटी का टाइम क्यों नहीं बदलवा लेती ? रोज-रोज बेवक्त ऑफिस जाना !"

भैया की बात सुन कणा के जिस्म का अन्दरूनी हिस्सा तक जैसे ठण्डा पड़ता जा रहा था।

सुकुमार ने पूछा, "तुझे क्या हुआ ? इतना क्या सोच रही है ? ऑफिस का वक्त बीता जा रहा है, इसीलिए चिन्ता कर रही है क्या ?

"नहीं। इस वक्त का ऑफिस रहने से बहुत कुछ सुविधा भी है। लौटने के समय बसों में कोई खास भीड़ भी नहीं रहती।" कणा खुद महसूस कर रही है, उसकी बातें विश्वास के योग्य नहीं थीं।

सुकुमार अभी कणा से कुछ भी नहीं कह रहा था। लेकिन मन ही मन सोच रहा था, कणा बड़ी ही शरमीली है। ऑफिस में संभवतः अपनी असुविधा की बात कह नहीं पाती। कभी सुकुमार स्वयं वहां जायेगा और साहब से मुलाकात कर ड्यूटी का वक्त बदलवा देगा।

सुकुमार की तबीयत में शायद अब भी पूरी तरह सुधार नहीं आया था। क्योंकि कोई जैसे अचानक उसके अंदर से धक्का मारता है—"शर्म नहीं लगती ? बहिन रोजगार कर रही है और तुम सुकुमार मित्तिर पागल बनकर अस्पताल में बैठे-बैठे रोटी तोड़ रहे थे।"

"कणा," सुकुमार गंभीर स्वर में पुकारता है।

"भैया, तुम्हें क्या हुआ ? इस तरह गंभीर क्यों हो गये ?" कणा उद्विग्न हो उठी थी।

सुकुमार के कंठस्वर में लज्जा का पुट था। वह जैसे माफी मांग रहा था।

"कणा, मैं जरा संयत हो जाऊँ। किसी काम-काज में लग जाऊँ फिर उसके बाद तुम्हें दफ्तर जाने का कष्ट नहीं करना होगा।

भैया की बात सुनकर कणा की आँखें छलछला आयी थी। मगर वह कोई जवाब नहीं दे पा रही थी।

"चुप क्यों हो गयी ?सोच रही है,मुझसे शायद यह सब नहीं हो सकेगा ?" सुकुमार की आवाज धीमी हो गयी थी। "नौकरी मिलने के कुछेक महीने बाद ही ऑफिस से 'लोन' का इन्तजाम कर तेरी शादी करा दूँगा। अच्छा ऑफिस आसानी से लोन दे देता है।"

"भैया !" कणा अब काम की बातें कर लेना चाहती थी। "हम लोगों के मकान के किरायेदार और मुहल्ले के लोग तुम्हारे बारे में हो सकता है जरा ज्यादा उत्सुकता दिखायें क्योंकि उन लोगों को मैंने दूसरी ही बात बतायी है।"

मकान के दूसरे-दूसरे किरायेदार और मुहल्ले की तसवीर सुकुमार को बहुत दिनों के बाद याद आ रही थी। वह सब जैसे हजारों वर्ष पहले की बात हो।

"बाबूजी नहीं चाहते कि यह बात सबको मालूम हो जाये, "कणा ने कहा था।

सुकुमार के मन में हुआ, एक बार वह झल्ला उठे। कहे, "क्यों ? मैंने कोई कुकर्म तो नहीं किया है। मैं छिपाने क्यों जाऊँ ?"

लेकिन सुकुमार ने स्वयं को संयत कर लिया। उसे याद आया, बहिनों की शादी करनी है। लोग सुनेंगे कि भाई पागल है तो बहिनों की शादी ही नहीं होगी। पागलों के खानदान में कोई शादी नहीं करना चाहता।

सुकुमार अब आत्म-विश्वास खो चुका था। पुरानी स्मृति किसी भी तरह स्पष्ट नहीं हो रही थी।

"कणा," सुकुमार ने बहुत आहिस्ता से पुकारा।

ठीक उसी समय रिक्शे को एक झटका लगा। भाई को संभालते हुए कणा ने जवाब दिया, "कुछ कहना है भैया ?"

"मुझे क्या हुआ था ?"

"क्यों तुम्हें याद नहीं है ?" कणा अब नर्वस होकर पसीने से तर-बतर होने लगी थी।

"मुझे सिर्फ इतना ही याद है कि नौकरी के इन्टरव्यू के लिए मैं ढेर सारे कोश्चन रट गया था, लेकिन वक्त आने पर एक का भी उत्तर नहीं दे पाया था।"

कणा को भी याद आ रहा था, उसके वाद ही भैया कैसा वेतरतीव हो
था। दाढ़ी नहीं वनाता था, नहाता भी नहीं था, किसी से वातचीत नहीं
ता था, हर वक्त किरानीगीरी की परीक्षा के ही प्रश्नोत्तर तोते की तरह
टता रहता था।

एक दिन एक रिक्शेवाले को वुलाकर भैया ने उससे प्रश्न पूछा था तो उस
चारे का रिक्शा ही थोड़ी देर वाद उसके हाथ से निकल गया था।

कणा उसी समय घर से वाहर निकल आयी थी। देखा, सुकुमार रिक्शा
छीनकर स्वयं उसे चलाकर ले जा रहा था।

“ऐ भैया, क्या हो रहा है ?” कणा ने झिड़की दी थी।

सुकुमार की आँखें तव अड़हुल-फूल की तरह लाल हो गयी थीं। सुकुमार
ने कहा था, “विलकुल मामूली-सा एक सवाल किया कि रिक्शे का आविष्का-
रक कौन है ? पट्ठा जवाव ही नहीं दे सका। अव तो इसका रिक्शा मैं छीनूँगा
ही। रिक्शा चला रहे हैं मगर यह मालूम नहीं कि रिक्शे का आविष्कार किसने
किया था ? तुम्हें किसने एपॉएन्टमेन्ट लेटर दिया है ? कलकत्ते की सड़कों पर
रिक्शा चलाने का तुम्हें कोई राइट नहीं है। रिक्शा जव्त, अण्डर गवर्नमेन्ट
ऑफ नेस्ट वेंगाल ऑर्डर, सेक्शन हण्ड्रेड फॉर्टीफोर।”

उसी दिन पागल सुकुमार को सड़क पर मार पड़ी थी। कणा समझ गयी
थी, भैया को अव घर पर रखना सम्भव नहीं था।

वावूजी ने कहा था, “अव मुझसे वरदाश्त नहीं हो रहा। उसे छोड़ दो
जहाँ मर्जी हो जाये। सड़क पर कितने ही पागल मारे-मारे फिरते हैं। उ
लोगों का भी जरूर ही किसी दिन घर-द्वार था।”

वावूजी के विचारों में परिवर्तन लाने के लिए कणा वहुत रोयी थी।

वावूजी ने तंग आकर कहा था, “तुम लोग सभी मिलकर दवाव ड
तो मैं संन्यासी होकर निकल जाऊँगा। पागल का इलाज कराने के लि
पैसे की जरूरत पड़ती है। मैं क्या खुद पैसा वन जाऊँ ?”

उसी दिन पैसा कमाने का कणा ने दृढ़ निश्चय किया था। वावूजी
था, “भैया का इलाज कराइए। पैसे का इन्तजाम हो जायेगा, वावूजी

वावूजी ने भी उस दिन नहीं पूछा था कि कैसे और कहाँ से पैसे
जाम हो जायेगा।

कणा ने पैसा लाकर दिया और पिताजी ने उसे तत्क्षण खर्च भी क
पैसे के इतिहास की जानकारी प्राप्त करने जैसी आर्थिक स्थिति
ीं थी।

"मैं क्या वाकई घनघोर पागल हो गया था ? मुझे तो याद नहीं आ रहा।" सुकुमार को अब भी मामला पूरे तौर पर समझ में नहीं आ रहा था।

कणा ने सुना है, आजकल लोग पागल को पागल नहीं कहते। कितनी ही तरह के अंग्रेजी नाम चल गये हैं। कणा ने खासे जोरदार शब्दों में कहा, "नहीं भैया, तुम पागल नहीं हुए थे—तुम मेन्टल डिप्रेशन से पीड़ित थे।"

सुकुमार बेहद खुश हुआ। "बड़ा ही अच्छा 'टर्म' है। कणा, मैं पागल नहीं हुआ था, सिर्फ मानसिक मन्दी से पीड़ित था। ठीक वैसे ही जैसे व्यापार में मन्दी आती है, नदी में भाटा आता है, बंगोपसागर में वायु का डिप्रेशन होता है। तूने बहुत ही अच्छा कहा है, थैंक्यू कणा।" थके सुकुमार को जैसे अन्ततः कोई अवलंब मिल गया हो।

"मुहल्ले में अगर तुमसे कोई पूछे तो बताना, सिर में दर्द हो रहा था, इसीलिए अस्पताल गया था," कणा रिक्शे पर बैठते ही भैया को उपदेश देने लगी थी। इस मुल्क में मानसिक चिकित्सालय से मरीज को घर वापस ले जाने के बाद कितनी ही तरह की समस्याएँ खड़ी हो सकती हैं। इस पर सोचने पर भैया दुबारा मानसिक सन्तुलन खो दे सकता है, कणा को इस संबंध में कोई सन्देह नहीं।

सुकुमार ने गंभीरता के साथ कणा से पूछा, "मैं कितने दिनों तक अस्पताल में था ?" सुकुमार वक्त का हिसाब किसी भी हालत में नहीं लगा पा रहा था।

कणा को अब भय महसूस होने लगा। भैया को जब याद नहीं है तो ऐसी हालत में खामखवाह याद दिलाने से लाभ ही क्या कि कई महीने बीत चुके थे।

कणा का मकान अब ज्यादा दूर नहीं था। इसीलिए कणा भैया के सवाल का जवाब देने के बजाय कह बैठी, "भैया, हम लोग अब करीब-करीब पहुँच चुके हैं। तुम अपने मन को प्रस्तुत कर लो। माँ ने आज तुम्हारे लिए पूजा की व्यवस्था की है। आज तुम किसी पर गुस्सा न करना। कोई कुछ भी अंटसंट कहे तो चेहरे पर हँसी लाकर क्षमा कर देना।"

सुकुमार ने सोचा था, कम-से-कम आज की शाम कणा भैया के ही साथ रहेगी। लेकिन रिक्शे से भैया को उतारते ही वह जाने के लिए छटपटाने लगी।

सुकुमार ने पूछा, "कणा, मेरी मनौती की पूजा के समय भी तू नहीं रहेगी ?"

"मेरे लिए रुकने का उपाय नहीं है भैया।" कणा के शब्द सुकुमार को बड़े ही दयनीय जैसे लगे थे।

सुकुमार नहीं जानता कि कणा को इस बीच काफी देर हो गयी थी। चरणदास की ऊब भरी आंखों की दृष्टि कणा के मानस-चक्षु के सामने तैर रही थी।

भैया की ओर एकबार और स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखकर कणा कुछ समय के लिए कलकत्ते के जनारण्य में खो गयी।

•

उसके बाद कई सप्ताह मजे में गुजर गये।

"सुकुमार मित्तिर, जिन्दगी ने इतने सुन्दर ढंग से कभी तुमने समय बिताया है ? जवाब दो," बिस्तर पर लेटे-लेटे सुकुमार मित्तिर स्वयं सवाल करता है।

"क्या हुआ ? नो रिप्लाई क्यों ?" जवाब के लिए सुकुमार ने स्वयं ही तकाजा किया।

"नमकहरामी मत करो, साले सुकुमार मित्तिर। इससे बढ़कर सुख इस जन्म में तुम्हें कब मिला है, बताओ ?"

सुकुमार मित्तिर के अन्दर का आदमी थोड़ा-बहुत मिमियाने लगा।

सुकुमार मित्तिर ने जैसे अपने गले में बिजली का साइलेन्सर लगा लिया था। फलस्वरूप इस मकान में बिस्तरे पर लेटकर, आंखें बन्द किये, मन के साथ खुले आम बहस-मुबाहसा कर रहा था, हालांकि बाहर के किसी को सुनायी नहीं पड़ रहा था।

"सुनो, ओल्ड सुकुमार मित्तिर। नौकरी की परीक्षा में बार-बार असफल रहे, प्रश्नोत्तर रटने के दबाव से मानसिक सन्तुलन खोने के बाद मानसिक चिकित्सालय में बाध्य होकर तुम्हें आश्रय लेना पड़ा। लेकिन कितने अचरज की बात है कि तुम्हारी सामयिक अनुपस्थिति में जैसे किसी मैजिक ने मित्तिर परिवार का सब कुछ बदल दिया। अपनी आंखों से देखने पर भी इस पर विश्वास नहीं होता।"

अन्दर का सुकुमार मित्तिर अब जरा गुनगुनाने लगा। लेकिन नये सुकुमार की एक ही फटकार से वह खामोश हो गया।

"ओल्ड सुकुमार, सुनो। मैं जैसे नया जन्म ले नयी दुनिया में लौट आया हूं। पुराने जीवन की मेरी यादें भी ताजी हैं—मां-बाप, भाई-बहिन सभी पुराने

नामधारी ही हैं मगर उनके हाव-भाव और सलीके से ओल्ड लाइफ का कुछ भी मेल नहीं खा रहा है।"

मैं तो शुरू मे ही माँ को देखकर अवाक् हो गया था। लड़का अस्वस्थ हो पागलखाने में है, गृहस्थी का यह हाल-चाल है। लेकिन माँ-जननी के शरीर और सेहत में सुधार आ गया है। कौन कहेगा कि कुछ दिन पहले इसी माँ के हाथ-पैर निश्चल हो गये थे ? माँ के शरीर का रंग जरा चमकीला हो गया है। साड़ी भी खासी अच्छी साफ है। देखने से ही लगता है, अच्छे डॉक्टर ने चिकित्सा की है, पेट के अन्दर कीमती दवा गयी है।

मुझ पर आँखें जाते ही मेरा हाथ कसकर दबाकर लाड़ करते हुए माँ ने कहा था, "आओ बेटा, सुकुमार।"

माँ ने मेरे माथे पर दही का तिलक लगा दिया—मानो लड़का विश्व विजय करके वापस आया हो। ईश्वर कसम, मेरा सिर चकरा रहा था। बेकार सुकुमार मित्तिर को माँ का यह लाड़ पहले तो कभी नसीब नहीं हुआ था।

रिक्शे से उतार, हाथ थामकर माँ मुझे घर के अन्दर ले जा रही थी समझे बेटे ओल्ड सुकुमार!

मगर, यह कहाँ चला आया मैं ? मानता हूँ, दिमाग खराब हो जाने से मेरी बहुत सारी यादें उलट-पुलट हो गयी हैं, लेकिन अपना टीन का मकान भी न पहचान सकूँ, यह कैसी बात है ?

माँ को शायद मेरी हालत समझ में आ गयी। इसीलिए उनके मुँह से शब्द बाहर निकले, "कणा ने तुझे बताया नहीं ? हमने डेरा बदल लिया है। यहाँ भी टीन की छत है, लेकिन छत मे सूराख नहीं हैं। पानी नहीं चूता है। दूसरी बात यह है कि दोनों कमरे भी पहले के मकान से कुछ बड़े-बड़े हैं।"

मेरे दिमाग में जैसे पुनः बिजली का शॉक दिया जा रहा है। इस घर में बैठने पर अब पुरानी सड़ी हुई बदबू भी नाक मे नहीं आ रही है। आसपास शायद कहीं कच्ची कीचड़ से भरी नाली नहीं है। मेरे नथुनों को काफी असुविधा का सामना करना होगा।

माँ बोली, "यहाँ का किराया पन्द्रह रुपया ज्यादा है। लेकिन सबसे अधिक सहूलियत बाथरूम की है—छः किरायेदारों के लिए एक ही पाखाना यहाँ नहीं है।"

ओ माई लार्ड! इसका मतलब तो यही है कि प्रकृति के आह्वान का प्रत्युत्तर देने के लिए सूर्य उगने के पहले से ही लाइन नहीं लगानी है। टू गुड टु बी

ट्र_॰। इस तरह के सुख का संवाद कभी सही नहीं हो सकता, माँ-जननी। क्या यह सब सच है ?

माँ बोली, "यह सब कणा के बूते से हुआ। लड़की ने ही बाप से कहा, जो भी अधिक पैसा लगेगा, उसका इन्तजाम हो जायेगा, बाबूजी। आप घर बदल लें।"

इसके बाद मेरी आँखें बाबूजी की ओर गयीं। पितृदेव ने भी मेरी अनुपस्थिति में जैसे नव-कलेवर धारण कर लिया है, यकीन करो ओल्ड सुकुमार। ही इज नॉट द सेम ओल्ड मैन !

बाबूजी का इस तरह का चमकता हुआ चेहरा पहले कभी नहीं देखा था। ब्रिटिश पेन्ट के एक नम्बर एनॉमेल-फिनिश रंग से बाबूजी पर नयी कोटिंग की गयी है। बाबूजी न्यू स्टाइल में सीढ़ी पर बैठे हुक्के के कश ले रहे हैं। चेहरे पर कहीं दुश्चिन्ता की छाया नहीं। बैंक में एक लाख रुपया न रहे तो रिटायर्ड आदमी के मुखमंडल पर इस तरह की रामकृष्ण मार्का प्रशान्ति उभर ही नहीं सकती।

मुझसे क्या फिर हिसाब में गलती हो गयी ? बाबूजी की अब तक तो नौकरी की टायर बदल, रिटायर हो घर पर बैठने की बात थी। माँ ने चेहरे पर हँसी लाकर कहा, "तुम्हारे बाबूजी की भी खुश किस्मती है। रिटायर होने-होने पर थे लेकिन फिर चौदह महीने का एक्सटेन्शन मिल गया।"

बाबूजी खुशमिजाजी में हँस दिये। मीठे स्वर में बोले, "मुन्ना, अन्दर आ जा। कैसा है ?"

यही कहो न ! यह कोई बेकारी का तम्बाकू पीना नहीं है। नौकरी में प्रतिष्ठित रहे बगैर इस तरह की हँसी कहीं निकल सकती है भला ?

"यह भी कणा की वजह से ही हुआ," माँ ने फुसफुसाते हुए सूचना दी। तुझे तो मालूम ही है कि नौकरी की मीयाद पूरी हो गयी थी। आखिर में कणा ही साहब के पास जाकर रो पड़ी। वह स्वयं जो नहीं कर सकते थे, कणा ने कर दिखाया। लड़की की रुलाई से पिघलकर साहब ने दूसरा ही हुक्म दिया था।

"इस पर भी नौकरी का एक्सटेन्सन रुक रहा था," माँ की आवाज और अधिक धीमी हो गयी। "उन लोगों ने मीयाद बढ़ाने के पहले डॉक्टरी जाँच के लिए भेजा। वह दमे के मरीज हैं न। डॉक्टर ने एकसठ रुपया घूस लिया तब सर्टिफिकेट दिया। उस पैसे का इन्तजाम भी कणा ने ही किया था। उनके हाथ

में तब एक पैसा भी न था। डरे पिताजी तनिक असमंजस में थे। लेकिन कणा ने उन्हें झिड़की दी पैसा बहाये बिना भी पैसा कहीं आता है, बाबूजी।"

अहा हा ! खुशखबरी सुनकर बहुत अच्छा लग रहा है। मेरे गरम माथे को कोई जैसे ठण्डे आइस बैग से सहला रहा है, समझे मोल्ट सुकुमार। मैं व्यर्थ ही इतनी चिन्ता में डूबकर अपने हेडऑफिस को बेकल बना रहा था। बाबूजी की नौकरी जबकि और कुछ दिनों के लिए बरकरार है तो फिर चिन्ता किस बात की ?

बाबूजी और माँ को तो देख चुका। लेकिन रेणु कहाँ है ? मझली बहिन रेणु ही माँ से छिपाकर बीच-बीच में चाय तैयार कर मुझे दे देती थी।

रेणु अब भी क्यों नहीं आ रही है ? पागलखाने से लौटे भाई के निकट आने में उसे शर्म महसूस हो रही है क्या ?

न :, पागलखाना शब्द मैं दिमाग में आने ही नहीं दूँगा। कणा ने मुझे इतनी तालीम दी कि तुम अस्पताल में थे, पागलखाने में नहीं। तुम पागल नहीं हुए थे, तुम्हारा मानसिक डिप्रेशन हुआ था, मानसिक मन्दी।

"रेणु कहाँ है ?"

'रेणु' शब्द से माँ के चेहरे पर एक सौ से अधिक पावर की बत्ती जल उठी।

"रेणु ? नारायण, नारायण, देवता की कृपा-दृष्टि हुई। एक सुपात्र का पता चला। कणा ने तत्क्षण कहा : अब जरा भी देर न करो माँ !"

फिर वही कणा ! माँ कितनी सहजता के साथ कह गयी, "रुपये के कारण तुम्हारे पिताजी पीछे पाँव रखने जा रहे थे। लेकिन कणा किसी भी हालत में राजी नहीं हुई। अपने दफ्तर से रुपया कर्ज लाकर दिया तब तुम्हारे पिताजी को कन्यादान की जिम्मेदारी से मुक्ति मिली।"

कणा मैजिक दिखा रही है ! अपनी शादी की चर्चा किये बगैर छोटी बहिन के लिए प्रसन्न मुग्ध उपाय खोज निकाला ! मैं तो सोच रहा था कि पैसे के अभाव में सुकुमार मित्तिर की किसी भी बहिन की शादी नहीं होगी। सारी बहिनें वयस्क कुमारियाँ रह जायेंगी और मुझे सतायेंगी।

वाणी, मेरी छोटी बहिन, भी खासी बड़ी हो गयी है। मैं कितने दिनों से घर के बाहर था, समझ में ही नहीं आ रहा है। वाणी की सेहत भी अच्छी हो गयी है—डोरिया धानी साड़ी में खासी खूबसूरत दीख रही है। किसी भी अच्छे लड़के के हाथों में सौंपी जा सकती है यह।

"दीदी का दूल्हा बिलकुल गोरा है," वाणी ने ही —— · "——

खूबसूरत घुंघराले वाल हैं। अच्छी फैमिली है। इतना खूबसूरत चेहरा है, कुछ अधिक तिलक की मांग तो करेगा ही। आखिरी घड़ी में एक साइकिल के लिए शादी का रिश्ता टूट रहा था।" वाणी ने भैया को अन्दरूनी खबर की सूचना दी।

"उस समय कणा ने ही वावूजी से कहा, शादी का रिश्ता टूटने नहीं दीजिए। साइकिल का इन्तजाम करना ही होगा।" वाद वाला समाचार भी वाणी की ही जवान से सुनने को मिला।

"ईश्वर की दया से आखिरकार सारी चीजों का इन्तजाम हो गया। देह में हल्दी चढ़ने के एक दिन पहले रात के समय कणा साइकिल खरीदकर घर ले आयी।" मां ने गृहस्थी की सारी सूचनाएँ पुत्र को शीघ्र से शीघ्र दे दीं।

जानते हो ओल्ड सुकुमार मित्तिर, पहले का जमाना होता तो यह सब वात सुनने पर मुझे शर्म महसूस होती। एक मामूली लड़की की तुलना में अपने जैसे ग्रेजुएट मर्द के निकम्मेपन की वात सोचकर दिमाग गरम हो जाता। लेकिन अव तो मुझे गुस्सा आता ही नहीं। मुझे सिर्फ नींद नहीं आती। जागते रहने के अलावा मुझे कोई और मर्ज नहीं है।

मसलन, इतनी रात में भी मैं जगा हुआ हूँ। अभी विस्तर पर लेटे-लेटे सोच रहा हूँ, वावूजी और मां वात-वात पर क्यों नारायण का नाम लेते हैं।

"मिस्टर नारायण, आपने तो इस असहाय मित्तिर फैमिली के लिए कुछ नहीं किया, वल्कि गरीव के पैसे से हर रोज आप वतासा, केला और खीरे खाते रहे। आप, सच कहा जाये तो, वर्स दैन द ठूंठा जगन्नाथ है।"

इस घर की जितनी कुछ तरक्की हुई है उसका पूरा श्रेय तो कणा को ही है। यदि किसी का नाम अभी मां-वाप, भाई-वहिन के मुंह में शोभा पा सकता है तो वह कणा ही है। घर लौटकर जिस ओर भी आंखें दौड़ा रहा हूं, मैं सिर्फ देख रहा हूँ—कणा, कणा, कणा। हालांकि मां हर वक्त पुकारती है—नारायण, नारायण।

०

इस घर की मालकिन कणा एकाध घण्टा पहले ही घर लौटकर आयी है। और-और दिनों के वनिस्वत कणा को आज थोड़ी देर हो गयी थी।

मां ने सोचा था कि वह कणा से पूछेगी, तुझे देर क्यों हुई। लेकिन आज

कणा की मनस्थिति ठीक नहीं थी। गम्भीर लटका हुआ चेहरा देख, रोजगार करने वाली लड़की से देर का कारण पूछने का उसे साहस नहीं हुआ।

घर लौटकर, बाहर के कपड़ों को उतार, कणा नाममात्र के लिए खाना खाने बैठी थी। पता नहीं, मुँह के अन्दर रोटी गयी थी या नहीं।

बिस्तर पर लेटे-लेटे सुकुमार सुन रहा था। माँ पूछ रही थीं, "तुझे क्या हुआ ? इतना कम खाओगी तो सेहत ठीक कैसे रहेगी ?"

कणा ने कोई जवाब नहीं दिया। वह जैसे अपने आप में डूबी हुई थी।

सुकुमार की इच्छा हुई कि वह भी कणा के साथ बैठकर खाना खाये। लेकिन कणा ने ही मना कर दिया है। "भैया को घड़ी में नौ बजते न बजते खाना मिल जाना चाहिए। डॉक्टर ने कहा है, उसके लिए देर तक सोना जरूरी है। नींद ही भैया के लिए दवा है।"

यह नींद ही आज आने का नाम नहीं ले रही है, घर के किसी आदमी को इस बात का पता नहीं है। इसकी सूचना इन लोगों को देने से भी कोई फायदा नहीं। ऐसा करने से सुकुमार को नींद तो नहीं आयेगी, बल्कि इन्हीं लोगों की चिन्ता बढ़ जायेगी।

बिस्तर पर पीठ के बल पड़ा बहुत देर से सुकुमार भेड़ों की गिनती कर रहा है।

यह तरीका बहुत दिन पहले सुकुमार ने सोमनाथ से सुना था।

नौकरी की दुश्चिन्ता के कारण सुकुमार को नींद नहीं आ रही थी यह सुनकर सोमनाथ ने सलाह दी थी, "नींद न आये तो आँख बन्द करके घुप्प में एक झुण्ड भेड़ों की कल्पना करना। उसके बाद धीरे-धीरे भेड़ों की गिनती करना शुरू कर देना। गिनते-गिनते तुझे अपने आप नींद आ जायेगी। सवेरे नींद टूटने पर पता चलेगा कि कुल मिलाकर कितनी भेड़ें थीं, इसकी तुझे कोई याद नहीं है।"

आज शाम आँखें बन्दकर सुकुमार ने कल्पना की भेड़ों का आह्वान किया। लेकिन यह क्या! भेड़ों के बदले आँखों के परदे पर एक जन-सभा का दृश्य उभर आया।

सभा के लोगों को भेड़ों में बदल देने के लिए सुकुमार बहुत देर तक कोशिश करता रहा। उनके चेहरे भेड़ों में बदल जाने के बावजूद सुकुमार उनमें

को नहीं बदल पा रहा था। यह एक ऊटपटांग दृश्य है ! हँसने लायक बात है, इनकी गिनती करने से नींद क्या आ जायेगी ?

मगर दूसरा उपाय ही नहीं है। सुकुमार मित्तिर की आँखों के सामने से ये भेड़े मर्द किसी भी तरह दूर नहीं हो रहे हैं।

अन्ततः उसने उनकी ही गिनती शुरू कर दी। सुकुमार एक से पाँच सौ तक की गिनती कर बैठा, लेकिन नींद नहीं आ रही थी।

नींद न आने का कारण क्या हो सकता है ? सुकुमार आँख बन्द कर माथा-पच्ची करने लगा। उसने आधी भेड़ों और आधे मर्दों की गिनती की है इसी-लिए शायद यह मुसीबत खड़ी हो गयी है। तमाम भेड़ों की गिनती किये बगैर मन के लायक नतीजा नहीं निकल सकता।

आँखों की पलकों को दो उँगलियों से रगड़कर सुकुमार ने दृश्य को पलटने की भरपूर चेष्टा की।

अब सुकुमार को आदमी से लदी फँदी गैलरी का दृश्य नजर आ रहा था। आधे भेड़े और आधे मर्द के बजाय संभवतः पूरे मर्द ही थे। लेकिन यहाँ गिनती का कार्य असंभव था।

सुकुमार जितनी ही कोशिश करता उससे उतनी ही गलती हो जाती। एक आदमी को वह एक से ज्यादा बार गिन चुका है। नः, यदि इतने सारे आदमी गैलरी में खड़े हो शोर मचायें तो किसी के लिए भी इनका ठीक-ठीक हिसाब रखना संभव नहीं।

सुकुमार करवट बदलकर लेटा हुआ था। दुनिया में हजारों-लाखों भेड़ें हैं लेकिन इस बुरे समय में वह कुछ सौ भेड़ों को भी अपनी आँखों के सामने नहीं ला पा रहा था।

अब शायद ईश्वर दया करेंगे। सुकुमार किले के मैदान का एक दृश्य देख रहा है। कुछ आदमी लुंगी पहने, हाथ में छड़ी थामे किसी चीज को 'हट-हट' कह-कर भगाये ले जा रहे हैं। सुकुमार की आँखों के सामने अब कालापन तिर आया। आदमी। आदमी नहीं, ये सब बकरे हैं। सभी जोड़ों में बँधे हैं।

सुकुमार को लगा, वह उन लोगों के सरदार से पूछ रहा है, "इन्हें जोड़ों में क्यों बाँधे हुए हो ?"

"जोड़ा चीज बहुत ही सुविधाजनक होती है बाबू। जोड़े में रहने से कोई भाग नहीं सकता।"

यह आदमी दाँत बाहर निकालकर हँस रहा है। सुकुमार ने अब उससे पूछा, "बकरे और भेड़े में क्या अन्तर होता है?"

"कुछ भी नहीं। एक काला होता है दूसरा गोरा, लेकिन जाना दोनों को ही कसाईखाने में पड़ता है। लेकिन हाँ, कीमतें सब की अलग-अलग हैं। कलकत्ते में भेड़े की कीमत कोई खास नहीं है। बंगाली वस्तुओं को भेड़ों के मांस की गंध सड़ाँध जैसी लगती है।"

फिर कोई उपाय नहीं है। सुकुमार ने अब जोड़े में बँधे बकरों को ही गिनना शुरू कर दिया।

बकरों का झुण्ड खत्म हो गया, लुंगी पहने आदमियों की जमात भी बकरों के साथ सुकुमार की आँखों के सामने ही खिदिरपुर बाजार की ओर जाकर ओझल हो गई। लेकिन फिर भी नींद आई। नींद के लिए बकरों और भेड़ एक जैसे नहीं होते, यह बात सुकुमार भली-भाँति समझ गया था।

अब सुकुमार आँखें बन्द किये कणा के बारे में ही सोच रहा था। कणा अभी रोजगार शुरू कर गृहस्थी के लिए सब कुछ होम कर रही है, यहाँ तक कि कर्ज करके पैसा ला रही है। हालाँकि जब उसकी उम्र कम थी, वह बड़ी ही स्वार्थी थी। अपने साबुन, पाउडर और कंघी किसी को हाथ से तक छूने नहीं देती थी। सुकुमार के बीमार होते ही उसमें बदलाव आ गया। ईश्वर कब किसको क्या मति देते हैं, समझ में नहीं आता। सुकुमार ने क्या कभी सोचा था कि गृहस्थी के लिए सोचते-सोचते उसका दिमाग खराब हो जायेगा, और कणा इस तरह अप्रत्याशित तौर में डूबती हुई गृहस्थी को बचा लेगी?

कल बाबूजी और माँ फुसफुसाकर बातचीत कर रहे थे। सुकुमार ने सुन लिया था।

माँ कह रही थीं, "मुझे यह अच्छा नहीं लगता, कणा के लिए कहीं कुछ ठीक करो न।"

बाबूजी बोले, "वही तो सारी गृहस्थी का भार अपने माथे पर सँभाले हुए है।"

बाबूजी क्या कहना चाहते हैं, माँ समझ गई है। अभी कणा की शादी करने का सवाल पैदा ही नहीं होता। ऐसा करने से तो यह मित्तिर परिवार ही खत्म हो जायेगा।

माँ मन के दुख के कारण भभक उठीं, "कभी नहीं सोचा था कि ऐसा

होगा। लड़के-लड़कियाँ वन गये और लड़कियाँ लड़के हो गयीं। यह कौन-सा युग आ गया, भगवन् ?"

सुकुमार ने फिर करवट वदली। सिर से पैर तक के देह के हिस्से को उसने पतली चादर से ढँक लिया, जिससे कि रोशनी आकर कहीं नींद की चिड़चिड़ी बुढ़िया को दूर न भगा दे।

सुकुमार सिर्फ कणा के वारे में सोच रहा था। कणा ने गृहस्थी के सभी सदस्यों को हैरत में डाल दिया था। डाँवाडोल की इस हालत में एकाएक नौकरी का इन्तजाम कर लेना एक आश्चर्यजनक वात थी। जरा-सा मौका मिलते ही सुकुमार कणा से सब कुछ खोद-खोद कर पूछेगा। दफ्तर कहाँ है, किसने नौकरी की सूचना दी, किस तरह इंटरव्यू हुआ, तनख्वाह कितनी है, स्केल क्या है—सुकुमार वहुत-कुछ जानना चाहता है, पर पूछे किससे ?

पहले का जमाना होता तो सुकुमार शुरू दिन ही कणा से यह सब सवाल कर चुका होता। लेकिन नौकरी ने कणा को एक नये ही व्यक्तित्व की गरिमा दे दी थी। कणा अव थोड़ी गंभीर हो गई थी। और इस नई गृहस्थी में खुद सुकुमार एक मेहमान की तरह था, अव उसके अन्दर लज्जा का भाव आकर जम गया है और वह पुराने दिनों की तरह स्वाभाविक नहीं हो पा रहा था।

सुकुमार अपनी स्थिति अच्छी तरह समझ रहा था। सुकुमार संभवतः कणा के सामने पूरे तौर पर स्वाभाविक नहीं हो पाता। कणा तो अव ऐसी लगती है जैसे वही सुकुमार की दीदी हो—वह छोटी वहिन है, यह वात सुकुमार कई दिन पहले ही भूल चुका था।

सुकुमार चादर के नीचे सिकुड़-सिमटकर वनिये की गठरी की तरह लेटा हुआ था। अव उसने रोशनी की तरफ से अपना चेहरा दूसरी ओर घुमा लिया था।

विस्तर के इस निरापद आश्रय में सुकुमार को एक अजीव ही आराम का अहसास हो रहा था।

सुकुमार सोच रहा था, अव सचमुच ही अच्छे दिन आ गये। कभी-कभी ऐसा भी समय आता है जव सारा कुछ अपने विरुद्ध चलने लगता है, अच्छा करने से भी उसका नतीजा बुरा ही होता है।

बुरे वक्त में कभी जल्दी नहीं मचानी चाहिए, कुचक्र करने वाले ग्रहों को झल्लाने का मौका दिए वगैर एक कोने में सिमट जाना चाहिए और उनके रास्ते को छोड़कर सब कुछ ज्यों का त्यों स्वीकार कर लेना चाहिए। सुकुमार के लिए

भी अब वही वक्त आ गया था—ग्रहों ने उसे पागल बना घर से बाहर निकाल दिया था।

सुकुमार ने इत्मीनान की साँस ली, अब चक्र घूम रहे हैं। बिजनेसमैन विशुदा, ईस्ट बेंगाल की गैलरी में बैठे सोमनाथ और सुकुमार से कहते थे, "चक्रवत् परिवर्तन्ते सुख और दुख। कोई भी हमेशा दुख की ताबेदारी नहीं कर सकता, सरकारी अफसरों की तरह कभी न कभी उन लोगों का भी ट्रान्सफर होगा ही।"

उन दिनों विशुदा की बातों पर सुकुमार को विश्वास नहीं होता था। सुकुमार को सन्देह होता, विशुदा सिर्फ उन लोगों को उत्साहित करने के खयाल से ही झूठी बातें कहते रहते हैं।

विशुदा उपदेश देते, "देखो, उम्मीद फुटबॉल की हवा जैसी चीज हुआ करती है—भरपूर पम्प रहे बगैर फुटबाल उछलेगा कैसे ? मन की हवा निकालकर कभी पिचको मत, वरना खेल वहीं खत्म हो जायेगा।"

सुकुमार ने फिर करवट ली। वह महसूस कर रहा है, विशुदा की चेतावनी के बावजूद सुकुमार मित्तिर के फुटबॉल से पूरी हवा बाहर निकल गई थी। इसी के परिणामस्वरूप उसे मानसिक चिकित्सालय जाकर बिजली का शॉक लेना पड़ा था। अब ईश्वर की दया से चक्कर घूम गया है।

अब सुकुमार स्वयं ही आश्चर्यचकित हो जाता है। बाबूजी की नौकरी का कार्यकाल अप्रत्याशित तौर पर बढ़ गया है, बहिन की शादी हो गई है, सभी एक अच्छे मकान में चले आये हैं, कणा गृहस्थी के सारे अभावों को दूर कर रही है और सुकुमार स्वयं भी स्वस्थ होता जा रहा है।

•

सुकुमार सिर्फ वापस ही नहीं आया, दो दिन पूर्व सड़क पर चहलकदमी करते समय एक अजीब काण्ड भी हो गया था जिसकी सूचना उसने घरवालों को भी नहीं दी थी। हो सकता है उसी उत्तेजना के कारण आज उसकी आँखों में नींद नहीं उतर रही हो।

घर पर इसलिए नहीं कहा था कि सुकुमार को इस बात पर ठीक-ठीक विश्वास नहीं हो रहा था। अन्ततः फुटबॉल की हवा अगर फिर बाहर निकल जाये तो माँ-बाप बड़े ही हताश हो जायेंगे। कणा बेचारी भी मरियम जैसी हो

जायेगी। लेकिन बात अगर सही है तो मित्तिर परिवार के सभी लोग हैरत में आ जायेंगे। बाप, माँ और कणा समझेंगे सुकुमार मित्तिर जो सो चीज नहीं है, एक बार उसके फुटबॉल की हवा निकल गयी थी तो इसका अर्थ यह नहीं कि वह हमेशा के लिए खर्च के खाते में चला गया था।

अस्पताल से घर लौटने के कुछ दिना बाद ही यह बात हुई।

शुरू में कुछ दिन बगैर किसी गड़बड़ी के गुजर गये थे। उसके बाद ही सुकुमार के मन के अन्दर एक अदृश्य काँटा हर वक्त चुभने लगा था। दोपहर में भात खाने के लिए बैठने पर जैसे ही महसूस होता कि एक छोटी-सी लड़की रोजगार कर यह भात ले आयी है, उसकी जीभ को जड़ता जकड़ लेती। कणा ने पूछा था, "क्या हुआ तुम्हें ? जी में अरुचि पैदा हो गयी है क्या ?"

पेट में भूख थी लेकिन सहसा बहिन के बारे में सोचते ही जीभ का स्वाद बिगड़ गया था, सुकुमार जबान खोलकर यह बात कह नहीं सका।

कणा ने घर से बाहर निकलने को मना किया था। "कुल मिलाकर दस दिन पहले ही तुम बीमारी से उठे हो। बहुत ही कड़ी-कड़ी दवाएँ खानी पड़ी हैं। कुछ दिनों तक चुपचाप घर में ही बैठे रहो।" कणा ने मीठे किंतु कठोर स्वर में भैया को सावधान कर दिया था।

लेकिन जीभ जब जड़ हो गयी तो उसके बाद सुकुमार घर पर चुपचाप बैठकर नहीं रह सका। पैण्ट पर कुरता डाल सुकुमार घर से बाहर निकल गया था।

कहाँ जा रहा है, क्यों जा रहा है, कब वापस आयेगा, कोई बात बताकर नहीं गया। सुकुमार कुछ देर तक सड़कों पर निरुद्देश्य चहल-कदमी करता रहा।

बहुत दिनों के बाद सड़क पर आजादी के साथ चहल-कदमी करने में भी इस तरह की अनास्वादित मादकता हो सकती है, सुकुमार ने इसकी कभी कल्पना तक नहीं की थी। यह सुबोध मल्लिक रोड, यह यादवपुर थाना, यह अनवर शाह रोड, यह गड़ियाहाट (साउथ)—सुकुमार इन सबों को कितनी ही बार देख चुका है। लेकिन अब तो ये सब उसकी आँखों के सामने जैसे नये-नये रूप धारण करके आ रहे हैं।

जोधपुर पार्क के मोड़ पर सुकुमार ठिठककर खड़ा हो गया था। जिसके लिए उसका मन एकाएक बेचैन हो उठा वह सोमनाथ था। उसी क्षण सोमनाथ के पास जाने की इच्छा प्रबल हो उठी। सुकुमार को सोमनाथ की कमला भाभी

के स्नेहमय मुखड़े की याद आ रही थी। सुकुमार भाभी के हाथों से कितनी ही बार चाय पी चुका है। ऐसा एक दिन भी नहीं बीता जब कमला भाभी ने सुकुमार को बिना खिलाये जाने दिया हो। सुकुमार ने एक दिन कहा भी था, "भाभीजी, आप गलती कर रही हैं। क्योंकि बेरोजगारों का कोई इस तरह स्वागत-सत्कार नहीं करता।" चाय की प्याली हाथ में थामे भाभीजी ने मीठी झिड़की दी थी, "उफ् सुकुमार, मुझे इस तरह हंसाओ मत—हाथ से चाय छलक कर नीचे गिर पड़ेगी।"

इतने दिनों के बाद सुकुमार को देखकर भाभी जरूर ही हैरत में आ जायेंगी। साथ-साथ चाय और नाश्ता भी आ जायेगा। मगर सोमनाथ जोधपुर पार्क की सरहद पर पैर नहीं रखेगा। कणा का गम्भीर चेहरा उसे एकाएक याद आ रहा था।

सुकुमार ने अस्पताल से घर लौटते ही सोमनाथ की चर्चा की थी। लेकिन सोमनाथ का नाम सुनते ही जैसे कणा का चेहरा गम्भीर हो गया था। कणा ने सुकुमार को मना किया था। "अभी किसी के घर पर नहीं जाना भैया।"

सुकुमार समझ रहा था कि कणा नहीं चाहती कि उसका भैया सोमनाथ से मुलाकात करे।

दूसरा वक्त होता तो सुकुमार किसी भी हालत में सहमत नहीं होता—जिससे भी मिलने की मर्जी होती, जाकर मिल आता। लेकिन अभी वह कणा की राय के खिलाफ काम नहीं करना चाहता था। कणा ने जब भैया को नहीं जाने को कहा है तो अवश्य ही उसका कोई न कोई कारण होगा। सारी बातों के पीछे कौन-कौन से और क्या कारण हैं, जानने लायक अभी सुकुमार की मानसिक स्थिति नहीं थी।

कणा का उपदेश दुबारा याद आते ही सुकुमार ने जोधपुर पार्क की सरहद पर पैर नहीं रखा। सुकुमार एक दिन सुविधानुसार कणा से पूछेगा कि क्यों वह उसका सोमनाथ से मिलना इतना नापसन्द करती है?

इसके बाद सुकुमार चहल-कदमी करता हुआ गड़ियाहाट के मोड़ पर चला आया था। कितने आदमी साफ-सुथरे कुरता-कमीज पहन अपने-अपने काम पर आ रहे थे, इसकी कोई गिनती नहीं। इस भीड़-भाड़ को देख कर भला कौन कहेगा कि इस मुल्क में बेरोजगारी की समस्या इतनी भयावह है सारी दुनिया में कहीं भी इतने पढ़े-लिखे बेकारों की जमात नौकरी की उम्मीद में तीर्थ के कौवों की तरह नहीं बैठी होगी।

दफ्तर के वक्त की इस रेल-पेल की ओर सुकुमार कुछ देर तक यों हूं

ताकता रहा। सुकुमार से भी कम उम्र का एक युवक गले में टाई बाँधे वस के इन्तजार में खड़ा था। नहीं, अव सुकुमार उन लोगों की तरफ नहीं ताकेगा। कहीं नजर न लग जाये। माँ-बाप का लड़का कमाकर खा रहा है, नजर लगने से उसकी हानि हो, सुकुमार कभी यह नहीं चाहेगा।

उसके वाद सुकुमार ट्राम के एक सेकेण्ड क्लास के डिब्बे में चढ़ गया था। कणा ने उसे फर्स्ट क्लास की ट्राम में घूमने-फिरने लायक पैसा दिया था। लेकिन छोटी वहिन के पैसे से नरम गद्दीदार ट्राम पर चढ़ने में सुकुमार को संकोच का अनुभव हुआ था।

वी० वी० डी० वाग में उतर, लाल दीघी को एक सलामी ठोंक सुकुमार पैदल चलने लगा। ब्रेवोर्न स्ट्रीट और लाल वाजार के मोड़ पर गिरजे के पास एकाएक विशुदा से मुलाकात हो गयी—उसी विशुदा से जो फुटवॉल में ईस्ट वंगाल के अंध समर्थक हैं। खेल के मैदान में गये विना जैसा उनका खाना ही हजम नहीं होता। सोमनाथ और सुकुमार के साथ वह खेल के मैदान में कितनी ही वार अड्डेवाजी कर चुके हैं। प्रतिपक्ष के समर्थक जानकर भी उन्होंने दोनों मित्रों से मूंगफली और पान के विनिमय में कभी आपत्ति नहीं की।

विशुदा और-और दिनों की तरह रास्ते के किनारे की विधवा वंगाली महिला से पान खरीद रहे थे। वचा हुआ चूना और 'गुण्डी मोहिनी' अपने डब्बे में रखते हुए विशुदा ने सुकुमार को पुकारा, "हैलो यंगमैन। लगता है, तुम सुकुमार मित्तिर हो। मोहन वागान को सपोर्ट करना छोड़ दिया क्या ?"

सुकुमार वहुत ही खुश हुआ। अजनवियों की इस दमघोंटू भीड़ में कम-से कम से एक पुराना दोस्त तो ऐसा निकला जिसने सुकुमार को पहचान लिया।

मोहन वागान को छोड़ने का सवाल ही पैदा नहीं होता। जव तक जिन्दगी है तव तक मोहन वागान है। मानसिक चिकित्सालय के मरीजों के वीच भी खासा अच्छा मतभेद था। पूरे तौर पर पागल हो जाने के वावजूद किसी ने दल नहीं वदला था—वहाँ भी एक दल ईस्ट वेंगाल और दूसरा मोहन वागान समर्थक था। सिर्फ एक ही ऐसा युवक था जो किसी भी दल का समर्थन नहीं करता था। उसका वाप रेलवे में नौकरी करता था—इसलिए वह ईस्टर्न रेलवे की ही तारीफ करता था।

विशुदा ने उसकी पीठ पर हाथ रखकर पूछा था, "क्यों यंगमैन इतने दिनों से मुलाकात क्यों नहीं हुई ? कहीं वाहर गये थे ?"

कणा के परामर्श के अनुसार सुकुमार ने सभी लोगों से झूठी वात कही है। मगर विशुदा के सामने झूठ वोलना नामुमकिन है। खेल के मैदान के दोस्त हैं,

उनके सामने झूठ बोलने से मोहन बागान की हानि हो सकती है। एक तो यों ही मोहन बागान का सर्वनाश करने के लिए दुनिया-भर के लोग पिल गये हैं।

सुकुमार के मेंटल डिप्रेशन की खबर से विशुदा कतई निराश नहीं हुए। बोले, "डोण्ट घबड़ाओ। इसी फुटबॉल के ब्लैडर की बात लो, एक बार लीक कर बैठे तो क्या कोई उसे फेंक देता है? जहाँ छेद हो गया है वहाँ पैवंद लगाओ—रिपेयर के बाद ब्लैडर कभी-कभी ओरिजिनल से भी ज्यादा टिकाऊ हो हो जाता है। विशुदा ने कहा था, "एक मामूली-सी बात समझ में नहीं आती है? पैवंद से रेजल्ट न निकलता तो दुकान-दुकान में इतना रबर सॉल्युशन भला क्यों बिकता?"

विशुदा की बातें सुकुमार को बहुत अच्छी लगी थीं। विशुदा ने कहा था, "फिर तथ्य क्या निकलता है?"

सुकुमार को माथा खुजलाने के बावजूद जवाब नहीं मिल रहा था। विशुदा ने ही जीभ के अगले हिस्से से जरा-सा चूना छुलाते हुए कहा था, "समस्या का समाधान फर्स्ट-हाफ में निकले तो ठीक है, वरना डोन्ट केयर, सेकेण्ड-हाफ में रबर-सॉल्युशन तो है ही।"

विशुदा की सारी खबरें भी सुकुमार ने सुनी थी। व्यवसाय में अचानक उन्हें बहुत बड़ी मार खानी पड़ी है। कर्ज भी बहुत ज्यादा हो गया है।

लेकिन विशुदा ने कहा, "इससे क्या आता-जाता है? जब तक फाइनल ह्विसिल न बज जाये हमें फुल-फोर्स से खेलते रहना है।"

विशुदा से विदा लेकर सुकुमार ने निरुद्देश्य चहल-कदमी करना शुरू कर दिया था।

सुकुमार अच्छी तरह समझ रहा था, डलहौजी स्क्वायर में घूमने-फिरने से कोई लाभ नहीं।

बी० बी० डी० बाग अब 'पास्ट टेन्स' हो गया है। किस्मत के शौकीनों को वैसी जगह जाना होगा जहाँ 'प्रेजेन्ट' या 'फ्यूचर' है। टेन्स ही यदि ठीक-ठीक समझ में न आये तो जीवन का पूरा वाक्य ही गलत हो जाता है।

फुटपाथ पर एक से एक व्यस्तता में डूबे अनजाने लोगों का धक्का खा-खाकर सुकुमार अच्छी तरह समझ गया था कि इन बोस, घोष, मित्तिर, चटर्जी, बाँड़ुज्या, दास, दत्त, मण्डल उपाधिधारी लोगों का 'टेन्स' बड़ा ही दमदार है।

'पास्ट टेन्स' के पीछे-पीछे दौड़ लगाने में इनकी कोई मिसाल नहीं। मगर 'प्रेजेंट' 'फ्यूचर' के वारे में ये लोग जरा भी सतर्क नहीं रहते।

'प्रेजेन्ट परफेक्ट' के उस्ताद हैं ये सोवाइका, गोयनका, कारनानी, भावनिया। ये लोग कभी ग्रामर की गलती नहीं करते, इसीलिए सफलता के मार्केट में इन्हें इतने अधिक नम्बर मिलते हैं।

मिशन रो, गणेश एवेन्यू होकर पैदल चलता हुआ सुकुमार सीधे वेलिंगटन स्क्वायर की ओर चला गया था। वहीं डॉक्टर मजुमदार से मुलाकात हो गयी। डॉक्टर मजुमदार को भूला नहीं जा सकता। मानसिक चिकित्सालय में उन्होंने ही जतन के साथ सुकुमार का इलाज किया था।

"क्यों सुकुमार वावू, सड़क पर खड़े होकर आप इतना क्या सोच रहे हैं? गाड़ी के नीचे दव नहीं जाइएगा।" डॉक्टर मजुमदार गम्भीर होने के वावजूद बड़े ही दयालु व्यक्ति हैं।

डॉक्टर मजुमदार मेडिकल एसोसियेशन की मीटिंग में जा रहे थे।

सुकुमार वोला, "मैंने पता लगाया है सर। प्राइवेट कार में दव जाने से सबसे बड़ा लाभ है। परिवार को अच्छा खासा पैसा मिल जाता है। दूसरा नम्वर टेक्सी का आता है, उसके वाद वस का जिसके नीचे दवने के वदले मिलने वाले रुपये की तादाद वहुत कम होती है। सबसे खराव अगर कोई है तो वह ट्राम है—एक भी पैसा नहीं मिलेगा। वाप चाहे वकील ही क्यों न हो, कानी कौड़ी भी नहीं निकाल सकता, क्योंकि वह मोटर वेहिकल कानून के दायरे में ही नहीं आती।"

सुकुमार की वातचीत से मजुमदार साहव उद्विग्न हो उठे। वोले, "मेरे साथ आइये। इतने-इतने विषयों के रहते आप गाड़ी से दवने के वारे में अनुसंधान क्यों कर रहे हैं?"

सुकुमार ने कोई वात छिपाकर नहीं रखी। वोला, "अपने को वहुत ही अपमानित महसूस करता हूं सर। स्वस्थ आदमी की हैसियत से नौकरी नहीं मिली तो अव पागल को भला कौन स्वीकार करेगा?"

सुकुमार की पारिवारिक स्थिति से डॉक्टर मजुमदार अपरिचित नहीं थे। उन्होंने कहा, "आपसे वहुत अच्छे दिन मुलाकात हो गयी। आप इस चायघर में बैठकर चाय पीजिये, मैं झट से आई० एम० की मीटिंग खत्म करके आता हूं। तव आपसे वात करूंगा।"

डॉक्टर मजुमदार पंद्रह मिनट में ही लौट आये। वोले, "मेरे साथ चलिये।"

जाते-जाते डॉक्टर मजुमदार ने उसे असली तथ्य से परिचित कराया। "मेरा एक मरीज है, मतिशील स्ट्रीट के पास उसकी कोयले या ऐसी ही किसी चीज की दुकान है। उसकी बीवी रो रही थी। डॉक्टर साहब, मेरे पति को जल्दी से जल्दी ठीक कर दें, वरना व्यवसाय का दीवाला बोल जायेगा।"

शायद इसी को अच्छा समय कहते हैं। डॉक्टर मजुमदार ने मिसेज बेला घोष से इसी बात की चर्चा की। बोले, "सुकुमार बाबू बड़े ही विश्वस्त व्यक्ति हैं। जितने दिनों के लिए जरूरत हो, इन्हें रख लें।"

मिसेज बेला घोष के हाथ में तो जैसे चाँद ही आ गया हो। डॉक्टर मजुमदार के जाने-पहचाने आदमी को एक ही बात में नौकरी मिल गयी।

डॉक्टर मजुमदार बोले, "देखिएगा, सुकुमार बाबू, मेरे मान-सम्मान की रक्षा कीजिएगा।"

बात सही थी। पागल की बीवी की हालत विधवा से भी बदतर होती है। सुकुमार मित्तिर बेशक उसकी कोई हानि नहीं होने देगा।

फिर भी डॉक्टर मजुमदार की दुश्चिन्ता दूर नहीं हुई थी, उसी समय सुकुमार ने कहा था, "दुकान का मालिक और मैं एक ही लाइन के आदमी हैं सर। जान-बूझकर भी क्या एक पागल दूसरे पागल को कभी कोई हानि कर सकता है?"

"डॉक्टर मजुमदार, आप युग-युग जियें। आपके पास इलाज कराने के लिए आने पर सुकुमार मित्तिर का सिर्फ मर्ज ही दूर नहीं हुआ, उसकी रोजी-रोटी का भी इन्तजाम हो गया।"

"इस तरह के डॉक्टरों की कलकत्ता शहर में जितनी ही वृद्धि हो उतनी ही अच्छी बात है। आपको सुकुमार मित्तिर वचन देता है कि यह बात बिलकुल छिपी हुई रहेगी। अगर एक बार प्रचार हो जाये कि पागल होने से नौकरी मिल जाती है तो इस शहर में लाखों बेरोजगार रातों-रात पागल होकर आपके इस अस्पताल के सामने कतार में खड़े हो जायेंगे और आप भारी मुसीबत में फँस जाइएगा।"

कोयले की दुकान में काम शुरू करने के बावजूद सुकुमार ने अब भी घर पर इस खुशखबरी की घोषणा नहीं की थी। शुरू में वह कुछ दिनों तक इस चीज को अच्छी तरह समझ लेना चाहता था। सुकुमार मित्तिर की तकदीर में

नौकरी रहती या नहीं, यह जरा देख लेना चाहिए। इसके अलावा वह घर पर भी एक छोटा-मोटा नाटक मंचित नहीं करना चाहता।

पहले महीने की कमाई का पैसा सीधे घर पर लाकर बेकार सुकुमार मित्तिर सबको हैरत में डाल देगा। एक बार कॉलेज के ड्रामे में उधार खाते में लिखे हुए स्वेच्छाचारी की भूमिका में सुकुमार ने अभिनय किया था। लड़का लखपति होकर घर लौटा, उसके बाद कितना बड़ा काण्ड हुआ था।

सोमनाथ उसके पिता की भूमिका में उतरा था। नाटकीय क्षण में उत्तेजना के कारण सोमनाथ पार्ट भूल गया था। वह जो-सो बोलने लगा—सुकुमार ने ही बड़ी मुश्किल से उस सीन का बचाव किया था।

इस बीच सुकुमार कई दिनों तक काम कर चुका है। शुरू में उसे बड़ा डर लगता था। लगता, कोयले के व्यवसाय का मालिक नानू घोष यदि एकाएक स्वस्थ होकर मानसिक चिकित्सालय से लौट आये तो?

लेकिन अब सुकुमार का मनोबल बढ़ गया था। मिसेज बेला घोष ने डॉक्टर मजुमदार से मुलाकात की थी। उन्होंने कहा था, "लगता है, वक्त लगेगा। यह मर्ज आसानी से दूर नहीं होता।"

सुकुमार डॉक्टर मजुमदार पर और भी अधिक खुश हुआ था। मिसेज बेला घोष से उन्होंने कहा था, "सुकुमार पागल नहीं हुआ था, नौकरी की चिन्ता के कारण उसको जरा नर्वस ब्रेक डाउन हो गया था।"

कोयले की दुकान का काम सुकुमार को कोई बुरा नहीं लग रहा था। अच्छा खासा दिमाग लगाने की बात थी। कंपनी के बहुत सारे ग्राहक हैं। सुकुमार को अब उन दुकानों और दफ्तरों में भी जाना पड़ता था।

नानू घोष की सामयिक अस्वस्थता के समय जिन लोगों ने लेन-देन बन्द कर दिया था उन्हें लौटा लाने के लिए सुकुमार कमर कसकर लग गया था। कुछेक ग्राहक तो इसी बीच लौट भी आये थे।

मिसेज घोष सुकुमार की लगन से बेहद खुश हुई थीं।

उनकी लड़की शकुन्तला उस दिन कॉलेज से सीधे दुकान पर ही चली आयी थी।

शकुन्तला ने अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से सुकुमार की ओर कितनी खूबसूरती के साथ ताका था! "मां आपके काम से बहुत ही खुश हैं, मिस्टर मित्र।"

"यह 'मिस्टर' शब्द क्यों ? हम मामूली आदमी हैं, मुझे सुकुमार कहकर ही पुकारिए न।" सुकुमार ने अनुरोध किया।

"माँ ने कहा था कि आप न मिलते तो इस व्यवसाय की न जाने क्या हालत होती !" शकुन्तला की घटदार काले रंग की भौंहों और काजल ने अब सुकुमार का ध्यान अपनी ओर खींचा।

"कुछ भी नहीं बिगड़ता," शकुन्तला के चेहरे की ओर सीधे ताकते हुए सुकुमार ने आश्वासन दिया था। "आपको ही जिम्मेदारी उठानी पड़ती।"

"लड़कियाँ व्यवसाय करेंगी ! आप यह क्या कह रहे हैं, सुकुमार बाबू ?" कॉलेज छात्रा शकुन्तला के समझ में यह बात नहीं आ रही थी।

"क्यों ? बंगाल के अलावा तो सभी प्रान्तों की औरतें आजकल व्यवसाय करती हैं, मिस घोष।"

"मिस घोष ! सुनने में कितना बुरा लगता है। कोई तुक नहीं। आप नाम लेकर ही मुझे पुकारा करें सुकुमार बाबू।" इतनी मीठी बात सुकुमार ने सिनेमा या उपन्यास के बाहर कहीं नहीं सुनी थी।

सुकुमार सिर खुजला रहा था। लड़कियों की मानसिकता और साहचर्य के सम्बन्ध में उसे जरा भी अनुभव नहीं। उसके जाने-पहचाने लोगों में से एकमात्र सोमनाथ ही जरा साहसकर सहपाठिनी तपती के साथ घूमा-फिरा करता था। लेकिन सोमनाथ बड़ा ही नर्वस है—घूमने निकलने पर भी तपती से वह कोई खास बातचीत नहीं करता था। सुकुमार यह बात सुन चुका था। उन लोगों के क्लास में और भी लड़कियाँ न हों, ऐसी बात नहीं। यह भी नहीं कि सुकुमार उन लोगों से लिखने-पढ़ने के बारे में बातचीत न करता हो। लेकिन बस यहीं तक। उससे एक कदम भी आगे बढ़ने का सुकुमार ने उत्साह प्रकट नहीं किया था। जिसके घर में इतनी-इतनी वयस्का कुमारी बहिनें हों, जिसकी माँ की सेहत अच्छी नहीं रहती, जिसके पिता की नौकरी की हालत डाँवाडोल हो, दो दिन बाद जिसे दो कौर खाना भी नसीब होगा या नहीं, उसे प्रेम करना क्या शोभा देता है ?

फिर भी मन हमेशा मानने को तैयार नहीं होता। कॉलेज में जब भी मन में थोड़ी-सी कमजोरी पैदा होती थी, सुकुमार स्वयं को संयत कर लेता था, "सुकुमार, तुम्हारे जैसे नौजवान के लिए लड़कियों से हिलना-मिलना अक्षम्य अपराध है।"

लेकिन ये सब तो किसी दूसरे युग की बातें हैं। अब तो परिस्थिति बिलकुल बदल चुकी है। "सुकुमार मित्तिर, उस दिन तुम शकुन्तला से इस तरह चेहू—

नौकरी रहती या नहीं, यह जरा देख लेना चाहिए। इसके अलावा वह घर पर भी एक छोटा-मोटा नाटक मंचित नहीं करना चाहता।

पहले महीने की कमाई का पैसा सीधे घर पर लाकर बेकार सुकुमार मित्तिर सबको हैरत में डाल देगा। एक बार कॉलेज के ड्रामे में उधार खाते में लिखे हुए स्वेच्छाचारी की भूमिका में सुकुमार ने अभिनय किया था। लड़का लखपति होकर घर लौटा, उसके बाद कितना बड़ा काण्ड हुआ था।

सोमनाथ उसके पिता की भूमिका में उतरा था। नाटकीय क्षण में उत्तेजना के कारण सोमनाथ पार्ट भूल गया था। वह जो-सो बोलने लगा—सुकुमार ने ही बड़ी मुश्किल से उस सीन का बचाव किया था।

इस बीच सुकुमार कई दिनों तक काम कर चुका है। शुरू में उसे बड़ा डर लगता था। लगता, कोयले के व्यवसाय का मालिक नानू घोष यदि एकाएक स्वस्थ होकर मानसिक चिकित्सालय से लौट आये तो ?

लेकिन अब सुकुमार का मनोबल बढ़ गया था। मिसेज बेला घोष ने डॉक्टर मजुमदार से मुलाकात की थी। उन्होंने कहा था, "लगता है, वक्त लगेगा। यह मर्ज आसानी से दूर नहीं होता।"

सुकुमार डॉक्टर मजुमदार पर और भी अधिक खुश हुआ था। मिसेज बेला घोष से उन्होंने कहा था, "सुकुमार पागल नहीं हुआ था, नौकरी की चिन्ता के कारण उसको जरा नर्वस ब्रेक डाउन हो गया था।"

कोयले की दुकान का काम सुकुमार को कोई बुरा नहीं लग रहा था। अच्छा खासा दिमाग लगाने की बात थी। कंपनी के बहुत सारे ग्राहक हैं। सुकुमार को अब उन दुकानों और दफ्तरों में भी जाना पड़ता था।

नानू घोष की सामयिक अस्वस्थता के समय जिन लोगों ने लेन-देन बन्द कर दिया था उन्हें लौटा लाने के लिए सुकुमार कमर कसकर लग गया था। कुछेक ग्राहक तो इसी बीच लौट भी आये थे।

मिसेज घोष सुकुमार की लगन से बेहद खुश हुई थीं।

उनकी लड़की शकुन्तला उस दिन कॉलेज से सीधे दुकान पर ही चली आयी थी।

शकुन्तला ने अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से सुकुमार की ओर कितनी खूबसूरती के साथ ताका था ! "मां आपके काम से बहुत ही खुश हैं, मिस्टर मित्र।"

"यह 'मिस्टर' शब्द क्यों? हम मामूली आदमी हैं, मुझे सुकुमार कहकर ही पुकारिए न।" सुकुमार ने अनुरोध किया।

"माँ ने कहा था कि आप न मिलते तो इस व्यवसाय की न जाने क्या हालत होती!" शकुन्तला की घटघ काले रंग की भौंहों और काजल ने अब सुकुमार का ध्यान अपनी ओर खींचा।

"कुछ भी नहीं बिगड़ता," शकुन्तला के चेहरे की ओर सीधे ताकते हुए सुकुमार ने आश्वासन दिया था। "आपको ही जिम्मेदारी उठानी पड़ती।"

"लड़कियाँ व्यवसाय करेंगी! आप यह क्या कह रहे हैं, सुकुमार बाबू?" कॉलेज छात्रा शकुन्तला के समझ में यह बात नहीं आ रही थी।

"क्यों? बंगाल के अलावा तो सभी प्रान्तों की औरतें आजकल व्यवसाय करती हैं, मिस घोष।"

"मिस घोष! सुनने में कितना बुरा लगता है। कोई भय नहीं। आप नाम लेकर ही मुझे पुकारा करें सुकुमार बाबू।" इतनी मीठी बात सुकुमार ने सिनेमा या उपन्यास के बाहर कहीं नहीं सुनी थी।

सुकुमार सिर खुजला रहा था। लड़कियों की मानसिकता और साहचर्य के सम्बन्ध में उसे जरा भी अनुभव नहीं। उसके जाने-पहचाने लोगों में से एकमात्र सोमनाथ ही जरा साहसकर सहपाठिनी तपती के साथ घूमा-फिरा करता था। लेकिन सोमनाथ बड़ा ही नर्वस है—घूमने निकलने पर भी तपती से वह कोई खास बातचीत नहीं करता था। सुकुमार यह बात सुन चुका था। उन लोगों के क्लास में और भी लड़कियाँ न हों, ऐसी बात नहीं। यह भी नहीं कि सुकुमार उन लोगों से लिखने-पढ़ने के बारे में बातचीत न करता हो। लेकिन बस यहीं तक। उससे एक कदम भी आगे बढ़ने का सुकुमार ने उत्साह प्रकट नहीं किया था। जिसके घर में इतनी-इतनी वयस्का कुमारी बहिनें हों, जिसकी माँ की सेहत अच्छी नहीं रहती, जिसके पिता की नौकरी की हालत डाँवाडोल हो, दो दिन बाद जिसे दो कौर खाना भी नसीब होगा या नहीं, उसे प्रेम करना क्या शोभा देता है?

फिर भी मन हमेशा मानने को तैयार नहीं होता। कॉलेज में जब भी मन में थोड़ी-सी कमजोरी पैदा होती थी, सुकुमार स्वयं को संयत कर लेता था, "सुकुमार, तुम्हारे जैसे नौजवान के लिए लड़कियों से हिलना-मिलना अक्षम्य अपराध है।"

लेकिन ये सब तो किसी दूसरे युग की बातें हैं। अब तो परिस्थिति बिलकुल बदल चुकी है। "सुकुमार मित्तिर, उस दिन तुम शकुन्तला से इस चेहरा

लटकाकर बातचीत करते रहे, जैसे मालिक के विधवा बुआ के हुक्म की तालीम कर रहे हो। तुम इस तरह उदासीन और उत्तापहीन हो, फिर भी शकुन्तला ने तुमसे पूछा था : आप किस कॉलेज में पढ़ते थे ? उसका और तुम्हारा कॉलेज एक ही है, यह सुनकर शकुन्तला कितनी खुश हुई थी !" बिस्तर पर लेट, चादर की ओट में मुंह छिपाकर सुकुमार सारी बातें याद करना चाहता था।

दोनों में फिर मुलाकात हुई। शकुन्तला ने कहा था, "कल मां से मेरी बातचीत हुई थी। आपने जो-जो कहा था, सब कुछ बताया। लेकिन ! उफ् ! आप न रहते तो मुझे ही यह कोयले का कारोबार करना पड़ता। इस बात की मैं कल्पना भी नहीं कर पाती हूँ।"

"हो सकता है आप इस व्यवसाय को और अच्छी तरह चला लेतीं। कहीं कोई बर्बादी नहीं होने देतीं।"

"आप यह क्या कह रहे हैं !" शकुन्तला के स्वर से सुकुमार के प्रति अपार श्रद्धा टपक रही थी।

शायद और भी ढेर सारी बातचीत चलती। लेकिन सुकुमार ने उसका वक्त बर्बाद नहीं किया था।

उसने कहा था, "आज वैगन से कोयला आने की बात है। अभी तुरन्त उसकी डिलीवरी न ली जायेगी तो बहुत सारे ग्राहक लौट जायेंगे।

सुकुमार को अन्दर से इच्छा हो रही थी कि वह शकुन्तला से और कुछ देर तक बातचीत करे मगर उसे कर्त्तव्य को पहला स्थान देना था। बहुत मुश्किल से यह एक काम मिला है, किसी तरह की अवहेलना करेगा तो ईश्वर से यह बात बर्दाश्त नहीं होगी।

सुकुमार ने ड्यूटी में कभी कदम पीछे नहीं रखे हैं। वैगन से लॉरी में कोयले की लदाई कराकर चितपुर रेल साइडिंग से दुकान तक लॉरी पर ही बैठकर चला आया है।

सुकुमार ने इस कर्म-जीवन के बारे में घर पर भी किसी को कोई पता नहीं चला है। सिर्फ छोटी बहिन ने एक बार भैया का कुरता बाल्टी में भिगोते वक्त पूछा था, "दिन-भर कहां का चक्कर लगाते रहते हो ? कुरते में इतनी कालिख क्यों है ?"

बीमारी के बाद से सुकुमार को घर पर विशेष सम्मान मिल रहा था। छोटी बहिन ही उसका कुरता और बनियाइन नियमित तौर पर धो दिया करती थीं। कोई और दूसरा वक्त होता तो सुकुमार बहिन के सवाल से गुस्से में आ जाता, मुंह खोलकर कह देता, "मैं कहीं का चक्कर लगाऊँ, तुझसे मतलब ? तू क्या मेरी

जेठ है ?" लेकिन उस दिन सुकुमार ने कहा था, "मेरी भली बहिना, अच्छी तरह धो दे। अब और कितने दिनों तक मेरा कुरता धोती रहेगी ? किसी दिन भी झट से ससुराल चालान हो जायेगी।"

बहिन ने पैण्ट इतनी अच्छी तरह धोया है कि धोबी को भी हार माननी पड़े।

"कहाँ सीखा यह तूने ?" सुकुमार ने पूछा था।

"दीदी से।" दीदी के कपड़े में कोई खोट रहने से काम नहीं चल सकता। रोज कपड़े में इस्तिरी होनी चाहिए।

इस मौके पर कोयला-दुकान में अस्थायी नौकरी पाने की घोषणा करने से कोई बुरा नहीं होता। सुकुमार का मन छटपट कर रहा था। लेकिन सुकुमार ने पहले जो योजना बनायी है, वही बेहतर है। तनख्वाह मिलने पर वह साढ़े सात सौ ग्राम मांस और ढाई सौ ग्राम मिहिदाना खरीदकर, जेब में हाथ डाले, *विजय के दर्प के साथ घर के अन्दर कदम रखेगा।* सुकुमार किसी को कुछ माँगने का भी सुयोग नहीं देगा। सारे पैसे माँ के हाथों में धर देगा।

•

एक प्रसन्नता का भाव मन के अन्दर भौंरे की तरह गुंजार कर रहा था। फिर भी *आज सुकुमार को नींद क्यों नहीं आ रही ?*

रात का खाना-पीना समाप्त कर कणा अब कमरे के अन्दर आ गयी थी। कणा की चौकी कमरे के उस कोने में है। बीच की चौकी पर छोटी बहिन गहरी नींद में खोयी हुई है। और इस ओर सुकुमार हाथ-पैरों को यथासंभव निढाल छोड़ शयासन की चेष्टा कर रहा था।

"भैया, सो गये क्या ?" कणा अपना चेहरा शान्ति के साथ भैया के चेहरे के पास ले आयी थी।

"कौन, कणा ? सुकुमार सो नहीं पा रहा, यह खबर बेचारी कणा को देकर अब आधी रात में उसकी दुश्चिन्ता बढ़ाने से लाभ ही क्या था ?"

सुकुमार का चादर से ढँका शरीर हल्के से हिल उठा। जैसे वह हल्की नींद में डूबा हुआ था।

"कैसे हो भैया ?" कणा आज अजीब स्वर में पूछ बैठी।

कणा हर रोज भैया की खोज-खबर लेती है लेकिन आज कणा का स्वर बड़ा ही कोमल जैसा लगा।

"मैं बिलकुल ठीक हूँ कणा। हम इतनी बेहतर हालत में कभी नहीं थे, कणा।" उत्तर देते वक्त सुकुमार स्वयं थोड़ी उत्तेजना में आ गया।

तब तक कणा अपनी चौकी के पास जा चुकी थी। दूसरे दिन घर लौटने पर अब तक कणा शरीर और सौन्दर्य के प्रसाधन में व्यस्त हो जाती थी। कणा जाने किस-किस क्रीम का इस्तेमाल कर माथे-गरदन का तैल और मैल दूर कर लेती है। उसके बाद एक और शीशी से कुछ निकालकर मुख पर रगड़ती है। बहुत दिन पहले सुकुमार ने कणा की इस प्रसाधन-प्रीति के सम्बन्ध में दो-चार बार कटुता युक्त राय जाहिर की थी। उन दिनों कणा को बाबूजी से स्नो-पाउडर के लिए पैसे की माँग करनी पड़ती थी। अब कणा किसी पर निर्भर नहीं है। अपनी कमाई से वह दूध की मलाई भी लगाये तो कणा को कोई कुछ नहीं कह सकता।

किसी-किसी दिन कणा बालों में न जाने कैसे-कैसे क्लिप लगाती है। एक-एक क्लिप लगाने में काफी वक्त लग जाता है। एक तो कणा देखने में यों भी बेहद खूबसूरत है, क्लिप लगाकर सामने के कुछ बालों को और घुंघराले बनाने से क्या लाभ होता है, कौन जाने ! यह सब करने में खासा अच्छा वक्त निकल जाता है। रोशनी जली रहने के कारण सुकुमार को असुविधा होती है मगर वह बरदाश्त कर लेता है।

लेकिन आज कणा ने अपने जिस्म का कोई सेवा-जतन नहीं किया। कल शायद दफ्तर बन्द है, सुकुमार ने अन्दाज लगाया।

सुकुमार ने देखा, एक कीमती कपड़ा पहने ही आज कणा सोने जा रही है। लगता है, घर लौटने के बाद उसने कपड़ा नहीं बदला है। मगर कणा तो कपड़ों के मामले में बड़ी सतर्क रहती है।

कुछेक क्षणों तक कमरे में चुप्पी रेंगती रहती है। सुकुमार ने सोचा था, जवाब में कणा कुछ कहेगी। लेकिन कणा की ओर से कोई आवाज नहीं आ रही थी। फिर कणा क्या आज बहुत थकी हुई थी ?

"कणा, आज तुझे ऑफिस में क्या बहुत ज्यादा खटना पड़ा है ?" भैया ने जानना चाहा।

कणा लेकिन तब भी खामोश थी।

"ऑफिस में किसी ने आज तुझे डांटा-फटकारा है ?" भैया पुनः स्नेह के साथ पूछता है। सुकुमार को पता चला है, दफ्तर में साहब लोग अकसर कर्म-

पारियों को डाँटने-फटकारने लगते हैं और वैसी हालत में सब बरदाश्त करना पड़ता है, प्रतिवाद करने का भी कोई उपाय नहीं रहता।

"भैया तुम सोओगे नही ?" अब कणा ने चुप्पी तोड़ी।

"मुझे अभी तुरन्त नींद आ जायेगी, कणा। मगर सोचता हूँ, मुझे इतना सुख मिला है—सो जाऊँगा तो याद ही नहीं रहेगा।"

कणा ने दीवार की ओर मुँह घुमा लिया है। "भैया, सो रहो। नींद ही तुम्हारी दवा है।"

"आनन्द भी मेरी दवा है।" सुकुमार सरल मन से कह बैठा। यह जो बाबूजी की नौकरी का कार्य-काल बढ़ गया है, एक बहिन की अच्छी शादी हो गयी है, मकान के किराये की बाबत एक पैसा भी बकाया नही है, उधार न रहने के कारण पंसारी की दुकान के सामने से सीना तानकर चल सकता हूँ, हम लोगों के घर में आम की लकड़ी की यह जो दो अदद चौकियाँ आ गयी हैं, फर्श पर लेटने की वजह से छछूंदर के काटने का डर नहीं रहता है..."

"भैया।"

"कणा, याद है, बचपन में तुझे छछूंदर ने काट लिया था ? मुझे बड़ा गुस्सा आ गया था। छछूंदर को मैंने भागने का मौका नही दिया था। नाली का मुँह ईंट से बन्द कर छछूंदर को पीट-पीटकर मार डाला था। उससे बेशक कोई सहूलियत नही हुई थी। तुझे इमर्जेन्सी मे अस्पताल ले जाना पड़ा था। बहुत सारे इंजेक्शनों का दर्द भी तुझे बरदाश्त करना पड़ा था।

"भैया, उस समय तुम मुझे बेहद प्यार करते थे ?"

कणा ने इस रात कितना अजीब सवाल किया है! "इसका मतलब ? तब तुझे मैं प्यार करता था और अब नही करता हूँ ? कणा, तुझे इस घर मे कौन प्यार नहीं करता ? तू घर की क्या है, इस बात की मुझे क्या जानकारी नही है ?"

कणा फिर खामोश हो जाती है।

सुकुमार ने कहा, "सब कुछ अगर इसी तरह बढ़िया ढंग से चलता है तो तेरे बारे मे भी एक डिसीजन ले लूंगा, कणा।"

दीवार की ओर मुँह किये ही कणा जैसे हँस रही थी। "मेरे बारे मे तुम लोग क्या करोगे भैया ?"

"भैया का जो कर्त्तव्य है, वही करूँगा। मैं ज़रा खुद को तुझे काम पर नही जाने दूँगा, कणा। जल्दी से जल्दी तेरी शादी मेरी जिम्मेदारी कम हो जायेगी।"

"कणा, तू वोल क्यों नहीं रही है ? तेरी तबीयत खराव है क्या ?"

"भैया, तुम सो रहो। तुम्हारे लिए सोना जरूरी है। इस तरह जगकर मेरे बारे में सोचते मत रहो।"

"मैं नहीं सोचूंगा तो कौन सोचेगा ? जब तक तुझे नौकरी से आजाद नहीं करा लूंगा तब तक मुझे चैन नहीं मिलेगा।"

कणा ने शायद करवट ली। "मेरे बारे में तुम्हें फिक्र नहीं करना है, भैया। मैं कभी तुम लोगों का बोझा नहीं बनूंगी।"

"कणा, तू अब भी अभिमान किये बैठी है ? कब किस जमाने में तुझे डाँटा फटकारा था, वही बात, लगता है तुझे याद आ रही है।"

"उफ् भैया, मैं क्या अब भी नन्हीं-मुन्नी कणा ही हूँ ? तुम सो जाओ, चिन्ता न करो।" कणा की आवाज आज सुकुमार को स्वाभाविक जैसी लग ही नहीं रही थी।

"चिन्तित होना स्वाभाविक है। जानती है कणा, भले घर की लड़की का घर से निकलना ही चिन्ता की बात है। आज ही एक आदमी से झगड़ा हो गया। बहुत ही बड़-बड़ कर रहा था। दो-चार तमाचे लगा दिये। बेटा बहुत दिनों तक याद रखेगा।"

"किसको तुमने तमाचे लगा दिये, भैया ? कणा के स्वर में उद्विग्नता की छाप थी। गुस्से में आने से तुम्हें मना किया गया है न ?"

"मैं गुस्से में नहीं आया था। लेकिन आज गुस्से में न आता तो यही समझा जाता कि सुकुमार मित्तिर जिन्दा नहीं है—उसकी सिर्फ लाश ही घूम-फिर रही है। या फिर सुकुमार मित्तिर भेड़ा हो गया है।"

"भैया !" कणा और अधिक उद्विग्न हो गयी। "तुम्हारे शरीर में कुछ भी नहीं है, भैया।"

"पहले मेरी बात सुन ले, कणा। तू अगर मेरी हालत में होती तू उस आदमी की नाक ही कुचल देती।"

कणा अब शान्तिपूर्वक सुन रही थी।

सुकुमार ने कहा, "जानती है कणा, मैं गली के नुक्कड़ पर चुपचाप बैठा था, तभी तेल से चुपड़ी गरदन लिए एक खल्वाट आदमी टैक्सी से उतरा। अजीब ही तरह का आदमी था। खल्वाट मगर गलमुच्छा। कोट-पैण्ट-टाई पहने था मगर मुँह में पान। दांत पके हुए सेम के बीज की तरह रंगीन थे।

"वह आदमी मुझे देखकर खुलकर हँसा और खड़ा हो गया। हाथ में एक

विजिटिंग कार्ड थमाते हुए बोला, मेरा नाम नटवर मित्तिर है, पब्लिक रिलेशन कन्सलटेन्ट।"

"तभी मुझे सन्देह हो रहा था, कोई न कोई गड़बड़ी होगी। इस आदमी की किस्मत में दुःख ही लिखा है।

"जानती है कणा, उस आदमी में कितनी हिम्मत थी?"

"मुझसे कहा : शिउली दास नामक लड़की की सख्त जरूरत है। यहाँ किस नये मकान में आकर टिकी है, आपको मालूम है?"

"शिउली दास कौन है?" मैंने तीखी आवाज में पूछा।

उस समय उस रास्कल ने कहा : हमारे साथ उसका बिजिनेस रिलेशन है। एकाध घण्टे के लिए उसे होटल ले जाऊँगा। बड़ा ही अर्जेन्ट काम है—साथ में टैक्सी है।"

तत्क्षण खड़े हो मैंने थुथने पर एक घूसा रसीद कर दिया : "बेटे, भले लोगों के मुहल्ले में शिउली दास को तलाश करने आये हो? अगर तुम्हें यहाँ दुबारा देखा तो कमर ही तोड़ दूँगा। जिन्दगी में फिर कभी टैक्सी पर नहीं बैठ सकोगे।"

कणा की छाती प्रबल उत्तेजना से धड़कने लगी थी। भाग्य अच्छा था कि सुकुमार कुछ देख नहीं पा रहा था।

"भैया! तब उस आदमी ने क्या कहा?" सुकुमार को कणा की आवाज काँपती-सी सुनायी पड़ रही थी।

"तुझे डर लग रहा है?" सुकुमार स्नेह के साथ पूछता है।

"डरने की बात ही है। तुझे हर रोज अकेले काम पर जाना पड़ता है' शिउली दास कौन है, समझ में नहीं आ रहा है। हरामजादा नटवर मित्तिर उसकी बर्बादी करके ही दम लेगा। पता लगाकर शिउली के माँ-बाप से कह देना ही अच्छा रहेगा।"

कणा तब भी नटवर मित्तिर वाली बात जानने को उत्सुक थी।

सुकुमार बोला, "पट्ठा पी० आर० सी० तब जबड़ा थामे मुझे धमकी देने लगा : यह काम आपने अच्छा नहीं किया। अब शिउली को ही इस नटवर मित्तिर के पास आकर बिजनेस के लिए पाँव पकड़ना होगा।"

जानती है कणा, उस समय वह आदमी अपना गंजा सिर खुजलाते हुए बोला था, शिउली का एक दूसरा नाम भी है मगर याद नहीं आ रहा है।

कणा को महसूस हो रहा था जैसे उसका पूरा जिस्म बिजली के झटके में

अवश पड़ता जा रहा हो। कणा ने जी-जान से अपनी निस्पन्द देह से करवट लेने की कोशिश की।

टेलीफोन ऑपरेटिंग स्कूल के चरणदास से ही उस बार शिउली को नटवर मित्तिर का नाम सुनने को मिला था। टैक्सी पर बिठाकर चरणदास ने शिउली से कहा था : नटवर बाबू का आदमी है, मेरी बहुत दिनों की पुरानी पार्टी है—उन लोगों को किसी तरह की असुविधा नहीं होनी चाहिए।

केवल कुछ ही महीने पहले के ग्रेट इण्डियन होटल के रास्ते का वह दृश्य कणा की आँखों के सामने दुबारा अभिनीत हो रहा था। सोमनाथ कह रहा था, "मेरा नाम बैनर्जी है। आपका शुभ नाम ?" कणा मुँह घुमाकर कह रही है, "शिउली दास।" ग्रेट इण्डियन होटल में मिस्टर गोयनका के कमरे से निकलने पर एक गंजे आदमी से कणा की मुलाकात हुई थी। लगा, इस आदमी को सब कुछ मालूम है। वह अजीब ही तरह से उसकी ओर घूर रहा था। निश्चय ही वही आदमी नटवर मित्तिर था।

सर्वनाश करने वाले विष की क्रिया से कणा का शरीर जैसे आहिस्ता-आहिस्ता अवश होता जा रहा था।

सुकुमार बोला, "जानती है कणा, शिउली का असली नाम बताने की कोशिश करता तो मैं उस हरामजादे को ऐसा तमाचा लगाता कि वह अपना ही नाम भूल बैठता। मगर नटवर मित्तिर कोई सुविधा न देख भेड़े की तरह पीछे की ओर सरकने लगा। इस बीच मैंने पट्ठे के थुथने पर एक 'माइल्ड' घूसा रसीद कर दिया। लेकिन वह बगैर 'फाइट' किये वेटिंग टैक्सी के अन्दर कूद पड़ा और आँधी की तरह चलता बना।"

कणा का कोई शब्द सुकुमार के कानों तक नहीं पहुँच रहा था। लगता है, बेचारी सो गयी। सुकुमार मित्तिर की आँखों में यदि नींद नहीं है तो दुनिया का और कोई आदमी भी न सोये, यह कैसे हो सकता है ?

•

थोड़ी देर बाद ही गलतफहमी दूर हुई। सुकुमार की आँखों में भी कुछ क्षणों के लिए झपकी आ गयी थी। उसके बाद आँख खोलते ही लगा, कणा सोयी नहीं थी। वह बिस्तर से उठकर खड़ी हो गयी थी।

दीवार से लगी मेज पर बैठी कणा कुछ लिख रही थी। आम की लकड़ी

को इस मेज को कणा ही कुछ दिन पहले खरीदकर ले आयी थी। उसी पर कणा की प्रसाधन की सामग्रियाँ और एक बड़ा-सा आईना पड़ा रहता था।

इतनी रात में कणा क्या लिख रही थी? कणा क्या आजकल छिपकर कविता लिखा करती है?

सुकुमार ने अपने आपको फटकारा। सुकुमार मित्तिर, अपना दिमाग थोड़ा और साफ करो। इस समय एकमात्र जो चीज लिखी जा सकती है वह है डायरी। गहरी रात में बहुतेरे आदमी डायरी के माध्यम से स्वयं से वार्तालाप करते हैं।

लेकिन! सुकुमार को एकाएक याद आया, कणा ने कमरे की बिजली बत्ती नहीं जलायी थी। टॉर्च को मेज पर इस सावधानी के साथ जलाकर रखा था *जिससे कि सुकुमार की नींद में खलल न पहुँचे।*

टॉर्च की रोशनी में भी कोई कभी डायरी लिखता हो, सुकुमार ने ऐसा नहीं सुना था। फिर एक ही विकल्प हो सकता है।

कणा कितनी उत्सुकता के साथ झुककर लिखे जा रही है। कणा जरूर ही पत्र लिख रही है।

इतनी रात में बिस्तर से उठकर इस तरह छिपकर चिट्ठी लिखने योग्य कोई व्यक्ति उसे निश्चय ही मिल गया है। कणा, तू अन्ततः भैया की पकड़ में आ गयी। कॉट बिहाइन्ड द स्टम्प्स—पीछे से भैया तुझ पर निगरानी रख रहा है। *लेकिन डरना नहीं। भैया तुझे डिस्टर्ब नहीं करेगा, तुझे शर्मिन्दा भी नहीं करेगा।*

तू मन के आनन्द और प्राणों के सुख में चिट्ठी लिखती जा, कणा। तेरे लिए कोई प्राइवेसी नहीं है। अपना घर तो दूर की बात, अपनी एक मेज की दराज भी नहीं है। तेरा वैनिटी बैग भी प्राइवेट नहीं है। भाई चाहे उसमें हाथ न डाले लेकिन बहिनें तो जरूरत पड़ने पर उसमें हाथ डालती हैं।

वाणी उस दिन दीदी का वैनिटी बैग लिए कहीं से घूम फिर आयी। बाथ-रूम के नाम से भी अलग कोई स्थान नहीं है, इज्जत बचाने के लिए टाट का एक परदा टाँग *दिया गया है। कहीं सुकुमार ने पढ़ा था, ज्यादातर बंगालियों* की प्राइवेसी एक मात्र पाखाना होता है। लेकिन वहाँ भी वक्त की राशनिंग है।

सुकुमार ने मन ही मन कहा : कणा, तेरे लिए चिन्ता की कोई बात नहीं। जब तक, जिसको भी मर्जी हो, खत लिखती जा। सुकुमार मित्तिर तुझे क्षण भर के लिए भी शर्मिन्दगी में नहीं डालेगा।

सुकुमार ने एकाएक देखा, कणा चिट्ठी लिखना बन्दकर भैया की ओर सतर्क आँखों से ताक रही है।

"भय की कोई बात नहीं है कणा," सुकुमार ने मन ही मन कहा। "तू अपनी पसन्द के अनुसार किसी को चिट्ठी लिखेगी तो मैं उसमें बाधक क्यों बनने जाऊँगा।"

अब सुकुमार के मन में कौतूहल जग रहा था, चिट्ठी का नायक कौन है ? वह कौन युवक है ? उसका स्वभाव कैसा है ? सुकुमार क्या उसे पहचानता है ?

सुकुमार मन ही मन कणा को आश्वासन दे रहा था। जान-पहचान कर किसी से शादी करना सुकुमार की निगाह में अन्याय नहीं है। सुकुमार कहना चाहता था, "कणा, कभी कोई जरूरत पड़े तो बताना, मैं यथासाध्य सहायता करूँगा। तेरा नायक अगर विजातीय भी होगा और मनुष्य की दृष्टि से सज्जन होगा तो भी मेरी ओर से कोई आपत्ति न होगी बल्कि माँ-बाप कहीं अड़ंगा न लगायें, इसके लिए भी मैं कोशिश करूँगा।

"कणा, अभी तुरन्त उठकर तुझसे सब कुछ जानने का लोभ हो रहा है। लेकिन यह उचित नहीं होगा। चाहे जो कुछ हो, मैं तेरा भैया हूँ, इस संबंध में मेरी ओर से अधिक कुतूहल दिखाना ठीक नहीं है। इसके अलावा मामला किस हालत में है, इससे भी मैं परिचित नहीं हूँ।"

कणा ने आहिस्ता से एक पृष्ठ फाड़ डाला। सुकुमार सोच रहा था, कणा को मजमून पसन्द नहीं आ रहा था। वह मन से जो कुछ कहना चाहती है, संकोच के कारण, हो सकता है, वह इस गहरी रात में कलम की नोक पर आना न चाहता हो।

कणा, तू सचमुच ही बड़ी बुजदिल है। चिट्ठी लिखना बन्द कर कुरसी से उठकर तू दबे पाँवों आयी और भैया को देखकर चली गयी। छोटी बहिन को देखना तेरे लिए आवश्यक नहीं है। घर में आग लग जाये तो भी उसकी नींद खुलने वाली नहीं है।

कणा को हो क्या गया था ? चिट्ठी लिखती और फाड़ देती। कणा, तू तो सचमुच ही नर्वस हो गयी, यह बात तेरा भैया समझ रहा है।

कणा ने अब एक पत्र लिखकर मेज पर रखा। मगर टॉर्च की रोशनी बुझी नहीं। वह एक और पत्र लिख रही थी।

वह चिट्ठी लिखना भी खत्म हो गया। मगर कितने आश्चर्य की बात थी! कणा सुकुमार की चौकी की तरफ ही चली आ रही थी।

सुकुमार साँस रोककर लाश की तरह बिस्तरे पर पड़ा रहा। कणा समझ नहीं सकी कि उसके भैया की आँखों में तब भी नींद नहीं है। कणा अब क्या करती है, यही जान लेने का कुतूहल था।

कणा ने उस पत्र को सावधानी के साथ भैया के तकिये के नीचे घुसेर दिया। कणा को शायद डर नहीं लग रहा था। भैया के सिरहाने वह खड़ी थी तो खड़ी ही थी।

इस तरह तो भैया के चेहरे की ओर कणा कभी नहीं निहारती थी। कणा ने मिट्टी की सुराही से एक गिलास पानी ढाला। कणा अब शायद विश्राम करेगी। सुकुमार ने देखा, कणा अपनी चौकी के पास जाकर उस पर बैठ गयी थी, उसके हाथ मे एक गिलास पानी है। अब जलता हुआ टार्च बुझ गया।

सुकुमार का पूरा शरीर एकाएक सिहर उठा। एक अज्ञात भय ने उसे चाबुक मारकर अकस्मात सचेत बना दिया। एक ही लहमे में बिस्तर से उछल कर सुकुमार खड़ा हो गया। उसके बाद दौड़ता हुआ कणा की तरफ गया और मेज पर रखे टॉर्च को जला लिया है।

जिस चीज का डर था वही हुआ। कणा के हाथ मे एक शीशी थी—उसमे सफेद रंग की नींद की टिकिया सुकुमार के लिए रहती है। नयी शीशी की तमाम टिकियाओं को कणा ने पानी के गिलास मे डाल दिया था।

"कणा!" सुकुमार की दबी हुई चीख निकल पड़ी।

उसके पहले चील की तरह झपट्टा मार कर कणा के हाथ से सुकुमार ने पानी का गिलास छीन लिया था। सुकुमार ने कमरे के अन्दर ही गिलास का सारा पानी गिरा दिया।

ऐसा भी हो सकता है, कणा ने शायद इसकी तो कल्पना ही नहीं की थी। उसकी कोमल देह से एक अस्फुट असहाय कराह बाहर निकल पड़ी, "भैया!"

इस बीच सुकुमार के जिस्म मे मलेरिया की जैसी कँपकँपी शुरू हो गयी थी। उसने लपक कर मेज पर रखी चिट्ठी उठा ली।

कणा ने पुलिस को खत लिखा था :

"महाशय, मैं स्वेच्छा से मरने जा रही हूँ। मेरे अलावा कोई दूसरा मेरी मौत के लिए जिम्मेदार नहीं है। कृपया मेरे माँ-बाप, आत्मीय-स्वजनों को तंग न करें। और अगर संभव हो तो कृपया मेरा नाम भी अखबार में न भेजें।—कणा मित्र।"

सुकुमार एक ही छलांग में अपने विस्तर के पास चला आया। तकिये के नीचे से कणा की रखी हुई चिट्ठी को सुकुमार ने टॉर्च की रोशनी में झटपट पढ़ लिया।

"भैया, एक मात्र तुम्हें लिख रही हूँ। इसके अलावा खोजने पर भी मुझे कोई दूसरा उपाय नहीं मिला, भैया। मैं तुम लोगों के मुँह में कालिख लगाना नहीं चाहती। सारा दोष मेरा ही है। अब देर होगी तो समाज के सामने माँ और बाबू जी मुँह दिखाने लायक नहीं रह जायेंगे। छोटी वहिन की भी शादी नहीं होगी। तुम इस पत्र को पढ़ने के बाद ही फाड़ डालना। पुलिस को नहीं देना। अगर संभव हो तो इस बात की कोशिश करना कि पुलिस मेरी देह की चीर-फाड़ न करे। तुम्हें बहुत तकलीफ पहुँचाकर जा रही हूँ। गुडबाई भैया। इति।—कणा।"

सुकुमार ने जलता हुआ टार्च कणा के विस्तर पर फेंक दिया और दोनों हाथों से उसने कणा के हाथ कसकर पकड़ लिये।

"कणा!" यह शब्द एक चीख की तरह ही सुकुमार के मुँह से निकला।

"भैया! रोशनी बुझा दो।" कणा के मुँह से कातर चीख निकल पड़ी। इस क्षण वह अपना कलंकित चेहरा भैया को भी दिखाने को तैयार नहीं थी।

पहले तो सुकुमार की इच्छा हुई कि कणा के गाल पर कसकर एक तमाचा लगाये। मगर सुकुमार की देह अवश होती जा रही थी। उसने टॉर्च की रोशनी बुझा दी।

और एक क्षण की भी देर हो जाती तो सत्तर नींद की टिकियों से भरा पानी कणा की देह के अन्दर चला गया होता यह बात सोचते ही सुकुमार को जोरों से पसीना छूटने लगा। पूरे जिस्म से गिलास पर गिलास पानी दौड़ता हुआ बाहर निकल रहा था।

सुकुमार ने महसूस किया, कणा ने अब अपना मुंह अपने भैया के सीने में छिपा लिया था। गरम-गरम आंसू की बूंदें सुकुमार के सीने के बीच पसीने से एकाकार होती जा रही थीं।

आकाश से भी बारिश शुरू हो गयी थी, साथ ही साथ धरती की छाती को विदीर्ण करके पानी के बुलबुले उठ रहे थे।

सुकुमार ने बोलने की कोशिश की पर वह सफल नहीं हो सका। कणा को क्या हुआ है? इस गहरायी रात में उसे इस तरह मरने की इच्छा क्यों हुई?

ये सब सवाल अब अवश्य ही सुकुमार के सीने में उठ रहे थे। लेकिन सुकुमार के अन्दर से जैसे कोई कह रहा था, भैया के सीने में मुंह छिपाकर तुम्हारी

बहिन रो रही है। अभी बात करने का वक्त नहीं है। उसे रोने ही दो, सुकुमार। रोने से जी हलका हो जाता है न !

•

"क्या मेरी परीक्षा ले रहे हो, भगवान् ?" किसी को न पाकर सुकुमार ने अन्ततः ईश्वर के समक्ष ही यह प्रश्न उठात दिया।

सुकुमार मित्तिर अभी चौराहे के मोड़ पर खड़ा है। मुकुमार ने महसूस किया, दुनिया में कहीं कोई दुःख नहीं है। सभी चेहरे पर हँसी ले ऑफिस-स्कूल-कारखाने की ओर चले जा रहे हैं।

कुछ कमसिन लड़कियाँ कबूतरों के एक प्रगल्भ झुण्ड की तरह आपस में निरर्थक बातचीत करती हुई कॉलेज की ओर जा रही हैं। गोल पार्क के गांगुराम की दुकान में भी बेहद भीड़ है—कितने ही लोग हँसते हुए चेहरे ले मिठाई के पैकेट और दही की हाँड़ियाँ हाथ में थामे बाहर निकल रहे हैं। दूर बिजली की दुकान से स्टीरियो रेकार्ड का हाई-फाई आनन्द-संगीत सड़क पर तैरता हुआ आ रहा है। कल्लोलिनी कलकता नगरी के किसी भी हिस्से में निरानन्द की छाप नहीं है।

राजपथ के इस उत्फुल्ल जनस्रोत को देखकर कौन कहेगा कि थोड़ी ही दूर के एक मकान में भारी मुसीबत का दौर गुजर गया है ? एक जीवित युवती जहर खाकर मरने जा रही थी। आखिर में उसके भैया ने उसे पकड़ लिया—तकदीर अच्छी थी कि भैया को 'इनसोमनिआ' था।

सुकुमार, अभी तुम्हारे लिए उत्तेजित होने का वक्त नहीं है। अभी तुम्हें ठन्डे दिमाग से काम करना होगा। तुम पर ही तुम्हारी प्यारी बहिन का भविष्य निर्भर करता है। कोई मुकुमार के भीतर से यह सब कह रहा था।

मुकुमार का मूड खराब होता जा रहा है। आँखों के सामने सुकुमार देख रहा है, वह दवा धुला हुआ खाली गिलास बाहर फेंक रहा है। उसके साथ ही नींद की दवा की शीशी भी।

लगातार कई दिनों तक सुकुमार का प्रेसक्रिप्शन बार-बार दिखाकर कणा ने अलग-अलग दुकानों से नींद की टिकियाँ इकट्ठी की थीं। और कुछ क्षणों की देरी हो जाती तो शायद सुकुमार मित्तिर को लाश के लिए चीरघर के सामने कमर पर अँगोछा लपेटे बैठा रहना पड़ता। उसकी मनःस्थिति इस क्षण

खराब थी। फिर भी अभी सड़क पर खड़े होकर सुकुमार को अभिनय करना पड़ रहा था।

"अरे सुकुमार दा, घर पर कुशल है न ?" पुराने मुहल्ले के एक नौजवान से सड़क पर मुलाकात हो गयी।

सुकुमार ने निश्छल हँसी हँसकर उत्तर दिया, "ठीक है।" झूठे आचार-विचार के बॉलबेयरिंग पर यह दुनिया किस तरह दनादन चक्कर काट रही है!

"कणा दी कैसी हैं ?"

"बहुत अच्छी।" सुकुमार की जेब में आईना होता तो वह एक बार अपना मुखड़ा देख लेता कि निश्छल हँसी ठीक से उभर पायी थी या नहीं।

कुछेक घण्टे पहले जो मरने जा रही थी, अपने लिए जिसने बहुत बड़ी मुसीबत खड़ी कर ली है, जिस मुसीबत के बारे में सुकुमार मित्तिर के अलावा किसी को कुछ मालूम नहीं है, उसके बारे में 'बहुत अच्छी' कहने के लिए रग-रग में सशक्त अभिनय की क्षमता होनी चाहिए।

सुकुमार किस तरह की दंतुरित मुसकान से अपने चेहरे को भरकर घर से बाहर निकल आया है—जैसे और-और रातों की तरह ही पिछली रात भी बीत गयी है और कहीं कोई उल्लेखनीय घटना घटित नहीं हुई हो।

माँ-बाबूजी, यहाँ तक कि छोटी बहिन भी, आज सवेरे कुछ समझ नहीं सके—मानो बेकार सुकुमार मित्तिर हर रोज जिस तरह अपनी मर्जी से घूमने-फिरने निकल जाता है, आज भी उसी तरह निकल गया है।

अभी तक सुकुमार को कणा के बारे में दुश्चिन्ता है और नहीं भी है। पिछली रात टॉर्च की रोशनी बुझा, कणा को बिस्तर पर लिटाते हुए सुकुमार ने कहा था, "तू मेरी देह छूकर कसम खा कि फिर कभी मरने की कोशिश नहीं करेगी।"

कणा तब भी रोये जा रही थी। "तेरा भैया अब भी क्यों जिन्दा है, कणा ? हाफ-पागल होने के बावजूद तेरा भैया अब भी जिन्दा है। मेरी देह छू।"

कणा को अब जैसे थोड़ा साहस हुआ। भैया की देह छूकर वह फिर रोने लगी थी। "मरने के अलावा मेरे लिए कोई विकल्प नहीं है भैया।"

"मरना ईश्वर ने सब के लिए तय कर दिया है, मरने के लिए किसी को कोशिश नहीं करनी पड़ती, कणा," सुकुमार ने दबी आवाज में कणा से कहा था।

कणा को फिर भी पूरे तौर पर यकीन नहीं हो रहा था। "अगर कोई और दवा है तो मुझे दे दे," मुकुमार ने कणा से कहा था।

अब मुकुमार के लिए भयभीत होने की बारी थी। कणा ने वैनिटी बैग से एक और शीशी निकालकर दी थी। वह शीशी अभी भी मरे मातम की तरह मुकुमार की पैण्ट की जेब में लेटी हुई है।

मुकुमार ने चहल-कदमी करना शुरू किया। सामने ही एक कूड़ादान दीख रहा था। मुकुमार ने जेब से शीशी बाहर निकाली। खटमल मारने की दवा की एक पूरी शीशी कितनी खतरनाक होती है! कितने खटमलों की मौत हुई है, पता नहीं; लेकिन घर-घर में मौत को बुला लाने में इस दवा का कोई मुका-बला नहीं कर सकता।

उफ् वह मौत कैसी होती है! मुकुमार इस मौत से परिचित है।

उस बार उन लोगों के पुराने मकान के सामने वाले घर में रमला भाभी ने इसी दवा को पी लिया था। भाभी के अन्तर्मन में कौन-सा दुःख था जिसे जाहिर न कर पाने की वजह से वह मानसिक सन्तुलन खो बैठी थीं! लेकिन लुक-छिपकर नींद के आगोश में लिपटकर, घर वालों को धोखा देकर चले जाने की यह दवा नहीं है। खटमल की दवा में कितनी यातना होती है—देह का मालिक मरना चाहता है मगर देह इस बात के लिए कतई सहमत नहीं होती। अपनी आँखों के सामने जिसने जिन्दगी और मौत की यह रस्साकशी नहीं देखी वही भाग्यवान् है। मौत लाज-शरम खोकर शाइलॉक द ज्यू की तरह अपना पाई-पाई बकाया वसूलने के लिए भोथरे चाकू को कसाई की तरह बार-बार उपयोग में लाती है।

मुकुमार ने खटमल मारने वाली दवा को फेंक दिया। किसी ने नहीं देखा। रमला भाभी की उस मौत को कणा ने भी अपनी आँखों से देखा था। फिर कणा ने अपने लिए यह दवा क्यों खरीदी?

मुकुमार को याद आ रहा है, कहीं उसने पढ़ा था, आत्महत्या के मामले में भी गरीब और अमीर में आकाश-पाताल का अन्तर रहता है। जो लोग बेहद गरीब होते हैं वे बहुत कम खर्च में ही अपना काम निकाल लेते हैं—पेड़ की डाल पर धोती या साड़ी बाँधकर लटक जाते हैं, क्योंकि गरीबों के घर पर लटकने के लायक पंखा या लोहा-लक्कड़ नहीं होता। जिसके लिए और कोई विकल्प नहीं उसका मददगार मिट्टी का तेल है। किसी जमाने में औरतें इसी को पसन्द करती थीं, अब फॉलीडॉल या खटमल की दवा का युग है। अमीर

लोग पोटेशियम सायनाइड पसन्द करते हैं—लेकिन हर कोई इसका इन्तजाम नहीं कर पाता। इसलिए सामान्य लोगों के लिए नींद की टिकिया है।

उस समय सुकुमार इस बात को कितनी सहजता से पढ़ गया था, मगर आज सोचकर ही उसका शरीर सिहर उठता है। सुकुमार मित्तिर क्या करे उसकी समझ में नहीं आ रहा है।

कणा की गति क्या होगी, यह बात जब तक तय नहीं हो जाती तब तक उसके मस्तिष्क के अन्दर की यह बेचैनी दूर नहीं होगी।

अब कणा की बात भूलकर बस पर चढ़ना जरूरी है। मिसेज घोष का कोयले का व्यवसाय अवहेलना की चीज नहीं है।

सुकुमार छलांग लगाकर एक चलती हुई बस के फुटबोर्ड पर चढ़ गया। सरदार कण्डक्टर जीने के पास ही था—सर्कस के रिंग मास्टर की तरह उसने सुकुमार को लोककर अभयदान किया।

सुकुमार को बड़ा ही अच्छा लगा। मात्र कुछेक पैसों के बदले दुनिया के और किसी भी स्थान में इस तरह की सेवा और उपकार प्राप्त नहीं होता।

७

"क्या हाल-चाल है, सुकुमार बाबू ?" कोयला दुकान की अस्थायी मालकिन मिसेज घोष आज सुबह ही दुकान की देख-रेख करने चली आयी थीं।

सुकुमार क्या जवाब दे ? "मुझे देखकर कैसा लग रहा है, मिसेज घोष ?" सुकुमार अभी कोई चान्स नहीं लेना चाहता।

"देखने पर तो अच्छे ही लग रहे हैं," मिसेज घोष ने हँसकर जवाब दिया।

सुकुमार इस तरह हँसा कि मिसेज घोष ने अन्दाज लगा लिया, सुकुमार सुख-शान्ति के साथ ही है।

"फिर मेरी अभिनय-क्षमता अभी तक नष्ट नहीं हुई है। कॉलेज में अभिनय का जो रिहर्सल करता था, वह व्यर्थ साबित नहीं हुआ।" नीरव सुकुमार ने स्वयं को सराहा।

मिसेज घोष स्नेह भरी दृष्टि से सुकुमार की ओर देख रही थीं। इस स्नेहपूर्ण दृष्टि से धोखाधड़ी करने में बहुत ही बुरा लगता था लेकिन, दूसरा उपाय भी क्या था।

सुकुमार मन ही मन बुदबुदाया, "मिसेज घोष, मेरा अपराध क्षमा करें। मेरी बहिन खुदकुशी करने जा रही थी, भाग्यवश मैंने उसे बचा लिया। लेकिन वह बहुत बड़ी मुसीबत मे फँस गयी है—ऐसी मुसीबत में जिसके बारे में मेरे अतिरिक्त माँ-बाप, भाई-बहिन किसी को कुछ मालूम नही। मैंने कणा से वायदा किया है कि किसी से कुछ नहीं बताऊँगा और अकेले ही उसे इस मुसीबत से छुटकारा दिलाऊँगा। यह सब अच्छा रहने का लक्षण नहीं है। आपने मुझे काम दिया है, आप मेरी अन्नदायिनी हैं। आपसे झूठ नही कहना चाहिए था। लेकिन मेरे लिए आज कोई दूसरा रास्ता नही है। कणा की हया का मतलब है पूरे मित्तिर वंश की हया। उसी हया की रक्षा करने के लिए ही तो कणा आज आत्महत्या करने जा रही थी।

"देख रही हूँ, कोयले की बिक्री दिन-दिन बढती जा रही है। आपने क्या किया है!" मिसेज घोष ने अब व्यावसायिक वार्तालाप करना शुरू कर दिया।

"बड़ा ही सीधा-सा प्रोसेस है। दुकान मे कुछ विश्वसनीय कर्मचारी हैं ही। उन लोगों के साथ दुकान मे ग्राहकों की उम्मीद में खामोश बैठे रहने के बजाय मैं बाहर निकल जाता हूँ। मजीद खाँ की मांस-पराठे की दुकान मे ही रोज दो मन कोयले की खपत होती है। अपना कोयला खरीदने के लिए मैंने उसके मालिक को राजी कर लिया है।"

मिलने-जुलने से काम निकलता है, यह बात मिसेज घोष नही जानती थीं।

सुकुमार ने कहा, "आदमी के सामने जाकर खड़े होने से बहुत बार मंत्र जैसा काम होता है, मासी जी। मैं कीमत ज्यादा लेता नही, वजन मे भी धोखा नही देता या फिर आधा पत्थर और चार आना जले कोयले की राख भी नही मिलाता। मैं तो बस इतना ही चाहता हूँ कि एक बार अच्छा कोयला सप्लाई करने का अवसर मिले।"

मासी जी सन्तुष्ट थी। लेकिन इस सुनहले मौके को हाथ से जाने नहीं दिया जायेगा। "मासी जी, आज मुझे एक जरूरी काम है। मैं आज थोड़ी देर बाद ही घर चला जाऊँगा।"

सुकुमार जरूर ही चला जायेगा। लेकिन नयी नौकरी में इस तरह कहे बगैर जाना अच्छा नही लगता।

"जरूरत है तो जरूर जाओ, बेटा।" मिसेज घोष एक ही बार कहने पर राजी हो गयी।

सुकुमार कई बार सड़कों पर निरुद्देश्य चक्कर लगाने के बाद एसप्लेनेड के सामने आकर खड़ा हो गया है । उसके सिर का अन्दरूनी हिस्सा टन-टन कर रहा था ।

सुकुमार मित्तिर, इस तरह अवसन्न मत हो जाओ । सुकुमार ने स्वयं को फटकारा, तुम्हें कोई बहुत बड़ा काम नहीं दिया गया है, मगर तुम इस तरह दीख रहे हो जैसे दुनिया-भर की जिम्मेदारियाँ तुम्हारे ही सर पर सौंप दी गयी हों ।

सुनो सुकुमार, बहुत ही आसान काम है । यह कलकत्ता शहर प्रासाद पुरी है । मूल कलकत्ता मात्र तीस या तैंतीस वर्ग मील था । उसके बाद बढ़ते-बढ़ते कलकत्ता सैकड़ों वर्गमील में फैल गया । चारों तरफ लाखों मकान बन गये हैं । तुम्हें सिर्फ एक सिर टिकाने लायक जगह किराये पर लेनी है । और वह भी बहुत ही जल्दी । टाल-मटोल करके समय बर्बाद करने से काम नहीं चलेगा ।

कणा से तुमने वायदा किया है कि इस घर, इस मुहल्ले और जाने-पहचाने लोगों के बीच से तुम उसे बहुत दूर कहीं किसी अनजाने स्थान में जल्दी से जल्दी हटाकर ले जाओगे ।

फिर अभी तुम किस तरफ जाओगे सुकुमार ? जिस ओर यादवपुर न पड़े उस तरफ की किसी बस पर उसे चढ़ना है । यादवपुर के आसपास कणा को रखा नहीं जा सकता ।

"भैया, तू मुझे बहुत दूर हटाकर ले जायेगा न ?" मौत के मुंह से बाहर निकलने के बाद कणा ने दयनीय स्वर में पूछा था ।

उसी वक्त सुकुमार की समझ में आ गया था कि अब डर की कोई बात नहीं है । जीवित रहने की इच्छा प्रबल न रहे तो कोई इस घर से भागने की बात सोच नहीं सकता ।

सुकुमार तब तक दूसरी ही बात सोच रहा था । साक्षात् मृत्यु को खाली हाथ विदा करने के बाद वह क्या करे, तय नहीं कर पा रहा था । एक बार माँ और बाबू जी को बुलाने की भी बात ध्यान में आयी थी । लेकिन कणा ने कहा था, "ऐसा करोगे तो मैं नदी में जाकर कूद पड़ूंगी ।"

"कणा, कणा, तेरे लिए डरने की कोई बात नहीं है । तू जो कहेगी, मैं वही करूँगा । तुझे लेकर मैं यहाँ से चला जाऊँगा ।"

कणा की इच्छा-पूर्त्ति के अलावा संभवतः कोई दूसरा रास्ता शेष नहीं । कणा के जिस्म की मुसीबत छिपी हुई नहीं रह सकती—कुछ हफ्तों के दरमियान ही खुली आँखों से पकड़ में आ जायेगी । छोटी बहिन के बारे में भी सोचना है ।

उसने कोई गुनाह नही किया है। वह व्यर्थ क्यों इसके जाल मे फँसकर अन्याय का मूल्य चुकायेगी ?

सुकुमार को शुरू में बेहाला की बात याद आयी। बेहाला से बहुतेरे आदमी किले के मैदान में फुटबॉल का खेल देखने आते हैं—मोहन बागान के पक्षधर बेहाला मे बहुत सारे हैं।

सुकुमार बेहाला की बस पर बैठ गया था।

लेकिन एकाएक उसे याद आया, बड़िया की ओर बाबू जी के फुफेरे भाई रहते हैं। बाबू जी के फुफेरे भाई से पिछले पाँच बरसो के दरमियान दो बार भी मुलाकात हुई है या नहीं, इसमें सन्देह है। लेकिन जहाँ शेर का भय रहे वही अक्सर शाम हो जाती है—हो सकता है वही हीरू काका से मुलाकात हो जाये।

और हीरू काका से मुलाकात हो भी गयी। बाकी बात सुकुमार सोच भी नही पा रहा था। जिस वजह से कणा को लेकर निकलना है वही चौपट हो जायेगा।

बहू बाजार की बात भी सुकुमार के ध्यान मे आयी। मलंगा लेन आशुतोष मुखर्जी और सुकुमार मित्तिर का जन्मस्थान है। वासस्थान की मोह-माया त्याग कर सुकुमार के मामा बहुत पहले राजस्थान भाग चुके हैं, मगर वहाँ मामा के दूर के रिश्ते के कई सगे-संबंधी अब भी वास कर रहे हैं। मकान टूटा-फूटा जैसा है। गिर जाने के भय से कलकत्ता कॉरपोरेशन से एक बार तोड़ने का नोटिस दिया गया था, लेकिन इंजंक्शन की सुविधा मिल जाने से मातृकुल अब भी मलंगा लेन मे ही फल-फूल रहा है।

भवानीपुर ? वह अच्छी जगह है। वहाँ आसानी से लोगों की भीड़-भाड़ मे छिपकर रहा जा सकता है। सुकुमार ने शुरू मे वही कोशिश की।

मकान किस तरह किराये पर लिया जाता है, सुकुमार को मालूम नही था।

सुकुमार जन्म से ही यादवपुर बस्ती में वास करता आ रहा था। बाबू जी ने वहाँ किस तरह डेढ अदद कमरे का इन्तजाम किया था, ईश्वर जाने। उसके बाद सुकुमार की गैरहाजिरी में नयी बस्ती मे जाकर उससे भी अच्छा मकान दखल करने की बात भी उसके लिए रहस्यपूर्ण है। इसका श्रेय बाबू

को है या कणा को, सुकुमार को इसका भी पता नहीं है। मोटे तौर पर यही कहा जा सकता है कि मकान-किराये पर लेने के मामले में सुकुमार बिलकुल अनभिज्ञ है—इस संबंध में उसने कभी माथा-पच्ची नहीं की थी।

कई घण्टों तक चक्कर लगाने के बाद सुकुमार थक गया। भवानीपुर के गली-कूचे में इतने-इतने मकान हैं, हर घर में दर्जनों कमरे हैं, लेकिन सब भरे हुए हैं, इस बात पर यकीन ही नहीं होता।

पहले वह यादवपुर की साइन पेन्टर दुकान में अड्डेबाजी किया करता था। हाथ में काम न रहता तो आर्टिस्ट सुदर्शन सामन्त 'टु लेट' साइन बोर्ड रंगते रहते थे। रेडीमेड रखने पर बिक्री हो जाती थी। 'टु लेट' का मतलब होना चाहिए, बहुत देर हो चुकी है, लेकिन उसका असली अर्थ 'मकान किराये पर' क्योंकर हो गया, यह बात सुकुमार की समझ में नहीं आती थी।

सुकुमार टू लेट साइन बोर्ड की खोज में गली-कूचे का बहुत देर तक चक्कर काटता रहा—दोमंजिले, तीनमंजिले बरामदों की ओर ताकते-ताकते उसकी गरदन दुखने लगी है। मगर किराये पर मकान कहाँ मिलता है ? भवानीपुर में तो मकान किराये पर उठाने का रिवाज ही जैसे खत्म हो गया था।

•

शाम के वक्त थका-माँदा सुकुमार मंथरगति से चलता हुआ घर लौट आया।

घर के अन्दर कदम रखते ही माँ ने राय जाहिर की, "दिन-भर कहाँ-कहाँ चलह-कदमी करता रहता है ? कणा भी आज काम पर नहीं निकली है। बेचारी तेरी तलाश कर रही थी।"

"कणा की तबीयत शायद ठीक नहीं है," माँ ने सूचना दी।

"पता नहीं, उसे क्या हो गया है। खुलकर कुछ बताती भी नहीं। हालांकि कई दिनों से खाना बिलकुल ही नहीं खा रही है। शरीर दुबला होता जा रहा है। आँख के नीचे स्याहपन आ गया है। कणा को चाहिए कि वह एक बार मानु डॉक्टर से दिखा आये।"

माँ और भी आग्रह का प्रदर्शन करती, लेकिन छोटी बहिन ने जैसे ही कहा कि मानु डॉक्टर अब डिसपेंसरी में चार रुपया लेता है तो माँ का उत्साह ठण्डा पड़ गया।

"यह कितना अन्याय है ? दुकान पर जाकर दिखा आने की फीस भी चार रुपया ! इससे तो अच्छा हम लोगों का अघोर होमियो हॉल है—इतने जानकार डॉक्टर हैं लेकिन दवा सहित केवल आठ आना खर्च करना पड़ता है।"

सुकुमार यह सब बात सुन रहा था मगर उसने कोई राय जाहिर नहीं की।

सुकुमार ने अब अपनी आँख और चेहरे पर पानी छिड़ककर थकावट और नाउम्मीदी को धो डालने की कोशिश की। कणा चौकी पर लेटी हुई थी, वह दूर से उसे देख रहा था।

कमरे के अन्दर प्रवेश करते ही कणा ने भैया के चेहरे की ओर देखा। इन्ही कुछ घण्टों में कणा का चेहरा सूखकर जैसे आधा हो गया है। कणा जानना चाहती थी कि क्या हुआ।

कणा अब जैसे पहचान में ही नही आ रही थी। जिस कणा ने घोर विपत्ति के समय गृहस्थी की पतवार सँभाली थी वही कणा जैसे एक ही दिन में अदृश्य हो गयी थी।

ईश्वर ने औरतों को कितनी अधिक मुसीबतें दे दी हैं, सुकुमार को उनके इन दो नजरों से देखने का कारण ढूँढे भी नहीं मिल रहा था।

कणा भैया के चेहरे की ओर ताक रही थी। घर में छोटी बहिन के रहने के कारण बेचारी मुँह खोलकर सवाल भी नहीं कर पाती। लेकिन सुकुमार को कणा का सवाल समझ में आ रहा था। वह जानना चाहती थी, घर की तलाश के मामले का क्या हुआ ?

कणा की मौजूदा मानसिक स्थिति की वास्तविक परिस्थिति का पता चल जाने पर सुकुमार के मन में ममता जगती है। वह अभी तुरन्त कणा को निराशा के गहरे जल में नहीं डालना चाहता।

इसीलिए सुकुमार ने कहा, "आज बेहद चक्कर काटकर आ रहा हूँ। थोड़ी बहुत सूचनाएँ भी मिली हैं। देखें, क्या होता है।"

देखें क्या होता है नहीं, कणा एक क्षण की भी देर पसन्द नहीं करती। वह इस घर को छोड़कर चली जाने के लिए बेचैन हो उठी थी, यह बात उसके चेहरे की हर लकीर से साफ-साफ झलक रही थी।

बेचैन होने के अलावा कणा के लिए कोई दूसरा विकल्प नहीं, यह बात कणा के अलावा इस घर में एकमात्र सुकुमार ही समझ रहा था। कणा की जिस्मानी हालत के बारे में सोचते ही उसके दिमाग के अन्दरूनी कल-पुर्जे फिर ढीले पड़ने लगते थे।

सुकुमार उसी रात ही समझ गया था कि कणा कितनी बड़ी मुसीबत में

को है या कणा को, सुकुमार को इसका भी पता नहीं है। मोटे तौर पर यही कहा जा सकता है कि मकान-किराये पर लेने के मामले में सुकुमार बिलकुल अनभिज्ञ है—इस संबंध में उसने कभी माथा-पच्ची नहीं की थी।

कई घण्टों तक चक्कर लगाने के बाद सुकुमार थक गया। भवानीपुर के गली-कूचे में इतने-इतने मकान हैं, हर घर में दर्जनों कमरे हैं, लेकिन सब भरे हुए हैं, इस बात पर यकीन ही नहीं होता।

पहले वह यादवपुर की साइन पेन्टर दुकान में अड्डेबाजी किया करता था। हाथ में काम न रहता तो आर्टिस्ट सुदर्शन सामन्त 'टु लेट' साइन बोर्ड रंगते रहते थे। रेडीमेड रखने पर बिक्री हो जाती थी। 'टु लेट' का मतलब होना चाहिए, बहुत देर हो चुकी है, लेकिन उसका असली अर्थ 'मकान किराये पर' क्योंकर हो गया, यह बात सुकुमार की समझ में नहीं आती थी।

सुकुमार टु लेट साइन बोर्ड की खोज में गली-कूचे का बहुत देर तक चक्कर काटता रहा—दोमंजिले, तीनमंजिले बरामदों की ओर ताकते-ताकते उसकी गरदन दुखने लगी है। मगर किराये पर मकान कहां मिलता है? भवानीपुर में तो मकान किराये पर उठाने का रिवाज ही जैसे खत्म हो गया था।

●

शाम के वक्त थका-मांदा सुकुमार मंथरगति से चलता हुआ घर लौट आया।

घर के अन्दर कदम रखते ही मां ने राय जाहिर की, "दिन-भर कहां-कहां चलह-कदमी करता रहता है? कणा भी आज काम पर नहीं निकली है। बेचारी तेरी तलाश कर रही थी।"

"कणा की तबीयत शायद ठीक नहीं है," मां ने सूचना दी।

"पता नहीं, उसे क्या हो गया है। खुलकर कुछ बताती भी नहीं। हालांकि कई दिनों से खाना बिलकुल ही नहीं खा रही है। शरीर दुबला होता जा रहा है। आंख के नीचे स्याहपन आ गया है। कणा को चाहिए कि वह एक बार मानु डॉक्टर से दिखा आये।"

मां और भी आग्रह का प्रदर्शन करती, लेकिन छोटी बहिन ने जैसे ही कहा कि मानु डॉक्टर अब डिसपेंसरी में चार रुपया लेता है तो मां का उत्साह ठण्डा पड़ गया।

"यह कितना अन्याय है ? दुकान पर जाकर दिखा आने की फीस भी चार रुपया ! इससे तो अच्छा हम लोगों का अघोर होमियो हॉल है—इतने जानकार डॉक्टर हैं लेकिन दवा सहित केवल आठ आना खर्च करना पड़ता है।"

सुकुमार यह सब बात सुन रहा था मगर उसने कोई राय जाहिर नहीं की।

सुकुमार ने अब अपनी आँख और चेहरे पर पानी छिड़ककर थकावट और नाउम्मीदी को धो डालने की कोशिश की। कणा चौकी पर लेटी हुई थी, वह दूर से उसे देख रहा था।

कमरे के अन्दर प्रवेश करते ही कणा ने भैया के चेहरे की ओर देखा। इन्हीं कुछ घण्टों में कणा का चेहरा सूखकर जैसे आधा हो गया है। कणा जानना चाहती थी कि क्या हुआ।

कणा अब जैसे पहचान में ही नहीं आ रही थी। जिस कणा ने घोर विपत्ति के समय गृहस्थी की पतवार संभाली थी वही कणा जैसे एक ही दिन में अदृश्य हो गयी थी।

ईश्वर ने औरतों को कितनी अधिक मुसीबतें दे दी हैं, सुकुमार को उनके इन दो नजरों से देखने का कारण ढूंढ़े भी नहीं मिल रहा था।

कणा भैया के चेहरे की ओर ताक रही थी। घर में छोटी बहिन के रहने के कारण बेचारी मुँह खोलकर सवाल भी नहीं कर पाती। लेकिन सुकुमार को कणा का सवाल समझ में आ रहा था। वह जानना चाहती थी, घर की तलाश के मामले का क्या हुआ ?

कणा की मौजूदा मानसिक स्थिति की वास्तविक परिस्थिति का पता चल जाने पर सुकुमार के मन में ममता जगती है। वह अभी तुरन्त कणा को निराशा के गहरे जल में नहीं डालना चाहता।

इसीलिए सुकुमार ने कहा, "आज बेहद चक्कर काटकर आ रहा हूँ। थोड़ी बहुत सूचनाएँ भी मिली हैं। देखें, क्या होता है।"

देखें क्या होता है नहीं, कणा एक क्षण की भी देर पसन्द नहीं करती। वह इस घर को छोड़कर चली जाने के लिए बेचैन हो उठी थी, यह बात उसके चेहरे की हर लकीर से साफ-साफ झलक रही थी।

बेचैन होने के अलावा कणा के लिए कोई दूसरा विकल्प नहीं, यह बात कणा के अलावा इस घर में एकमात्र सुकुमार ही समझ रहा था। कणा की जिस्मानी हालत के बारे में सोचते ही उसके दिमाग के अन्दरूनी कल-पुर्जे फिर ढीले पड़ने लगते थे।

सुकुमार उसी रात ही समझ गया था कि कणा कितनी मुसीबत में

फँस गयी थी। भले घर की कुमारी लड़की के लिए इस से बढ़कर भी कोई मुसीबत हो सकती, यह सोचकर ही सुकुमार के मन-मस्तिष्क दोनों एक क्षण के लिए निष्क्रिय हो गये थे। सुकुमार को डर लगा था कि शायद पक्षाघात का यह दौरा आहिस्ता-आहिस्ता उसकी तमाम देह में फैल जायेगा।

लेकिन कितने आश्चर्य की बात है। दूसरे ही क्षण उसके मन में अकल्पित शक्ति का संचार होने लगा। सुकुमार के एक बार बेकल हुए दिमाग के अन्दरूनी हिस्से से किसी ने जैसे हुक्म दिया, मुसीबत आयी है तो क्या हुआ? अपनी बहिन को यदि तुम इस घनघोर विपत्ति से उबार नहीं सके तो तुम किस तरह के सहोदर हो? बचपन से ही कणा तुम्हें भैया किसलिए कहती आयी है?

सुकुमार टॉर्च की रोशनी में कणा के चेहरे की ओर बहुत देर तक निहारता रहा था। उन कई क्षणों के दौरान ही सुकुकार की उम्र संभवतः कई युग आगे बढ़ गयी। सुकुमार बड़ा ही भोला था। प्रजनन-रहस्य के बारे में एक धुंधली-सी धारणा रहने के बावजूद, इसके बारे में सुकुमार ने विशेष ज्ञान अर्जित नहीं किया था। लेकिन दुनिया ने उसे माफ नहीं किया—सुकुमार तुम्हारी कुमारी बहिन अभी गर्भवती है।

सुकुमार भयंकर भँवर के नीचे समा जा सकता था। लेकिन सुकुमार ने महसूस किया था, अभी समा जाने का वक्त नहीं है। सुकुमार कहने जा रहा था, "कणा, कणा, यह तूने क्या किया?" लेकिन आत्महत्या को आतुर कणा की असहाय मूर्त्ति ने सुकुमार की जीभ को जड़ बना दिया था। सुकुमार ने महसूस किया, सामने बहुत बड़ी मुसीबत है इसलिए अभी बातचीत करने का वक्त नहीं है।

और कणा, इस क्षण इस प्रकार पकड़ में आ जाने के कारण पूरी तरह टूट गयी थी। देह के अन्दर की नाशक संभावना ने पिछले कई दिनों के भीतर ही उसे संकटग्रस्त कर दिया था। अकेले सोचते-सोचते उसे कोई रास्ता नजर नहीं आता था।

घर पर सभी के सामने कणा को अभिनय करना पड़ा है, मगर पार्क स्ट्रीट के चरणदास ने मार्क किया था, दीदीजी का मूड ठीक नहीं था। कुशलतापूर्वक सवाल करने पर कणा से उसे डाँट भी खानी पड़ी थी। उस जहरीले माहौल और उन गन्दे लोगों की हरकतों के बारे में सोचने पर कणा का पूरा जिस्म नफरत से भर गया था।

इन लोगों से अपने बारे में चर्चा करने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता—इसीलिए कणा ने अन्ततः अपने रास्ते का चुनाव स्वयं कर लिया था।

भैया को अब तक कोई खास जानकारी प्राप्त नहीं हुई है। नीचे उतरते-उतरते वह बर्बादी के किस स्तर पर उतर आयी थी, यह आज भी भैया की कल्पना के बाहर की बात है। भैया को बस इतना ही समझ मे आया है कि उसकी बहिन कणा जिस्मानी मुसीबत मे फँस गयी है।

सुकुमार उस तीसरे पहर कणा की ओर फिर ताक रहा था। कणा चिन्ता मे शराबोर है, यह बात वह समझता है लेकिन चिन्ता किस बात की है, यह उसकी समझ मे नही आया।

सुकुमार ने कहा, "चलो कणा, जरा घूम-फिर आयें।" सुकुमार कणा को इस दमघोंटू वातावरण से कुछ क्षणों के लिए बाहर ले जाना चाहता था।

अचानक इस मुसीबत की गिरफ्त मे फँस जाने के कारण सबको बेहद ऊब महसूस हो रही थी। सोचा था, थोड़ा-बहुत गुस्सा जाहिर कर वह अपना मूड ठीक कर लेगा। लेकिन चहल-कदमी करती हुई कणा के बुझे चेहरे की ओर देखकर उसे साहस नही हुआ।

"कणा, तू किसी तरह की फिक्र मत कर। मैं सारा कुछ सही रास्ते पर ला दूँगा। तू जो चाहती थी वही होगा।"

कणा ने अब भी मुँह नही खोला। एक ही रात के संकट ने उसे मलबे मे बदल दिया था।

सुकुमार ने कहा, "किसी न किसी मकान का मैं इन्तजाम करके ही रहूँगा।"

सुकुमार ने सोचा था, कणा इससे अब बहुत कुछ शान्त हो जायेगी। घर से बाहर आ भैया से खुलकर बातचीत करने के बाद उसके मन की उदासी दूर हो जायेगी। और उसी अवसर से लाभ उठाकर सुकुमार और भी खबरें मालूम कर लेगा। कणा की इस बर्बादी के लिए जिम्मेदार कौन है? सुकुमार यही जानना चाहता था। सुकुमार मित्तिर अभी मर नही गया है। वह जब तक इसका कोई निवटारा नही कर लेगा तब तक दम नही लेगा।

लेकिन बातचीत का दौर आगे नही बढ़ा। कणा एकाएक बोल उठी, "मैं अब और आगे नही जाऊँगी। भैया, घर चलो।"

अब तक सुकुमार को इतना ही पता था कि इस मनहूस बंगाल में नौकरी ां मिलती मगर अब उसे पता चल रहा है कि इस अभागे प्रदेश में सिर छिपाने लिए कोई जगह मिलना भी काफी मुश्किल है।

दो दिन सवेरे के वक्त मारे-मारे फिरने के बाद भी सुकुमार कोई रास्ता हीं निकाल सका। काँसारीपाड़ा के निकट चायघर के एक आदमी ने कहा, खुद चक्कर लगाकर किराये का मकान ढूंढ़ने का जमाना बहुत दिन पहले ही ख़त्म हो चुका है।"

फिर अब कौन-सा जमाना आ गया है ? मकान और किरायेदार—ये दोनों तो कलकत्ते से मिट नहीं गये हैं।

"जिन्दगी भर इस तरह चक्कर लगाते रहियेगा तो भी मकान नहीं मिलेगा सर ! हालांकि पहले कितनी सहूलियत का वक्त था। मेरी ही बात लें।"

सुकुमार की मानसिक स्थिति ऐसी नहीं है कि वह पुराने पचड़े में पड़े, लेकिन कहीं कोई सूचना मिल जाये, इसी उम्मीद में उसे उत्सुकता जाहिर करनी पड़ी थी।

वह आदमी बीड़ी का कश लेते हुये बोला, "सिर्फ कुछ ही साल पहले की बात है, मेरे छोटे बच्चे ने तब पैरों के बल चलना नहीं सीखा था। सवेरे बाजार की तरफ निकलने के वक्त चूल्हे की राख फेंकने की बात लेकर मकान-मालिक से झगड़ा हो गया। सो मूड इतना बिगड़ गया कि एक घंटे के दरमियान आलू का भुरता और भात खाकर देन एण्ड देयर मकान छोड़ दिया। ठेलागाड़ी आकर हाजिर हो गई। उस पर माल-असबाब रख दिया और बीवी के लिये रिक्शा ठीक किया।"

जली बीड़ी को उसने फेंक दिया। उसके बाद फिर कहना शुरू किया, "बीवी ने नर्वस होकर पूछा, हम लोग कहाँ जा रहे हैं। सो इस बात की जानकारी मुझे भी कहाँ थी। सिर्फ इतना ही जानता था कि जेब में नकद पैसा रहे तो इस कलकत्ता शहर में किराये के मकान की कमी नहीं होगी। ठेले से कहा, चलो।"

"उसके बाद ?" सुकुमार ने पूछा।

"उसके बाद और क्या ? ठेलेवाले से ही कहा : किराये पर मकान लेने वे वक्त तुम्हीं लोग थे और छोड़ने पर भी तुम्हीं लोग हो। कहाँ की क्या खबर है बताओ प्यारे। उस वक्त ठेलेवाले ने ही सूचना दी : बाबू कल एक किरायेदा का माल उतार कर आया हूँ। वह मुझे वहीं ले गया। मकान-मालिक नी

उतर कर आया, बातचीत तय कर आधे घंटे के दरमियान ही नये मकान के अन्दर घुस गया।"

सुकुमार उस स्वर्ण युग की बात सुन चुका था। मकान-किराये पर लेने के महत्त्व की ओर इसके पहले उसका ध्यान नहीं गया था। "उसके बाद ?" सुकुमार सोच रहा था, अब शायद कोई ताजा समाचार मिल जायेगा।

वह आदमी बोला, "दुख की बात अब क्या कहूँ, बाद में पता चला कि आस-पास और कई भी मकान खाली थे। ठेलेवालों को यह बात मालूम थी। लेकिन ज्यादा ठेला-भाड़े के लालच में मुझे वह सबसे दूर के मकान-मालिक के पास ले गया था। सो मैं भी एक महीना ठहरने के बाद आसपास के मकान में चला आया। ठेला पुराना ही था। ठेलेवाले को भरपूर डाँट पिलाई थी, यह बात मुझे अच्छी तरह याद है।"

तो निष्कर्ष यही निकलता है कि ठेलेवालों को बहुत कुछ पता रहता है। समय बर्बाद करने के बजाय सुकुमार ठेलेवालों की तलाश में निकल पड़ा।

ठेलावाला चूना-सुर्खी की एक दूकान के सामने बैठकर खैनी मल रहा था। सुकुमार की बात सुनकर वह खासी मुसीबत में फँस गया। बोला, "हुजूर, कितने ठेले चाहिये, बताइये, मैं भेज दूँगा। लेकिन किराये के मकान का मुझे पता नहीं है।"

सुकुमार के द्वारा और अनुरोध किये जाने पर उसने कहा, "हुजूर, आज-कल किरायेदार को ले जाने का काम हमें कहाँ मिलता है ? यही वजह है कि हम दूसरी लाइन में चले गये हैं।"

आप टेम्पोवालों से पूछें—किरायेदार बाबू लोग आजकल फटफटिया पसंद करते हैं।

"क्यों भैया ? ठेले ने कौन-सा गुनाह किया है ?" सुकुमार को बात समझ में नहीं आई थी।

ठेलेवाले ने जो कुछ बतलाया उसका मतलब यह था कि आजकल हर आदमी सुख चाहता है। इन गरीब ठेलेवालों के अलावा कोई और शरीर को तकलीफ नहीं देना चाहता। ठेलागाड़ी लेने से एक आदमी को उसके साथ पैदल चलना पड़ेगा। लेकिन टेम्पो होने से गाड़ी में ही बैठा जा सकता है।

कुछ देर तक पैदल चलने के बाद एक टेम्पो दिखाई पड़ा। टेम्पोवाला शुरू में सुकुमार को देखते ही बिदक गया।

"क्यों तंग कर रहे हैं, सर ? ब्रेकडाउन हो जाने की वजह से ढाई घंटे से परेशान हो रहा हूँ। गाड़ी बनाने वालों के पुरखों के बारे में वह छोकरा अब ऐसी-ऐसी राय जाहिर करने लगा कि बात अगर उनके कानों में पहुँच जाये तो नफरत से वे कंपनी ही बन्द करा दें।

सुकुमार बोला, "मुझे अभी तुरन्त गाड़ी की जरूरत नहीं है। मैं किराये के मकान के बारे में पता लगाना चाहता था। आप लोग तो बहुत से किरायेदारों का माल-असबाब ढोकर लाते हैं।"

टेम्पो ड्राइवर ने कहा, "स्साले किराये के मकान खोजने वालों को तेल-मालिश करने के बदले अस्पताल की लाश ढोना कहीं बेहतर है। ग्राहकों की कोई कमी नहीं है, किसी भी गोरमेन्ट अस्पताल के सामने खड़े होने पर पार्टी मिल जाती है।"

सुकुमार ने उसे शान्त किया। समझा-बुझाकर किराये के मकान की खबर जो बटोरनी थी। टेम्पो ड्राइवर बोला, "किराये का मकान बदलनेवाली पार्टी बहुत ही बुरी होती है, सर ! घंटों तक बिठाये रखेगा, ओवरलोड करेगा, अंट-संट बकेगा, उसके बाद किराया चुकाने के वक्त आँखें दिखायेगा। आप समझ ही रहे होंगे कि खस्ता माल न होने पर मकान-मालिक ही क्यों पी० एल० देगा ?"

सुकुमार ने उसे सूचित किया कि किराये के बारे में वह कोई रियायत नहीं चाहता। वह इतना ही जानना चाहता है कि किस मकान को किरायेदार ने खाली किया है।

टेम्पो ड्राइवर अब हँसने लगा। "इस तरह से आजकल मकान किराये पर नहीं मिलता है, सर। किरायेदार के जाने के पहले ही दूसरा किरायेदार मिल जाता है। अभी मकान किराये पर लेने के लिये आपको ठेलेवाले को पकड़ना होगा। सामने चूना-सुर्खी की दूकान है, वहीं चले जाइये।"

टेम्पो का नौजवान ड्राइवर अब जेब टटोलकर बीड़ी की तलाश करने लगा था। सुकुमार ने झटपट जेब से एक सिगरेट निकाल कर दिया, साथ ही साथ दियासलाई भी।

सुकुमार ठेलेवाले के पास से हो आया है और उसे कोई पता नहीं है, सुकुमार ने इस बात की भी सूचना तब उसे दी।

सिगरेट सुलगाकर टेम्पोवाले ने प्रसन्न होकर कहा, "पूछिये कि वह चूना-सुर्खी-सीमेंट लेकर कहाँ जाता है। मकान बनने के पहले से ही पता न लगाने से इस मुहल्ले में मकान नहीं मिलता।

टेम्पो ड्राइवर को सुकुमार की बेचैनी समझ में आ रही थी। तिरछी निगाहों से ताकते हुये उसने पूछा, "मकान अभी न मिले तो काम नहीं चलेगा ? लगता है सास से आपकी बीबी की ठन गई है। मेरे भैया के साथ भी यही बात हुई थी। बीबी कितने गुस्से मे आ गई थी ! तीन दिन के अन्दर मकान की तलाश कर अलग न हो जाये तो बीबी से बातचीत बन्द। मेरा भैया कई दिनो तक कमर कसकर मकान ढूंढने मे लग गया था, लेकिन उसके बाद जब मकान-मालिकों के हाल-चाल से वाकिफ हुआ तो उसका चेहरा मुरझा गया। अब बीबी को भी समझ मे आ गया है कि हाउ मेनी पैंडी मे हाउ मेनी राइस निकलता है। मायके के भी पूरे बटालियन को मकान खोजने मे लगा दिया था, मगर नतीजा कुछ भी न निकला। लाचार हो अब भाभी सास से समझौता कर मिल-जुल कर रह रही है।"

सुकुमार को लगा, यह छोकरा अच्छा आदमी है। दोटूक बातचीत करने के बावजूद उसमे मैत्री का भाव है। अमरीकी कायदे के मुताबिक अपना नाम भी पॉकेट के ऊपर लिख रखा है। सुकुमार ने कहा, "चाहे जैसे हो मुझे मकान का इन्तजाम करना ही है, पंचानन बाबू।"

सुकुमार का रहस्य अब पंचानन को समझ मे आ गया। "खुलकर खाँसिये न भाई साहब। मामला क्या है, इसका मैं अन्दाज कर रहा हूँ। घर वालों के न राजी होने पर काली घाट जाकर आपने किसी से शादी-वादी कर ली है। अब मकान न हो तो काम नहीं चल सकता। कालीघाट की बीबी बेहद दबाव डाल रही है।"

सुकुमार का दिमाग चकरा रहा था चेहरा भी तमतमा आया था। पंचानन कर्मकार ने सिगरेट से एक और लंबा कश लिया। "मेरा भी चेहरा, सर, कश्मीरी सेब की तरह लाल हो जाता था। मेरे साथ भी यही बात है। मेरी मिसेज पढ़ी-लिखी भले घर की लड़की है। मैं तब मोटर मैकेनिक था। पता नहीं किस बुरे क्षण मे बौना होकर चाँद छूने गया था। रजिस्ट्री-ऑफिस मे शादी हो गई। लेकिन एकाध महीने बाद ही दबाव पड़ने लगा। घर ले चलो, घर ले चलो।"

पंचानन ने फिर सिगरेट का कश लिया। "उफ्, वह सब सोचता हूँ तो मेरा दिमाग गड़बड़ा जाता है। बड़ी मुश्किल से एक मकान का इन्तजाम किया था ?"

"मुझे जरा जल्दी घर जाना चाहिए पचानन बाबू," सुकुमार ने काफी दयनीय स्वर में कहा।"

"मालूम है, जल्दी से जल्दी मिलना ही चाहिए। इन मामलों में औरतें कितना दवाव डालती हैं ! पति के एक्सिलेटर से पाँव हटाना ही नहीं चाहतीं। कुछ दिनों तक किसी तरह काम चलाइये। इसके सिवा और क्या कीजिएगा ?"

"पंचानन वावू, वाकई वगैर मकान के काम नहीं चल रहा है।"

"आप भी क्या मेरी ही हालत में आये हैं ? मेरी वाइफ कुमु ने एक दिन आकर मुझसे कहा, जल्दी से जल्दी मकान न मिलेगा तो शादी का रिश्ता तोड़ लेगी। मेरी हालत की कल्पना कीजिये। इस तरह की मिसेज को भी भला कोई छोड़ सकता है ?"

कुमु अव भी पंचानन की वीवी है या नहीं सुकुमार की समझ में नहीं आ रहा था। पंचानन से यह सव वात खोद-खोदकर पूछी भी नहीं जा सकती थी।

पंचानन ने सलाह दी, "आप मेरी ही तरह किसी दलाल के पास जाइये। पट्ठे आज भी असंभव को संभव कर सकते हैं। दलाल न होता तो उस दिन मैं भी कुमु को रख नहीं पाता।"

"गाँठ से पैसा गिनकर दूँगा और उस पर भी दलाल ?"

पंचानन सिगरेट का धुआँ उगलकर वुजुर्गाना अन्दाज में कहने लगा, "दलाल कहाँ नहीं है ? वेश्या से लेकर भगवान् तक जिस चीज की खोज कीजिएगा, वहीं दलाल की जरूरत पड़ती है।

"अमावस्या के दिन आप मन्दिर जाइये न, दलाल के वगैर देवता के दर्शन कैसे मिलेंगे ? मेरी ही वात लीजिए, मैंने टेम्पो का लाइसेन्स जो हासिल किया वह क्या यूँ ही हो गया ? दलाल को कमीशन खिलाना पड़ा था। लाइसेन्स हासिल करने के वाद गाड़ी खरीदने के लिए वैंक के लोन की जरूरत पड़ी। यह क्या मेरा कारनामा है ? वैङ्क का मैनेजर क्या सीधे मेरे हाथ से दक्षिणा लेता ? पुरोहित के विना पूजा नहीं हो सकती। दलाल ने ही सारा इन्तजाम कर दिया। यह जो मैं नो-एन्ट्री एरिया में गाड़ी खड़ी कर मन के मौज में सिगरेट धौंक रहा हूँ, इसके पीछे भी दलाल है। ट्रैफिक पुलिस वावा ऐसे दूध के धुले हैं कि पार्टी से खुद कारोवार नहीं करेंगे। उस सड़क के नुक्कड़ पर पान की दुकान में दलाल वैठा हुआ है। पिछले साल मैं गाड़ी से दव गया। तव दलाल के अलावा मेरे लिए कोई दूसरा चारा था क्या ?"

दुनिया सचमुच ही वहुत वुरी हो गयी है।" किसी के गाड़ी से दवने पर दलाल की जरूरत ही क्या ?" सुकुमार को ठीक से समझ में नहीं आ रहा था।

"जरूरत पड़ती है, सर। आप लोग आजकल कोई खवर नहीं रखते। गाड़ी से दवने के वाद अस्पताल में वेड नहीं मिलता, अगर दलाल मेरे निकट

नहा हाता । उसक बाद घर पर जाकर मरा पत्ना का इत्तिला कौन करता ? अस्पताल के बड़े बाबू क्या मेरे रिश्तेदार हैं ? वहाँ भी दलाल की जरूरत पड़ती है । उसके बाद रनओवर का केस सुनकर एक दलाल झट से अस्पताल के बेड के पास चला आया । जो गाड़ी मुझे दबाकर चली गयी थी उसका नम्बर ले गया । दो दिन के बाद दो दलाल एक साथ मेरे पास आये ।"

"दो दलाल कहाँ से आ टपके ?" सुकुमार ने पूछा ।

"ओह, मामूली-सी चीज आपकी समझ में नहीं आ रही है ? मेरा दलाल और जिस आदमी ने मुझे गाड़ी से दबा दिया था, उसका दलाल । वे लोग मुझे तीन सौ रुपया और एक दर्जन केला देकर मामला रफा-दफा कर चले गये । और तीसरे दलाल के पास पहुँचे । इस तीसरे दलाल की मारफत न जाने से पुलिस अनजानी पार्टी का एक्सीडेन्ट केस क्यों उठायेगी, सर ? मुझे भी सर, इतने झंझट-झमेले में पड़ने की जरूरत ही क्या ? कोर्ट से उस पार्टी से पाँच सौ रुपया वसूलने में पचीस साल लग जाता । इससे तो बेहतर दलाल ही था ।"

पंचानन ने कहा, "बंबई में सर, एक सड़क है—दलाल स्ट्रीट । और इस कलकत्ते को आप दलाल टाउन कह सकते हैं । अस्पताल से पलस्तर लगा पाँव लिए टैक्सी से घर आया—वह भी दलाल की हेल्प से । दलाल सिगनल न देगा तो टैक्सी हिलेगी-डुलेगी भी नहीं । यह जो मैं पार्टी का माल लेकर आया, वह भी दलाल की ही वजह से । दिन-भर सड़क पर खड़े हो अँगूठा चूस रहा हूँ, नो ग्राहक । और जैसे ही दलाल को रुपये में बीस पैसा दिया कि तुरन्त काम मिल गया । यह जो ब्रेकडाउन होने के कारण बैठा हुआ हूँ, यहाँ भी दलाल है । दलाल मैकेनिक और गाड़ी का पार्ट लाने गया है ।"

पंचानन सिर खुजलाने लगा । "अपनी गाड़ी में बैठकर थोड़ी देर बाद एक गिलास ठर्रा गटकूँगा, वहाँ भी दलाल की जरूरत पड़ेगी । पट्ठा आर्डर ले गया है । सामने पान की दूकान में ही माल है—लेकिन अनजानी पार्टी को हाथों-हाथ नहीं देगा, दलाल को पकड़ना होगा । गाड़ी की मरम्मत कराकर, माल की डिलि-वरी ठीक जगह पर देकर आज जो सिनेमा देखने जाऊँगा, वह कैसे होगा ? मैंने किसके बल पर बीवी को सिनेमा शुरू होने के दस मिनट पहले हाल के सामने खड़ी होने कहा है ? दलाल के अलावा उस वक्त कौन मुझे टिकट देगा ?"

सिगरेट को मुँह से खींचकर पंचानन ने स्प्रे करते हुए सड़क पर थूक फेंका । उसके बाद बोला, "उम्मीद है, आपको और समझाने की जरूरत नहीं पड़ेगी । आप रॉयल हेयर कटिंग सैलून चले जाइये—पल्टू दलाल आपको वहीं मिल जायेगा ।"

सूचना पाते ही सुकुमार ने चलना शुरू कर दिया । टेम्पो से गरदन निकाल-
पंचानन बोला, "गलती से भी इंपीरियल कटिंग सैलून के खगेन दलाल
चक्कर में न पड़िएगा ।"
अब सुकुमार की व्यस्तता पंचानन की पकड़ में आ गयी । सुकुमार को
ककर पंचानन ने उसे अन्तिम उपदेश दिया, "बेचैन नहीं होइये । दलाल के
ामने व्यस्तता दिखाइएगा तो मार खा जाइएगा ।"

०

रॉयल हेयर कटिंग सैलून में ही पल्टू दलाल से भेंट हो गयी । सैलून की बेंच
पर बैठकर पल्टू बाबू बीड़ी का कश ले रहे थे । सुकुमार को देखते ही वह उठ-
कर चले आये । बोले, "इस इलाके में इस नाचीज को न पहचानता हो, ऐसा
आदमी आपको नहीं मिलेगा । शुरू में मैंने अपने घर पर ही दफ्तर खोला था,
लेकिन काम की सुविधा की वजह से इस रॉयल हेयर कटिंग में चला आया हूँ ।"
"लाइये, एकाध सिगरेट वगैरह लाइये । सुबह से अब तक बोहनी भी नहीं
हुई है ।" पल्टू दलाल ने सुकुमार का बचा हुआ एक सिगरेट भी ले लिया ।
सिगरेट का धुआं उछालकर पल्टू बाबू ने पूछा, "आप किस पार्टी के हैं ?"
"मैं किसी भी पार्टी का नहीं हूँ पल्टू बाबू ।"
"तो फिर सर, मेरा वक्त क्यों बर्बाद कीजिएगा ? डाइरेक्ट पार्टी के लोगों
के अलावा मैं किसी का काम-धंधा नहीं करता । उसमें बहुत ही झंझट है," पल्टू
दलाल ने साफ-साफ कह दिया ।
दुश्चिन्ता, अनिद्रा और सुबह से चक्कर काटते-काटते सुकुमार अब बहुत
थक गया था । उसने कहा, "पल्टू बाबू, पार्टी के मेम्बरों को दलाल से भी फैसि-
लिटी मिलती है, यह मुझे मालूम नहीं था ।"
"कोई खास सुविधा नहीं । पल्टू की निगाह में सब पार्टी एक जैसी है ।"
नहीं, सुकुमार झूठी बात नहीं कहेगा । पिछले जन्म में उसने बहुत ही अना-
चार किया है जिसका फल उसे इस जन्म में भोगना पड़ रहा है ।
"नहीं साहब, लालच में पड़कर झूठ क्यों बोलने जाऊँ हम लोगों के यह
बहुत से पार्टी दफ्तर हैं, बहुतों ने डोरा डाला था, मगर मैं किसी में शामि
नहीं हुआ ।"
"आप तो हँसा रहे हैं । पॉलिटिकल पार्टी से मुझे क्या वास्ता ? मेरे पू

का मकसद है कि आप लड़की के पार्टी के हैं या लड़के की ? आप किसी की शादी के बारे मे खोज-पड़ताल कर रहे हैं ? लड़की की पार्टी हो तो पंद्रह रुपया और लड़के की पार्टी हो तो पांच रुपया पेशगी देकर रजिस्ट्री कराना होगा, तभी पल्टू दलाल जबान खोलेगा ।"

लेकिन पंचानन बाबू ने क्या कहा था ? "आप क्या शादी की दलाली करते हैं ।" सुकुमार पूछता है ।

"वही मेरा मेन काम है । इसीलिए तो सैलून मे बैठा रहता हूँ—कहाँ का कौन अच्छा पात्र बाल कटाने आता है, इसकी ही जानकारी प्राप्त करता रहता हूं । आपकी जरूरत क्या है ?"

किराये के मकान के बारे में सुनते ही पल्टू बाबू का उत्साह ठण्डा पड़ गया । "वह मेरी मेन लाइन नहीं है, अब मैं सिर्फ नव-दलाली करता हूँ । मेरे साढ़ू सुधामय के पास जाना होगा ।"

पल्टू बाबू ने पॉकेट से एक कार्ड निकाला । सुधामय का पता दिया ।

"मेरा यह कार्ड जरूर ही सुधामय को दीजिएगा । भूलिएगा नही जनाब । वरना हिसाब मे गड़बड़ हो जायेगी, सुधामय मेरा प्राप्य कमीशन नही देगा," पल्टू बाबू ने यह कहकर चेता दिया ।

सुकुमार का सिर बेहद दर्द कर रहा था । बाये हाथ से सिर दबाकर वह आगे बढ़ने लगा ।

•

सुधामय भी एक दुकान मे बैठे रहते हैं । वहाँ तसवीरें मढने का काम होता है ।

सुकुमार जब वहाँ पहुँचा, सुधामय एक भली महिला से बातचीत करने मे मशगूल थे । "लड़का नही है तो आप व्यर्थ ही क्यो दुखित हो रही हैं माताजी ? भगवान् के आशीर्वाद से वन फ्लैट इज बेटर दैन टू कमाऊ लड़के ।"

"तुम क्या कह रहे हो बेटा ?" भली महिला ने आनन्द से मिली-जुली लज्जा जाहिर की ।

सुधामय बोले, "सिर्फ हिसाब लगाकर देख लें माताजी । अपना खर्चा-वर्चा बाद करने के बाद लड़के आजकल माँ-बाप को माहवार कितना दे पाते हैं ? और शादी हो जाये तो फिर कहना ही क्या ! मगर फ्लैट होता है चिरकुमार वयस्क लड़का, हमेशा देता ही रहेगा ।"

"फिर तुम क्या कहते हो भैया ?" सुकुमार को भली महिला की बात साफ-साफ सुनने को मिली।

सुधामय ने हँसते हुए कहा, "जैसा जमाना हो, जैसा देश हो, वैसा ही वेश होना चाहिए, माताजी। किसी तरह भी रहम न दिखायें, किरायेदारों को आने और जाने दीजिये—वरना आपके हाथ में दो पैसा कैसे आयेगा ? और हमीं लोग गृहस्थी कैसे चलायेंगे ? शर्म को ताक पर रखकर कह दीजिए, मैं कागज पर दस्तखत नहीं करूँगी। विदेश होने से क्या होता ? वंबई में किसी को ग्यारह महीने से अधिक समय के लिए मकान किराये पर नहीं मिलता है ?"

"वंबई क्या विदेश है !" सुकुमार अब खामोश नहीं रह सका।

"जरूर ! आपने वंबई के मकान, गाड़ी, सड़क और रेस्तरां देखे हैं ? बंबई फॉरेन नहीं है तो क्या यह हरामजादा कलकत्ता फॉरेन है ? वहां हर दलाल के पास कार है। दो-एक महीने के किराये से कम पर वहां कोई दलाली का काम नहीं करता है।"

सुधामय दलाल ने अब मकान-मालिक की ओर आंखें कीं। "तो फिर माताजी आप असमंजस में नहीं रहें। किरायेदार को आप झाड़ू लगाकर बाहर निकाल दें, उसके बाद एक रुपये की जगह सवा रुपये का किरायेदार तीन दिन के अन्दर न खोज दूँ तो आप बन्दे के नाम से कुत्ता पाल लीजिएगा।"

अब मकान-मालकिन वहां से विदा हो गयीं। सुधामय मकान की तलाश में है यह जानकर सुधामय दलाल हँसी हँसते हुए बोला, "कभी गलती से भी कलकत्ते में व्यक्तिगत प्रॉपर्टी नहीं बनाइये। जो लोग अक्लमन्द होते हैं वे आराम से दूसरे के मकान में जिन्दगी बसर कर लेते हैं।"

सुधामय ने एक फार्म बढ़ा दिया। सुकुमार बहुत ही खुश हुआ। इसे भर देने से ही किराये का मकान मिल जायेगा। दलाल के माध्यम से काम करना तो कोई बुरा नहीं है।

सुधामय बोले, "अब यह बताइये कि आपकी उम्र कितनी है ? आपकी बीवी की शिक्षा-दीक्षा क्या है, बाल-बच्चों की संख्या कितनी है, मां-बाप से आपका रिश्ता किस तरह का है ? ससुराल कितनी दूर है ?"

"रुपया देकर घर लूंगा फिर इतनी तरह की सूचनाओं की जरूरत ही क्या है ?" सुकुमार फुफकार उठा।

सुधामय ने मुसकराते हुए निवेदन किया, "जरूरत है। धर्मशाला में भी टिकने पर यह सब सूचना देनी पड़ती है, और आप तो किसी के गांठ से निकाले

हुए पैसे बने मकान मे रहने जाइएगा, ऐसी हालत में वह क्या आपकी अन्दरूनी बातों का पता नहीं लगायेगा ?"

"वाइफ से आपके माँ-बाप की खच-खुच चलती हो तो ऐसी हालत में आपको प्रेफरेन्स मिलेगा, क्योंकि इससे एक जोड़ा बूढ़ा-बूढ़ी के घर में रहने का चान्स नहीं है। नतीजा यह होगा कि पानी का खर्च कम होगा। मगर ससुराल अगर नजदीक हो तो आप इस क्लास के किरायेदार की श्रेणी में नहीं आते। सास-ससुर और साले-सालियाँ आकर यहाँ रातें गुजारेंगी, नहा-धोकर जायेंगी। नतीजा यह होगा कि पानी का खर्च बढ़ जायेगा।"

सुधामय ने सूचना दी, "आजकल मकान-मालिक हजारों तरह के सवाल करते हैं। बीवी शुचिता के वहम की मरीज है या नहीं, किसी को नाचने-गाने का अभ्यास है या नहीं, कुत्ता रहेगा या नहीं, यह सब वाइटल इनफॉर्मेशन है। इससे मकान की उम्र कम हो जाती है।"

जरा चुप रहने के बाद सुधामय बोले, "फॉर्म भरकर अपनी और अपनी पत्नी की पासपोर्ट साइज की फोटो और ढाई सौ रुपया मेरे पास दे जाइएगा। कोशिश करूँगा कि आपका काम बन जाये।"

सुकुमार के पैर से सिर तक आग की एक लहर दौड़ जाती है। मगर सुधामय ने इसकी परवाह नहीं की। बोले, "हाँ अब किराये की बात है।"

"बहुत ही जरूरी विषय है।" सुकुमार को अब तक पूछने का साहस नहीं हो रहा था। "आजकल कैसी रेट चल रही है ?"

"रेट तो बहुत तरह की है। आपकी कैपेसिटी क्या है, यह बताइये।"

सुकुमार सिर खुजलाने लगा। उसके जैसा आदमी कितना किराया दे सकता है ? लेकिन किराये के रुपये का इन्तजाम तो करना ही होगा।

बहुत हिसाब-किताब करने के बाद सुकुमार ने कहा, "साठ-सत्तर या ज्यादा से ज्यादा अस्सी।"

अब सुधामय सामन्त खिल-खिलाकर हँसने लगे। उनकी हँसी रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी।

उन्होंने सुकुमार के हाथ से फॉर्म छीन लिया। "कैलकटा शहर में आपको बस्ती का भी मकान नहीं मिलेगा। आप नाहक ही वक्त बर्बाद कर रहे हैं। भवानीपुर के रिक्शे वाले भी रात मे सिर्फ सोने के लिए उतना किराया दे देते हैं—सो भी करवट लेकर सोने के लिए। माइन्ड यू, जो लोग पैर फैलाकर चित होकर सोना चाहते हैं उनको भी इससे ज्यादा किराया देना पड़ता है।"

बिल्ली के भाग से छीका टूटने की तरह एक काम मिला भी तो उसमें जी-जान लगा देने का मौका ईश्वर ने सुकुमार को नहीं दिया। जो लोग कहते हैं कि आज के बंगाली युवक किसी काम के नहीं हैं, सुकुमार उन्हें दिखा देना चाहता है कि अवसर मिलने पर बेकार युवक सोने की फसलें उगा दे सकते हैं।

लेकिन पग-पग पर बाधा का सामना करना पड़ता है। मकान तलाशने की जिम्मेदारी ने उसके सर्वांग को जकड़ लिया है। इधर-उधर जाने में गाड़ी का किराया भरना पड़ा है, उसका कोई हिसाब नहीं; घर का पता बताने का आश्वासन देकर कई आदमी चार-पाँच रुपया लेकर भाग चुके हैं। यह सब रुपया कणा के पास हाथ फैलाकर ही सुकुमार को लेना पड़ा है।

लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता कणा का विश्वास भी सुकुमार पर से उठता जा रहा है। उसकी आँखें कह रही हैं : मानती हूँ, नौकरी तुम्हें नहीं मिली लेकिन मेरे लिए एक मकान का भी तुम इन्तजाम नहीं कर सके ? तुम किस तरह के मर्द हो ?

कणा को उन आँखों की याद आते ही सुकुमार को डर लगने लगा है। वे आँखें जैसे रहस्य से भरी हुई हों, कब क्या हो जाये, कुछ ठीक नहीं।

आज तीसरे पहर भी सुकुमार कोयले की दूकान से निकल पड़ा था। जैसे ही निकल रहा था, शकुन्तला आयी थी। शायद कॉलेज से सीधे ही चली आयी थी।

"नमस्ते सुकुमार बाबू।" शकुन्तला मानो सुकुमार से मिलने के लिए ही यहाँ आयी हो।

शकुन्तला ने कहा, "सुकुमार बाबू आप पकड़ में आ गये। आप खतरनाक आदमी हैं।"

शकुन्तला की बात बड़ी ही मीठी लग रही थी। लेकिन पकड़ में आने की कौन-सी बात है ? "बिना दोष के भी इस शहर में बहुत से आदमी पकड़ लिये जाते हैं शकुन्तला।" सुकुमार ने चटुल मंतव्य प्रकट किया।

शकुन्तला ने आज भी आँखों में काजल लगाया था। काजल लगाने से बच्चे और रमणी दोनों सुन्दर दीखते हैं। शायद इसीलिए अमरीका में लड़कियों को लाड़ से 'बेबी' कहा जाता है।

मधुरभाषिणी शकुन्तला बोली, "आप कॉलेज में अभिनय करते थे, यह तो आपने बताया नहीं था। कल लाइब्रेरी के पुराने कॉलेज-मैगजीन में आपकी तसवीर देखी। पुलिस इन्सपेक्टर के वेश में हाथ में रूल थामे आप जिस स्टाइल के साथ खड़े हैं कि लगता है सचमुच ही कोई पुलिस-अफसर हो। नीचे सुकुमार

मित्तिर नाम न देखती तो यकीन ही नहीं होता। उसकी बगल में चोर की भूमिका में सोमनाथ नामक कोई व्यक्ति खड़ा था।

"चोर न रहे तो पुलिस क्या शोभा पाती है ?" सुकुमार दुबारा मजाक करता है।

इसके एक दिन पूर्व शकुन्तला को सुकुमार ने चाय पिलायी थी। चाहे जो हो, मालिक की ही लड़की है—हो सकता है किसी दिन खुद मालकिन बन बैठे। लेकिन आज उसके पास चाय पिलाने का वक्त नहीं था। सुकुमार को बेलगछिया और बाग बाजार तक जाना था।

शकुन्तला संभवतः थोड़ा-बहुत वक्त निकालकर आयी थी। आज निरर्थक बातें करने की ओर ही उसका झुकाव था। लेकिन व्यवसाय संबंधी दो-चार बातें ही बताकर सुकुमार उठकर खड़ा हो गया। बोला, "आज मेरा एक जरूरी एप्वॉइंटमेन्ट है।"

शकुन्तला का चेहरा तत्काल गंभीर हो गया था। बस में चढ़े होने पर सुकुमार ने महसूस किया, 'एप्वॉइन्टमेन्ट' शब्द का उपयोग करना ठीक नहीं हुआ। उसे कहना चाहिये था कि किसी जरूरी काम से जा रहा हूँ। कहीं शकुन्तला 'एप्वॉइन्टमेन्ट' शब्द का कोई दूसरा अर्थ न लगा ले।

बेलगछिया में कोई सुविधा नहीं हुई। दलाल ने बड़ी-बड़ी बातें बतायीं, सरकारी हाउसिंग स्टेट जैसे उसके मुट्ठी में हो।

"वहाँ कौन किराये पर लगायेगा जनाब ?"

दलाल झुँझला उठा था। "क्या कह रहे हैं ? एम० एल० ए०, एम० पी० का होस्टल, फ्लैट, बंगला सब लेट हो रहे हैं और आप मामूली हाउसिंग स्टेट की बात कर रहे हैं। किसी दिन देखिएगा, लाट साहब के भवन में भी मकान मिल जायेगा।"

इन बड़ी-बड़ी बातों में दखलन्दाजी करने का सुकुमार को अभी हिम्मत नहीं है। वह सीधे बाग बाजार चला आया था। नरपति भट्टाचार्य शीतला मन्दिर के पुजारी हैं और पार्ट टाइम मकान की दलाली भी करते हैं। वह लंबी-चौड़ी नहीं हाँकते।

दस रुपये के बदले वह सुकुमार को एक जगह ले जाने लगे। किराये पर मकान मिल जाने पर एक महीने के अन्दर और दस रुपया देना होगा।

नरपति भट्टाचार्य लेन से बाइलेन, सेकेण्ड बाइलेन, थर्ड बाइलेन पार

हुए सुकुमार को एक मकान के सामने ले गये जो करीब-करीब डेढ़ सौ साल पुराना होगा ।

मकान का एक कमरा भी दिखाया । उसके बाद बूढ़ी हरसुन्दरी दत्त बाहर निकल आयीं । पूछा, "तुम किस जात के हो भैया ?"

"मित्तिर कायस्थ के अलावा किसी दूसरी जात में नहीं होता है," सुकुमार ने उत्तर दिया था ।

कायस्थ के मामले में सोनारिन हरसुन्दरी को कोई आपत्ति नहीं है । मगर वह जानना चाहती है कि यहाँ कौन-कौन रहेंगे ।

"फिलहाल मैं और···" सुकुमार जरा चुप हो गया, उसके बाद कह ही बैठा, "मेरी बहिन ।"

"तुम्हारी शादी हो चुकी है न ? वह अभी कहाँ है ? मायके में ?"

सुकुमार ने उत्तर दिया, मेरी शादी नहीं हुई है ।"

शादी नहीं हुई है, यह सुनते ही हरसुन्दरी की आवाज बदल गयी । सुकुमार अब बाहर आकर खड़ा हुआ ।

थोड़ी देर बाद ही नरपति भट्टाचार्य उससे आकर मिला । "आपने सब मटियामेट कर दिया जनाब । आपकी शादी नहीं हुई है, यह कहने ही क्यों गये ? मैरिड पार्टी के अलावा आजकल कोई किसी दूसरे को मकान किराये पर नहीं देना चाहता है ।"

"क्यों ? शादी न करके मैंने कौन-सा गुनाह किया है ?" सुकुमार अपनी ऊब दबाकर नहीं रख सका ।

नरपति बाबू ने उत्तर दिया, "जबकि हम या आप मकान-मालिक नहीं हैं तो मेरे सामने यह प्रश्न उछालने से कोई लाभ नहीं है सुकुमार बाबू ।" इसके बाद नरपति बाबू ने कहा, "मकान-मालिकों को भी दोष नहीं दिया जा सकता है । बैचलर और बेकार जैसे लोगों को घर में घुसाने से बहुत तरह का हंगामा खड़ा हो जाता है ।"

यह बात सुकुमार के मन में बिंध गयी थी । नरपति बाबू ने अनजाने ही सुकुमार के जख्म को कुरेद दिया—बैचलर, बेकार ।

बेचलर और बेकार सुकुमार मित्तिर आज भी ब्रेबोर्न रोड के मोड़ पर इम्प्लायमेंट एक्सचेंज के पास बेवकूफ की तरह खड़ा था।

ब्रेबोर्न रोड व्यवसाय की जगह है। बैंकू और व्यवसायियों के अतिरिक्त किसी दूसरे आदमी को इस मुहल्ले में घर किराये पर नहीं मिलता यह सब जानने के बावजूद मुकुमार जाने कब अपनी खामख्याली में यहाँ चला आया था।

सचमुच बेकार हुए बगैर कोई इस मुहल्ले में मकान की तलाश में नहीं आता। लेकिन कलकत्ते के उत्तर-दक्खिन पूरब-पच्छिम कहीं भी सुकुमार ने खोज बाकी नहीं रख छोड़ी।

कल माँ ने फुसफुसाकर कहा था, "कणा से वहम-मुवाहसा मत करना। अचानक गुस्से में आकर वह बेहोश जैसी हो गयी थी। ऊल-जलूल बकने लगी थी, "तुम लोग यहाँ से चले जाओ, मैं तुम लोगों का चेहरा भी देखना नहीं चाहती।"

माँ की आँखों में आँसू थे। "कहना ही चाहिए। कच्ची-उम्र की लड़की के सिर पर मर्द का बोझा रखकर सभी नींद में बेहोश रहेंगे तो ऐसा होगा ही। मान-सम्मान का बोध रहे तो कहीं कोई माँ-बाप लड़की की कमाई का पैसा खाते हैं?"

कणा तो ऐसी नहीं थी। कणा माँ-बाप, भाई-बहिन वगैरह के चेहरे पर हँसी देखने के लिए सदा उत्कण्ठित रहा करती थी। कणा ने कैसे कहा, "तुम लोग मेरे पास नहीं आओ?"

माँ को डर लग रहा था, कणा भी कहीं आखिरकार सुकुमार की तरह पागल न हो जाये। "हे देवता, मैं लड़की की कमाई का खाना अब एक दिन भी नहीं खाना चाहती। कणा को तुम स्वस्थ कर दो।"

असहाय सुकुमार ने मन ही मन कहा, "माँ तुम्हें मालूम नहीं कि कणा किस मुसीबत में फँस गयी है। मैं तुमसे भी नहीं कह पा रहा हूँ। मगर तुम कणा पर गुस्सा नहीं करो।"

"क्या रे, तू फिर क्या बुड़बुड़ा रहा है? बुड़बुड़ाते देखते ही मुझे भयकर डर लगने लगता है। हर वक्त मन में जो आता। वही कह डाला कर मन हल्का रहेगा तो माथा गरम नहीं होगा।" माँ सुकुमार को उपदेश दे रही थी।

"तुम चिन्ता नहीं करो, माँ। मैं जब तक हूँ, तुम कणा के लिए जरा भी चिन्ता न करो," सुकुमार अब बुड़बुड़ा नहीं रहा था।

हुए सुकुमार को एक मकान के सामने ले गये जो करीब-करीब डेढ़ सौ साल पुराना होगा।

मकान का एक कमरा भी दिखाया। उसके बाद बूढ़ी हरसुन्दरी दस्त बाहर निकल आयीं। पूछा, "तुम किस जात के हो भैया ?"

"मित्तिर कायस्थ के अलावा किसी दूसरी जात में नहीं होता है," सुकुमार ने उत्तर दिया था।

कायस्थ के मामले में सोनारिन हरसुन्दरी को कोई आपत्ति नहीं है। मगर वह जानना चाहती है कि यहां कौन-कौन रहेंगे।

"फिलहाल मैं और..." सुकुमार जरा चुप हो गया, उसके बाद कह ही बैठा, "मेरी बहिन।"

"तुम्हारी शादी हो चुकी है न ? वहू अभी कहाँ है ? मायके में ?"

सुकुमार ने उत्तर दिया, मेरी शादी नहीं हुई है।"

शादी नहीं हुई है, यह सुनते ही हरसुन्दरी की आवाज बदल गयी। सुकुमार अब बाहर आकर खड़ा हुआ।

थोड़ी देर बाद ही नरपति भट्टाचार्य उससे आकर मिला। "आपने सब मटियामेट कर दिया जनाब। आपकी शादी नहीं हुई है, यह कहने ही क्यों गये ? मैरिड पार्टी के अलावा आजकल कोई किसी दूसरे को मकान किराये पर नहीं देना चाहता है।"

"क्यों ? शादी न करके मैंने कौन-सा गुनाह किया है ?" सुकुमार अपनी ऊब दबाकर नहीं रख सका।

नरपति बाबू ने उत्तर दिया, "जबकि हम या आप मकान-मालिक नहीं तो मेरे सामने यह प्रश्न उछालने से कोई लाभ नहीं है सुकुमार बाबू।" इसके बाद नरपति बाबू ने कहा, "मकान-मालिकों को भी दोष नहीं दिया जा सकता है। बैचलर और बेकार जैसे लोगों को घर में घुसाने से बहुत तरह का हंगामा खड़ा हो जाता है।"

यह बात सुकुमार के मन में बिंध गयी थी। नरपति बाबू ने अनजाने सुकुमार के जख्म को कुरेद दिया—बैचलर, बेकार।

बैचलर और बेकार सुकुमार निखिल हान्ड की देवेन्द्र रोड के मोड़ पर इंडिया एक्सचेंज के पास बेवकूफ की तरह खड़ा था।

ब्रेबोर्न रोड व्यवसाय की जगह है। बैंक और व्यवसायियों के अतिरिक्त किसी दूसरे आदमी को इस मुहल्ले में घर किराये पर नहीं मिलता यह सब जानने के बावजूद सुकुमार जाने कब अपनी खानदानी में यहाँ चला आया था।

सचमुच बेकार हुए बगैर कोई इस मुहल्ले में मकान की तलाश में नहीं आता। लेकिन कलकत्ते के उत्तर-दक्खिन पूरब-पच्छिम कहीं भी सुकुमार ने खोज बाकी नहीं रख छोड़ी।

कल माँ ने झुंझलाकर कहा था, "कणा से बहस-मुबाहसा मत करना। अचानक नींद में कातर वह बेहोश जैसी हो गयी थी। ऊल-जलूल बकने लगी थी, "तुम लोग यहाँ से चले जाओ, मैं तुम लोगों का चेहरा भी देखना नहीं चाहती।"

माँ की आँखों में आँसू थे। "रहना ही चाहिए। कच्ची-उम्र की लड़की के सिर पर नहीं का बोझा रखकर लम्बी नींद में बेहोश रहेंगे तो ऐसा होगा ही। मान-सम्मान की बात रहने दो कहीं कोई माँ-बाप लड़की की कमाई का पैसा खाते हैं?"

कणा घोर निद्रा में निमग्न है। "तेरी नींद की टिकिया ही उसे खिला दी है, मुन्ना," माँ अभी एक अव्यक्त प्रत्याशा से सुकुमार के चेहरे की ओर ताक रही थी।

सुकुमार ने देखा, औषधि के प्रभाव से कणा सारा दुख और दर्द भूलकर कितनी शान्ति के साथ नींद ले रही थी।

सुकुमार सोच रहा था, नींद की इस टिकिया का आविष्कार किसने किया था ? वह मानवपुत्र धन्य है जिसकी साधना के फलस्वरूप करोड़ों अभागे मनुष्यों को असह्य यातना से कुछ क्षणों के लिए मुक्ति मिल जाती है। सुकुमार ने यह भी सोचा कि इस सामयिक निद्रा और चिरनिद्रा में कितना साधारण-सा अन्तर है—मात्र कुछ ज्यादा टिकिया लेते ही नींद के देश से पुनः लौटकर नहीं आया जा सकता है।

आज सवेरे कणा से बगैर मिले सुकुमार घर से बाहर निकल आया था। कणा को एक टुकड़े कागज में लिखकर चला आया था, 'आज कोई न कोई इन्तजाम हो जायेगा।'

लेकिन इन्तजाम कहाँ हुआ है ? इन्तजाम का कहीं कोई ठिकाना न पाने की वजह से ही सुकुमार मित्तिर ब्रेवोर्न रोड और इंडिया एक्सचेंज के चौराहे पर मुँह बाये खड़ा था। अब वह कहाँ जाये ?

जाने, क्या सोचकर सुकुमार मंथरगति से चलनेवाले एक साँड़ के पीछे-पीछे हो लिया। ब्रेवोर्न रोड पर कूड़ा फेंकने का जो स्थान है वह कलकत्ते के साँड़ों का खानदानी शहीद मीनार है। साँड़-संस्कृति के इस पीठ स्थान में हर रोज कॉन्फ्रेन्स चलता ही रहता है। साँड़ दायित्व बोध से संपन्न नागरिक हैं। इसीलिए सड़क की आधी जगह पर दखल जमाने के बावजूद वे बड़ा बाजार का ट्रैफिक जाम नहीं करते।

सुकुमार कुछ देर तक साँड़ों के सम्मेलन का निरीक्षण करता रहा। उसके बाद एकाएक उसे लगा, कूड़े के पहाड़ के निकट ही एक टेम्पो गाड़ी को ठेलने की कोशिश चल रही थी। ड्राइवर जाना-पहचाना जैसा लग रहा था। सुकुमार ने अब देर नहीं की, वह आगे बढ़ गया।

जो सोचा था, वही हुआ। पंचानन कर्मकार का ही टेम्पो था। सुकुमार ने खुद हाथ से ठेलना शुरू कर दिया और जरा-सा ठेलते ही अचल टेम्पो अजीब सी आवाज करता हुआ गतिमान हो उठा।

पंचानन ने चेता दिया, "मुहब्बत वगैरह की बात गलती से भी जबान पर नहीं लाइएगा। चाहे जो हो, आखिर है तो पुराने खयाल की मकान-मालकिन। सिर्फ ऑर्डिनरी वाइफ-हसबैण्ड बताकर काम निकाल लीजिएगा। कहिएगा, अभी आप यादवपुर में किराये का मकान लेकर रह रहे हैं, काम में असुविधा हो रही है इसलिए राधा वल्लभ साहा लेन में आकर रहना चाहते हैं।"

पंचानन सुकुमार को झटपट राधावल्लभ साहा लेन के मकान में ले गया।

"अब अच्छा नहीं लग रहा है, पंचानन बाबू ।" सुकुमार अपना दुख दबाकर नहीं रख सका ।

"इतना गुस्सा करने से काम कैसे चलेगा ? उन लोगों के बारे में भी सोचकर देखें । माँ-बाप की सहमति न रहने के बावजूद कालीघाट जा कर आपने शादी की । अब उनका घर-गृहस्थी के लिए व्याकुल होना स्वाभाविक ही है ।"

सुकुमार बहुत ही पेचीदी स्थिति में फँस गया है । लेकिन कृष्णा का मामला लोगों के सामने जाहिर भी तो नहीं किया जा सकता ।

पंचानन कर्मकार ऑकलैण्ड ब्रिज पर चढ़ते-चढ़ते बोला, "अच्छा हुआ कि आपसे मुलाकात हो गयी । अपनी मिसेज से मैंने आपकी बात बतायी थी । उसने एक सूचना दी है ।"

सुकुमार को जैसे हाथ में चाँद मिल गया । "कहाँ ?"

"हावड़ा राजवल्लभ साहा लेन में ही, जहाँ हम लोग रह रहे हैं ।"

दो ठेलागाड़ियों को ओवरटेक कर पंचानन एक पुआल गाड़ी के बीच आ गया । पुआल की गाड़ी के गाड़ीवान को गाली-गलौज से तंग-तंगकर और ट्रैफिक पुलिस के चौदह पुरखों का तर्पण कर पंचानन ने पूछा, "आपकी मिसेज क्या बहुत ही हाईफैमिली की लड़की हैं ? टुटहा मकान देखकर कहीं नाक-भौंह सिकोड़ने तो नहीं लगेंगी ?"

"ऐसा लगता तो नहीं है ।" सुकुमार ने बाध्य होकर अभिनय का सहारा लिया ।

"लगे भी तो आप क्या कीजिएगा ? मेरी बीवी बीड़ी का नाम सुनते ही झुंझला उठती है । उसकी इच्छा रहती है कि मैं हरदम कैपस्टेन सिगरेट सुलगाता रहूँ । लाचार हो मैं अपनी मिसेज से कहता हूँ, इतना शौक है तो इस पंचा के साथ मुहब्बत क्यों की ? मेरी बीवी अलबत्ता झल्लाती नहीं, चुपचाप मुसकराती रहती है ।"

पंचानन कर्मकार ने कहा, "सुनिये साहब, मिसेज से मेरी बातचीत हुई है । जो मकान खाली हुआ है उसका मालिक और मालकिन अच्छे आदमी हैं । लेकिन जरा पुराने विचार के हैं । इसके पहले किरायेदार के कारण बहुत झमेले में फँस गया था । अब की प्रतिज्ञा की है, बिना बाल-बच्चे दार पति-पत्नी वाली गृहस्थी के अलावा किसी दूसरे को मकान किराये पर नहीं देगा । बहुत लम्बा-चौड़ा परिवार उसे पसन्द नहीं । एक कुंआरा आदमी वहाँ था, लेकिन वह पियक्कड़ों का चीफ मिनिस्टर था । घर के मालिक और मालकिन की नाक में दम करने के बाद हजरत विदा हुए ।"

पंचानन ने चेता दिया, "मुहब्बत वगैरह की बात गलती से भी जबान पर नहीं लाइएगा। चाहे जो हो, आखिर है तो पुराने खयाल की मकान-मालकिन। सिर्फ ऑर्डिनरी वाइफ-हसबैण्ड बताकर काम निकाल लीजिएगा। कहिएगा, अभी आप यादवपुर में किराये का मकान लेकर रह रहे हैं, काम में असुविधा हो रही है इसलिए राधा वल्लभ साहा लेन में आकर रहना चाहते हैं।"

पंचानन सुकुमार को झटपट राधावल्लभ साहा लेन के मकान में ले गया।

"मासीजी, मैं अपने दोस्त को लेते आया हूँ।" पंचानन ने इस तरह बात-चीत करायी जैसे वह बहुत दिनों का पुराना मित्र हो।

सुकुमार क्या करता, पता नहीं। लेकिन पंचानन ने खुद ही कहा, "मासी जी, आप जैसा आदमी चाहती हैं, ठीक वैसा ही है। नो झंझट, नो झमेला, नो बाल-बच्चा, ओनली देवा और देवी, एकदम निरीह गिरस्थ पार्टी।"

मासीजी पंचानन-परिवार की भक्त है, यह समझ में आ गया। "तुम्हारे जैसे सुखी पति-पत्नी हो तो फिर मैं कुछ भी नहीं चाहती। इसके चलते अगर पाँच रुपया कम किराया भी मिले तो कोई हर्ज नहीं।

पेशगी की बात चली। उस रात ही कणा से पचास रुपया लेकर सुकुमार हावड़ा जाकर दे आया।

कणा से रुपया न लेना ही सुकुमार को अच्छा लगता। मगर उपाय ही क्या था?

•

"कणा, तू अभी कैसी है?" टैक्सी पर बैठते ही सुकुमार ने पूछा। यादव-पुर से दौड़ती हुई टैक्सी बहुत दूर चली आयी थी।

सुकुमार ने बेरोक-टोक कणा को काम की सारी बातें बता दी। कणा ने जबान बन्दकर सब कुछ सुना मगर कोई खास उत्तर नहीं दिया।

सुकुमार ने खुलकर बातचीत की है। कणा के लिए भी कोई संकोच की बात नहीं है। सुकुमार जान-सुनकर सरदारजी की टैक्सी लेकर आया था।

कल कणा को दो बार उल्टी हुई है। उस पर रास्ते के झटके। कणा की देह के बारे में सुकुमार के लिए दुश्चिन्ता करने के अलावा दूसरा कोई चारा है ही क्या?

कणा ध्यान से गाड़ी के शीशे के अन्दर से बाहर की ओर ताक रही थी

पौधे को हटा देती तो कणा के लिए अच्छा रहता—लेकिन वह बाकी दुनिया से अपनी दूरी बरकरार रखना चाहती थी। कणा के बाल भी उड़-उड़ कर मुंह पर आ रहे थे।

सुकुमार सारी बात सोच ही नहीं पा रहा था। घर से भागने का एक बहाना खोजने के लिए कणा और सुकुमार को सड़क पर आकर विचार-विमर्श करना पड़ा था। शुरू में तय किया था, मामूली-सा कोई झगड़ा-टंटा कर कणा क्रोध में आकर घर से निकल पड़ेगी। वैसी हालत में भीषण क्रोधी कणा को अकेली न छोड़ने का बहाना बना कर सुकुमार भी घर से निकल पड़ेगा।

कणा ने सुना है, उन लोगों के ऑपरेटिंग स्कूल की एक लड़की इसी तरह की मुसीबत में फँसकर बसीरहाट के मकान से निकल पड़ी थी। घर पर सिर्फ बूढ़ी बुआ थी, उनकी समझ में कुछ भी नहीं आया था। लेकिन यहाँ क्या यह बात इतनी सुविधाजनक हो पायेगी? माँ की जिस तरह की सेहत है और बाबू जी को जिस प्रकार का ब्लडप्रेसर का रोग है, कणा और सुकुमार एक साथ बाहर निकल जायें तो उन दोनों में से कोई न कोई बीमार हो जायेगा।

सुकुमार स्वयं भी झगड़ा-झंझट में पड़ना नहीं चाहता। वह किसी दूसरे उपाय की खोज में सिर खुजलाने लगा। "जानती है कणा, सोमनाथ के मझले भैया दफ्तर के काम से अकसर बाहर चले जाते थे। एक बार किसी चीज की ट्रेनिंग के कारण तीन महीने के लिए बण्डेल चले गये। दफ्तर के सिलसिले में तेरी भी किसी तरह की ट्रेनिंग चले। तू डेढ़-दो महीने के लिए ट्रेनिंग पर जा रही है। लेकिन तू चूंकि लड़की है इसलिए तुझे अकेले छोड़ा नहीं जा सकता। मैं बेरोजगार सुकुमार तेरे गार्ड की हैसियत से चल रहा हूँ। विस्तार से हम बाद में समाचार देंगे।"

कणा के सोचने की शक्ति बहुत कम हो गयी थी। वह भैया से इतना ही कहती है,"जो ठीक जँचे, वही करो। मैंने तुम्हें कितनी मुसीबत में डाल दिया।" रुलाई शुरू करने के पहले ही कणा ने अपने कंधे पर भैया के हाथ का स्पर्श महसूस किया। "उफ् कणा, अभी हम लोगों को ढेर सारा काम करना है। तू अब उन्हीं बातों की फिक्र कर।"

दफ्तर के काम की वजह से लड़की को घर के बाहर रहना होगा, यह सुन कर माँ तनिक भी खुश नहीं हुई। ट्रेनिंग के बाद तनख्वाह में वृद्धि होगी, यह सुनकर माँ आग-बबूला हो उठी थी। "लड़की की कमाई गोमांस के बराबर है।"

लड़की को टस से मस न होते देखकर माँ ने दुख प्रकट करते हुए कहा था,

"जाओ, जहाँ ये आँखें ले जाये तुम लोग चले जाओ। मुझसे तो अब यह तकलीफ बरदाश्त नहीं होती।"

उसके बाद ही टैक्सी आयी। गंभीर चेहरा ले कणा और सुकुमार थोड़ा-बहुत असबाब लेकर घर से निकल पड़े।

टैक्सी जितनी तेजी से भागती जा रही थी, सुकुमार उतनी ही इत्मीनान की सांस ले रहा था। और कणा उतनी ही तेजी से रो रही थी।

"यह सब तुम क्या कर रहे हो, भैया? इससे तो अच्छा वही था जो मैं करने जा रही थी····"

"तुम जो कुछ करने जा रही थी, वह बिलकुल ठीक नहीं था। कणा, अब तू बात मत बढ़ा। जो हो रहा है, होने दे।"

कणा किस तरह असहाय रूप में अपनी देह को निढाल छोड़ टैक्सी में अध-लेटी हालत में पड़ी हुई थी। कणा शायद सोच रही थी, क्या होगा? अन्ततः वह कहाँ जाकर हाजिर होगी?

आखिर में क्या होगा, यह बात सुकुमार को भी नहीं मालूम। यह सब बिना सोचे कणा को अपने साथ ले वह किसी तरह घर से बाहर निकल आया था। आखिर में कुछ न कुछ अवश्य ही किया जायेगा। लेकिन अभी आखिर की बात सोचने का अवसर नहीं था।

"भैया!" कणा जैसे बहुत दूर से भैया को पुकार रही थी।

"कुछ कहना है?" खामोश सुकुमार उसके चेहरे की ओर ताक रहा था।

"मुझ पर तुम्हें बहुत ही गुस्सा आ रहा होगा, मैं यह महसूस कर रही हूँ।" कणा हाँफ रही थी।

"उफ् कणा!" सुकुमार बहिन को शान्त करना चाहता था।

"इससे बहुत छोटे अपराध पर तुमने मुझे चटाक् से तमाचा जड़ दिया था भैया," कणा सुकुमार को पुरानी बात की याद दिला देती है।

"क्योंकि मैं यादवपुर के उन युवकों के साथ बातचीत कर रही थी।"

"कणा, अभी हम लोगों को बहुत काम करना है। सब कुछ मैं तुझे बता नहीं सका था। हाँ, हम लोग जिस मकान में जा रहे हैं, उसके बारे में सुनकर रख ले। वहाँ मेरा नाम सुकुमार मित्तिर रहेगा और तेरा नाम ····"

"तेरा एक नया नाम होना चाहिए, कणा।" सुकुमार यन्त्रचालित की तरह कह बैठा।

सुकुमार स्वयं भी एक नाम के बारे में सोच रहा था। शकुन्तला नाम बार-बार याद आ रहा है—मिसेज शकुन्तला मित्र।

लेकिन शकुन्तला नाम कणा को संभवतः जँचा नहीं। बिना सोचे-समझे कणा ने प्रस्ताव रखा, "शिउली।" कणा इसी नाम की अभ्यस्त है, यह बात सुकुमार की समझ में नहीं आयी।

लेकिन सुकुमार को इस नाम से घोर आपत्ति है।" मैं तुझे शिउली का नाम धारण नहीं करने दूँगा।"

कणा को भैया की इस आपत्ति का कारण समझ में नहीं आ रहा था। "यह नाम तुम्हें पसन्द नहीं आ रहा है ?"

सुकुमार बोला, "यह नाम वैसे कोई बुरा नहीं है। इतने सुन्दर नाम पर मैं राजी हो जाता। मगर·····"

'मगर' का रहस्य कणा की समझ में नहीं आ रहा था। सुकुमार संभवतः इस बात को स्पष्ट नहीं करना चाहता था। लेकिन कणा के चेहरे की ओर देखकर सुकुमार को कहना पड़ा, "उस हरामजादे नटवर मित्तिर ने उस दिन शिउली नाम को गन्दा जो कर दिया है। लेकिन तुम्हें जब यह नाम इतना ही पसन्द है तो मैं भी सहमत हो रहा हूँ। दुनिया में अनेक शिउली हो सकती हैं, सभी नटवर मित्तिर की शिउली होंगी, ऐसी तो कोई बात नहीं।"

कणा ने गौर किया, नटवर मित्तिर के प्रति नफरत का भाव रहने के कारण भैया का चेहरा विकृत हो गया था।

टैक्सी हावड़ा का जी० टी० रोड पकड़कर जितना आगे बढ़ती जा रही है सुकुमार की दुश्चिन्ता उतनी ही बढ़ती जा रही है। ऐसा महसूस हो रहा है जैसे किसी विशाल मरु-अजगर ने उसे और कणा को जकड़ लिया है। और आहिस्ता-आहिस्ता एक विशाल खड्ड की ओर उन दोनों को खींचे लिए जा रहा है। सुकुमार जी-जान लगाकर बहिन को बाहर फेंक देना चाहता है मगर सफल नहीं हो पाता।

सुकुमार ने सहसा गौर किया, कणा का चेहरा दुश्चिन्ता और आशंका के कारण रक्तहीन हो गया था। भैया का हाथ उसने कसकर पकड़ लिया था।

अचानक एक झटके के साथ टैक्सी हावड़ा मैदान पारकर एक बस के पीछे ब्रेक लगाकर खड़ी हो गयी। और उस झटके के साथ ही सुकुमार को याद आया कि एक जीप खरीदना नितान्त आवश्यक है।

"एक मिनट के लिए रोक दो।" गाड़ी रोकवाकर सुकुमार उतर पड़ा। कणा तभी बच्चे की तरह पुकारने लगी, "भैया ! मुझे छोड़कर चले नहीं जाना।"

"धत् पगली !" कणा को बहुत दिनों से ऐसा डर नहीं लगा था। सुकुमार को याद आया, बहुत दिन पहले वह कणा को अपने साथ से स्यालदह के रथ के मेले में लोहे का तावा खरीदने गया था। साथ छूट जाने के डर से कणा उस समय भी सुकुमार का हाथ कसकर पकड़े हुई थी, भीड़ के बीच बार-बार दयनीय स्वर में कहती थी, "भैया, मुझे छोड़कर घने नहीं जाना।"

उसके बाद कणा के हाथ की पकड़ बहुत ही मजबूत हो गयी थी कणा तो अब अपने पैरों पर खड़ी हो चुकी है। फिर आज कणा इतना डर क्यों रही है?

सुकुमार को याद आया, रथ के मेले में भीड़ के दबाव की वजह से कणा का हाथ छूट गया था। उस क्षण सुकुमार के शरीर का तमाम रक्त छाती की ओर दौड़ने लगा था। मात्र कुछ सेकेण्डों की बात थी। फिर भी सुकुमार की आँखों में अंधेरा उतर आया था। कणा खो जा सकती है, इस आशंका से शरीर अवश जैसा हो गया था। उसी क्षण सुकुमार को महसूस हुआ था कि वह कणा को कितना प्यार करता था। भर पर बहिन को चाहे जितना ही डांट-फटकारे, कणा उसके लिए एक बहुत ही कीमती संपदा थी।

"कणा-कणा", सुकुमार जोरों से चिल्ला उठा था।

"वहीं तो कणा है, मात्र एक फुट पर ही तुम्हारी बहिन है। इसके लिए इस तरह दहाड़ मार कर रोने की क्या जरूरत है?" निकट के लोगों ने सुकुमार को मीठी झिड़की दी थी। "कोई पानी में भी डूब जाता है तो भी लोग इस तरह नहीं चिल्लाते हैं।"

इसी बीच कणा का हाथ सुकुमार की मुट्ठी में लौट आया था। पुरानी बात भूलकर उसने हँसना शुरू कर दिया था।

"इतना ही अगर डर था तो इतनी भीड़-भाड़ के अन्दर आने की जरूरत ही क्या थी?" एक सहयात्री की बात अब भी सुकुमार को याद थी।

गाड़ी जहाँ रुकी है वहाँ सिर्फ तरह-तरह की मच्छरदानी और थोक कपड़े की दुकानें हैं। समय बचाने के खयाल से सुकुमार ने एक आदमी से पूछा, भैया, यहाँ सिन्दूर कहाँ मिलता है?"

वह आदमी मुसकराया। "आप बहुत ही अच्छी जगह सिन्दूर की तलाश कर रहे हैं, भाई साहब। यह बदनाम मुहल्ला है। यहाँ की महिलाओं के ---- सिंदूर जैसी कोई बला नहीं होती।"

सुकुमार का चेहरा शर्म से लाल हो गया। वह आदमी बोला, "मल्लिक फाटक पार करने के बाद थोड़ा और आगे बढ़ जाइये।"

सुकुमार फिर गाड़ी पर जाकर बैठ गया। "क्या हुआ भैया ? क्या खरीदने गये थे ?

अब असमंजस में रहने से कोई लाभ नहीं। सुकुमार ने कहा, "सिन्दूर।"

"नहीं मिला ?" कणा को भी अब इस चीज की आवश्यकता समझ में आ गयी थी।

"गलत जगह में उतर गया था वह रेड लाइट एरिया है। हमें इस जंगल को पार करना ही है, कणा।"

सुकुमार ने गौर किया, कणा ने फिर रोना शुरू कर दिया था। कणा को आज हो क्या गया है ? थोड़ी देर पहले तो कणा ऐसी नहीं थी।

टैक्सी फिर रुकी। सुकुमार टैक्सी से उतर पड़ा और तत्क्षण लौटकर चला आया।

उसके बाद गाड़ी स्टार्ट करने के बाद सरदार जी टैक्सी वाले ने देखा, लेडी पैसेंजर ने चलती हुई गाड़ी में बैठे-बैठे ही वैनिटी बैग से आईना बाहर निकाल कर माँग में सिन्दूर भर लिया।

तीस साल के ड्राइविंग अनुभव के दौरान सरदार जी ने ऐसा अजीब दृश्य नहीं देखा था। और सबसे आश्चर्य की बात है कि सिन्दूर लगाते वक्त जनाना पैसेंजर के साथ मर्दाना पैसेंजर भी आँसू बहा रहा था।

०

"सर, जरा हम लोगों की ओर भी आँख घुमाकर देख लें। मिसेज के साथ आप हनीमून मनाने जा रहे हैं, इसके मानी यह नहीं कि दुनिया को डोन्ट केयर करके चलें। टेम्पो ड्राइवर पंचानन कर्मकार ने गाड़ी के अंदर से गरदन बढ़ाकर सुकुमार से कहा।

सुकुमार संध्या बाजार के मोड़ पर बस के इन्तजार में खड़ा था। "बात-चीत बाद में होगी, पहले बैठ जाइये। साला ट्राफिक अभी तुरन्त पचास पैसा टैक्स लगा देगा।" पंचानन कर्मकार ने टेम्पो का दरवाजा जल्दी से खोल दिया।

पंचानन को एसप्लेनेड जाना है, यह सुनकर पंचानन ने कहा, "कोई बात नहीं, मेरे साथ लाल बाजार तक चलिये। मैं बहू बाजार जा रहा हूँ।"

हाथ बढ़ाकर एक बूढ़े रिक्शेवाले के सिर पर धौल जमाते हुए पंचानन ने रास्ता साफ किया और गाड़ी की गति और गड़गड़ाहट में तेजी आ गई।

"हम लोगों की बात मत पूछें, सर ! किराये की गाड़ी किराये की गाड़ी ही होती है। कब क्या करता हूँ, कोई ठीक नहीं रहता। कल एक श्राद्ध घर का सरो-सामान लेकर वराह नगर गया था। हाफ डजन मुँड़े माथे के मर्दों को एक साथ देखकर मूड बासी पापड़ की तरह अपने आप नरम हो जाता है। किराये के लिए दर-दाम करने का भी मन नहीं करता। और आज विदिन ट्वेल्व ऑवर्स सुहागरात के लिए जोड़ा पलङ्ग फॉम बहू बाजार लाने जा रहा हूँ।"

पंचानन कर्मकार अनर्गल बकता जा रहा था। "अब आप मेरे फ्रेंड हैं। आपसे मजाक चल सकता है। जोड़ा-पलङ्ग की बात से आपको याद आ गई। हाँ, यह तो बताइये सर, मिसेज तो खुश हैं न।"

सुकुमार के कान लाल हो गये। पंचानन बोला, "एक बात पूछ ही लूँ। सुहागरात पहले ही मना चुके थे या कल ही यह काम""मेरे साथ कोई दुराव छिपाव की बात नहीं है।" पचानन खुल कर हँस रहा था और सुकुमार की इच्छा हो रही थी कि गाड़ी से उतरकर चला जाये। सुकुमार को याद आया, घर के बाहर पहली रात काटे नहीं कट रही थी। कणा ने कमरे के अन्दर रात-भर एक लालटेन जला रखी थी। लालटेन की मद्धिम रोशनी में विचित्र-विचित्र छायाएँ कमरे के अन्दर उबाऊ भुतहा परिवेश का निर्माण कर रही थी। उसी के बीच कणा की रुलाई शुरू हो गई थी।

रुलाई का कारण सुकुमार ठीक से समझ नहीं पा रहा था। औरतों को तो ईश्वर ने हजारों तरह की विपदाओं की संभावनाएँ दी हैं। यह सब जानने के बावजूद कणा जाने कहाँ किसके साथ क्या कांड कर बैठी तो अब रोने से फायदा ही क्या ?

कोई दूसरा वक्त होता तो सुकुमार कणा को बेहद फटकारता लेकिन अभी जबान खोलने से उल्टा ही नतीजा निकलेगा। अभी कणा को ढाढ़स देना जरूरी है। कणा को समझना होगा, अँधेरा हमेशा नहीं रहता।

मच्छरदानी में कैद सुकुमार ने तनिक गंभीर स्वर में धीरे-धीरे कहा था, "डरने की कोई बात नहीं है, कणा। तू जरा भी फ़िक्र नहीं कर। देखना, सब ठीक हो जायेगा। कणा तूने कभी कविता का पाठ नहीं किया। कविता में आदमी के तमाम सवालों का जवाब दिया गया है। सुन कणा—

"अरे मेघ को देख न डरना कोई
छिपा ओट में उसकी हँसता दिनकर
हास खो गया जिस भोले चंदा का
अंधकार में ही आता वह छिपकर।"

कणा को शायद फिर भी भरोसा नहीं हुआ। रात-भर उसका छटपटाते रहना सुकुमार की आँखों से अनदेखा न रहा। इसके बाद सुकुमार ने कणा को तंग नहीं किया—दुख से एकान्त में ताल-मेल बिठाने का मौका दिया।

यह सब पंचानन से तो कहा नहीं जा सकता। लेकिन वह तो सुहागरात के बारे में मजाक का दौर आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहा था।

अब पंचानन ने अपनी भी चर्चा छेड़ी। "कहावत है, अपना गम खुद ही पीते जाओ। भले घर की लड़की से शादी की, यह सुनने में अच्छा लगता है, मगर इसके कारण कितनी परेशानी का सामना करना पड़ता है। किसी जमाने में हमने छिपकर कालीघाट में शादी कर ली थी, मगर सुहागरात हमने उसके छह महीने बाद मनायी। किराये के मकान का इन्तजाम किया गया, मिसेज अपनी गृहस्थी में आयीं तब उन्हें प्राप्त कर सका। उस पर भी फर्श पर ही बिस्तर बिछाना पड़ा, दलाल का कमीशन और पेशगी किराया देने के बाद चौकी खरीदने का पैसा बाकी ही कहाँ बचा था?"

जबान बन्द कर सुहागरात की बात सुनने के अलावा सुकुमार के लिए कोई दूसरा उपाय नहीं था। सुकुमार ने एक गाड़ी को ओवरटेक करते-करते कहा, "इतने दिनों तक इस तीन पैरवाले को चलाने के बाद मिसेज को चारपाई पर सुला पाया हूँ—मगर मिसेज बात-बात पर ताना मारती हैं।"

भाग्य अच्छा कहिये कि पंचानन कर्मकार की निगाह सुकुमार के करुण चेहरे पर नहीं पड़ रही थी।

पंचानन बोला, "हाँ, एक बात, मेरी मिसेज ने आपकी मिसेज को दूर से देख लिया है। सुनने में आया, बड़ी ही स्मार्ट हैं, बिना दो-तीन परीक्षाएँ पास किये इस तरह का चेहरा नहीं हो सकता। आप तो जनाब मेरे ही जैसे खिलाड़ी हैं, हालांकि आपको देखने [illegible] लगता है कि [illegible] पास भी बॉल मिल जाये तो स्कोर नहीं कर

लेकिन पंचानन को गुस्सा दिखाना किसी भी दृष्टि से अच्छा नहीं रहेगा। इस अभागी दुनिया में पंचानन जैसे एक-दो परोपकारी आदमी हैं इसीलिए तो चाँद और सूरज अब भी उगते हैं।

"मेरी मिसेज ने आपकी मिसेज का नाम जानना चाहा है, "पंचानन ने कहा।

सुकुमार के गले से आवाज निकलना नही चाहती। इस प्रसन्न प्रभात में ही झूठ बोलना!

"कॉन्फिडेन्शल है क्या? फिर छोड़ो।" पंचानन सरल मन से मजाक कर रहा था।

'शिउली' नाम का उच्चारण करते ही सुकुमार का कलेजा दहकने लगा। उसने एकाएक कह दिया, "एक दूसरा नाम भी है—शकुन्तला।" कोयले की दूकान के मालिक की लड़की का चेहरा अकारण ही आँखो के सामने तैर उठा। बहुत चेष्टा करने के बावजूद उस तसवीर को वह मन से पोंछ नहीं सका।

किसी-किसी भले घर की लड़की के बहुत से नाम हुआ करते हैं। बड़ी दुलारी होती है न। जान-पहचान का हर व्यक्ति एक-एक नाम रख देता है, "पंचानन निहायत अरसिक नही था, इसका उसने प्रमाण दे दिया।

"जानते हैं सर, मेरी वाइफ भी बडी लाड-प्यार की पली है। लेकिन अब मायके से कोई खोज-खबर भी नही लेता। मुझसे मुहब्बत करने की वजह से पगली को सबके प्यार-दुलार से वंचित होना पड़ा। आपकी मिसेज को भी शुरू-शुरू मे काफी तकलीफ उठानी होगी, उसके बाद देखियेगा, सब कुछ बरदाश्त करने की आदी हो जायेगी। उस वक्त महसूस होगा, हसबैण्ड के अलावा दुनिया मे कभी कोई न तो था और न ही होगा।"

पंचानन ने अब भी रुकने का नाम नही लिया। बोला, "इसी तरह एक से डेढ साल तक चलता रहेगा। उसके बाद''''" पचानन एकाएक हँस पड़ा।

"उसके बाद सिर्फ पति से ही मन नही भरेगा। तब''''खैर छोड़ो, आपको अभी से नर्वस नही करूँगा। मैं अब उसी स्टेज मे आ गया हूँ। मैं इस तीन पैर-वाले को हटाकर चार पैर वाली टैक्सी का इन्तजाम करने की कोशिश मे था और मेरी मिसेज''''समझ हो रहे होंगे, जीवित पुतले का हठ ठान बैठी। बडी ही लाड़ली औरत है न, जो चाहेगी लेकर ही छोडेगी। किसी तरह की आपत्ति पर कान नहीं देगी।" पंचानन कितनी सहजता के साथ अधपहचाने सुकुमार को अपनी खबरें सुना गया।

सुकुमार की नाक गरम हो गयी थी। और पचानन अपनी रौ में बहता

जा रहा था, "संसार का यही नियम है। सर्वदा गाड़ी लेकर ही मैं माथा-पच्ची करता रहा। गाड़ी का सब कुछ आदमी के जैसा ही होता है, सिर्फ बच्चे पैदा होने की बात को छोड़कर।

"क्या बात है सर ? आपकी कोई आवाज सुनायी नहीं पड़ रही है। इंजन चल रहा है या नहीं, यह क्योंकर समझूँगा ? मिसेज ने क्या इसी तरह जबान बन्द करके रहने का हुक्म दिया है ?" पंचानन ने फिर मजाक किया।

इस बीच लाल बाजार का चौराहा आ चुका था। पंचानन से विदा लेकर सुकुमार वहीं उतर गया। वहाँ से पैदल चलने से कोयले की दूकान है ही कितनी दूर !

सुकुमार फुटपाथ की भीड़ को ठेलता हुआ, रिक्शेवाले की बगल से बचता हुआ, बस की बगल और नीचे से होता हुआ आगे बढ़ रहा है। इस दुःसमय में कोयले का काम न मिलता तो क्या होता ! कणा अगर और एक मास पूर्व इस मुसीबत में फँसी होती तो सुकुमार भी कुछ कर पाता या नहीं कौन जाने !

भाग्य अच्छा था कि घोष साहब का निजी हेड-ऑफिस इस समय गड़बड़ा गया। वरना सुकुमार को इस वक्त रास्ते पर मारे-मारे फिरना पड़ता।

●

सुकुमार ने ध्यान नहीं दिया कि बकुलतल्ला के नजदीक एक स्कूटर उसकी बगल से होता हुआ तेजी से निकल गया। निगाह पड़ती तो पाता कि स्कूटर का युवा-यात्री सोमनाथ बैनर्जी के अतिरिक्त दूसरा कोई व्यक्ति नहीं था।

सोमनाथ के हाथ में वक्त की कमी है, व्यवसाय के सिलसिले में वह अभी नेताजी सुभाष रोड के एक दफ्तर में जा रहा था।

सामने के राहगीरों की भीड़ हटाने के लिए सोमनाथ ने एक बार स्कूटर का हॉर्न बजाया। उसके बाद किसी तरह कई किरानियों को बचाता हुआ पच्छिम की तरफ मुड़ गया। थोड़ी देर बाद ही नेताजी सुभाष रोड मिला। दूर राइटर्स बिल्डिंग की लाल इमारत दीख रही थी। इस स्कूटर ने सोमनाथ को भी गति दी है—व्यवसाय में गति न हो तो चल नहीं सकता। तरह-तरह की जगहों में लोगों से मिलना-जुलना पड़ता है, समय की प्रतियोगिता में पीछे छूट जाने से व्यवसाय में पराजित होना निश्चित है।

नया स्कूटर खरीदने में सोमनाथ हो सकता था, थोड़ी देर करता मगर कमला भाभी ने दबाव डाला। जब कि घर-गृहस्थी का पालन नहीं करना पड़ता है तो ऐसी हालत मे उसी रुपये से नया वाहन खरीदने का भाभी ने परामर्श दिया था। भाभी के कथनानुसार ही उसने काम किया था।

नेताजी सुभाष रोड से अप्रत्याशित शुभ संवाद लेकर सोमनाथ अब अपने दफ्तर वापस आया। दफ्तर में कदम रखते ही पुराने मित्र और इस मुहल्ले के विख्यात हिसाब रखक आदक बाबू से मुलाकात हो गई।

"अरे, सोमनाथ बाबू! आपका चेहरा देखने से भी प्रसन्नता होती है", आदक बाबू अपनी प्रसन्नता दबाकर नहीं रख सके।

आदक बाबू की बात से सोमनाथ शर्मिन्दगी महसूस कर रहा था, यह देखकर वह बोले, "शर्म की कौन-सी बात है साहब? जो सच है यह कहने मे मुझे जरा भी तकलीफ नहीं होती। एकमात्र सेल्स टैक्स और इनकम टैक्स ऑफिस के अलावा कहीं भी बन्दा झूठ का सहारा नहीं लेता।"

आदक बाबू हल्की हँसी हँसे। "बिजनेस-मुहल्ले में लटका हुआ चेहरा और दंतुरित मुसकराहट देखते-देखते आँखें थम गई हैं। चेहरा देखते ही लगता है, हरेक के पीछे बोरे का बोरा पाप और शरारत छिपी हुई है। यही वजह है कि जब दिल खट्टा हो जाता है तो आपके पास चला आता हूँ।"

बिजनेस मैन आदक बाबू ने ही एक दिन सोमनाथ को पहले-पहल पैसा कमाने का सुयोग प्रदान किया था। चाहे वह कितना ही साधारण सुयोग क्यों न हो, सोमनाथ उस बात को आज भी नहीं भूला है, यह बात उसने बता दी।

"आप यह क्या कह रहे हैं! पहले भी कह चुका हूँ और अब भी कह रहा हूँ कि आपको जो भी देखेगा वही मदद करने को तैयार हो जायेगा। आपके इस सरल मुखड़े की सर्वत्र जय होगी।" आदक बाबू ने सीधा-सा जवाब दिया।

अब आदक बाबू ने एक सिगरेट सुलगाई। "अपनी मर्जी से बिना किसी की परवाह किये व्यवसाय-वाणिज्य चलाते जाइये। खाता-बही संभालने के लिए यह आदक बाबू तो है ही।"

सोमनाथ ने हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की।

आदक बाबू बोले, "जानते हैं, आपको इतना प्यार क्यों करता हूँ ? आपने बिजनेस वर्ल्ड में एक दृष्टान्त स्थापित किया है।"

वह कुछ और भी कहना चाहते थे लेकिन सोमनाथ ने बीच ही में टोक दिया, "आज एक खास खुशखबरी है, आदक बाबू। सोहिनी टेक्सटाइल्स से अपने ऑप्टिकल ब्लाइटेनर को एक अच्छा-सा ऑर्डर मिला है।"

"कॉन्ग्रेच्यूलेशन, कॉन्ग्रेच्यूलेशन," आदक बाबू ने अपना हाथ बढ़ा दिया।

सोमनाथ ने कहा, "एक पत्र डाल दिया था, उसके बाद सैम्पल भेज दिया। मुलाकात की और बताया कि महात्मा कॉटन मिल्स में माल सप्लाई करता हूँ। कोई उल्टी-सीधी बात नहीं हुई, सीधे ऑर्डर मिल गया।"

आदक बाबू के चेहरे पर चमक खेल गयी। "वही बात तो कहने जा रहा था। आपका यही पहलू तो किस्से जैसा है। किसी तरह का हेर-फेर किये बगैर एक नौजवान अपनी कोशिश से अपने पैरों पर खड़ा हो रहा है, यह चीज मैं अपनी आँखों से न देखता तो यकीन ही नहीं होता। इस लाइन में इस तरह का कोई दूसरा केस नहीं हुआ है, सोमनाथ बाबू। यकीन कीजिये।"

आदक बाबू की इस प्रसन्नता के भाव ने सोमनाथ को बेचैनी में डाल दिया था। कलेजे के अन्दर कुछ बिंध सा गया था।

सोहनी टेक्सटाइल्स के इस ऑर्डर के बारे में सोमनाथ सोचने की कोशिश कर रहा था। इसके अन्दर किसी तरह की गन्दगी नहीं है, अपनी कोशिश और गुण के बल पर ही इस काम को उसने प्राप्त किया था। आदक बाबू जो कुछ कह रहे हैं उसमें भी बिलकुल सच्चाई है, सिर्फ मिस्टर गोयनका के महात्मा कॉटन मिल्स के शुरू के ऑर्डर को छोड़कर।

"क्या हुआ मिस्टर बेनर्जी ? आपने इतना क्या सोचना शुरू कर दिया ?" आदक बाबू ने मीठी झिड़की सुनायी।

सोमनाथ सोच रहा था, अब वह स्वयं को पाक-साफ कर लेगा। गोयनका के उस मासिक आदेश को वह अब छोड़ देगा। फिर वह खासा हल्कापन महसूस करने लगेगा, उसके साथ किसी तरह की गन्दगी का कोई वास्ता नहीं रह जायेगा। हो सकता है कि वह ग्रेट इण्डियन होटल के उस रात के दृश्य को आहिस्ता-आहिस्ता भूल ही जाये।

"जानते हैं आदक बाबू, इस मुहल्ले में आपके सिवा सलाह-परामर्श करने के लिए मेरा कोई अपना आदमी नहीं है। महात्मा कॉटन मिल्स की सप्लाई का यह बिजनेस मुझे अच्छा नहीं लगता।"

"क्यों ?" आदक बाबू ने पूछा। "रेट कम दे रहा है ? वक्त पर पेमेन्ट

नही मिल रहा है ? आपके माल की क्वालिटी में किसी तरह का संदेह पैदा कर रहा है ?"

यह सब बात नहीं है, सुनकर आदक बाबू चिन्ता में पड़ गये। "फिर किस दुःख के चलते आप ऑर्डर छोड़ने जा रहे हैं ?"

आदक बाबू ने सिर खुजलाया। "अब समझ गया। पर्चेज ऑफिसर ने कुछ ऐसी बातें कही हैं कि आप गुस्से में आ गये। एक बात जान लें सोमनाथ बाबू, देह में गुस्सा रहे तो बिजनेस नही हो सकता। आँख दिखाकर कोई कभी बिजनेस मे सुविधा प्राप्त नही कर सका है। राजेन मुखर्जी कहा करते थे, व्यवसायियो का लोहू मछली के लोहू के समान होना चाहिए—हर वक्त ठण्डा।"

सोमनाथ को अपनी नाड़ी टटोलकर एक बार लोहू की जाँच करने की इच्छा हुई। उसका लोहू गरम नही होता है—उसकी नसों में मछली का ही लोहू प्रवाहित हो रहा है। "नही आदक बाबू, मुझे गुस्सा नही हुआ है। मगर वे लोग मुझे अच्छे नही लगते—महात्मा कॉटन मिल्स और मिस्टर सुदर्शन गोयनका....."

"यह तो गुस्से से भी ज्यादा खतरनाक है, सोमनाथ बाबू। इसका नाम है खामखयाली। आपकी यह पहली बड़ी पार्टी है, आपकी कामयाबी की पहली सीढ़ी, आप उसे एक बात मे तलाक कर दीजिएगा ? जानते हैं, शुरुआती ग्राहक को बड़े-बड़े बिजनेस हाउस कितनी इज्जत देते हैं ? जर्मन प्रिंटिंग मशीन की शतवार्षिकी मनायी गयी—उन लोगों ने हमारे बोरिक एण्ड कम्पनी को ऑल्डेस्ट क्लाइन्ट के नाते एक मशीन उपहार स्वरूप भेजी—एक भी पैसे का भुगतान नहीं करना पड़ा। और आप सिर्फ कुछ महीने बिजनेस करते न करते सिर्फ खामखयाली की वजह से महात्मा कॉटन मिल्स को छोड़ने की बात सोच रहे हैं !"

काश सोमनाथ आदक बाबू को सारी बातें खोलकर कह पाता ! "आदक बाबू, आप कैसे समझियेगा कि मैं अपने सीने मे हर वक्त कितने दर्द का बोझ ढोये चल रहा हूँ। कि मैं उस साले गोयनका से रिश्ता कायम रखकर लखपति नही होना चाहता। अपना पैतृक मकान है, मेरे साथ कोई जिम्मेदारी नही, मुझे गृहस्थी का खर्च चलाना नही पड़ता। थोड़ा-बहुत ही कमा लूँगा तो संतुष्ट हो जाऊँगा। मेरे लिए गोयनका से सम्पर्क रखना ठीक नही होगा—वरना मैं गन्दगी से दूर नहीं रह पाऊँगा।

यह सब बात जबान खोलकर कहे तो हो सकता है कि आदक बाबू, सोमनाथ का दिमाग खराब हो रहा है। "बंगाली बिजनेसमैन लम्

कामयाब नहीं हो पाता है, उन लोगों का इंजन जरा-सी देर ही में गरम हो जाता है," आदक बाबू ने एक बार खुद ही सोमनाथ से कहा था। "और सब उदाहरणों पर गौर कीजिये—मिस्टर अग्रवाल, मिस्टर नोपानी, मिस्टर लाखोटिया, दो-तीन बार दीवाला पीट चुके हैं, मगर उनका इंजन गरम नहीं होता।"

आदक बाबू बोले, "अब चलूं। आपसे एक बात कहे जाता हूं, इस सोहिनी टेक्सटाइल्स में, हो सकता है, आपको अच्छी बचत हो मगर इसके चलते आप महात्मा कॉटन की अवहेलना नहीं कीजिएगा। याद रखिये, बिजनेस एक चेन रिएक्शन है। महात्मा का बिजनेस आपको न मिलता तो सोहिनी का ऑर्डर भी आपके हाथ में नहीं आता।"

आदक बाबू की आखिरी बातों ने सोमनाथ के सारे विचारों को तितर-बितर कर दिया। कहाँ सोमनाथ यह सोच रहा था कि गोयनका से व्यावसायिक सम्बन्ध तोड़कर वह स्वयं को पापमुक्त कर लेगा और कहाँ अब आदक बाबू समझा गये कि व्यवसाय धारावाही चीज है। एक काम से ही दूसरे काम की उत्पत्ति होती है। चेन रिएक्शन—श्रृङ्खला बद्ध प्रतिक्रिया। हम लोगों के जीवन का प्रत्येक कर्म हमारी इच्छा के विरुद्ध एक से दूसरी अविच्छेद्य श्रृङ्खला की तरह जुड़ा हुआ है। यानी, मिस्टर गोयनका, आपसे मेरा व्यावसायिक सम्बन्ध भले ही टूट जाये पर ग्रेट इण्डियन होटल की उस नैश विभीषिका की छाया से, कॉटन मिल्स से सम्पर्क स्थापित होने के बावजूद, मैं अपने आपको मुक्त नहीं कर पाऊँगा।

सोमनाथ जरा उत्तेजित हो उठा था। एक बहुत बड़ी जंजीर सामने पड़ी हुई थी। सोमनाथ उसका सिरा देख रहा था—वहाँ सुकुमार की बहिन बँधी हुई थी; उसके बाद उस जंजीर का दूसरा सिरा नजर नहीं आ रहा था। अर्थात् सोहिनी टेक्सटाइल्स, भारत लक्ष्मी कॉटन, बंगवाला मिल्स, इन्दुक्लॉथ—सोमनाथ चाहे जहाँ कहीं भी भागकर जाये, वहीं मिस्टर सुदर्शन गोयनका और फाउली की अदृश्य छाया रहेगी, लाख कोशिश के बावजूद उसे पोंछा नहीं जा सकता।

सोमनाथ ने सोचा था, नया ऑर्डर पाकर वह मुक्ति की प्रसन्नता का अनुभव करेगा। लेकिन आदक बाबू की बातों ने सब कुछ गड्डमड्ड कर दिया।

अपने को शान्त करने के खयाल से सोमनाथ कनोड़िया कोर्ट के विशु बाबू के पुराने मकान में चला आया।

इस घर, इस टेलीफोन और इसी कुरसी-मेज के साथ सोमनाथ के जीवन में नये अध्याय की शुरुआत हुई थी। विशु बाबू का वह बहुत ही कृतज्ञ है। उत्साह देकर, हाथ पकड़कर वह यहाँ न ले आते तो सोमनाथ भी, हो सकता है कि सुकुमार की तरह ही पागल हो जाता। एक दिन इस घर ने जिस प्रकार उसे उम्मीद की रोशनी दिखायी थी, उसी प्रकार प्रथम आषाढ़ के बाद यह घर रातों-रात कुत्सित हो गया। इसी टेलीफोन से मिस्टर गोयनका के साथ होटल के सम्बन्ध में बातचीत हुई थी, यह सोचते ही उसे बेचैनी का अहसास होने लगता था। उसके बाद यथा समय अप्रत्याशित सुयोग आया। इस घर से निकलकर दूसरे घर में जाने का सुयोग मिलने पर सुकुमार ने इत्मीनान की साँस ली थी।

आज विशु बाबू के घर में आने पर सोमनाथ को बहुत सारी बातें याद आ रही थी। खासकर तपती की बातें। तपती का स्पर्श उस कुरसी पर अंकित था। वह इस घर में कई बार आ चुकी थी। तपती अयाचित रूप में ही आयी थी—सोमनाथ ने उसे किसी तरह का प्रोत्साहन नहीं दिया था, फिर भी व्यवसाय के जगल को परे ठेलकर तपती कई बार उसके पास आयी थी।

आकर्षक, उत्साही तपती का नाक-नक्शा अब भी सोमनाथ की स्मृति से पूरी तरह नहीं धुला है। कौन दिन किस रंग की साड़ी पहन वह सोमनाथ को पकड़ने इस घर में आयी थी, यह बात सोमनाथ डायरी देखे बगैर भी बता दे सकता है।

तपती इतनी मेधाविनी छात्रा है, उसका विचार और बुद्धि इतनी परिपक्व है—फिर भी सोमनाथ के मामले में वह ऐसी गलती क्यों कर बैठी? तीन साल तक एक साथ पढ़ने के बावजूद, प्रत्येक दिन सोमनाथ को देखने-सुनने के बावजूद, तपती ने कैसे सोच लिया था कि सोमनाथ एक दिन बड़ा आदमी होगा, उसे दुनिया में मान्यता प्राप्त होगी? प्रेम, तुम सचमुच ही अंधे हो, इसकी एक सबूत तुम तपती में छोड़ गये हो।

परीक्षा की सीढ़ी-दर-सीढ़ी तयकर, सफलता के स्वर्ण-शिखर पर आसीन होने के बावजूद तपती ने किस अंध-निष्ठा के साथ पासकोर्स के मामूली ग्रेजुएट बेरोजगार सोमनाथ की ओर अपना उत्फुल्ल हाथ बढ़ा दिया था! मानो, उसने मान लिया हो कि सोमनाथ किसी दिन सफल होकर ही रहेगा। उन क्षणों को, कनोड़िया कोर्ट से उस मैन-ऑफ वार जेटी तक के उस एकान्त सान्निध्य को,

कामयाव नहीं हो पाता है, उन लोगों का इंजन जरा-सी देर ही में गरम हो जाता है," आदक वावू ने एक वार खुद ही सोमनाथ से कहा था। "और सब उदाहरणों पर गौर कीजिये—मिस्टर अग्रवाल, मिस्टर नोपानी, मिस्टर लाखोटिया, दो-तीन वार दीवाला पीट चुके हैं, मगर उनका इंजन गरम नहीं होता।"

आदक वावू वोले, "अव चलूं। आपसे एक वात कहे जाता हूं, इस सोहिनी टेक्सटाइल्स में, हो सकता है, आपको अच्छी वचत हो मगर इसके चलते आप महात्मा कॉटन की अवहेलना नहीं कीजिएगा। याद रखिये, विजनेस एक चेन रिएक्शन है। महात्मा का विजनेस आपको न मिलता तो सोहिनी का ऑर्डर भी आपके हाथ में नहीं आता।"

आदक वावू की आखिरी वातों ने सोमनाथ के सारे विचारों को तितर-वितर कर दिया। कहां सोमनाथ यह सोच रहा था कि गोयनका से व्यावसायिक सम्वन्ध तोड़कर वह स्वयं को पापमुक्त कर लेगा और कहां अव आदक वावू समझा गये कि व्यवसाय धारावाही चीज है। एक काम से ही दूसरे काम की उत्पत्ति होती है। चेन रिएक्शन—शृङ्खला बद्ध प्रतिक्रिया। हम लोगों के जीवन का प्रत्येक कर्म हमारी इच्छा के विरुद्ध एक से दूसरी अविच्छेद्य शृङ्खला की तरह जुड़ा हुआ है। यानी, मिस्टर गोयनका, आपसे मेरा व्यावसायिक सम्वन्ध भले ही टूट जाये पर ग्रेट इण्डियन होटल की उस नैश विभीषिका की छाया से, कॉटन मिल्स से सम्पर्क स्थापित होने के वावजूद, मैं अपने आपको मुक्त नहीं कर पाऊँगा।

सोमनाथ जरा उत्तेजित हो उठा था। एक वहुत वड़ी जंजीर सामने पड़ी हुई थी। सोमनाथ उसका सिरा देख रहा था—वहाँ सुकुमार की वहिन वँधी हुई थी; उसके वाद उस जंजीर का दूसरा सिरा नजर नहीं आ रहा था। अर्थात् सोहिनी टेक्सटाइल्स, भारत लक्ष्मी कॉटन, वंगवाला मिल्स, इन्दुक्लॉथ—सोमनाथ चाहे जहाँ कहीं भी भागकर जाये, वहीं मिस्टर सुदर्शन गोयनका और शिउली की अदृश्य छाया रहेगी, लाख कोशिश के वावजूद उसे पोंछा नहीं जा सकता।

सोमनाथ ने सोचा था, नया ऑर्डर पाकर वह मुक्ति की प्रसन्नता का अनुभव करेगा। लेकिन आदक वावू की वातों ने सव कुछ गड्डमड्ड कर दिया।

अपने को शान्त करने के खयाल से सोमनाथ कनोड़िया कोर्ट के विशु बाबू के पुराने मकान मे चला आया।

इस घर, इस टेलीफोन और इसी कुरसी-मेज के साथ सोमनाथ के जीवन मे नये अध्याय की शुरुआत हुई थी। विशु बाबू का वह बहुत ही कृतज्ञ है। उत्साह देकर, हाथ पकड़कर वह यहाँ न ले आते तो सोमनाथ भी, हो सकता है कि सुकुमार की तरह हो पागल हो जाता। एक दिन इस घर ने जिस प्रकार उसे उम्मीद की रोशनी दिखायी थी, उसी प्रकार प्रथम आषाढ के बाद यह घर रातो-रात कुत्सित हो गया। इसी टेलीफोन से मिस्टर गोयनका के साथ होटल के सम्बन्ध मे बातचीत हुई थी, यह सोचते ही उसे बेचैनी का अहसास होने लगता था। उसके बाद यथा समय अप्रत्याशित सुयोग आया। इस घर से निकलकर दूसरे घर मे जाने का सुयोग मिलने पर सुकुमार ने इत्मीनान की साँस ली थी।

आज विशु बाबू के घर मे आने पर सोमनाथ को बहुत सारी बातें याद आ रही थी। खासकर तपती की बाते। तपती का स्पर्श उस कुरसी पर अंकित था। वह इस घर मे कई बार आ चुकी थी। तपती अयाचित रूप मे ही आयी थी—सोमनाथ ने उसे किसी तरह का प्रोत्साहन नहीं दिया था, फिर भी व्यवसाय के जगल को परे ठेलकर तपती कई बार उसके पास आयी थी।

आकर्षक, उत्साही तपती का नाक-नक्शा अब भी सोमनाथ की स्मृति से पूरी तरह नही धुला है। कौन दिन किस रग की साड़ी पहन वह सोमनाथ को पकड़ने इस घर में आयी थी, यह बात सोमनाथ डायरी देखे बगैर भी बता दे सकता है।

तपती इतनी मेधाविनी छाया है, उसका विचार और बुद्धि इतनी परिपक्व है—फिर भी सोमनाथ के मामले मे वह ऐसी गलती क्यो कर बैठी ? तीन साल तक एक साथ पढ़ने के बावजूद, प्रत्येक दिन सोमनाथ को देखने-सुनने के बावजूद, तपती ने कैसे सोच लिया था कि सोमनाथ एक दिन बड़ा आदमी होगा, उसे दुनिया में मान्यता प्राप्त होगी ? प्रेम, तुम सचमुच ही अंधे हो, इसकी एक सबूत तुम तपती मे छोड़ गये हो।

परीक्षा की सीढी-दर-सीढ़ी तयकर, सफलता के स्वर्ण-शिखर पर आसीन होने के बावजूद तपती ने किस अध-निष्ठा के साथ पासकोर्स के मामूली ग्रेजुएट बेरोजगार सोमनाथ की ओर अपना उत्फुल्ल हाथ बढ़ा दिया था ! मानो, उसने मान लिया हो कि सोमनाथ किसी दिन सफल होकर ही रहेगा। उन क्षणों को, कनोड़िया कोर्ट से उस मैन-ऑफ वार जेटी तक के उस एकान्त सान्निध्य को,

कभी भूला नहीं जा सकता। सोमनाथ ने देखा है, तपती की वड़ी-वड़ी आंखों में कितनी गहरी आस्था है ! तपती ने सोमनाथ को वहुत वड़ा जो मान लिया था।

उसी तपती ने जिस दिन अपने घर के लोगों के दवाव के कारण सोमनाथ से मैरेज रजिस्ट्री ऑफिस चलने कहा था और वेकार-व्यर्थ सोमनाथ ने अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए उससे समय की मांग की थी—सोमनाथ उस दिन को भी अपनी आंखों के सामने देख रहा था।

प्रथम आषाढ़ की रात में सव कुछ अचानक गड्डमड्ड हो गया। सफलता और अधःपतन की ग्लानि ने एक ही साथ सोमनाथ के शान्त जीवन में संकट उत्पन्न कर दिया था।

व्यवसाय की खुशखवरी सुनकर तपती दौड़ी-दौड़ी आयी थी। कहा था, "अपना हाथ आगे वढ़ाओ, तुमसे हैण्डशेक कर लूं।"

लेकिन सोमनाथ तैयार नहीं हुआ था। इस गन्दे हाथ के स्पर्श से, चाहे जो हो, तपती जैसी पवित्र लड़की को कलुषित नहीं किया जा सकता।

सोमनाथ की हालत देखकर तपती गहरी चिन्ता में डूव गयी थी। "ए सोम, तुम्हें हो क्या गया है ?"

"मैं विजनेसमैन हो गया हूं, तपती। मेरे लिए अव कोई रास्ता नहीं है। अव मुझे वहुत देर करनी होगी, वहुत रिस्क लेना होगा, तपती।"

"कनाडा से मुझे स्कॉलरशिप का एक सुयोग मिला है, सोम।"

"तव तो तुम कुछ दिनों के लिए कनाडा ही घूम-फिर आओ तपती। अभी मुझे वहुत-सी उलझनों को दूर करना है, वहुत वड़ा रास्ता तय करना है। तपती ! सचमुच इन झमेलों को सुलझाये वगैर रास्ता नहीं।"

तपती ने कतई इस तरह के उत्तर की उम्मीद नहीं की थी। एक दिन सोमनाथ ने तपती को लिखा था, "हम दोनों वहुत वड़ा रास्ता तय करेंगे।" अनेकानेक नदी, मरु, और अरण्य दोनों जनों का मिलकर एक साथ तय करने का तपती का जो सपना था, सोमनाथ ने उसे कहां किस ओर ठेल दिया ?

कनाडा जाने के एक दिन पहले तपती विदा लेने आयी थी। "तुम मुझे जाने को कह रहे हो सोम, इसीलिए जा रही हूं।"

सोमनाथ चाहता था, तपती उसके चेहरे की ओर न देखे। तपती वड़ी वुद्धिमती है, कहीं समझ न जाये कि सोमनाथ कितने नीचे उतर आया है; सोमनाथ अभी क्या है !

"जाओ, तपती। तुम्हें अकेले ही वहुत दूर जाना है।"

"हैलो ब्रदर, सोमनाथ ! कब आये ?" विशुबाबू की आवाज सुनकर सोमनाथ वर्तमान में लौट आया।

"आज एक खासा अच्छा ऑर्डर मिला है, विशुदा। इसीलिए आपको यह खबर देने आ गया।"

"वेरी गुड न्यूज। लो, एक बीड़ा पान खाओ।" यह कहकर विशुदा ने पान का डिब्बा आगे बढा दिया।

उसके बाद बोले, "तुम सच्चाई के रास्ते पर चलकर जिन्दगी मे सफल हुए हो, इससे मैं बेहद खुश हूँ, सोमनाथ। बंगाली यूथ्स के लिए तुम एक एक्जाम्पल हो।"

"बाइ-दि-वाइ !" विशुदा को अब एकाएक याद आया।

"तुम्हारे उसी फ्रेण्ड से उस दिन मुलाकात हो गयी। क्या तो नाम है उसका ?" विशुदा सिर खुजलाने लगे।

"मिस्टर नटवर मित्तिर ?"

"धत्त। नटवर मित्तिर कब किसका फ्रेण्ड होने लगा ? वैसे लोगो के माँ-बाप, भाई-बहिन, दोस्त नही हुआ करते। उन लोगो की तो सिर्फ 'पार्टी' हुआ करती है।"

"फिर आप किसकी बात कर रहे हैं, विशुदा ?"

"अरे वही जो खेल के मैदान मे तुम्हारे साथ आया करता था। तुम्हारा वह सह-बेरोजगार।....हाँ-हाँ, नाम याद आ गया, सुकुमार।"

सुकुमार ! यह नाम सुनते ही सोमनाथ के मेरुदण्ड में बेचैनी की एक लहर सी प्रवाहित होने लगी।

"सुकुमार ! नौकरी की खोज करते-करते उस बेचारे का तो दिमाग ही खराब हो गया है।"

विशुदा बोले, "नही; खुशखबरी है। बेचारा अस्पताल से बाहर आ गया है—अब पूरे तौर पर स्वस्थ होकर मैदान मे उतरने को रेडी है। सिर्फ एक जर्सी की ही कमी है।"

विशुदा ने सूचना दी कि सुकुमार से उनकी काफी बातचीत हुई है। विशुदा ने उसे नये उद्योग-धन्धों की लड़ाई के मैदान में उतरने का परामर्श दिया है। सोमनाथ ने जानना चाहा, "मेरे बारे मे कुछ पूछताछ की थी ?"

सुकुमार ने सोमनाथ की एक बार भी चर्चा नही की थी, यह सुनकर उसके मेरुदण्ड की बेचैनी बढ़ने लगी थी।

सोमनाथ थोड़ी देर बाद ही विशुदा के दफ्तर से बाहर निकल आया। उसके मन में केवल एक प्रश्न था : स्वस्थ हो जाने के बावजूद सुकुमार ने सोमनाथ के बारे में कुछ भी क्यों नहीं पूछा ?

०

कोयले की दुकान में बैठकर सुकुमार अभी सोच रहा था। उसकी चिन्ता अभी कोयले की दुकान के मालिक से संबंधित थी। भले आदमी और कितने दिनों तक बीमार रहेंगे ?

कोयले की दुकान में ज्यादातर चुपचाप बैठे रहने के सिवा करने को और कुछ नहीं रहता। मंगल सिंह तब दन्त-मंजन की पुड़िया बनाता है और मर्सिडिज सिंह गहरी नींद लेता है।

उसका सोना देखकर सुकुमार अवाक् हो जाता है। क्योंकि बहुत कोशिश करने के बाद भी उसकी अपनी आंखों में जरा भी नहीं नींद आती थी।

मंगल सिंह का कहना है, "उसका हर काम ही खास तरह का है। टाटा मर्सिडिज लॉरी में उसकी पैदाइश हुई है। इसीलिए नाम है कि मर्सिडिज सिंह उसके पास नींद का स्पेशल स्विच है। नजदीक जाकर कोयला मांगते ही वह पाँच सेकेण्ड के दरमियान चट से उठकर खड़ा हो जाता है और कोयले का वजन करने लगता है। उसके बाद कोयले के बोरे की डेलेवरी देने चला जाता है। किराया लेकर वापस आते ही पांच मिनट के अन्दर ही वह फिर खर्राटे लेने लगता है।"

"इतनी नींद क्यों आती है!" सुकुमार को सोचने पर कुछ समझ में नहीं आता।

मंगल सिंह कहता है, "नींद की गलती ही क्या है हुजूर ? मर्सिडिज सिंह रात में सोता नहीं है—पैसा लेकर इस मुहल्ले की पंद्रह दुकानों की रखवाली करता है और हर आदमी से महीने में पाँच रुपया वसूल करता है।"

सुकुमार ने गौर किया है कि कलकत्ते में बहुतेरे आदमी दो नंबर का धंधा करते हैं। एक काम करते ही आदमी हाथ समेट कर बैठे नहीं रहते, कुछ दूसरा भी काम करके अधिक आय-प्राप्त करने की कोशिशें करते हैं।

मंगल सिंह कहता है, "इसके अलावा उपाय ही क्या है हुजूर ? खर्च क्या आप एक ही जगह करते हैं ? कितनी ही जगहों में खर्च करना पड़ता है।"

इसके बाद उसने जो कुछ कहा, उसका मतलब था, नौकरी कोई आपकी बीवी नहीं कि एक से अधिक को आप रख नहीं सकते।

बात बड़े मजे की है। साधारण आदमी भी कभी-कभी ऐसी बातें कह बैठता है जो नाटक-उपन्यासों में भी नहीं मिलतीं।

मुकुमार अभी बैठे-बैठे कोयले की दुकान के मालिक के बारे में सोच रहा था। न जाने, भले आदमी की सेहत अब कैसी है!

मुकुमार उस संबंध में अधिक कौतूहल भी नहीं दिखाता। सच कहने में हर्ज ही क्या, उसे पकड़ में आ जाने का भय बना रहता है। चाहे वह अपने मन को लाख फटकारे मगर मुकुमार के अन्दर जैसे कोई प्रार्थना करता रहता है: हे देवता, यह काम कहीं अचानक छूट न जाये।

मुकुमार ने एकान्त में स्वयं को फटकारा है। "इसका मतलब क्या निकलता है? मुकुमार मित्तिर, तुम चाहे कितनी ही बेवकूफ बनने का अभिनय क्यों न करो, इसका मतलब यही निकलता है कि घोष साहब जल्दी अच्छे न हों—वह मानसिक चिकित्सालय से निकलकर इस कोयले के व्यवसाय में हाट आयें वरना ऐसी हालत में मुकुमार मित्तिर तो घोर विपत्ति में फँस जायेगा।"

"आज माँ नहीं आ सकीं। मुझे ही भेजा है।" मुकुमार को शकुन्तला की आवाज सुनायी पड़ी।

"आइये। बाबूजी कैसे हैं?" मुकुमार अपराधी की तरह पूछता है। मुकुमार को भय हो रहा था कि कहीं शकुन्तला इस बात को जान न जाये कि थोड़ी ही देर पहले वह बाबू जी के बारे में क्या सोच रहा था।

शकुन्तला का चेहरा शरतऋतु की भोर की तरह चमक रहा था। बाबूजी की बीमारी के बारे में वह अवश्य ही चिन्तित थी लेकिन निराश नहीं थी। डॉक्टर ने अब तक कुछ नहीं बताया, मुकुमार बाबू।"

"आप कैसे हैं?" शकुन्तला सवाल करती है। यह मात्र औपचारिकता नहीं थी, शकुन्तला सचमुच ही जानना चाहती है कि मुकुमार कैसा है।

मुकुमार चकित था, "*हम लोगों का अच्छा रहना और न रहना एक-सा है!*"

"हम लोगों के यहाँ रहना आपको शायद अच्छा नहीं लग रहा है। माँ कह रही थी, एक नाबालिग अबला की जायदाद और व्यवसाय-वाणिज्य को

देख-रेख करना बहुत झंझट का काम है। बहुतेरे आदमी इसकी जिम्मेदारी लेना पसन्द नहीं करते।"

"यह बिलकुल वाहियात बात है शकुन्तला। मुझे जो यह काम मिल गया है, यह मेरे लिए कितने भाग्य की बात है।"

शकुन्तला की हँसी में एक निष्पाप किशोरी अब भी झाँक रही थी।

अपने बारे में अधिक कहना ठीक नहीं होता इसीलिए सुकुमार ने कहा, "आप ही अपना हाल-चाल बताइये। मेरी तीव्र इच्छा है कि कुछ ही महीनों के दरमियान इस व्यवसाय को बढ़ा-चढ़ाकर आपकी मां को हैरत में डाल दूं।"

शकुन्तला हँस पड़ी। उसके दांत कितने सफेद और चमकीले थे! शकुन्तला की देह का रंग हल्का सांवला होने के कारण उसकी सुन्दरता में जैसे वृद्धि हो गयी थी। वह हँसती तो लगता जैसे अन्दर बिजली की रोशनी जल उठी हो।

शकुन्तला बोली, "मैं बिलकुल ठीक हूं सुकुमार बाबू मां का मन बेशक कल से खराब है और वह चुपचाप पड़ी हैं।"

शकुन्तला ने इसके कारण पर किसी भी हालत में प्रकाश नहीं डाला। संकोचवश सुकुमार ने भी अधिक दबाव नहीं डाला।

उसी दिन शकुन्तला के घर पर मां के पास जाने पर सुकुमार को इस बात की जानकारी प्राप्त हुई थी। कुछ दिनों से शकुन्तला की शादी की बातचीत चल रही थी। बातचीत का सिलसिला बहुत आगे बढ़ चुका था, लेकिन कल एकाएक शादी का रिश्ता टूट जाने की खबर मिली थी।

मां बोली, "उसके पिता जी की इस बीमारी के अलावा हमारा कोई ऐसा अपराध नहीं है।"

सुकुमार ने गौर किया, शकुन्तला उसके लिए चाय और नाश्ता ले आयी थी। उसके चेहरे पर कहीं भी निराशा की घटा नहीं छायी थी।

इस घोष परिवार के प्रति सुकुमार की ममता आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ती जा रही थी। इन लोगों के लिए बहुत कुछ करने की इच्छा सुकुमार के मन में तड़प रही थी। लेकिन सुकुमार को अपनी जिम्मेदारी का कोई ओर-छोर नजर नहीं आ रहा था।

●

"कणा, कणा!" सुकुमार इसी नाम को बार-बार बुदबुदा रहा था।

कणा के बारे में सोचते ही सुकुमार का दिमाग गड़बड़ाने लगता है।

सुकुमार को कणा के संबंध में सब कुछ भूलकर काम में मशगूल हो जाने की इच्छा थी। किन्तु शकुन्तला की माँ ने सब कुछ गड़बड़ कर दिया। अचानक पूछ बैठी, "अभी कहाँ रह रहे हो?"

"हावड़ा।"

शकुन्तला की माँ बोली, "मैंने सुना था, साउथ कलकत्ते में कहीं रहते हो।"

सुकुमार हँसने लगा। "साउथ कैलकटा की दौड़ बालीगंज या ज्यादा से ज्यादा जोधपुर पार्क तक है। उसके बाद साउथ कैलकटा नहीं है—सिर्फ कॉलोनी। यादवपुर में मेरे सगे-संबंधी····"

"घर पर कौन-कौन हैं?"

एक मामूली-सा सवाल, मगर सुकुमार के सामने जैसे टाइम बम फेंक दिया गया हो, जो मानो सुकुमार के उत्तर देते ही फट जायेगा। सुकुमार क्या उत्तर दे, उसकी समझ में नहीं आ रहा था।

शकुन्तला निकट ही खड़ी थी। उसने सुकुमार की दुविधा का दूसरा ही अर्थ लगा लिया। अभिमान के साथ उसने माँ को संयत करने की कोशिश की। "व्यक्तिगत मामले में सवाल क्यों कर रही हो माँ? सभी सवालों का वह तुम्हें उत्तर क्यों देने जायेंगे?"

"नहीं-नहीं, मैंने किसी दूसरे मकसद से नहीं पूछा था। औरतों का स्वभाव ही ऐसा होता है—हमेशा घर के बारे में पूछताछ करना।"

सुकुमार को उत्तर नहीं देना पड़ा। इसके बाद शकुन्तला और उसकी माँ दुकान में चली गयी थीं।

वे और कुछ देर तक रहतीं तो सुकुमार क्या उत्तर देता? रोजी रोटी देने वालों के सामने झूठ बोलना अक्षम्य अपराध है। लेकिन सुकुमार जबान खोल-कर कैसे कहेगा, "मेरे पिता, माँ, भाई-बहिन सभी हैं। वे लोग यादवपुर में रहते हैं। और मैं घर से भागकर, बहिन को अपने साथ लिए, पति-पत्नी की हैसियत से हावड़ा में रह रहा हूँ।"

दुनियावाले क्या इस उत्तर से सन्तुष्ट होंगे?

हावड़ा के घर में चुपचाप बैठी हुई कणा की तसवीर एक तो यों ही सुकु-मार की आँखों के सामने तैर रही थी। चेहरा कितना उदास था, एक तिपाई पर कणा किस तरह बैठी थी! उसकी अनभ्यस्त माँग में चटख लाल सिन्दूर दमक रहा था।

बेचारी कणा ! आक्रोश में न आकर, सुकुमार कणा के दुख को महसूस करने की कोशिश कर रहा है। कणा सिर्फ अपना घर खोकर नहीं आयी है, साथ-ही-साथ अपने नाम को भी उसने तिलांजलि दे दी है। कहीं गलती न हो जाये, इसलिए एकांत में सुकुमार को बार-बार दुहराना पड़ा है—शिउली, शिउली। लेकिन मन को किसी तरह सन्तोष नहीं मिल रहा है। कहाँ कणा और कहाँ शिउली !

जो कणा दफ्तर के लिए निकलने के पहले एक घण्टे तक साज-सिंगार करती थी, वही कणा इस अज्ञात वास में कैसी हो गयी थी—देह में जरा भी पाउडर नहीं लगाती। पहले दिन चेहरा तेल से चमक रहा था, लेकिन धीरे-धीरे वह भी बुझ गया था।

कणा का प्रसाधनहीन चेहरा अब सुकुमार के मन की आँखों के सामने रफ्ता-रफ्ता विवर्ण और पाण्डुर होने लगा।

सुकुमार राजपथ पर चला आया था। लेकिन हृदय में अंकित कणा की इस तस्वीर ने उसे बेचैन बना रखा था।

"कणा ! तू इस तरह मत रहा कर। तेरे चेहरे का रक्त कहाँ गायब होता जा रहा है ? मैंने तुझे जो वचन दिया था उसका अक्षरशः पालन करता आ रहा हूँ।" सुकुमार सड़क पर खड़ा होकर मन ही मन कणा से बातचीत करने लगता था।

"कणा, नींद की बेहोशी में तू दुःस्वप्न के नाटक का अभिनय कर रही है। तू इतनी तकलीफ उठाकर मानसिक चिकित्सालय से स्वस्थ हालत में मुझे वापस ले आयी। कहाँ तो कुछ महीनों तक तुझे मेरे बारे में सोचना चाहिए था, उसकी जगह आधी रात में जगने पर मैंने देखा, तू मौत के नशे में चूर थी। मैं तुझे मृत्यु के हाथ से छीनकर ले आया हूँ। तू मेरी लाड़ली बहिन है, तुझे मैं कितना प्यार करता हूँ ! तुझे मैं मरने नहीं दूँगा, कणा।

"कणा तूने कहा : 'जिन्दा रहने के बजाय मरना ही अच्छा है, भैया।' बिलकुल वाहियात बात ! ऐसा भी कहीं होता है ? जिन्दा रहने की तुलना में मरना कभी अच्छा नहीं हो सकता।

"कणा, तू संभवतः मौत के मुँह से छिटककर आयी और अपना चेहरा छिपाने में व्यस्त हो गयी। तूने कहा : भैया, मुझे लेकर जल्दी भाग चलो। मैं रहूँगी तो माँ-बाप के चेहरे पर कालिख लग जायेगी।

"दरिद्र गृहस्थ के मुँह में क्या हर रोज सन्देश-रसगुल्ला गिरता है ? कालिख कितनी तकलीफ देगी ? अगर तूने मेरी बात नहीं मानी। कहा : वक्त जल्दी-

जल्दी गुजरता जा रहा है, मुझे तुरन्त धन देना है वरना छोटी बहिन का सर्वनाश हो जायेगा।

"मैं यथासाध्य कोशिश कर तुझे हटाकर ले आया। ऐसी जगह में ले आया हूँ, जहाँ यादवपुर के मित्तिरों की जान-पहचान का कोई भी नहीं है। ईश्वर ने यह एक बहुत बड़ा उपकार किया है। दशरथ मित्तिर को दर्जनों सगे-संबंधी नहीं दिये हैं। वरना कितनी बड़ी मुसीबत का सामना करना पड़ता।

"कणा, तेरा चेहरा एकदम बुझता जा रहा है। हर आदमी के दिल में बिजली का जो लैंप जलता है, वही तेरे दिल में आहिस्ता-आहिस्ता बुझता जा रहा है।

"कणा, यह सब क्या हो रहा है? तुझे अभी किस बात की चिन्ता है? तेरी मांग मे सिन्दूर की छाप अंकित है, अभी तेरे मुँह पर कोई कलक की कालिमा नहीं लगा सकता।

"कणा, तू सचमुच ही बच्ची है। इतनी यातना के बीच भी तू भैया के बारे में सोचती है। तूने आज कहा : तुम्हें कितनी मुसीबत में डाल दिया! भैया, मुझे जिन्दा रखने की तुमने व्यर्थ ही चेष्टा की।

"तेरी बात सुनकर मुझे हँसी आ गयी। जैसे जीवन का भी कोई 'कॉस्ट बेनिफिट रेशिओ' हो कि एक विशेष पॉएंट आने पर जिन्दा रहने से कोई लाभ नहीं रहेगा।"

सड़क पर खड़े होकर सुकुमार ने अपना सिर पोंछ लिया। अब कहाँ जाये। कणा के बारे में वह क्या करे?

सुकुमार घबराना नहीं चाहता। अभी घबराने की कौन-सी बात है? विपत्ति की पराकाष्ठा के समय बेचैन न होकर सोच-विचार कर अगला कदम रखना चाहिए। सुकुमार ने कणा को यही संकेत दिया था। लेकिन वह तो क्रमशः बेहद अधीर ही होती चली गयी थी।

सुकुमार असहायता का अनुभव कर रहा था। उम्र बढ़ते ही परीक्षा और नौकरी की चिन्ता में ही समय बीत गया। मानव-देह और उसकी सृष्टि के जटिल रहस्य के सम्बन्ध में विस्तार के साथ ज्ञान-संग्रह करने का सुयोग और समय ही उसे नहीं मिला। इन मामलों को भय से अनदेखा कर ही वह चलता रहा। लेकिन घटनाक्रम के कारण उसे किस अजीब परिस्थितियों में पड़ना पड़ा है! राम जाने यह नाव किस घाट लगेगी।

देह ! कणा की देह इन्हीं कुछ दिनों के दरमियान मानो सूख गयी थी लेकिन इस देह के रहस्य के संबंध में सुकुमार को कोई ज्ञान ही नहीं था। कणा को भी निश्चय ही यही स्थिति थी। वरना इस तरह की परिस्थिति पैदा ही क्यों होती ? कणा, तू भले ही सर्वज्ञ की तरह ताकती है लेकिन सुकुमार मित्तिर को पता है कि तू कुछ भी नहीं जानती।

सुकुमार कहाँ से शुरुआत करे ? कहाँ जाये ? अनभिज्ञ सुकुमार को इन बातों की सूचना प्राप्त करने में वक्त लग रहा था। मगर बेसमझ कणा उसे वक्त नहीं देना चाहती। उससे और देरी बरदाश्त नहीं हो रही।

सुकुमार को खोजने पर भी कोई रास्ता नहीं मिल रहा था। कब तक इस तरह वह सड़क पर खड़ा रहे ? सुकुमार हावड़ा की बस पर सवार हो गया।

•

कल भी कणा रो रही थी। वह जबान खोलकर भैया से कोई सवाल नहीं कर पाती। केवल भैया के चेहरे की ओर अस्वाभाविक दृष्टि से ताकती रहती है।

जब तक घर का दरवाजा खुला रहता है, तब तक इसी तरह की हालत रहती है। इस घर की मालकिन बड़ी ही स्नेहमयी है। कणा से गपशप करने आयी थी। सुकुमार के लिए दरवाजा खोलती हुई बोली, "आओ बेटा ! इतनी देर क्यों हो गई ? बहू चिन्ता के मारे परेशान है।"

"काम था, मासी जी।" सुकुमार उत्तर देता है।

"काम भी करना है और बहू को भी सँभालना है। इसका नाम ही कलि-युग है।" बूढ़ी मासी जी अपने मजाक से खुद ही प्रसन्न हो उठती हैं।

सुकुमार ज्यों ही चलना शुरू करता है, मासी जी पुकारने लगती हैं, "ए शिउली, तुम्हारा पति आ गया। गरम पानी की जरूरत हो तो कहना, मेरे चूल्हे में अभी तक आँच है। जाते ही भेज दूँगी।"

मासी जी अड्डा जमाकर बैठ गयीं। बोली, "पहले समझ नहीं सकी थी। अब देख रही हूँ, तुम्हीं लोगों का जमाना अच्छा है, बेटा—पति-पत्नी के बीच सखी-सखा का भाव है। हम लोगों के जमाने में पति देवता होते थे। शिउली की ही बात लो, नाम लेकर कह रही है, सुकुमार अभी तक क्यों नहीं आया, तो सुनने में बुरा नहीं बल्कि मीठा ही लगता है। तब हाँ बेटा, बाहर के आदमी के सामने एक दूसरे को तू कहकर मत पुकारना। आजकल एक ही साथ कॉलेज

में पढ़े बहुत से पति-पत्नी एक-दूसरे को तू कहकर पुकारते हैं। इससे अमंगल होता है।"

कणा बाहरी आदमी के सामने बहुत अच्छा अभिनय करती है। मासी जो कहती हैं, "हम लोगो के वक्त भी तू कहने का रिवाज न था, ऐसी बात नहीं; हाँ, इसका प्रचलन छोटे तबके के लोगों के बीच ही था।"

खाना-पीना खत्म होने के बाद एक दूसरी ही परिस्थिति खड़ी हो गयी। एक ही सेट है, एक ही दर्शक की श्रेणी, एक ही दृश्य—लेकिन पात्रों ने एक ही क्षण के दौरान दूसरी भूमिका स्वीकार कर ली।

कणा फटी-फटी आँखों से सुकुमार की ओर ताक रही थी। जब तक रोशनी जलती रहती है, वह कुछ भी नहीं बोलती।

रोशनी बुझने के बाद कमरे के कोने से सुकुमार महसूस करता है कि उसकी बहिन रुलाई का वेग रोकने की कोशिश कर रही है। रुलाई अन्ततः थम जाती है लेकिन कणा कुछ बोलती नहीं। कुछ और वक्त जब गुजर जाता है, गहरे अँधेरे को चीरकर एक आवाज ऊपर उठकर नरम पशमीने के गोले की तरह सुकुमार के कान के पास पछाड़ खाने लगती है—"भैया।"

भैया! भैया!—भैया होने की जिम्मेदारी इस तरह की भी होती है, यह बात दुनिया में किसे मालूम थी?

नारी-शरीर की संभावना और संकट के बारे में सारी बातें सुकुमार को मालूम रहती तो इस वक्त कितनी सहूलियत होती?

कणा जबान से कुछ नहीं कहती है। वह पूरी तरह भैया पर ही निर्भर है सवेरे के समय कितनी शान्त लग रही थी।

सुकुमार अब क्या करे, उसकी समझ में कुछ नहीं आता।

मन की इस दुश्चिन्ता को दबाकर सुकुमार दिन-भर जानवर की तरह खटता रहा है। एसप्लेनेड मुहल्ले की सारी दूकानों में जब तक वह कोयले की बिक्री नहीं कर लेता तब तक उसके मन में शान्ति नहीं आती। अनजाने लोगों से कह-सुन कर माल बेचने के नशे में जितनी देर तक चूर रह सके, उतना ही अच्छा।

कोयले की दुनिया से बाहर निकलते ही मन जैसे उदास हो जाता है।

पों-पों-पों ! परिचित हॉर्न की आवाज सुनकर सुकुमार की चेतना वापस आयी ।

"अरे, आप हैं सर, गुड आफ्टर नून !" पंचानन कर्मकार ने सुकुमार को गाड़ी के अन्दर बिठा लिया ।

"लीजिए, "पंचानन ने एक बढ़िया किस्म की सिगरेट बढ़ा दी । पीजिए सर, मेरे जले मुँह में भी आग दीजिये । आज बढ़िया बिजनेस हुआ है ।"

पंचानन की गाड़ी लाल सिग्नल के सामने खड़ी हो गयी । "इन साले सिग-नलों को जंजीर के साथ उखाड़ दिया जाता तो कलकत्ता सोने का शहर हो जाता ।" पंचानन ने दांत पीसते हुए कहा ।

हरी बत्ती जलने के पहले ही पंचानन का टेम्पो गतिमान हो उठा । "सवेरे एक आदमी का मुँह देखकर मन ही मन प्रतिज्ञा की थी कि आज दूना पैसा कमाऊँगा । सो सर, झूठ क्यों कहूँ, मेरी मिसेज इतनी भाग्यशालिनी है कि तीसरे पहर, पाँच बजने के पहले ही, प्रतिज्ञा पूरी हो गई ।"

पंचानन ने कहा, "सवेरे सुहागरात की दावत थी । पलंग पहुँचाने पर सिर्फ किराया ही नहीं दिया, एक हांड़ी मिठाई भी दी । मिसेज के लिए ले जाऊँ, इसका उपाय नहीं । भले घर की लड़की है न, भेंट की हुई मिठाई वगैरह मुंह में नहीं डालेगी, प्रेस्टिज में धक्का जो लगता है । आखिरकार खुद ही खा लिया । समय बहुत ही अच्छा चल रहा है, यह बात टालीगंज के बांगुर अस्पताल के सामने आने पर समझ में आयी । तुरन्त मरे आदमी की लाश बेलधरिया ले जानी थी । साठ रुपये की मांग कर बैठा, आखिर में पचास पर बात तय हुई । ट्रैफिक का पांच रुपया पार्टी ने ही दिया ।

"वापसी के वक्त डनलप ब्रिज पर ईश्वर की मेहरबानी के कन्डक्टर और पैसेंजर में जोरों की हाथापाई हो गई । बस ने स्ट्राइक कर दिया । दस आदमी को बिठाकर स्यालदह पहुंचा आया । वहां से दो खेप मुसम्मी का ट्रैफिक लिया । एक अदद मुसम्मी खाइएगा ? कुछेक मुसम्मियां रख ली हैं । बड़ी ही मीठी हैं ।"

सड़क के किनारे एक आदमी ने टेम्पो को हाथ दिखाया । "जाना नहीं है", गरदन बढ़ाकर पंचानन ने सूचित किया ।

"मजाक कर रहे हो ? किराये की गाड़ी नहीं जायेगी, इसका मतलब ?" आदमी गुस्से में आ गया ।

पंचानन ने परवाह ही नहीं की । गुस्से में आकर बोला, "किराये की गाड़ी

क्या किराये की वेश्या है ? हाथ दिखाते ही किराये पर खटना होगा ? हम लोगों को क्या घर-गृहस्थी नहीं है ?

पंचानन ने सुकुमार से कहा, "आप घबराइये नहीं सर, आज जल्द ही घर लौटूंगा।"

पंचानन ने एक दवा की दूकान के सामने टेम्पो खड़ा किया। एक मिनट में आया, यह कहकर पॉकेट से प्रेसक्रिप्शन निकालते हुए वह एक दूकान की ओर भागा-भागा चला गया।

सुकुमार ने गौर किया, पंचानन की सीट के पास अखबार मढ़ी एक पुस्तक रखी हुई थी।

दवा का पैकेट हाथ में लेकर आते ही पंचानन मस्ती में आ गया। "तो आपकी निगाह पड़ ही गई ! 'सचित्र दाम्पत्य विज्ञान' है। इसमें शर्म की कौन-सी बात है ? घर ले जाइये और मन लगाकर पढ़िये। मिसेज के साथ डिस्कशन कीजिये।"

पंचानन ने गाड़ी स्टार्ट की। उसके बाद बोला, "शादी के बाद ही खरीद लिया था, सर। हजारों तरह के झमेलों की वजह से इतने दिनों तक पढ़ नहीं सका था, बीबी की पिटारी में पड़ी थी। आज सबेरे बात ध्यान में आयी, साथ लेता आया। चिड़ियाखाने के सामने दो घंटे तक 'वेट' करना पड़ा तो इसे पढ़ लिया।"

पंचानन ने कहा, "एक खुशखबरी की बात है। आपसे नहीं छिपाऊँगा।"

"इसके अलावा छिपाने की बात है ही क्या ?" पंचानन ने रास्ता पार किया।

सुकुमार को अब भी बात साफ-साफ समझ में नहीं आ रही थी।

पंचानन ने कहा, "कल सबेरे गाड़ी में बैठने के समय आपने भरसक गौर किया होगा। पैर के पास कागज में मुड़ी हुई एक बोतल थी, आपको छूने से मना किया था। उसमें डॉक्टरी जाँच के लिये यूरिन था, शर्म की वजह से आपको बताया नहीं था। आजकल की डॉक्टरी जाँच कितनी आश्चर्यजनक है ! मिसेज को फाइनल खुशखबरी की सूचना आज बता दी है।

"कई महीनों तक खूब सावधानी से रहना होगा, उसके बाद ही सुख हासिल होगा, "पंचानन ने खुशखबरी के अनुसार स्वयं को तैयार कर लिया था।

"दवा-दारू में खर्च करना होगा। अच्छा भोजन और अच्छी-अच्छी दवा देनी है। अभी वही चीज खरीदी है जिसके बारे में डॉक्टर ने कहा था। देखिये, शीशी कितनी खूबसूरत है।"

पों-पों-पों ! परिचित हॉर्न की आवाज सुनकर सुकुमार की चेतना वापस आयी।

"अरे, आप हैं सर, गुड आफ्टर नून !" पंचानन कर्मकार ने सुकुमार को गाड़ी के अन्दर बिठा लिया।

"लीजिए, "पंचानन ने एक बढ़िया किस्म की सिगरेट बढ़ा दी। पीजिए सर, मेरे जले मुंह में भी आग दीजिये। आज बढ़िया बिजनेस हुआ है।"

पंचानन की गाड़ी लाल सिग्नल के सामने खड़ी हो गयी। "इन साले सिगनलों को जंजीर के साथ उखाड़ दिया जाता तो कलकत्ता सोने का शहर हो जाता।" पंचानन ने दांत पीसते हुए कहा।

हरी बत्ती जलने के पहले ही पंचानन का टेम्पो गतिमान हो उठा। "सवेरे एक आदमी का मुंह देखकर मन ही मन प्रतिज्ञा की थी कि आज दूना पैसा कमाऊंगा। सो सर, झूठ क्यों कहूं, मेरी मिसेज इतनी भाग्यशालिनी है कि तीसरे पहर, पांच बजने के पहले ही, प्रतिज्ञा पूरी हो गई।"

पंचानन ने कहा, "सवेरे सुहागरात की दावत थी। पलंग पहुंचाने पर सिर्फ किराया ही नहीं दिया, एक हांड़ी मिठाई भी दी। मिसेज के लिए ले जाऊं, इसका उपाय नहीं। भले घर की लड़की है न, भेंट की हुई मिठाई वगैरह मुंह में नहीं डालेगी, प्रेस्टिज में धक्का जो लगता है। आखिरकार खुद ही खा लिया। समय बहुत ही अच्छा चल रहा है, यह बात टालीगंज के बांगुर अस्पताल के सामने आने पर समझ में आयी। तुरन्त मरे आदमी की लाश बेलघरिया ले जानी थी। साठ रुपये की मांग कर बैठा, आखिर में पचास पर बात तय हुई। ट्रैफिक का पांच रुपया पार्टी ने ही दिया।

"वापसी के वक्त डनलप ब्रिज पर ईश्वर की मेहरबानी के कन्डक्टर और पैसेंजर में जोरों की हाथापाई हो गई। बस ने स्ट्राइक कर दिया। दस आदमी को बिठाकर स्यालदह पहुंचा आया। वहां से दो खेप मुसम्मी का ट्रैफिक लिया। एक अदद मुसम्मी खाइएगा ? कुछेक मुसम्मियां रख ली हैं। बड़ी ही मीठी हैं।"

सड़क के किनारे एक आदमी ने टेम्पो को हाथ दिखाया। "जाना नहीं है", गरदन बढ़ाकर पंचानन ने सूचित किया।

"मजाक कर रहे हो ? किराये की गाड़ी नहीं जायेगी, इसका मतलब ?" आदमी गुस्से में आ गया।

पंचानन ने परवाह ही नहीं की। गुस्से में आकर बोला, "किराये की गाड़ी

क्या किराये की वेश्या है ? हाथ दिखाते ही किराये पर खटना होगा ? हम लोगों को क्या घर-गृहस्थी नहीं है ?

पचानन ने सुकुमार से कहा, "आप घबराइये नहीं सर, आज जल्द ही घर लौटूंगा।"

पंचानन ने एक दवा की दूकान के सामने टेम्पो खड़ा किया। एक मिनट में आया, यह कहकर पॉकेट से प्रेसक्रिप्शन निकालते हुए वह एक दूकान की ओर भागा-भागा चला गया।

सुकुमार ने गौर किया, पंचानन की सीट के पास अखबार मढ़ी एक पुस्तक रखी हुई थी।

दवा का पैकेट हाथ में लेकर आते ही पंचानन मस्ती में आ गया। "तो आपकी निगाह पड़ ही गई ! 'सचित्र दाम्पत्य विज्ञान' है। इसमें शर्म की कौन-सी बात है ? घर ले जाइये और मन लगाकर पढ़िये। मिसेज के साथ डिस्कशन कीजिये।"

पंचानन ने गाड़ी स्टार्ट की। उसके बाद बोला, "शादी के बाद ही खरीद लिया था, सर। हजारों तरह के झमेलों की वजह से इतने दिनों तक पढ़ नहीं सका था, बीबी की पिटारी में पड़ी थी। आज सबेरे बात ध्यान में आयी, साथ लेता आया। चिड़ियाखाने के सामने दो घंटे तक 'वेट' करना पड़ा तो इसे पढ़ लिया।"

पंचानन ने कहा, "एक खुशखबरी की बात है। आपसे नहीं छिपाऊंगा।"

"इसके अलावा छिपाने की बात है ही क्या ?" पचानन ने रास्ता पार किया।

सुकुमार को अब भी बात साफ-साफ समझ में नहीं आ रही थी।

पंचानन ने कहा, "कल सबेरे गाड़ी में बैठने के समय आपने भरसक गौर किया होगा। पैर के पास कागज में मुड़ी हुई एक बोतल थी, आपको छूने से मना किया था। उसमें डॉक्टरी जाँच के लिये यूरिन था, शर्म की वजह से आपको बताया नहीं था। आजकल की डॉक्टरी जाँच कितनी आश्चर्यजनक है ! मिसेज को फाइनल खुशखबरी की सूचना आज बता दी है।

"कई महीनों तक खूब सावधानी से रहना होगा, उसके बाद ही सुख हासिल होगा, "पंचानन ने खुशखबरी के अनुसार स्वयं को तैयार कर लिया था।

"दवा-दारू में खर्च करना होगा। अच्छा भोजन और अच्छी-अच्छी देती है। अभी वही चीज खरीदी है जिसके बारे में डॉक्टर ने कहा था। देखि चीजें कितनी खूबसूरत है।"

सुकुमार यह सब देखना नहीं चाहता। लेकिन उत्साही पंचानन ने पैकेट एक ही हाथ से खोल डाला। मेरे दिमाग में बात आ ही नहीं रही थी, दूकानदार न बताता तो किसी भी हालत में दिमाग में नहीं आती। अब इस दवा की शीशी से हर रोज टिकिया लेनी है। उसके बाद जब टैबलेट खत्म हो जायेगा तो शीशी बेबी फिडिंग बॉटल हो जायेगी। बेबी का शुभागमन होगा तो बोतल खरीदने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

"कंपनी का दिमाग तेज है।" मित्र को शीशी बगैर दिखाये पंचानन रह नहीं सका।

सुकुमार संध्या बाजार के मोड़ पर उतर पड़ा। पंचानन ने चिल्ला कर कहा, "और किताब? इसे लेते जाइये न।"

इच्छा नहीं थी। लेकिन पंचानन ने सुकुमार के हाथ में जबरन ही पुस्तक थमा दी। सुकुमार का जिस्म अब शिथिल पड़ता जा रहा था।

सुकुमार चहल-कदमी कर रहा था। आज उसे वेतन का पैसा मिला था। एकाएक उसे याद आया, बहुत दिन पहले सुकुमार ने तय किया था कि पहले महीने की तनख्वाह मिलते ही वह कणा के लिए एक साड़ी खरीदेगा। लेकिन अभी पैसे की सख्त जरूरत है।

सुकुमार ने देखा, वसु फार्मेसी की नियोन बत्तियाँ अब भी झलमला रही थीं हालाँकि काउन्टर पर कोई ग्राहक नहीं था।

०

"हे देवता, सुकुमार मित्र अब बरदाश्त नहीं कर पा रहा है। सारा मामला धीरे-धीरे उलझता जा रहा है।'

पिछली रात सुकुमार के घर लौटने पर कणा ने फिर अपने भैया की ओर चुपचाप निहारा था। आत्महत्या के फांसी के फन्दे से लौटने के बाद से कणा बहुत ही कम बोला करती थी—कहा जा सकता है कि जबान ही नहीं खोलती। लेकिन इससे सुकुमार को अधिक असुविधा का सामना नहीं करना पड़ता था। कणा का चेहरा देखते ही सुकुमार समझ जाता है कि वह क्या जानना चाहती है।

आज भी कणा ने निश्चय ही किसी खबर की उम्मीद में भैया की ओर

बड़ी-बड़ी आँखों से ताका था। लेकिन सुकुमार के द्वारा खरीदे गये पैकेट को खोलते ही वह उदास हो गयी।

"कणा, मैं यह दवा ले आया हूँ। इस समय पियेगी तो तेरी सेहत अच्छी रहेगी। विटामिन, आइरन, कैलसियम वगैरह इसमें दिया गया है।"

दवा की शीशी की खास आकृति ने भी, संभवतः कणा का ध्यान अपनी ओर खींचा। सुकुमार खुद भी समझ रहा था कि यह बेबी फिडिंग बॉटल है।

"भैया!" कणा ने मात्र इसी एक शब्द का उच्चारण किया।

सुकुमार के मन में निःशब्द टेप रेकार्डर चालू हो गया। "कणा, मैं तेरे मन की बात समझ रहा हूँ। तू कह रही है, भैया, तेरे अन्दर घबराहट का कोई लक्षण नहीं देख रही हूँ। इसके विपरीत तुम अनागत शिशु का स्वास्थ्य सुधारने की दवा ले आये हो?"

सुकुमार गौर कर रहा था, कणा कमल के फूलों की तरह आँखों को विकसित कर भैया की ओर ताक रही थी।

कितने आश्चर्य की बात थी! कणा ने एक शब्द भी नहीं कहा, यहाँ तक कि उसके होंठ भी नहीं थरथराये, मगर सुकुमार की समझ में सारी बात आ गयी।

अन्दर के टेप रेकार्डर से सुकुमार को सुनायी पड़ा, कणा दयनीय स्वर में पूछ रही है, "भैया, तुम्हें और मुझे जल्दी ही यादवपुर लौट जाना है। घर के लिए मुझे बेहद चिन्ता हो रही है। मेरी मुक्ति के लिए तुमने कौन-सा काम किया?"

"तेरी तमाम मुसीबत दूर हो जाये, इसके लिए मैं इन्तजाम करूँगा। मुझे और थोड़ा वक्त दे, कणा।" सुकुमार की आवाज से भी दयनीयता टपक रही थी।

कणा का दर्दाहत भरा चेहरा कह रहा था, समय बहुत ही कम है। देर हो रही है।

सुकुमार रात-भर लेटे-लेटे सोचता रहा। एक तो यों भी उसे नींद नहीं आती, उस पर इस तरह की चिन्ता रहने से फिर कहना ही क्या!

हो सकता कणा पैसे के बारे में सोच रही हो। कणा रुपये-पैसे के बारे में पहले भी बहुत कुछ सोच चुकी थी, अब कुछ दिनों तक नहीं सोचे तो ही ठीक है।

"कणा, मैंने एक काम चलाऊ नौकरी का इन्तजाम कर लिया है। नौकरी और कुछ दिनों तक बरकरार रहेगी। कणा, तू इतनी अधीर क्यों हो जाती है?' —

तू जहाँ काम करती है वहाँ कोई सूचना भेजनी है ? अगर तेरी मर्जी हो तो मैं कह आऊँ। तू सख्त बीमार है। काम पर जाने में कई महीनों की देर होगी।"

कणा ने कोई उत्साह नहीं दिखाया। सिर्फ दयनीय स्वर में पूछा, "मैं इस झमेले से निकल नहीं पाऊँगी, भैया ?"

"जरूर निकलोगी।" भरोसा देकर भैया सवेरे ही घर से निकल पड़ा था। कणा जैसी लड़की को झमेले से छुटकारा न मिले, ऐसा कहीं हो सकता है ? छुटकारा क्यों नहीं मिलेगा ? कणा ने दुनिया के किसी भी आदमी का कुछ बिगाड़ा नहीं है। सिर्फ""

कोयले की दुकान के काम से जब-जब फुर्सत मिलती, सुकुमार केवल कणा के बारे में सोचता रहता।

निष्ठावान, सच्चरित्र, गृहस्थ दशरथ मित्र की पुत्री कणा मित्र, सुकुमार मित्र की बहिन कणा, गर्भवती है। सुकुमार कणा को पहचानता है। वह कोई दोष नहीं कर सकती। कहीं किसी मामले में बेचारी कणा संभवतः क्षण-भर की कोई गलती कर बैठी है। हो सकता है किसी ने कणा को प्रेम के भुलावे में रख कर धोखा दिया हो।

सुकुमार ने इन मामलों पर उतना सोचा-विचारा नहीं है। लेकिन अब उसे सोचना ही पड़ता है और सोचने पर उसका पूरा शरीर सिहर उठता है। दुनिया में इतनी-इतनी लड़कियों के रहने के बावजूद कणा ही गर्भवती हो गयी !

इस दुनिया के बारे में उत्सुकता दिखाने के लिए मित्र घर में कभी किसी के साथ कोई बात नहीं थी। कमा कर लाने और खाने की समस्या में ही सभी गोते लगा रहे थे। लेकिन अचानक अनजानी अनपहचानी एक मुसीबत छिपे हुए जल्लाद की तरह सुकुमार की आंखों के सामने आकर खड़ी हो गयी।

सुकुमार को याद आ रहा था, कहीं उसने पढ़ा था कि इन मामलों में मातृत्व शब्द अपनी अर्थवत्ता खो देता है। यह संभावना नहीं, आने वाली मुसीबत का परवाना है। यह किसी इच्छा की परिणिति नहीं, कलंक की यादगार है।

"सुकुमार मित्तिर सुनो, इन मामलों में बंगाल में एक ही बात कहने का रिवाज है और वह यह कि तुम्हारी अविवाहिता बहिन प्रेग्नेन्ट है।"

क्रोध के अतिरेक से सुकुमार व्याकुल हो उठा। ये शब्द किसी दूसरे ने कहे होते तो सुकुमार अब तक उसके सामने के दांतों को मुक्का मारकर तोड़ चुका होता।

लेकिन, उसके अन्दर के उस अदृश्य आदमी को न तो छुआ जा सकता है और न ही पकड़ा जा सकता है। वह कह रहा है, "मेस-मेस। तुम्हारी बहिन रहने से किसी ने उसका दिमाग खरीद नही लिया था। तुम्हारी अपनी सगी बहिन, जिसकी कमाई से तुम लोग सुख से जिन्दगी जी रहे थे, जिसकी शादी की कोशिश तुम, तुम्हारे बाबू जी या माँ ने नहीं की, अब प्रेग्नेन्ट है।"

सुकुमार को यह बात बड़ी ही अश्लील जैसी लग रही थी। बदबूदार दवा की तरह उसकी मर्जी के खिलाफ उसके जिस्म के अन्दर प्रवेश कर इस गन्दे शब्द ने सुकुमार को और अधिक बीमार बना दिया था। इस शब्द को अनसुना करने के लिए सुकुमार ने जी-जान से कोशिश की। "कहना है तो कहो मातृत्व, कणा माँ होने वाली है।"

लेकिन 'प्रेग्नेन्ट', शब्द बार-बार सुकुमार के दिमाग के अन्दर चक्कर काटने लगा।

नही। सुकुमार इस गन्दे शब्द को किसी भी हालत में मानने को तैयार नही। कणा सिर्फ एक क्षण के लिए कहीं गलती कर बैठी है। मामूली गलती के लिए बेचारी बहुत ज्यादा कीमत चुकाने को तैयार थी, लेकिन सुकुमार ऐसा करने की स्वीकृति क्यो प्रदान करता? फिर सुकुमार तो उसका बड़ा भाई है? ऐसी हालत मे दुनिया मे भैया होने का कोई अर्थ रह ही नही जाता। सुकुमार बल्कि इस बात का पता लगायेगा कि कणा की इस हालत के लिए जिम्मेदार कौन था? प्रेम के भुलावे में किसने कणा को धोखा दिया है?

सुकुमार को लगता है, इस समस्या का कोई न कोई सहज निदान जरूर है।

सुकुमार कणा का चेहरा अपनी आँखों के सामने देख रहा है। उसके साथ भी एक कठिनाई है। बहिन के सामने बड़े होने पर वह बहुत-सी बात पूछ नही पाता। सुकुमार मर भी जाये तो भी वह सवाल नहीं कर सकता कि कणा किस तरह यो अनब्याही माँ बनने जा रही है।

थोड़ी देर पहले ही शकुन्तला की माँ रुपये-पैसे का हिसाब समझने के लिए आयी थी। मिसेज घोष ने पूछा, "क्यों सुकुमार बाबू, आपकी आँखें लाल क्यों हैं?"

"नही," सुकुमार घबरा गया था। "लगता है धूल पड़ गयी है। कोयले की बुकनी का ही तो कारोबार करना पड़ता है।"

सुकुमार ने एकाएक पूछा, "औरतों के मामले में 'मुक्ति' शब्द का अर्थ क्या है?"

"एक अच्छी-सी शादी हो जाना। मेरी ही बात लो। लड़की की शादी हो जाये तो मैं जिम्मेदारी से मुक्त हो जाऊँ।"

सुकुमार ने कणा से इशारे से पूछा था। "इसके लिए जिम्मेदार कौन है?" लेकिन कणा ने कोई उत्तर नहीं दिया था। वह सिर्फ रोने लगी थी।

लेकिन सुकुमार छोड़ेगा नहीं। इसका कुछ न कुछ निवटारा करके ही दम लेगा। जो आदमी कणा की इस हालत के लिए जिम्मेदार है, सुकुमार उसका पता लगाकर ही छोड़ेगा। सुकुमार एकबार उस आदमी से मिलना चाहता है। आज, कल, परसों......

●

जब-जब सुकुमार को वक्त मिला है, जानी-पहचानी तमाम दुनिया की उसने बारीक से जाँच-पड़ताल की है।

अपने मुहल्ले के सभी युवकों के चेहरों की सुकुमार ने परीक्षा की। लेकिन इनमें से किसी से कणा बातचीत भी नहीं करती थी। वे लोग बल्कि बीच-बीच में कणा की ओर ताकते थे मगर कणा गलती से भी उन लोगों की ओर नहीं ताकती थी।

कणा की शिक्षा-दीक्षा भी को-एजुकेशन कॉलेज में नहीं हुई है। वहाँ भी कणा का कोई पुरुष मित्र नहीं था। कणा की सहेलियों को भी सुकुमार ने नजर अन्दाज नहीं किया। उन लोगों के किसी निकट के सगे-संबंधी से कणा की जान-पहचान हो सकती है।

पसीने से लथपथ अपने माथे को सुकुमार ने पोंछा। "अपराधी का पता लगाना ही है," सुकुमार बेचैन हो उठा था।

"तुम क्या पागल हो गये तो सुकुमार? इस स्थिति के लिए जो आदमी जिम्मेदार है, उसे खोजकर निकालने से तुम्हारा कौन-सा लाभ होगा? इससे तो अच्छा यही है कि तुम कणा की मुक्ति के लिए क्या कर सकते हो, यही बताओ।

सुकुमार को मुक्ति का पथ मालूम नहीं था। लेकिन कुछ मालूम न रहने पर भी कलकत्ता शहर में कोई असुविधा नहीं होती। उस बार पंचानन कर्म-ने कहा था, हर विषय का दलाल होता है। मेटरनिटी अस्पताल के गेट से शुरू कर श्मशान घाट तक, हरेक मामले में कमीशन पर मदद करने के लिए आदमी

मौजूद रहता है। सही दलाल के पास आकर खड़ा होते ही सब कुछ आइने की नाईं स्पष्ट हो जायेगा।

इस संबंध में दलाल कहाँ मिलते हैं, सुकुमार यह बात पचानन से भी पूछ नहीं सका था। और पूछने की जरूरत भी नहीं पड़ी।

इश्तहार की भाषा अद्भुत हुआ करती है। डॉक्टर सदानन्द गुप्त छिपे तौर पर हर तरह का जरूरी इलाज करते हैं। *शीर्षक अजीब तरह का है।* 'प्रतिरोध और मुक्ति—अबलाबंधु सदानन्द गुप्त।'

"मुक्ति!" सुकुमार बहुत कुछ निश्चिन्तता का अनुभव कर रहा था। छिद्रहीन अधिकार में मुक्ति की हल्की-सी प्रकाश-रेखा अब निराशा से भरे प्राणों में आशा का संचार कर रही थी।

सुकुमार ने चलते-चलते देखा, सड़क के हरेक लैंपपोस्ट पर एक ही इश्तहार चिपकाया हुआ था। जहाँ भी दृष्टि जाती थी—प्रतिरोध और मुक्ति के लिए अबलाबंधु सदानन्द गुप्त ने जल्द से जल्द संपर्क स्थापित करने का आह्वान किया है।

सुकुमार अपने मन के अन्दर शक्ति का सचय कर रहा था। अबलाबंधु सदानन्द गुप्त का पता और टेलीफोन नबर सुकुमार मन ही मन याद कर रहा था।

आजकल सुकुमार को अपनी स्मरण-शक्ति पर भरोसा करने का साहस नहीं होता। कागज-पेंसिल निकालकर पता लिख लेना ही युक्ति-संगत है। उस आदमी के कई एक पते दिये हुए हैं। कभी एक पते पर बैठता है और कभी दूसरे पते पर शहर के हर छोर पर उसका बैठना होता है।

खुलेआम दिन की रोशनी में लैंपपोस्ट से पता लिखना! बहुत कोशिश के बाद भी सुकुमार मझोले तबके के लोगों की इस दुविधा से स्वयं को अलग न कर पाया।

लेकिन दूसरे ही क्षण वह चिहुंक उठा। जहाँ शेर का भय रहता है वहीं शाम होती है। सुकुमार को एक बजाज स्कूटर की आवाज सुनायी पड़ रही थी। अरे, सोमनाथ है क्या। हाँ-हाँ, सोमनाथ बैनर्जी ही था।

सुकुमार के मन में हुआ कि वह सोमनाथ को पुकारे। उफ्, कितने दिनों के बाद वह सोमनाथ का चेहरा देख रहा था।

"सोमनाथ!" सुकुमार पुकारने जा ही रहा था पर आखिरी क्षण में उसने अपने को रोक लिया। लगा, सोमनाथ को इस तरह पुकारना शायद अच्छा न होगा।

सुकुमार को याद आया, सोमनाथ को ही चाहिए था कि वह बीमार सुकुमार की खोज-खबर लेता। लेकिन सोमनाथ ने ऐसा नहीं किया है ?

सुकुमार जानता है, बेकार आदमी की देह और मन में तरह-तरह की परेशानियाँ रहती हैं। नौकरी की खोज में पागल की तरह मारे-मारे फिरने के समय सामाजिकता और सौजन्य की बातें अकसर याद ही नहीं रहतीं। मगर अब सोमनाथ कोई बेकार-बेरोजगार आदमी नहीं है। उस दिन सुकुमार ने सुना था, सोमनाथ ने अब व्यवसाय करना शुरू कर दिया है। अपना दफ्तर भी कर लिया है तो ऐसी हालत में जरूर ही दो पैसे कमा लिया होगा। इस दृष्टि से उसे ही चाहिए था कि पुराने मित्र की खोज-खबर लेता।

झकझकाते स्कूटर पर गतिमान सोमनाथ के चेहरे को सुकुमार ने एक बार फिर देख लिया। और देखते ही मित्र से बातचीत करने की इच्छा होने लगी। व्यवसाय में दो पैसा कमाने से आदमी का वजन बढ़ जाता है मगर सोमनाथ मोटा नहीं हुआ था। सोमनाथ ने क्या इस बीच तपती से शादी कर ली है ? जरूर ही कर ली होगी। सिर्फ सुकुमार को ही निमंत्रण-पत्र नहीं भेजा है।

फिर भी सोमनाथ पर सुकुमार को कोई खास गुस्सा नहीं आ रहा था। उसे लगता है, जो मित्र उसे इतना प्यार करता था, वही बीमारी के समय कोई खोज-खबर न ले, ऐसा हो ही नहीं सकता। हो सकता है बाबूजी से पूछताछ की हो, इसीलिए कणा को भी पता नहीं चला और वह अकारण ही सोम से नाराज है।

नहीं, मन में मित्र के प्रति सन्देह का जहर रखना सेहत की दृष्टि से ठीक नहीं होता। सीधे बातचीत करने के खयाल से जब उसने सोमनाथ को पुकारने के लिए सिर उठाया तो उस समय सोम का स्कूटर राजपथ की गाड़ियों की भीड़ मे न जाने कहां खो चुका था।

•

स्कूटर चलाता हुआ सोमनाथ बेनर्जी जोधपुर पार्क के बेनर्जी भवन में लौट आया।

कमला भाभी का ध्यान इस बात की ओर गया कि सोमनाथ का चेहरा गम्भीर है। कमला भाभी ने बहुत दिनों से सोमनाथ के चेहरे पर इस तरह की उदासी का भाव नहीं देखा था।

"क्या हुआ सोमनाथ ?" भाभी बिना पूछे चुप नहीं रह सकीं। मरुभ
व्यवसायी का चेहरा तो इस तरह बुझा हुआ नहीं रहता ?

सोमनाथ ने भाभी के प्रश्न को टालने की कोशिश की।

"बिजनेस में बहुत तरह की फिक्र करनी पड़ती है, भाभी।"

"उहूँ ! कुछ दिनों तक तुम्हें बिजनेस के बारे में सोचते-विचारते देख चुकी हूँ। बिजनेस से तो तुम अभ्यस्त हो चुके हो।"

"बिजनेस से या बिजनेस-कल्चर से ?" सोमनाथ भाभी से ही पूछता है।

"बिजनेस से तुम अभ्यस्त हो गये हो, यही काफी है। बिजनेस-कल्चर में थोड़ा वक्त लगेगा। शायद तुम पूरी मात्रा में उसे प्राप्त भी नहीं कर सकोगे।"

"आप यह कह रही हैं भाभीजी ? मैं प्राप्त नहीं कर पाऊँगा ?"

"तुम मात्र चेष्टा करते रहोगे, उस पर अधिकार प्राप्त करेगा तो वह तुम्हारा लड़का ही करेगा और पूरी तरह कोई अधिकार प्राप्त करेगा तो वह तुम्हारा पोता होगा। सुना है, एक ही पीढ़ी में बिजनेस पर स्वाभाविक रूप में अधिकार प्राप्त नहीं होता।"

"आप बहुत अच्छी बात कह रही हैं भाभीजी।" कौन कह सकता है कि भाभीजी निहायत भोली-भाली हैं।

भाभी ने इसी अवसर से लाभ उठाते हुए असली चर्चा छेड़ दी। "सोम, तुम क्या कर रहे हो ? मैं बाबूजी की तस्वीर के सामने खड़ी नहीं हो पाती हूँ। वे मुझसे पूछते हैं, सोम की शादी का क्या हुआ ?"

कोई और दिन होता, तो हो सकता है, सोमनाथ इस सम्बन्ध में भाभीजी से कुछ बातचीत करता। मगर आज सड़क के उस अनुभव के बाद से उसका सिर जैसे टीस-सा रहा है।

भाभी आज छोड़ने के लिए जैसे तैयार ही नहीं थीं। "सोम शुरू में बाबूजी ने तुम्हारा रिश्ता तय किया। तुमने कहा था, अपने पैरों पर जब तक खड़ा नहीं हो जाता, सीमेन्ट-डीलर की लड़की से मैं शादी नहीं करूँगा। मैंने कहा, ठीक है तुम किसी दूसरी लड़की से ही शादी कर लो। तुमने कहा, अपने पैरों पर खड़े होने के पहले शादी का सवाल ही पैदा नहीं होता। अब तो तुम अपने पैरों पर अच्छी तरह खड़े हो चुके हो। लेकिन तुम्हें क्या हो गया सोम ? तपती के बारे में थोड़ा-बहुत सुनने को मिला था। सोचा था, उसे फोन कर बाकी सूचना प्राप्त कर लूँगी। तभी अखबार में देखा, तपती कनाडा पढ़ने चली गयी है। सुनने में आया, तुम्हीं ने तपती से जाने को कहा था। उसके बाद ही कुछ महीने बीतते न बीतते जाने क्या-क्या सुनने को मिल रहा है।"

"जो बात फैली है वह झूठी नहीं है भाभीजी। तपती कनाडा से वापस नहीं आयेगी। उसने वहीं शादी कर ली है।"

तपती के बारे में सोमनाथ बर्फ की तरह ठण्डी आवाज में बोल सकता है, भाभीजी ने ऐसा सोचा भी नहीं था।

भाभीजी को यह जानने की तीव्र इच्छा हो रही थी कि ऐसी अनहोनी क्यों कर घटित हो गयी। "तपती को देखने से तो कभी ऐसा नहीं लगा था," भाभी को अब भी पूरी तरह यकीन नहीं हो रहा था।

"चेहरा देखने से ही क्या सब कुछ समझ में आ जाता है भाभी? मेरी ही बात ले लीजिये, मेरा ही चेहरा देखकर कौन कितना समझ पाता है?"

भाभीजी इन पहेलियों से परेशानी में उलझ जाती हैं। भाभी को भय हुआ, विदेश के नये माहौल में, हो सकता है, तपती के मन में बदलाव आ गया हो।

भाभीजी को जो कुछ मालूम नहीं है, एकमात्र सोमनाथ ही वह सब जानता है। सोमनाथ ने ही एक दिन एयरमेल से कनाडा पत्र भेजकर तपती को स्वतंत्र बना दिया था। जान-सुनकर सोमनाथ ने इतने दिनों के रिश्ते को तोड़ दिया था।

सोमनाथ तपती जैसी लड़की को धोखा नहीं दे सकता। बिजनेस मैन सोमनाथ का स्वरूप बिना पहचाने तपती उससे शादी करे, यह कभी उचित नहीं होगा। बहुत सोचने के बाद सोमनाथ ने बिना किसी लाग-लपेट के लिख दिया था, "असत्य संसर्ग के कारण मैं बहुत नीचे उतर आया हूं तपती—अब मैं तुम्हारे योग्य नहीं हूं। नये मुल्क में तुम नये साथी की तलाश कर लो, मुझे जरा भी दुख न होगा।"

बेचारी कमला भाभी को यह सब मालूम नहीं था तो अच्छा ही था। उनके मन में कम से कम सोमनाथ की तरह पीड़ा और यातना तो नहीं हुई। कमला भाभी ने अब सोमनाथ को याद दिलाना चाहा, तपती के अलावा भी दुनिया में अच्छी लड़कियां हैं। लेकिन सोमनाथ का चेहरा रफ्ता-रफ्ता और भी अधिक उदास हो गया। सोम को क्या हुआ?

कोई बड़ा ऑर्डर हाथ से निकल गया क्या? भाभी को भय लगता है। या फिर कोई दुर्घटना घट गयी? "किसी को धक्का वगैरह लगा दिया है क्या?"

सोमनाथ ने किसी को धक्का नहीं लगाया। लेकिन सोमनाथ को ही आज जैसे धक्का लग गया था।

सोमनाथ स्कूटर पर बैठकर आ रहा था। तभी दूर से उसने सुकुमार को आते देखा। मगर सोमनाथ ने मुंह दूसरी ओर घुमा लिया।

सुकुमार कभी सोमनाथ का अंतरंग मित्र था। दो दिन भी एक-दूसरे से मुलाकात न होती तो वे छटपटाने लगते थे। आज मुलाकात भी हुई तो सोमनाथ ने मुँह घुमा लिया। जैसे वह सोमनाथ को पहचानता ही नहीं हो।

"भाभीजी, आज सुकुमार पर नजर पड़ी," सोमनाथ ने इतना ही कहा।

"अरे, सुकुमार कैसा है ?" भाभीजी के मन में सुकुमार के प्रति पहले जैसा ही स्नेह है। "तुम इस व्यवसाय में प्रतिष्ठित हो चुके हो, तुम्हारे लिए उचित था कि अपने पुराने मित्र को किसी दिन निमंत्रित करते।" भाभीजी सोच रही थी। सोमनाथ के मित्रहीन जीवन में सुकुमार की उपस्थिति मंगलकारी होगी।

"सुकुमार क्या कर रहा है ? तुम्हारे साथ क्या-क्या बातचीत हुई ?" भाभी जी जितनी उत्सुकता प्रकट कर रही थीं। सोमनाथ को उतनी ही बेचैनी का अहसास हो रहा था।

"सुकुमार से मुझे बहुत जरूरी काम है," भाभीजी ने एकाएक कहा। "किसी दिन उसे जरूर लेते आना।"

सोमनाथ को सहसा पसीना आने लगा। "अचानक सुकुमार की आपको कौन-सी जरूरत पड़ गयी ?"

"कॉन्फिडेन्शल बात है। सब कुछ हर आदमी से कहा नहीं जा सकता है।"

भाभीजी ने गौर किया, सोमनाथ इस मामूली से मजाक को भी बरदाश्त नहीं कर पाया था।

भाभी बोलीं, "तुम्हारी कुछ गोपनीय खबरों के बारे में पता लगाऊँगी ! इस दृष्टि से सुकुमार ही सबसे अच्छा आदमी रहेगा।"

"कौन-सी खबर भाभीजी ?" सुकुमार अचानक इतना परेशान क्यों हो उठा, कमला भाभी समझ नहीं पा रही थीं।

भाभीजी ने सोचा था कि वह देवर से मरमला के साथ ही पूछेंगी कि तुम अब भी शादी क्यों नहीं कर रहे हो ? हमारी आँखों की ओट में कौन-सी रहस्यमयी अभी सक्रिय हैं, यह बात जानना खासतौर से आवश्यक प्रतीत हो रहा था लेकिन उस क्षण वैसा सवाल करने का भाभी को साहस नहीं हुआ।

भाभीजी ने गौर किया, किसी तरह एक प्याली चाय पीकर सोमनाथ फिर स्कूटर लेकर बाहर निकल गया।

पानी बरसना शुरू हो गया था। ठण्डे पानी के छींटे स्कूटर पर सवार सोमनाथ के चेहरे पर लग रहे थे। लेकिन सोमनाथ अभी किसी भी हालत में घर वापस नहीं जायेगा। जब तक वह सुकुमार के आमने-सामने खड़ा

उसके मन की जलन शान्त नहीं होगी। वह सुकुमार से पूछेगा कि उसने इस तरह अपना मुंह क्यों फेर लिया ?

बारिश में भीगता हुआ सुकुमार भी आगे बढ़ता जा रहा है। वह जरा-सा के लिए बच गया। सोमनाथ से मुलाकात हो जाती तो सुकुमार उससे क्या कहता ? कणा की भी चर्चा छिड़ती। सुकुमार क्या जवाब देता ? सोमनाथ पता जानने की इच्छा जाहिर करता। फिर हावड़ा की बात सुकुमार क्यों कर अपनी जवान पर ला पाता ?

मानसिक चिकित्सालय से लौटने के रास्ते में ही सुकुमार को सोमनाथ की याद आयी थी। जरा संयत हो जाने के बाद, संकोच के प्रथम अध्याय को परे हटाकर वह किसी न किसी दिन सोमनाथ के घर पर जाती थी। पट्ठे की जिन्दगी किस तरह बीत रही है, इसका भी पता लगा ही लेता। लेकिन अचानक कणा इस मुसीबत में फँस गयी।

अभी किसी को चेहरा दिखाने का उपाय नहीं है। महाभारत के दो पर्वों से सुकुमार के जीवन का भी मेल खा रहा है—पहला मानसिक चिकित्सालय का वनवास पर्व था और अभी अज्ञातवास पर्व चल रहा था।

•

अबलाबंधु सदानन्द गुप्त शाम के समय अपने चेम्बर में बैठकर सवेरे का बासी अखबार मन लगाकर पढ़ रहे थे।

अखबार को रख, चश्मे के कटे शीशे से अड़तालीस साल की उम्र वाले सदानन्द गुप्त की निगाह टार्च की रोशनी के मानिंद सुकुमार के चेहरे पर आकर टिक गयी।

यह नाटा, मोटा और काला आदमी देखने में कैसा लग रहा है ? अजीब न होता तो इस बेमानी लाइन में आता ही क्यों ? सुकुमार ने अपने को समझाया।

सदानन्द के कमरे के अन्दर भी लकड़ी के पार्टीशन से बना हुआ एक दूसरा कमरा है, यह बात सुकुमार की निगाह से अनदेखा न रहा।

"एक प्राइवेट बात है ।" सुकुमार उस छोटे कमरे में आकर बात शुरू करना चाहता है ।

"प्राइवेट बात न रहे तो यहाँ कौन आना चाहता है जनाब ? इतना नर्वस होइएगा तो काम कैसे चलेगा ? आपको जो कुछ कहना है, यहीं कह सकते है ।" सदानन्द की बात में कोई लाग-लपेट नही थी ।

"बात यह है कि"·····सुकुमार बात शुरू करना चाह रहा था ।

"मेल पेशेन्ट को देखकर मैं फीमेल पेशेन्ट के बारे में कैसे धारणा बना सकता हूँ ?"

सदानन्द ने अब एक छोटा-सा खाता खोला । "इसके पहले बताइये कि आपको किसने भेजा है । बहुत इम्पॉर्टेन्ट है । अगर किसी ने भेजा है तो शुरू मे ही बताना होगा । बाद में कोई आकर क्लेम करे कि उसने ही आपको भेजा है और अपने कमीशन के बारे मे हुज्जत करे । यह बात मुझे पसन्द नहीं ।"

"मैं खुद ही आया हूँ । आपका इश्तहार देखकर ।"

"गुड, वेरी गुड । कौन कहता है कि इश्तहार से काम नहीं निकलता है ।" इश्तहार का फलाफल हाथों-हाथ मिल जाने से सदानन्द गुप्त जरा मस्ती में आ गये ।

"बात यह है कि," सुकुमार की बात फिर अटक रही थी ।

"आप दुविधा में क्यों हैं ? खुलकर बताइये ।" सदानन्द गुप्त ने सीधे अपने मन का भाव प्रकट किया ।

"बात यह है कि पेशेन्ट मेरी·····"

"पेशेन्ट से आपका कौन-सा रिश्ता है, इससे मेरा कुछ बनता-बिगड़ता नही । आप बताइये कि कितने महीने हो चुके हैं । लास्ट डेट कब बीता है ?"

सुकुमार का होश गुम हो गया । प्रत्येक ब्यौरे की तो उसे खुद ही जानकारी नहीं ।

सदानन्द बोले, "पेशेन्ट से आपका क्या रिश्ता है, यह जानने में फायदा ही क्या है ? भाई-बाप बन जाता है, बाप मौसा, बॉयफ्रेण्ड भैया—हम लोगों के इस वर्ल्ड मे कुछ ठीक नही रहता । मुझे भाई जान, इतनी बातों की जरूरत ही क्या ? मुझे फीस से सरोकार है ।"

सुकुमार फीस के बारे में ठीक से जानकारी प्राप्त करना चाहता है । "आपके यहाँ खर्च क्या पड़ेगा ?"

"यह क्या बाजार की साग-सब्जी है ? दर जानना चाहेंगे तो बता दूँगा । लेकिन मरीज़ा को देखे बगैर कुछ बताया नहीं जा सकता ।"

"फिर भी," सुकुमार अनुमानित व्यय के बारे में पता लगाना चाहता है।

"हम लोगों की इस लाइन में वक्त ही सब कुछ है। यहाँ सब्र के पेड़ में मेवा नहीं फलता है, जनाब। जितनी देर कीजिएगा, एक्सपेक्टेड डेलिवरी का डेट जितना निकट आता जायेगा, मेरी फीस भी उतनी ही बढ़ती जायेगी। और आप अगर बहुत इन्तजार कर सकते हों तो कोई बात नहीं। चालीस हफ्ता—टू एट्टी डेज—अगर इन्तजार कर सकें तो सदानन्द की कोई जरूरत नहीं पड़ेगी। किसी भी मेटरनिटी अस्पताल में चले जाइएगा, एक भी पैसा नहीं देना होगा।" सदानन्द गुप्त अजीब तरह की हँसी हँसने लगा।

बत्तीस रुपया फीस देकर सुकुमार कणा को सदानन्द गुप्त के चेम्बर में दिखा चुका है।

कुचिकित्सक होने से क्या होगा, सदानन्द के गले में स्टेथस्कोप और बदन पर एप्रॉन है। देखकर कौन कहेगा कि वह विलायत से लौटा हुआ डॉक्टर नहीं है?

सदानन्द ने शुरू में सुकुमार को कोई खास सूचना नहीं दी। कणा को सीधे अन्दर के चेम्बर में ले जाकर उसकी जांच की। उसके बाद बाहर निकल होंठ बिदकाते हुए सुकुमार से कहा, "वार्निंग तो बहुत पहले ही मिल चुका होगा, इतने दिनों तक क्यों नहीं आये?"

सुकुमार इसका क्या जवाब दे? वह कुछ जानने लायक बातों की तलाश में था।

सदानन्द ने होंठ बिदकाया। "बॉडी के लिए कानूनी-गैरकानूनी कोई बात नहीं होती। फल लगते ही एलार्म बजना शुरू हो जाता है। उस समय जितनी ही जल्द एक्शन लीजिएगा उतनी ही जल्द झंझट से छुटकारा मिल जायेगा।"

सदानन्द की बातें कणा के कान में भी पहुँच रही थीं। उसका चेहरा सफेद पड़ता जा रहा था, यह देखकर अबलाबंधु सदानन्द ने ढाढ़स दिया, "डर की कोई बात नहीं, आजकल यह सब तो दाल-भात का कौर हो गया है बिटिया।"

"यकीन नहीं हो रहा है?" सदानन्द ने दुबारा अपनी मरीजा की ओर देखा। "हम जबान पर ताला बन्द करके पड़े रहते हैं, वरना बहुत-कुछ मालूम हो गया होता। कलकत्ता सिनेमा देखने जा रही हूँ, यह कहकर मुफस्सिल के घर से निकलकर मरीजा यहाँ चली आती है। अबलाबंधु के पास आने का मानी ही है। दुश्चिन्ता से छुटकारा।"

अवसादबंधु सदानन्द ने अब सुकुमार की ओर निगाह डाली, "चिन्ता की कौन-सी बात है मिस्टर मित्तिर ? बहू बाजार, बाँसद्रोणी, बेहाला, हावड़ा, हुगली, श्रीरामपुर, बारासात, बिराटी, वर्धमान वगैरह कौन-सी ऐसी जगह है जहाँ से लड़कियाँ इस सदानंद गुप्त के पास न आती हों ? मेरे पास बहुत सहूलियत है—मोस्ट कॉन्फिडेन्शल । रास्ते में पुरानी मरीजा से मुलाकात न हो जाये और वह शर्मिन्दगी महसूस न करे, इस डर से मैं बस-ट्राम में भी सिर झुकाकर चलता हूँ ।"

सदानंद बोले, "इस गुप्त क्लीनिक में आने का मतलब है, कौवे तक को इस बात का पता न चले ।"

कणा का चेहरा लाल हो गया था । सदानंद ने यह देखते हुए कहा, "शर्म बाहर के आदमी के सामने की जाती है—मेरे सामने शर्म की कोई बात नहीं । प्रेगनेन्सी, एबॉरशन, यह सब आजकल गृहस्थों के घर में भी मामूली बात हो गयी है, बिटिया । आहिस्ता-आहिस्ता यह मामला सर्दी-खाँसी से भी ज्यादा आम हो जायेगा ।"

सदानंद ने अपना गंजा सिर खुजलाते-खुजलाते कणा को मीठी झिड़की दी, "अब भी तुम्हारा चेहरा लाल क्यों पड़ता जा रहा है, बेटी ? ब्लड प्रेशर, प्लस रेट वगैरह बढ़ जायेगा । अभी सावधानी से रहने का वक्त है । तुम इतनी डर रही हो, कितनी ही कच्ची उम्र की लड़कियाँ धड़ल्ले से चेम्बर में चली आती हैं, खुद ही बातचीत करती हैं और धड़ल्ले से बाहर चली जाती हैं । किसी तरह का संकोच या भय नहीं रहता । उनकी हिस्ट्री कितनी ही तरह की होती है । कोई कॉलेज के मास्टर के साथ, कोई दफ्तर के सूपीरियर अफसर के साथ, कोई स्पेशल फ्रेण्ड के साथ एकाएक फन्दे में फँस जाती हैं और तब वैसी हालत में सदानंद गुप्त के पास ही आती हैं । तीन-चार दिनों की छुट्टी मिलती है तो कितनी ही पार्टियाँ आजकल एक साथ डायमण्ड हार्बर, दीघा, दार्जिलिंग, और पुरी घूमने-फिरने जाती हैं, हिम्मत कर होटल और होली डे होम में जाकर टिकती हैं । दशहरे की छुट्टी, बड़े दिन की छुट्टी के एकाध महीने बाद ही मेरे काम का प्रेशर बहुत बढ़ जाता है ।

"तब हाँ, जैसा कि मैं कह चुका हूँ, तुम्हारी तरह कोई नर्वस नहीं होती ।"

कणा को छोटे चेम्बर में बिठाकर सुकुमार बाहर चला आया था और कितना खर्च बैठेगा, इसका पता सदानंद गुप्त से लगा चुका था ।

सदानंद खासी बड़ी रकम की माँग कर रहा था । सुकुमार का मूड बिगड़

गया। "फिर आऊँगा," यह कहकर सुकुमार ने उस क्षण के लिए मामले को बीच में ही लटकाकर छोड़ दिया।

सदानंद गुप्त बोले, "मेरे साथ साहब, एक स्पेशल रिस्पॉन्सबिलिटी की बात है—मैं कभी अधिक चार्ज नहीं करता। मेरे इस गुडनेस के मौके से कितनी ही पेशेन्टों के सो-कॉल्ड गार्जियंस फायदा उठाकर चले जाते हैं। जो व्यक्ति नाटक का नायक है उसे जाकर डराते-धमकाते हैं, एबॉरशन के खर्च के तौर पर मोटी रकम वसूल लेते हैं मगर मुझे उसकी आधी रकम भी नहीं देते।"

तब सुकुमार के कान लाल हो गये हैं। सदानंद बोले, "मुझसे दर-दाम करने के बजाय उस आदमी पर दबाव डालें जो इसके लिए जिम्मेदार है। अपने लांग इक्सपीरियेन्स से बता रहा हूँ, नाटक शुरू होने के बाद, जो आदमी इसके लिए जिम्मेदार होता है वह झंझट-झमेले से बचने के लिए कबयी मछली की तरह छटपटाने लगता है। ऐसी हालत में खर्च वगैरह के लिए जितनी रकम की माँग कीजिएगा, झटपट निकालकर दे देगा।"

चेंबर से सड़क पर निकल आने के बाद कणा ने एक भी शब्द नहीं कहा। बस के इन्तजार में वह पत्थर की तरह दूर लैम्पपोस्ट की ओर ताक रही थी। भैया ने अब तक उससे कुछ नहीं कहा, लेकिन सदानन्द की बातें उसने साफ-साफ सुनी थीं।

कणा का कमजोर शरीर असहाय की तरह पसीने से भीग रहा था। भैया पर वह पूरे तौर पर भरोसा किये बैठी थी। कुल मिलाकर अभी-अभी स्वस्थ हुए शरीर पर इतना बोझा पड़ने से भैया कहीं फिर बेचैन न हो उठे।

कणा को भैया की ओर ताकने का साहस नहीं हो रहा था। इस तरह का भय का भाव कणा के जीवन में मात्र एक बार ही आया था। वह कई महीने पहले की बात है, जब चरणदास के डिपो से निकल, टैक्सी पर बैठते ही उसकी नजर भैया के मित्र पर पड़ी थी। उस समय टैक्सी से कूदने का उपाय नहीं था—गाड़ी ग्रेट इंडियन होटल की तरफ भागी जा रही थी।

भैया कुछ कहने के लिए बेचैन है, कणा यह समझ रही थी। सदानन्द की बातें भी अब तक कान में चक्कर काट रही थीं। कणा को भय हो रहा था, भैया अभी पूछ बैठेगा, "जिम्मेदार कौन है? तुम्हारी यह हालत किसने की है, मुझे बताओ।"

मेरे अच्छे भैया, तुम मुझसे कुछ नहीं पूछो। मैं तो मरने के लिए तैयार थी। तुम लोगों के सवालों का जवाब देने के लायक भी अब मैं नहीं रह गयी हूँ।

भैया, तुम लोगों की कणा बहुत निचले स्तर पर उतर आयी थी। कितने निचले स्तर पर, इसकी तुम लोग कल्पना भी नहीं कर सकते। लेकिन यकीन करो भैया, उस समय कोई उपाय नहीं था। तुम्हें जब पागल की हालत में देख बाबूजी की बात सुनकर जब समझ में आया कि रुपये का इन्तजाम न होने पर तुम्हें सड़क पर ले जाकर छोड़ दिया जायेगा और जिन्दगी की आखिरी घड़ी तक तुम सड़क पर ही पड़े रह जाओगे, उसी समय मैं नीचे कूद पड़ी थी।

उस वक्त इस सर्वनाशक विपत्ति की बात कणा को याद नहीं आई थी। सोचा था, डूबती गृहस्थी को किसी न किसी तरह उबारना ही उसका पहला काम है।

कणा को रोने की इच्छा हो रही थी। कहाँ तो उसने सोचा था कि भैया को वह सारी चिन्ताओं से मुक्त कर देगी और कहाँ अब वह स्वयं एक भारी चट्टान की तरह असहाय भैया के कंधे पर जमकर बैठ गई है।

भैया इतना क्या सोच रहा है? भैया क्या अभी तुरन्त कुछ कहेगा? बस क्यों नहीं आ रही है? कणा का शरीर थरथरा रहा था।

मगर भैया ने एक भी बात नहीं पूछी।

भैया को एक ही चिन्ता है। शरीर की जब यह हालत है तो इतनी भीड़ को चीरकर कणा कैसे बस पर सवार होगी?

जहाँ शेर का डर रहता है वहीं शाम होती है। वरना पंचानन कर्मकार का टेम्पो उन लोगों के सामने आकर खड़ा ही क्यों होता?

एकाएक पंचानन पर निगाह पड़ते ही सुकुमार बहुत बड़ी मुसीबत में फँस गया। किसी की निगाह न पड़े, इस तरह सुकुमार चुपचाप कणा को घर ले जायेगा, यही उसका विचार था।

दोनों को एक साथ देखकर पंचानन बड़ा ही खुश हुआ। गाड़ी का दरवाजा खोलकर हँसते हुये पंचानन ने कहा, "भाभी जी, देवर के टेम्पो में अपने चरणों को रखने की कृपा कीजिये। थोड़ी-बहुत असुविधा होगी। हो सकता है आप जिन्दगी में कभी टेम्पो में न बैठी हों। मगर इस गरीब पंचा के लिये थोड़ी-सी तकलीफ स्वीकार करें।"

'भाभी' संबोधन ने कणा और सुकुमार दोनों को बेइन्तहा परेशानी में डाल दिया। मगर उस वक्त जबान बन्दकर सुन लेने के अलावा दूसरा उपाय ही क्या था?

"सब समाचार ठीक है न?" सुकुमार ने सौजन्य के नाते पूछा।

माथे पर टोकरी थामे एक मजदूर को एक तरह से धकिया मगा पंचानन ने

आगे की ओर बढ़ते हुये का, "समाचार ठीक कहाँ है ? नहीं भाभी जी, वक्त अच्छा नहीं जा रहा है। मेरी मिसेज पाँव फिसल जाने के कारण बाथरूम में गिर गई हैं। मिसेज की खुशखबरी अपने मिस्टर से जरूर ही सुनी होगी लेकिन अब क्या होगा, कुछ कहा नहीं जा सकता। उसे अस्पताल में रखकर आना पड़ा है। मन बड़ा ही बेचैन है।"

बेचारे पंचानन का चेहरा आज सचमुच ही बहुत उतरा हुआ था। उसने कोई खास बातचीत नहीं की। ट्रैफिक पुलिस, ठेलेवाले और टैक्सी ड्राइवरों से भी पंचानन ने आज गाली-गलौज नहीं किया।

घर के निकट आकर पंचानन बोला, आप लोगों का आशीर्वाद रहेगा तो मिसेज अच्छी ही हालत में घर लौट आएँगी। उसके बाद एक बोतल एसिड लाकर मैं गुसलखाने की फिसलन के खानदान को नेस्त-नाबूद कर दूँगा।"

पंचानन की बातचीत की भंगिमा पर सुकुमार को हँसने का मन हुआ। लेकिन उसने देखा, कणा के चेहरे पर मुसकराहट का कोई निशान नहीं था, वह बड़ी-बड़ी आँखों से बाहर की ओर ताक रही थी।

बाद की घटना जल्द ही घटित हो गई। इस तरह की घटना हो सकती है, यह बात सुकुमार के दिमाग में नहीं आई थी।

दूसरे दिन शाम के समय दफ्तर से लौटने के बाद सुकुमार ने देखा, घर में एक उत्तेजना का भाव है।

कमरे के एक कोने में देह चादर से ढँककर कणा खामोश लेटी हुई है और मकान-मालकिन उसकी बगल में बैठकर सिर सहला रही है।

"कितनी बड़ी मुसीबत आ गई है, भैया।" मासीजी की आवाज से बेचैनी टपक रही थी।

बाथरूम में फिसल जाने से ऐसी कोई बात नहीं होनी चाहिये थी, फिर भी इस तरह की अनहोनी हो गई। मैं तो शर्म से मरी जा रही हूँ। इसके अलावा ....." मासी जी जरा चुप हो गई।

"मुझे पहले इस बात की जानकारी नहीं थी। अब समझ में आया कि बहू को अभी बहुत सावधानी से रहना है। ठीक इसी समय गिर पड़ना ! हे ईश्वर !"

मासी जी चली गयीं। सुकुमार ने कणा की ओर ताका। कणा ने अपना चेहरा घुमा लिया।

सुकुमार को कणा का जिस्म एक अंधेरे, अनजाने रहस्यमय द्वीप जैसा लग रहा था। टेम्पो पर बैठे पंचानन कर्मकार की बातें सुकुमार को जैसे फिर से सुनाई पड़ रही थीं।

सुकुमार के शरीर में सिहरन दौड़ रही थी। लेकिन वह एक शब्द भी नहीं बोला।

"कणा, डॉक्टर को बुला लाऊँ?" गहरी रात में सुकुमार ने बेचारगी के साथ पूछा। कणा ने जवाब नहीं दिया, शायद वह नींद में खो गई थी।

•

पंचानन से फिर मुलाकात हुई। टेम्पो का दरवाजा खोलकर सुकुमार को अन्दर बिठाते हुए कहा, "इतनी उधेड़-बुन में क्यों हैं? एक ही मुहल्ले में काम करते हैं, बार-बार मुलाकात तो होगी ही। टेम्पो में बिठा लेने के अलावा मेरी सामर्थ्य ही क्या है? इसकी वजह से पंचानन का एक भी पैसा खर्च नहीं होता।"

पंचानन की पत्नी अस्पताल में ही है। अब भी परिणाम के बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता।

पंचानन ने अब गम्भीरता के साथ कहा, "उस दिन मिसेज और आपको दूर से ही देखकर थोड़ा घबरा गया था। उसके बाद सोचा, आप लोग किस दुःख के चलते वहाँ जाइयेगा?"

सुकुमार थोड़ी-बहुत दुश्चिन्ता में पड़ गया। "कहाँ देखा था?"

"सदानन्द की दुकान के पास। आपके बजाय कोई दूसरा होता तो सन्देह होना स्वाभाविक था। सदानन्द गुप्त को साधू ही कहा जा सकता है। पहले कालीघाट में रहता था और किसी प्राइवेट अस्पताल में कम्पाउण्डर का काम करता था। वहाँ गड़बड़ी करने के कारण नौकरी से हाथ धो बैठा। उसके बाद गन्दे कारोबार की शुरुआत की—जबान से उस कारोबार का नाम नहीं लिया जा सकता। अब जनाब दोनों हाथ से रुपया बटोर रहा है। मकान तक खरीद लिया है।"

गरदन के पास खुजलाते हुए पंचानन ने कहना शुरू किया, "फिर भी [illegible] लोगों की समझ में बात नहीं आती है। छिप-छिपकर सदानन्द गुप्त [illegible] जाते हैं।"

पें-पें-पें, पंचानन हॉर्न बजाकर भीड़ को तितर-बितर किया। "मेरी मिसेज के लिए जरा प्रार्थना कीजियेगा सर, जिससे कि आपके जैसे कुछ भले आदमियों के दबाव में पड़कर ईश्वर पेड़ और फल दोनों की रक्षा करें। मुझसे उनके टर्म्स ठीक नहीं हैं; भगवान् जब कि अन्याय करते हुए पाजीपन कर रहे हैं तो गुस्से के मारे मैंने भी कुछ सुनाना बाकी नहीं रखा है।"

टेम्पो आगे बढ़ता जा रहा था। पंचानन ने कहा, "उस दिन की ही बात लीजिये, जब छिपकर मिसेज से शादी की। उस दिन सर, पैसे का बड़ा अभाव था। उस समय मैं टेम्पो नहीं चलाता था, मोटर के गैरेज में काम करता था। उस दिन भगवान् को खूब खरी-खोटी सुनाई—आदमी की शादी के दिन अगर पॉकेट में कुछ पैसे नहीं देते हो तो फिर तुम दुनिया के मालिक क्यों हो ? पंचा तुम्हें डोन्ट केयर करता है ! तब दो ही रास्ते खुले हुए थे। मोटर का पार्ट्स निकालकर पैसे का इन्तजाम करना। सो सोचा, शुभ दिन में बुरा काम क्यों करूँ ? उस समय सर, धर्मतल्ला के प्राइवेट ब्लड बैङ्क में चला गया। आधे घण्टे के दरमियान ही पैसा मिल गया। खून-पसीना एक कर बीवी ले आना जिसे कहते हैं, मेरी वही हालत थी। वही मिसेज बीमार हो जाये तो मन की हालत कहीं ठीक रह सकती है ?"

सुकुमार को उम्मीद की हल्की रोशनी दिखाई पड़ रही थी। दो हफ्ते में दो बार रक्त देकर उसने कुछ रुपये का इन्तजाम किया है।

सुकुमार को भाग्यवान् कहना चाहिए। सुकुमार की धमनियों में एक खास ग्रुप का रक्त प्रवाहित होता है। बाजार में उसकी कीमत दूनी है। सुकुमार हिसाब लगा रहा है कि इस प्रकार कितनी बार रक्त देने से सदानन्द डॉक्टर के पैसे का इन्तजाम हो जायेगा।

उस शाम सुकुमार ने सदानन्द गुप्त से उनके चेम्बर में मुलाकात की थी। "आइये मिस्टर मित्तिर। देख रहा हूँ, आप कमजोर हो गये हैं। लगता है, बहुत चिन्ता में हैं।"

"इन सब बातों पर पहले ही सोचना चाहिए था। गड़बड़ी में फँस जाने पर बेवजह चिन्ता करने से कोई फायदा नहीं, समझ रहे हैं न मिस्टर मित्तिर।" सदानन्द ने चुटकी ली।

सुकुमार ने अब अपना प्रस्ताव रखा और सदानन्द डॉक्टर ने उसे एक ही बात में उड़ा दिया।

"आप लोगों को हँसने का मौका नहीं दें, मिस्टर मित्तिर। यह क्या कोई फैन, फ्रिज, रेडियो या लोहे की आलमारी है कि किस्त पर रुपये अदा कीजियेगा ?"

"माफ कीजिये," सदानन्द गुप्त ने करारा जवाब दिया। "काम निकल जाने पर हम लोगों की इस लाइन में कोई किसी को नहीं पहचानता। खेल खत्म पैसा हजम। आप हर हफ्ता दस-बीस रुपया दे जाइयेगा और मैं उस उम्मीद पर पहले ही काम खत्म कर डालूँ, यह तो एकदम नहीं हो सकता।"

बेचने या गिरवी रखने के लायक सुकुमार के पास कोई सामग्री नहीं थी या फिर कर्ज लेने का भी कोई रास्ता उसे दीख नहीं रहा था। हालाँकि समय बीतता चला जा रहा था—वह समय जो बहुत ही कीमती था।

शर्म को ताक पर रख सुकुमार फिर सदानन्द गुप्त के पास गया था।

सदानन्द गुप्त पसीजे नहीं। "रुपया यहाँ कोई आपकी तरह दाँत से नहीं पकड़ता है, जनाब। मुझे रुपया देते हैं तो लोग अपने को धन्य समझते हैं।"

"मेरे बारे में भी सोचकर देखें।" सदानन्द बोले, "आप लोग जो कुछ देते हैं, वह क्या अकेले मेरे पेट में जाता है ? डोम से लेकर थाना पुलिस वगैरह कितने ही लोगों को हिस्सा देना पड़ता है। लोग सिर्फ मेरे ग्रॉस इनकम के बारे में ही सोचते हैं—लेकिन खर्चा और मुसीबत के पहलू पर गौर नहीं करते। यह एक भयंकर रिस्की लाइन है साहब। हम लोगों का कारोबार ४४० वोल्ट ए० सी० से चलता है। हमारी लाइन के नगेन हालदार की ही मिसाल लीजिये। क्रिमिनल एबॉर्शन में मालती साहा की मौत हो जाने पर फौजदारी मामले में फँस गया। अपने बचाव के फेर में उसका दिवाला पिट गया मगर बरी नहीं हो सका और कैद की सजा भुगतनी ही पड़ी। अब उसकी बीवी और बाल-बच्चों की देख-रेख करने वाला कौन है ?"

"ईश्वर आपका भला करेंगे," सुकुमार ने दयनीय स्वर में अनुरोध किया।

"दो-चार रुपये के लिए आप इस लाइन में ईश्वर को क्यों घसीट रहे हैं ? नहीं साहब, ऐसा काम नहीं करें। मेरी भी तो घर-गृहस्थी है, उन लोगों के भी मंगल-अमंगल की बात है। ईश्वर से मैं बचकर चलता हूँ, उनके साथ मैं कोई बिजनेस रिलेशन नहीं रखता।"

सदानन्द गुप्त के कमरे में एक दूसरी मरीजा बुर्का ओढ़े घुस रही थी। अपना परिचय छिपाकर रखने के खयाल से बहुत सारी हिन्दू रमणियाँ भी बुर्का ओढ़कर यहाँ चली आती हैं।

सुकुमार को विदा करते हुए सदानन्द बोले, "देर हो रही है। अगले हफ्ते से मेरी फीस डेढ़ सौ रुपया और ज्यादा हो जायेगी।

"क्यों।"

"उस वक्त मुझे दोष मत दीजियेगा। सब कुछ तो समय का मामला है। समय जितना आगे खिसकता जायेगा सदानन्द गुप्त के काम का रिस्क भी उतना ही बढ़ता जायेगा। समय पर कुछ न करने के कारण ही आप जैसे लोगों का बुरा वक्त आता है।"

सुकुमार गुप्त की आखिरी बातें सुकुमार के कान में गूंज रही थीं। समय के रहस्य का पता न चलने के कारण ही क्या आज उसे इतना दुःख झेलना पड़ रहा है? जो लोग उस प्रशस्त राजपथ पर गाड़ी-घोड़े पर सवार हो अमीरी चाल से दौड़े जा रहे हैं और दुनिया के तमाम सुखों को भोग रहे हैं, केवल वे ही लोग क्या समय की इज्जत करते हुए आगे बढ़ रहे हैं?

सुकुमार यह प्रश्न किसके सामने उछाले? इस प्रेमहीन, दयाहीन शुष्क मरुभूमि में उसके इस प्रश्न का उत्तर कौन देगा?

आज सुकुमार को नये सिरे से सोमनाथ की याद आ रही थी। सोमनाथ होता तो जी खोलकर उससे सलाह-मशविरा करता। सोमनाथ अब जरूर ही सुखी है। न होता तो उसका स्कूटर इतना झलमलाता ही क्यों?

और एक व्यक्ति है—कणा। वही तो सारी समस्याओं की केन्द्र-बिन्दु है। लेकिन वह चुपचाप बरी होना चाहती है। और समय की हवा में सुकुमार की दिग्भ्रान्त चिन्ता सफेद और काले डेनों की तरह असहाय जैसी फड़फड़ा रही है।

सुकुमार अभी एक ऐसे आदमी की तलाश में था जिससे वह पूछ सके कि इस वक्त उसका कर्त्तव्य क्या है। सदानन्द गुप्त के पास उसके जाने का उद्देश्य थोड़ा वक्त गुजारना था। सुकुमार ने सोचा था, इस बीच वह खोज-पड़ताल कर इस बात का पता लगा लेगा कि कणा की इस स्थिति के लिए जिम्मेदार कौन है: जरूरत पड़ने पर सुकुमार उसके पास भी जायेगा। कम से कम कणा के लिए भी यही उचित था कि वह उसे सूचित कर देती। लेकिन कणा ने इस सम्बन्ध में कोई उत्सुकता प्रकट नहीं की। वह कोई बात नहीं बतायेगी। कणा का उतरा हुआ चेहरा देखकर सुकुमार को अधिक पूछताछ करने का साहस भी नहीं होता।

सुकुमार ने दो-चार जगह तहकीकात भी की थी। लेकिन वह कणा के कार्यालय का पता नहीं लगा सका था।

समय बीतता जा रहा था, इस वजह से कणा धीरे-धीरे अधीर होती जा रही थी। पिछली रात भी कणा की चीख सुनकर सुकुमार घबराकर उठ बैठा था।

गहरायी रात की बिजली की रोशनी से सुकुमार भी कणा की तरह भय-भीत हो उठता था।

सुकुमार ने टॉर्च जलाकर देखा, कणा को कुछ भी नहीं हुआ था। नींद की बेहोशी में कणा प्रलाप कर रही थी : "भैया अबकी मुझे मुक्ति दिला दो। अब मैं कभी तुम्हारी बात का उल्लंघन नहीं करूँगी। भैया, अब देर मत करो।"

"ऐ कणा। कणा!" सुकुमार की पुकार सुनकर कणा ने आँखें खोलीं मगर उसे कुछ भी याद नहीं था।

"मुझे क्यों पुकार रहे हो भैया? पानी पियोगे?" कणा नींद की बेहोशी को झटक कर पूछ रही थी।

कणा फिर नींद में खो गयी थी। लेकिन भैया के आँखों में नींद कहाँ थी! सुकुमार रात-भर देर होने के बारे में ही सोचता रहा था। समय-सारिणी का अनुसरण करते हुए सभी जैसे ठीक वक्त पर तैयार होकर प्लेटफॉर्म पर चले आये हैं। एकमात्र सुकुमार ही कणा के साथ पीछे छूट गया था।

अब यह सब सोचने से कोई लाभ नहीं था। क्या सुकुमार एक बार सोमनाथ के यहाँ से हो आये?

नहीं। वहाँ जाने का सवाल ही पैदा नहीं होता। उस दिन महसूस हुआ, स्कूटर पर सवार सोमनाथ ने उसे देखकर भी अनदेखा कर दिया। हो सकता है व्यवसाय में दो पैसा कमा रहा है इसलिए बेकारी की जिन्दगी के दोस्त पर उसकी नजर नहीं पड़ी।

"तुमने खुद भी तो अपना मुँह घुमा लिया था।" किसी ने जैसे सुकुमार के मन के भीतर बैठकर बहस करना शुरू कर दिया।

"मैंने अगर अनदेखा कर भी दिया तो इसके हजारों कारण हैं, पूरी दुनिया को नजर अन्दाज कर सकूँ तो कणा और मैं जी जायें। लेकिन सोमनाथ के साथ तो ऐसा कोई कारण नहीं है, सुकुमार ने अपने आपसे बहस करना शुरू कर दिया।

सोमनाथ भी अपनी बेचैनी भूल नहीं पा रहा था। सुकुमार से मिलने की इच्छा चिरस्थायी सिर दर्द की तरह मौजूद थी।

सुकुमार से दूर, बहुत दूर रहने का परामर्श कोई उसके मन को अन्दर से दे रहा था। दूसरे ही क्षण सोमनाथ ने देखा, उस पर नजर पड़ते ही सुकुमार दूसरी ओर मुँह घुमाकर ब्रेवोर्न रोड पर खड़ा था।

इस बीच कमला भाभी ने अनजाने ही देवर की बेचैनी को बढ़ाने के लिए ईंधन की व्यवस्था कर दी थी। कमला भाभी ने याद दिलाया, "सुकुमार को भी तुम किसी दिन यहाँ नहीं ले आये? स्वस्थ होने के बाद से उस पर निगाह ही नहीं पड़ी।"

सोमनाथ सिर्फ हँस दिया था। वह भाभी के सामने किसी भी हालत में झूठ नहीं बोल सकता। यहाँ तक कि चुप्पी का यह अभिनय भी उसके मन में बेचैनी पैदा कर रहा था।

भाभी को पता है, सोमनाथ अब संगीहीन है। उसका कोई भी दोस्त-मित्र अब इस घर में नहीं आता। नये व्यवसाय में भी किसी से मैत्री हुई हो, ऐसा नहीं लगता। सोमनाथ काम पर जाता और फिर वापस चला आता था, निस्संग!

सोमनाथ ने ही एक दिन कहा था, "व्यवसाय एक विशाल जंगल हुआ करता है, भाभी। वहाँ कोई किसी पर विश्वास नहीं करता, कोई जबरन दोस्ती करता भी है तो वह दोस्ती चिन्ता का कारण हो जाती है। साथ ही साथ वह एक निर्जन मरुभूमि भी है—मुसीबत में फँस जाने पर गला फाड़कर चिल्लाने से भी कोई दौड़कर नहीं आता।"

यही वजह है कि कमला भाभी सुकुमार की तलाश कर रही थी। सुकुमार कुछ दिनों तक आयेगा-जायेगा तो कमला भाभी को यह जानने में विलम्ब न होगा कि सोम ऐसा क्यों होता जा रहा है। तपती के साथ एकाएक ऐसा क्यों हो गया? सोमनाथ के जीवन में कोई नयी भाग्यवती नारी आयी है या नहीं? या फिर सोमनाथ ने अपनी खामखयाली की वजह से ही क्या इस तरह अपने को अलग-अलग कर लिया था?

सोमनाथ ने कहा, "भाजीजी, आपसे जरा सलाह-मशविरा करना है। यह बहुत ही प्राइवेट बात है।"

कमला भाभी के मन में उम्मीद का चिराग जल उठा। सोमनाथ ने बहुत दिनों से इस तरह की बातचीत नहीं की थी।

"क्या कहना चाहते हो, सोम, बताओ न ! दुनिया में ऐसी कोई बात नहीं जो तुम मुझसे न कह सको।"

कमला भाभी ने सोचा था, सोमनाथ अब कोई निजी बात बतायेगा। या तो तपती के बारे में या फिर किसी नयी जान-पहचान की लड़की के बारे में। मगर सोमनाथ ने कहा, "आपकी राय मेरे लिए बहुत ही ज्यादा कीमत रखती है। महात्मा कॉटन मिल्स के मिस्टर गोयनका से मेरा व्यापारिक संबंध है। अगर मैं उस आदमी के साथ व्यवसाय न करूँ तो ? वह मुझे जरा भी पसन्द नहीं, मगर सभी यही कहते हैं कि मैं उसके साथ बिजनेस चालू रखूँ।"

इस सवाल ने कमला भाभी को हताश-सा कर दिया। व्यवसाय की छोटी-मोटी बातों के बजाय वह सोमनाथ के व्यक्तिगत जीवन और भविष्य के संबंध में अधिक आग्रहशील थी। तो भी कमला भाभी सोचने लगीं। बोलीं, "सोम, जिस आदमी को हम पसन्द नहीं करते उसके साथ काम-काज चालू रखने का मतलब ही है स्वयं को अपमानित करना। मैं जानती हूँ सोम, जब तुम किसी को नापसन्द कर रहे हो तो उसके पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होगा।"

"आपने मुझे उबार लिया, भाभीजी। सभी मुझे उल्टा-पुल्टा परामर्श दे रहे थे, हालाँकि गोयनका के साथ मुझे अब एक दिन भी काम करने की इच्छा नहीं हो रही।"

"जो आदमी नापसन्द हो, उसे परे हटा दो, मगर जिसे पसन्द करते हो उसे हम लोगों के पास आने दो।" भाभी अब अपनी बात कहने से नहीं चूकीं। लेकिन भाभी को टालने के खयाल से ही सोमनाथ फौरन घर से बाहर निकल पड़ा।

दफ्तर पहुँचते ही सोमनाथ ने गोयनका के महात्मा कॉटन मिल्स से संबंध-विच्छेद का पत्र लिख डाला। पत्र पर हस्ताक्षर करने के बाद से उसकी छाती का भार बहुत-कुछ हल्का हो गया था।

अपने व्यवसाय से संबंधित विवरणों की सोमनाथ ने मन ही मन जाँच-पड़ताल की। छोटा-मोटा जो भी काम मिल रहा है उसी से गोयनका के न रहने पर भी उसका काम चल ही जायेगा।

अब सोमनाथ ने अच्छी तरह साँस लेने की कोशिश की। लेकिन उसे महसूस हुआ, छाती जितनी हल्की होनी चाहिए थी उतनी अभी नहीं हुई थी।

मानो वही कापालिक फिर काला गाउन पहने सोमनाथ से जिरह करने के लिए अँधेरे में आ खड़ा हुआ था।

सोमनाथ बहुत परेशानी में पड़ गया। दुनिया के कितने ही लोग कितनी ही तरह के बुरे काम कर हँसते-खेलते हुए घर-गृहस्थी चला रहे हैं; उनका तो कुछ भी नहीं बिगड़ता। लेकिन एक दिन के एक साधारण अपराध के कारण यह आदमी छिपे हत्यारे की तरह हर रोज सोमनाथ का पीछा क्यों कर रहा है?

इस के बावजूद, सोमनाथ अपने अन्दर प्रतिवाद का मनोबल एकत्र नहीं कर पा रहा था। अब उसने स्वयं से पूछा, "मिस्टर गोयनका से तुम्हें इन कई महीनों के दरमियान कुल कितना पैसा मिला है? मैं उस गन्दी रकम में से एक अधेला भी नहीं छुऊँगा। पूरी रकम मैं इसी साल के दौरान रास्ते के भिखमंगों के बीच बाँट दूँगा। जरूरत पड़ने पर खर्च घटाने के खयाल से मैं सिगरेट पीना बन्द कर 'दूँगा, नाश्ता भी नहीं करूँगा। लेकिन मैं उस पैसे को फिर नहीं छुऊँगा।"

सीने पर दबा भार थोड़ा और कम हो गया। लेकिन कितने आश्चर्य की बात थी, दिल फिर भी पूरे तौर पर हल्का नहीं हो रहा था। काले गाउन वाला वह आदमी कहीं नजदीक ही छिपा हुआ है और सोमनाथ को अकेला पाते ही उसका पीछा करना शुरू कर देगा।

लेकिन सोमनाथ काले गाउन वाले को वैसा मौका अब नहीं देगा। वह अकेला रहेगा ही नहीं। आदमी की तलाश में वह सड़क पर निकल पड़ा।

आज बहुत दिनों के बाद नटवर मित्तिर से सोमनाथ की अचानक भेंट हो गयी। नटवर आज कीमती सूट में था। उसका पी० आर० बिजनेस अच्छी तरह चल रहा था, नटवर को देखते ही यह बात समझ में आ जाती थी।

सोमनाथ से एकाएक मुलाकात हो जाने पर मिस्टर नटवर मित्तिर बेहद खुश हुए।

"अरे; मिस्टर बैनर्जी? आज-कल तो आप बिलकुल फिग-फ्लावर हो गये।

"मानी गूलर के फूल। हम लोगों की इस पब्लिक रिलेशन लाइन में अँग्रेजी का मैक्सिमम इस्तेमाल न किया जाये तो बात जमती ही नहीं। अँग्रेजी के बाद ही हिन्दी का स्थान आता है।" नटवर मित्तिर के होंठ का ऊपरी हिस्सा सूजा हुआ रहने के बावजूद वह हँस पड़े।

नटवर मित्तिर से मुलाकात न होती तो अच्छा होता । गरमीने सोमनाथ की बेचैनी का अहसास क्यों हो रहा था, यह बात तेज बुद्धि वाले नटवर की भी समझ में नहीं आयी ।

पीठ पर एक धौल जमाते हुए नटवर बोले, "आप तो अच्छे आदमी हैं साहब ! चार महीने पहले वो जो छोटा-मोटा-सा एडवेंचर रहा, ग्रेट इंडियन होटल में मिस्टर गोयनका को गुडबाई कहकर आप जो चलते बने, तो फिर दर्शन ही नहीं दिये ।"

मिस्टर नटवर मित्तिर ने जेब से पर्स निकाला । इसमें आपकी भी कोई गलती नहीं । मैंने भी ऑफिस बदल लिया है । रवीन्द्र सरणि, इंडिया एक्सचेंज प्लेस वगैरह स्थानों में अब फ्लेवर नहीं है । इसलिए मैं हटकर साउथ चला आया—कैमॉक स्ट्रीट । किसी दिन आइये न, बुरा नहीं लगेगा । एक छोटा-सा कबूतर का दरबा भी तैयार कर लिया है ।

"कबूतर का दरबा समझ में आया तो ? एयर कण्डीशन मशीन का बक्सा । वह न रहे तो कन्सलटेन्ट के बारे में क्लाइन्ट अच्छा ओपीनियन नहीं फॉर्म करते । उसके साथ ही कुछ एण्टीक आर्ट ऑब्जेक्ट भी रख छोड़ा है ।

"समझ रहे हैं न, सोमनाथ बाबू, इंडिया में हमें प्राचीन और आधुनिक दोनों का कॉकटेल करना होगा । बिजनेस कॉम्यूनिटी ने एट लॉग लास्ट रवीन्द्र नाथ टैगोर और जवाहर लाल पन्नालाल का एडवाइस मान लिया ।"

"जवाहर लाल पन्नालाल ?"

"ओह, आई एम सॉरी, सोमनाथ बाबू । होना चाहिए था जवाहर लाल नेहरू—बिजनेस लाइन में चक्कर काटते रहने के कारण मेरा दिमाग आजकल ठिकाने नहीं रहता ।" मिस्टर नटवर मित्तिर ने माफी माँगी ।

"हाँ, आधुनिक और प्राचीन के समन्वय की बात आपकी समझ में आयी तो ? बाहर से आपको बिलकुल आधुनिक होना होगा—मॉडर्न ऑफिस, मॉडर्न इक्विपमेंट, मॉडर्न फर्नीचर, मॉडर्न स्टेशनरी । और अन्दर-अन्दर आपको रखनी है आदिम युग की व्यवस्था । सत्ताधारी आदमी उस आदिम युग में जो चाहते थे, अब भी वही चाहते हैं—क्षमता, प्रभाव, सुख, संभोग । सीधी-सादी भाषा में कहा जाये तो मदिरा, मांस, लड़की ।"

"कॉन्शेन्स नामक शब्द आपने सुना नहीं है ?" सोमनाथ अब चुप्पी साधे नहीं रह सका ।

"हँसने का मौका मत दें, मिस्टर बैनर्जी । यह चीज पेट के अन्दर के एपेनडिक्स जैसी है, तराशकर अलग कर देने से कोई हानि नहीं होती । रहम

कर पालने-पोसने से अचानक बढ़कर कुछ लोगों को तकलीफ ही पहुँचाती है, ठीक उसी तरह जिस तरह कि एपेनडिक्स। शल्य-चिकित्सक को दो पैसा मिले इसी खयाल से ईश्वर हम लोगों के पेट के अन्दर रख जाते हैं।"

नटवर मित्तिर ने सोमनाथ की पीठ पर एक धौल जमाया।

"थियोरिटिकल डिस्कशन को गोली मारिये। अब तो यह बताइये कि बिजनेस का क्या हाल-चाल है ?"

"चल रहा है।"

सोमनाथ के उत्तर से मिस्टर नटवर मित्तिर सन्तुष्ट नहीं हुए। "बैड। किसी तरह 'गतंगच्छ' वाला यह भाव ठीक नहीं। हर समय तेजी से आगे बढ़ने की कोशिश करनी होगी—जिस तरह मिस्टर भुटोरिया, मिस्टर हनुमान लाल, मिस्टर रनडेरिया, मिस्टर चोखनिया कर रहे हैं। मुखर्जी, भट्टाचार्जी, सेन वगैरह की तरह हर वक्त फॉलोऑन मेन्टैलिटी लेकर मैदान में उतरने से तो इनिंग डिफीट होनी लाजिमी है।"

मिस्टर नटवर मित्तिर बोले, "एक बात और जनाब। फॉलो-ऑन को नजर अन्दाज करने के लिए हमेशा फॉलो-अप करें—यानी लगे रहें। होटल आकर कुछ लहमों को एन्जॉय करें कोई एक ऑर्डर दे देता है तो इसका मतलब यह नहीं कि आप निश्चिन्त होकर हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें। एटरनल ग्रीजिंग इज द प्राइस ऑफ बिजनेस—हेनरी फोर्ड या रॉक फेलर यह बात कह गये हैं।" नटवर मित्तिर सिर खुजलाने लगे। यह किसकी उक्ति है, इसे बताने में नटवर मित्तिर से गलती हो गयी है। "सॉरी, वेरी सॉरी। रॉक फेलर यह बात क्यों कहने लगे ? कहा है हमारे कॉमन फ्रेण्ड मिस्टर सुदर्शन गोयनका ने।"

नटवर मित्तिर ने छोड़ा नहीं। सोमनाथ को जोर-जबरदस्ती सेंट्रल एवेन्यू के काफी हाउस ले ही गये।

हाउस ऑफ लॉर्ड्स की एक मेज पर दखल जमाकर नटवर लॉर्ड-स्टाइल में बोले, "आये दिन सिर्फ पार्क, रीज, ग्रैण्ड, ग्रेट इंडियन में ही आने-जाने से काम नहीं चलेगा। वक्त तेजी से बदल रहा है, अब नेशन का पल्स फील करने के लिए बीच-बीच में यहाँ भी आना चाहिए। बड़ी-बड़ी विलायती कम्पनियों के पर्सनल मैनेजर भी तकलीफ उठाकर तालीम लेने के लिए यहाँ बीच-बीच में आते हैं। कम्पनी की भलाई के लिए वे लोग इस नॉन-एयरकन्डिशन कॉफी-हाउस के हार्डशिप को हँसते हुए झेल लेते हैं।"

सोमनाथ का ध्यान स्कूटर की तरफ है। वह एक बार उठकर गया और सड़क पर रखे स्कूटर को जाकर देख आया।

नटवर बोले, "घबराइये नहीं, यहाँ के चोरों की नजर इतनी घटिया किस्म की नहीं है। वे लोग स्कूटर पार्ट्स चुराकर अपने हाथ को बदबूदार नहीं बनाते। जब तक मोटरगाड़ी है तब तक चोर स्मॉलस्केल सेक्टर को टच नहीं करेंगे।"

कॉफी आ गयी थी। नटवर बोले, "हाँ-हाँ, मैं तो भूल ही गया था, मिस्टर गोयनका अब भी आपके उस तोहफे की बात भूले नहीं हैं। सिउली की याद उनके मन से लिपटी हुई है, किसी भी तरह उसे उखाड़कर फेंक नहीं पा रहे हैं।"

कॉफी की प्याली से घूंट लेते ही सोमनाथ को हिचकी आ गयी। नटवर मित्तिर घबरा उठे। "बातचीत नहीं करें। चुपचाप बैठे रहिये। साँस अटक जाये तो उस हालत में खामोश रहना ही बहुत सारे मर्जों की मॉडर्न दवा का काम करता है।"

"हाँ, तो मैं सिउली की बात कह रहा था, यानी मिस्टर गोयनका की बात। ऐसा होता ही रहता है—कनज्यूमर्स प्रेफरेन्स नामक एक शब्द आजकल मॉडर्न बिजनेस वर्ल्ड में बहुत चालू है। और आप समझ ही रहे होंगे कि हम लोगों की इस सोसाइटी में कनज्यूमर इज द किंग—यानी जिसे सर्वेसर्वा कहते हैं वही होता है।"

सोमनाथ की हिचकी थम गयी थी। लेकिन उसका चेहरा लाल हो गया था।

नटवर मित्तिर ने कॉफी पीते-पीते एक सिगरेट सुलगायी। उनका भी चेहरा गम्भीर हो गया।

"हाँ, याद आया, एक इम्पॉर्टेन्ट इनफॉरमेशन आपको देना जरूरी है। सिउली की ही बात है। मिस्टर गोयनका अगर आपके सामने उसके प्रति इन्टरेस्ट दिखायें तो आप बात टाल दीजियेगा। अंट-संट कुछ कह दीजियेगा।"

नटवर मित्तिर ने अपना गंजा सिर खुजलाया। "कह दीजियेगा कि सिउली बम्बई चली गई है।"

"क्या! क्या सचमुच वह बम्बई चली गई है।" सोमनाथ बेहद बेचैनी महसूस करने लगा।

"बस, बात बनाना है और क्या! मैड्रास, डेल्ही, बैंगलोर भी जा सकती है—लड़कियों के एक्सपोर्ट के मामले में कोई गवर्नमेन्ट रेस्ट्रिक्शन तो है नहीं, कोई कॉरडनिंग भी नहीं। इम्पॉर्ट ओरियेन्टेड बिजनेस है न, इसलिए कोई

लफड़ा नहीं। इसके अलावा विजनेस पर्पज के लिए औरतों को बेरोट-टोक घूमने-फिरने की गारन्टी संविधान के द्वारा भी दी गयी है। बम्बई शब्द सुनने में अच्छा लगता है, पब्लिक रिलेशन की दृष्टि से दोनों पार्टी का इमेज ब्राइट होता है।"

कणा की खबर सुनने को सोमनाथ सामने की ओर थोड़ा झुक गया है।

पॉट की पूरी चीनी कप के अन्दर डालकर नटवर मित्तिर चम्मच से चलाने लगे। "असली बात यही है कि शिउली नहीं मिलेगी। शी इज नॉट एवेलेब्ल। मैंने मिस्टर गोयनका को बम्बई बताया है, आप भी यही बात कहियेगा—फिर वन प्लस वन थ्री हो जायेगा।"

नटवर की बात सोमनाथ को ठीक-ठीक समझ में नहीं आ रही थी। अधिक उत्सुकता दिखाने में भी उसे लज्जा का अनुभव हो रहा था।

"अपनी नाक पोंछ लीजिये, मिस्टर बैनर्जी। पार्टी के सामने नाक से पसीना चलना नर्वसनेस की निशानी समझी जाती है," नटवर मित्तिर ने सस्नेह उपदेश दिया।

"इन फैक्ट जरूरत-बेजरूरत बीच-बीच में नाक पोंछ लिया कीजिये, सोमनाथ बाबू। मैं भी ऐसा ही करता हूँ। लेकिन अभी नाक के सामने रूमाल ले जाने का मेरे लिए उपाय नहीं है। बड़ा ही दर्द करता है।" नटवर मित्तिर की दबी हुई चीख निकल पड़ी।

अब नटवर मित्तिर ने पुकारा, "ब्वॉय, और थोड़ा-सा शुगर।"

उसके बाद सोमनाथ से बोले, "झूठ क्यों कहूँ, मेरा मन और मूड बिगड़ा हुआ है। बहुत ही कॉन्फिडेन्शल है—मगर आपसे बगैर कहे रह नहीं पा रहा हूँ।"

बेयरा ने अनिच्छा से चीनी का दूसरा पॉट मेज पर रख दिया। मिस्टर नटवर मित्तिर ने फिर कहना शुरू किया :

"उसी मिस्टर सुदर्शन गोयनका की बात है जो परचेजिंग डारेक्टर ऑफ महात्मा ग्रुप ऑफ कॉटन मिल्स हैं। जो शिउली को एक घण्टे के लिए पाकर सन्तुष्ट हो गये थे और आपको एक साल के लिए केमिकल्स का एडवांस ऑर्डर दिया था, जिससे आपको हर माह सात-आठ सौ रुपये का प्रॉफिट होता है। वही गोयनकाजी मेरे एक फ्रेण्ड से एक दूसरा माल खरीदने का निगोसियेशन कर रहे हैं।

"सो उस दोस्त ने आकर मुझे पकड़ा, पैरवी का भार मुझे उठाना पड़ा और मामला मैंने अपने हाथ में ले लिया। अबके उन्हें, फॉर ए चेंज—होटेल

मार्केनी में इनवाइट करने का इन्तजाम किया। वहाँ का न्यू मैनेजमेन्ट मेरे साथ बहुत ही फ्रेन्डली है, तरह-तरह की ओके दि रेकार्ड फैसिलिटीज देता रहता है। मैंने मिस्टर गोयनका को एक मधुर विस्मय—यानी अंग्रेजी में जिसे प्लेजेन्ट सरप्राइज कहते हैं—देने का निश्चय किया। न्यू वॉटस मगर ओल्ड वाइन—मार्केनी होटल में भी मिउली को ही प्रजेन्ट करूँगा।"

सोमनाथ के पैरों में जलन महसूस हो रही थी। इन गन्दी बातों को बहुत पहले ही सोमनाथ ने भूल जाने की कोशिश की थी। बहुत मुश्किल से विस्मृति के एक अँधेरे कोटर में उस भयावह रात को सोमनाथ ने बन्दी बनाकर रखा था; लेकिन अब दरवाजा तोड़कर वही फिर बाहर निकल रही थी।

नटवर बोले, "आपसे कहना यही था कि खबरदार, मिउली की तलाश मे नहीं निकलियेगा। कम से कम तब तक जब तक कि मैं ग्रीन सिगनल न दे दूँ।"

नटवर की यह उलझन भरी बात सोमनाथ को अधीर बना रही थी।

"हाँ, तो मैं कह रहा था," नटवर ने फिर शुरू किया। "मैं साहब, सरल मन से उस लड़की को काम-काज दिलाने की खातिर टैक्सी लेकर यादवपुर पहुँचा''''मगर, मुझे सबक मिल गया कि आगे बढ़कर किसी की भलाई नहीं करनी चाहिए।"

"क्या हुआ ?" सोमनाथ के पैर पसीने से तर हो गये।

"जाने पर देखा, मिउली उस मकान से कहीं दूसरी जगह चली गयी है। आसपास का कोई व्यक्ति उसका पता नहीं बता सका। लेकिन बन्दे का नाम भी नटवर मित्तिर है। इतनी आसानी से मैं हार मानने वाला नहीं था। जरा तकलीफ उठाकर मकान मालिक से जाकर पूछा और उसने पता बता दिया।"

नटवर मित्तिर एक लमहे के लिए खामोश हो गये। "जानते हैं मिस्टर बैनर्जी, उसके बाद नये मकान के पास जाकर मैंने जब एक छोकरे से पूछताछ की तो वह आग-बबूला हो गया। मुझे ऐसा मुक्का मारा कि क्या कहूँ! देखिये न, अब तक घुमने का जख्म भरा नहीं है। स्टिकिंग प्लास्टर लगा हुआ है, नाक भी अपनी नाक जैसी नहीं लग रही है। एकाएक मुक्का चला दिया न, इसलिए घाव भरने में देर हो रही है—ब्लड शूगर है या नहीं, यह भी समझ में नहीं आ रहा। इतने दिनों तक तो सूजन नहीं रहनी चाहिए थी।"

नटवर मित्तिर अब दबे आक्रोश से फुफकार रहे थे। बोले, "तभी मैं जवाबी हमला कर सकता था—मगर मैंने पी० आर० पॉयन्ट से सोचकर देखा, हम लोगों का फाइट शुरू होते ही लोकल आदमी दौड़कर चले आयेंगे। और

पगली बंगाली जात से मुझे इस मामले में तनिक भी सिम्पैथी नहीं मिलेगी। बेवकूफ़ बंगालियों की समझ में यह बात नहीं आती कि शिउली जैसी लड़कियों का कारोबार पहले भी था, आज भी है और भविष्य में भी रहेगा। इस मॉडर्न सोसाइटी में नटवर मित्तिर तो मात्र निमित्त है।

"यह जात महाभारत की सीख भी भूल चुकी है। इन्हें मालूम नहीं है कि मेरे इस पी० आर० प्रोफेशन का मोटो है : यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि—हम तो मात्र कल-पुर्जे हैं, बिजनेस हमारा जिस तरह से नियोजन करेगा, हम उसी तरह नियोजित होंगे।"

थुथने के स्टिकिंग पलस्टर पर नटवर मित्तिर ने बड़ी सावधानी के साथ रूमाल फिराया। अब उनकी आँखें शेर की तरह जलने लगी थीं।

नटवर बोले, "जानते हैं मिस्टर बैनर्जी, मुक्के की चोट से शुरू में मेरा सब कुछ ब्लैंक हो गया। अपने बचाव के लिए मुझे रेस के घोड़े की तरह दौड़ते हुए वेटिंग टैक्सी के अन्दर कूद जाना पड़ा था। गाड़ी जब मुसीबत के दायरे से दूर निकल आयी तो आहिस्ता-आहिस्ता मेरे ब्रेन ने फिर काम करना शुरू किया। मुझे याद आया, जिस रास्कल ने मुझ पर अटैक किया था वह शिउली का बड़ा भाई था।"

नटवर मित्तिर दांत पीसने लगे। "वह वही छोकरा था सा'ब, जो पागल होकर बहुत दिनों तक पागलखाने में बन्द था।"

सोमनाथ पत्थर की तरह स्तब्ध था। वह कोई बात नहीं कर पा रहा था।

नटवर बोले, "आप सा'ब, गलती से भी शिउली की तलाश में उस तरफ नहीं जाइएगा। और हां, यह बात भी जान लें कि नटवर मित्तिर केस फाइल करने नहीं जा रहा है।"

फिर नटवर मित्तिर क्या करेंगे?

"मैं इन्सल्ट हजम नहीं करने वाला हूं—बंगालियों का यह मर्ज मेरे जैसे जातीयतावादी इंडियन के दिल में भी शेष है।" नटवर मित्तिर की बात करुण स्वीकारोक्ति की तरह लगी।

नटवर ने जेब से एक छोटी-सी डायरी निकाली। "मैंने खोज-खबर लेना शुरू कर दिया है। छोकरे का नाम सुकुमार है। एक मित्तिर की हैसियत से मैं दुख के साथ यह स्वीकार कर रहा हूं कि वे भी मित्तिर हैं—मित्र हरामजादा। उस समय मैं शिउली का असली नाम भी भूल गया था—कणा। इससे अलबत्ता

मेरा कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। बिजनेस में हमने आठ-दस नामों से कम्पनी खोली है, फिर ये प्राइवेट प्रैक्टिस्नर अलग-अलग नाम से अपनी प्रैक्टिस जारी क्यों नहीं रखेंगे ?"

नोट बही में एक-एक पाइंट लिखकर नटवर मित्तिर बोले, "उसके बाद ही गड़बड़ी हो रही है। वह एक्स पागल सुकुमार एण्ड सिउली कुछ दिन पहले अचानक दिन-दहाड़े मादवपुर से लापता हो गये हैं। सुनने में आया, भाई-बहिन का घर वालों से किसी बात पर तू-तू मैं-मैं हो गया। लेकिन मामला इतना सिम्पल हो सकता है, यह बात मेरे जैसे जन-संपर्क विशेषज्ञ को हजम नहीं हो रही है।"

"क्यों ? क्या हुआ ?" सोमनाथ के सब्र ने अब जवाब दे दिया था।

नटवर मित्तिर ने आँखें बन्द कर लीं। "मिस्टर बैनर्जी, मेरे जैसा एक ऑल राउण्डर पी० आर० कॉन्सलटेन्ट बनने में काफी वक्त लगेगा, बहुत सारे अनुभवों के इकट्ठे होने के बाद एक नटवर मित्तिर की सृष्टि होती है। हम जिस लकड़ी के बने हैं उसका टेक्सचर ही अलहदा है—सिजन्ड बर्मा टीक।

"जानते हैं, ओरिजनली मैं जापानी बम से घायल होकर बर्मा से भगा आया था। मिस्टर गोयनका ने एक बार शराब के नशे में स्वीकार किया था, बर्मा ने जो खो दिया इंडिया ने उसे हासिल कर लिया। बर्माज लॉस इज इंडियाज गेन।"

कहकहा लगाने के फेर में नटवर मित्तिर का चेहरा दर्द से बदशक्ल हो गया। सूजी हुई नाक में तनाव आ जाने के कारण नटवर मित्तिर को तकलीफ महसूस हो रही थी।

दर्द को सँभाल कर नटवर बोले, "पी० आर० लाइन की सबसे बड़ी बात है इन्वायरनमेन्ट—माहौल की जाँच करते ही सारा मर्ज पी० आर० ओ० की समझ में आ जाये। सुकुमार और सिउली माँ-बाप से झगड़कर एकाएक लापता हो गये, यह बात मानने को मेरा मन तैयार नहीं। निम्नवित्त बगाली परिवेश में मियाँ-बीवी, भाई-बहिन, माँ-बेटी, बाप-बेटे में झगड़ा चलता ही रहता है, मगर कोई इसके चलते घर छोड़कर नहीं भागता। इसीलिए थोड़ा-बहुत सन्देह हुआ।"

"उसके बाद ?" सुकुमार अब बहुत व्याकुल हो उठा था।

"बाद वाला कदम है सिउली के कार्यालय में पता लगाना। मानो पार्क स्ट्रीट मुहल्ले के टेलीफोन ऑपरेटिंग स्कूल, जहाँ से मेरे ओल्ड फ्रेण्ड चरणदास के कथनानुसार, सिउली का डेलेगशन कर आप उसे अपने साथ ले गये थे।

"वहाँ पूछताछ करने पर पता चला, शिउली कुछ दिनों से वहाँ भी नहीं आ रही है।"

नटवर मित्तिर ने सिगरेट से धुएँ का गुबार निकाला, "इस लाइन में जैसा आमतौर से होता आ रहा है, यह नहीं कहा जा सकता कि कब कौन-सी लड़की कहाँ काम करने चली गयी है। बिजनेस मोबिलिटी नामक एक शब्द है न, वही यहाँ फिट होता है।"

"मैंने अपने फ्रेण्ड से कहा; चरणदास, मेरे साथ नमकहरामी मत करो। सच-सच बताओ कि शिउली को कोई दूसरा आदमी तो बहकाकर नहीं ले गया है? इसमें अपमान की कोई बात नहीं, हाईली कंपिटीटिव मार्केट ठहरा, यहाँ सब कुछ मुमकिन है।"

"चरणदास ने कहा : माँ काली की कसम खाकर कहता हूँ। आप मेरी एक लम्बे अरसे की पार्टी हैं, मैं झूठ नहीं बोलूंगा। शिउली ने अचानक ही आना बन्द कर दिया है। हर महीने लड़कियाँ ऐसा ही करती हैं। उसके बाद एकाएक हाजिर हो जाती हैं।"

"कल-कारखानों की तरह इस लाइन में कोई डिसिप्लिन नहीं है। चरणदास ने मुझसे बार-बार कहा : आप चिन्ता नहीं कीजिए, सर। आप अपना फोन नंबर देते जाइये। शिउली आयेगी तो मैं खुद उसे आपके पास पहुँचा आऊँगा।"

नटवर बोले, "टेलीफोन के लिए आठ आने पैसे पेशगी दे आया हूँ। मगर आज तक कोई खबर नहीं मिली।"

नटवर मित्तिर ने दुबारा धुएँ का छल्ला उछाला। "मगर नटवर मित्तिर हार मानने वाला जीव नहीं। हमारी पॉलिसी है, एक बार सफल न हो सको तो ट्राइ, ट्राइ एण्ड ट्राइ। जोंक की तरह लगा हुआ हूँ। सुनने में आया है, धर्मतल्ला एरिया की किसी चीज की दुकान पर सुकुमार मित्तिर बीच-बीच में दिखायी पड़ता है। पूरे डिटेल का अभी पता नहीं चला है।

"सुकुमार मित्तिर को मैं आसानी से नहीं छोड़ूंगा, मिस्टर बनर्जी। कुछ न कुछ उपाय निकालकर ही दम लूंगा। सुकुमार मित्तिर और शिउली की फाइनल खबर मिल जाये तो पहले-पहल आपको ही सूचना दूँगा। वादा करता हूँ। नटवर मित्तिर के लिए जबान ही सब कुछ है, यह आप देख लीजिएगा।"

अन्दर से असहयोग मत करो। मैं वचन दे रहा हूँ, तुम्हारी निगाह में मैं बौना नहीं बनूँगा। पहले ही चान्स में रुपये से लेकर नया पैसा तक चुका दूँगा।"

बाद में जो कदम उठाना था, उसी के बारे में वह विस्तार के साथ सोचने लगा।

सदानंद गुप्त से मुलाकात कर सुकुमार उन्हें कुछ रुपये पेशगी के तौर पर दे आया था और दिन-क्षण सब कुछ तय कर आया था।

"खैर, इतने दिनों के बाद आपको अक्ल तो आयी।" दस रुपये के नोटों को गिनते-गिनते सदानंद ने कहा था। "एक बात जान लें, शुभ काम की तरह गड़बड़ काम में भी कभी दुविधा नहीं करनी चाहिए। आपने जो यह देर कर दी, इसके चलते आपकी, मेरी और पेशेन्ट की असुविधा डबल हो गयी। कुछ दिन पहले आये होते तो मैं आपके घर पर जाकर ही इलाज कर आता।"

"साला, इसे भी इलाज कह रहा है।" कोई और वक्त होता तो सुकुमार सदानंद के थुथने पर भी एक मुक्का जमा देता जैसा कि उसने गंजे छोटी गरदन वाले नटवर मित्तिर के जबड़े पर मारा था। लेकिन अभी सुकुमार की हालत ठूंठे जगन्नाथ की तरह है। हाथ में टाइम-टेबल थामे महाकाल के प्लेटफॉर्म पर वह समय की भागती ट्रेन के पीछे असहाय की तरह दौड़ रहा था। पावदान पर भी जगह मिलेगी या नहीं, इसमें भी सन्देह लग रहा था।

कणा को कहाँ ले आना है, उस मकान में कितने दिनों तक ठहरना होगा, सदानंद गुप्त ने सब कुछ बता दिया। "चिन्ता की कोई बात नहीं—मेरा निजी प्रतिष्ठान है। इस प्राइवेट होम का सब कुछ मेरे कंट्रोल में है। सिर्फ बाकी पैसा आप जल्दी से जल्दी लाकर दे दें।"

सुकुमार ने कणा को यह नहीं बताया था कि कितना रुपया देना होगा। फिर भी कणा ने बार-बार सवाल किया था। वैसी हालत में कणा की चिन्ता कम करने के खयाल से सुकुमार ने लाचार होकर रुपये का परिमाण बहुत ही कम बताया था।

यह रुपया कहाँ से आ रहा था, कणा की समझ में नहीं आया। "तू फिक्र मत कर कणा। अभी मिल जायेगा। धीरे-धीरे कर्ज चुका दूँगा। कणा की दुश्चिन्ता का भार और भी हल्का करने के खयाल से सुकुमार ने कहा, "फिक्र मत कर।

तू स्वस्थ होकर फिर कमाना शुरू कर देगी। मैं भी ट्यूशन शुरू करूँगा। दोनों के पैसे से कर्ज चुक जायेगा।"

"अब मैं काम नहीं करूँगी। भैया, अब मुझे काम करने के लिए नहीं भेजना।" कणा एकाएक रोने लगी। ऐसे वक्त में लड़कियाँ संभवतः बहुत ही भावुक हो जाती हैं।

सुकुमार ने कणा को बाहुओं में भर लिया। "तू अगर नहीं चाहेगी तो कोई काम पर नहीं भेजेगा, कणा मैं उस समय बीमार हो गया था, नहीं तो तुझे यूँ भी मैं काम पर नहीं जाने देता। मैं हाथ पर हाथ धरे बैठा रहूँ और मेरी बहिन आदमी के इस जंगल को ठेल-ठालकर, बस-ट्राम पर सवार हो काम पर जाये, यह मुझे कतई अच्छा नहीं लगता, कणा।"

•

"कणा, उठकर खड़ी हो जा। मेरे साथ चल।" सुकुमार का गला आर्द्र हो गया था।

सुकुमार को बड़ा ही बुरा लग रहा था। सुकुमार को हल्की-सी उम्मीद थी कि अन्ततः कणा को इस तरह सदानन्द गुप्त के गुप्त अड्डे पर नहीं ले जाना होगा। कुछ न कुछ इन्तजाम हो जायेगा। सुकुमार इसका पता लगा लेगा कि कणा की इस हालत के लिए कौन जिम्मेदार है।

लेकिन अब महाकाल के प्लेट फॉर्म पर समय का घण्टा बजने लगा था। भवितव्य की विशाल मेल ट्रेन विदा का गम्भीर संकेत दे चुकी है। इस ट्रेन को रोक रखे, सुकुमार में ऐसी ताक़त नहीं। कणा को लेकर अभी तुरन्त सवार हो जाना है—समय का संकेत महाकाल के डंके की आवाज की तरह सुकुमार के कानों में गूँज रहा था।

कणा तैयार है। इस नयी बसी-बसायी गृहस्थी को छोड़कर जाने के पहले उसने केवल एक बार करुण दृष्टि से भैया के चेहरे की ओर देखा।

लड़कियाँ बड़ी ही असहाय होती हैं। यही वजह है कि दुख के क्षण में उन लोगों के चेहरे की ओर ताकना सुकुमार को कतई अच्छा नहीं लगता।

घर से निकलने के पहले सुकुमार ने छोटी-मोटी गठरी बाँधना शुरू कर दिया।

"भैया, आज की रात के लिए मैंने खाना बना दिया है। कल सवेरे के

अन्दर से असहयोग मत करो। मैं वचन दे रहा हूँ, तुम्हारी निगाह में मैं बौना नहीं बनूंगा। पहले ही चान्स में रुपये से लेकर नया पैसा तक चुका दूंगा।"

बाद में जो कदम उठाना था, उसी के बारे में वह विस्तार के साथ सोचने लगा।

सदानंद गुप्त से मुलाकात कर सुकुमार उन्हें कुछ रुपये पेशगी के तौर पर दे आया था और दिन-क्षण सब कुछ तय कर आया था।

"खैर, इतने दिनों के बाद आपको अक्ल तो आयी।" दस रुपये के नोटों को गिनते-गिनते सदानंद ने कहा था। "एक बात जान लें, शुभ काम की तरह गड़बड़ काम में भी कभी दुविधा नहीं करनी चाहिए। आपने जो यह देर कर दी, इसके चलते आपकी, मेरी और पेशेन्ट की असुविधा डबल हो गयी। कुछ दिन पहले आये होते तो मैं आपके घर पर जाकर ही इलाज कर आता।"

"साला, इसे भी इलाज कह रहा है।" कोई और वक्त होता तो सुकुमार सदानंद के थुथने पर भी एक मुक्का जमा देता जैसा कि उसने गंजे छोटी गरदन वाले नटवर मित्तिर के जबड़े पर मारा था। लेकिन अभी सुकुमार की हालत ठूंठे जगन्नाथ की तरह है। हाथ में टाइम-टेबल थामे महाकाल के प्लेटफॉर्म पर वह समय की भागती ट्रेन के पीछे असहाय की तरह दौड़ रहा था। पावदान पर भी जगह मिलेगी या नहीं, इसमें भी सन्देह लग रहा था।

कणा को कहां ले आना है, उस मकान में कितने दिनों तक ठहरना होगा, सदानंद गुप्त ने सब कुछ बता दिया। "चिन्ता की कोई बात नहीं—मेरा निजी प्रतिष्ठान है। इस प्राइवेट होम का सब कुछ मेरे कंट्रोल में है। सिर्फ बाकी पैसा आप जल्दी से जल्दी लाकर दे दें।"

तू स्वस्थ होकर फिर कमाना शुरू कर देगी। मैं भी ट्यूशन शुरू करूँगा। दोनों के पैसे से कर्ज चुक जायेगा।"

"अब मैं काम नहीं करूँगी। भैया, अब मुझे काम करने के लिए नहीं भेजना।" कणा एकाएक रोने लगी। ऐसे वक्त में लड़कियाँ संभवतः बहुत ही भावुक हो जाती हैं।

सुकुमार ने कणा को बाहुओं में भर लिया। "तू अगर नहीं चाहेगी तो कोई काम पर नहीं भेजेगा, कणा मैं उस समय बीमार हो गया था, नहीं तो तुझे यूँ भी मैं काम पर नहीं जाने देता। मैं हाथ पर हाथ धरे बैठा रहूँ और मेरी बहिन आदमी के इस जंगल को ठेल-ठालकर, बस-ट्राम पर सवार हो काम पर जाये, यह मुझे कतई अच्छा नहीं लगता, कणा।"

•

"कणा, उठकर खड़ी हो जा। मेरे साथ चल।" सुकुमार का गला आर्द्र हो गया था।

सुकुमार को बड़ा ही बुरा लग रहा था। सुकुमार को हल्की-सी उम्मीद थी कि अन्ततः कणा को इस तरह सदानन्द गुप्त के गुप्त अड्डे पर नहीं ले जाना होगा। कुछ न कुछ इन्तजाम हो जायेगा। सुकुमार इसका पता लगा लेगा कि कणा की इस हालत के लिए कौन जिम्मेदार है।

लेकिन अब महाकाल के प्लेट फॉर्म पर समय का घण्टा बजने लगा था। भवितव्य की विशाल मेल ट्रेन विदा का गम्भीर संकेत दे चुकी है। इस ट्रेन को रोक रखे, सुकुमार मे ऐसी ताकत नहीं। कणा को लेकर अभी तुरन्त सवार हो जाना है—समय का संकेत महाकाल के डंके की आवाज की तरह सुकुमार के कानों में गूँज रहा था।

कणा तैयार है। इस नयी बसी-बसायी गृहस्थी को छोड़कर जाने के पहले उसने केवल एक बार करुण दृष्टि से भैया के चेहरे की ओर देखा।

लड़कियाँ बड़ी ही असहाय होती हैं। यही वजह है कि दुख के क्षण में उन लोगों के चेहरे की ओर ताकना सुकुमार को कतई अच्छा नहीं लगता।

घर से निकलने के पहले सुकुमार ने छोटी-मोटी गठरी बाँधना शुरू कर दिया।

"भैया, आज की रात के लिए मैंने खाना बना दिया है। कल सवेरे के

अन्दर से असहयोग मत करो। मैं वचन दे रहा हूँ, तुम्हारी निगाह में मैं बौना नहीं बनूँगा। पहले ही चान्स में रुपये से लेकर नया पैसा तक चुका दूँगा।"

बाद में जो कदम उठाना था, उसी के बारे में वह विस्तार के साथ सोचने लगा।

सदानंद गुप्त से मुलाकात कर सुकुमार उन्हें कुछ रुपये पेशगी के तौर पर दे आया था और दिन-क्षण सब कुछ तय कर आया था।

"खैर, इतने दिनों के बाद आपको अक्ल तो आयी।" दस रुपये के नोटों को गिनते-गिनते सदानंद ने कहा था। "एक बात जान लें, शुभ काम की तरह गड़बड़ काम में भी कभी दुविधा नहीं करनी चाहिए। आपने जो यह देर कर दी, इसके चलते आपकी, मेरी और पेशेन्ट की असुविधा डबल हो गयी। कुछ दिन पहले आये होते तो मैं आपके घर पर जाकर ही इलाज कर आता।"

"साला, इसे भी इलाज कह रहा है।" कोई और वक्त होता तो सुकुमार सदानंद के थुथने पर भी एक मुक्का जमा देता जैसा कि उसने गंजे छोटी गरदन वाले नटवर मित्तिर के जबड़े पर मारा था। लेकिन अभी सुकुमार की हालत ठूँठे जगन्नाथ की तरह है। हाथ में टाइम-टेबल थामे महाकाल के प्लेटफॉर्म पर वह समय की भागती ट्रेन के पीछे असहाय की तरह दौड़ रहा था। पावदान पर भी जगह मिलेगी या नहीं, इसमें भी सन्देह लग रहा था।

कणा को कहाँ ले आना है, उस मकान में कितने दिनों तक ठहरना होगा, सदानंद गुप्त ने सब कुछ बता दिया। "चिन्ता की कोई बात नहीं—मेरा निजी प्रतिष्ठान है। इस प्राइवेट होम का सब कुछ मेरे कंट्रोल में है। सिर्फ बाकी पैसा आप जल्दी से जल्दी लाकर दे दें।"

सुकुमार ने कणा को यह नहीं बताया था कि कितना रुपया देना होगा। फिर भी कणा ने बार-बार सवाल किया था। वैसी हालत में कणा की चिन्ता कम करने के खयाल से सुकुमार ने लाचार होकर रुपये का परिमाण बहुत ही कम बताया था।

यह रुपया कहाँ से आ रहा था, कणा की समझ में नहीं आया। "तू फिक्र मत कर कणा। अभी मिल जायेगा। धीरे-धीरे कर्ज चुका दूँगा। कणा की दुश्चिन्ता का भार और भी हल्का करने के खयाल से सुकुमार ने कहा, "फिक्र मत कर।

तू स्वस्थ होकर फिर कमाना शुरू कर देगी। मैं भी ट्यूशन शुरू करूँगा। दोनों के पैसे से कर्ज चुक जायेगा।"

"अब मैं काम नहीं करूँगी। भैया, अब मुझे काम करने के लिए नहीं भेजना।" कणा एकाएक रोने लगी। ऐसे वक्त में लड़कियाँ संभवतः बहुत ही भावुक हो जाती हैं।

सुकुमार ने कणा को बाहुओं में भर लिया। "तू अगर नहीं चाहेगी तो कोई काम पर नहीं भेजेगा, कणा मैं उस समय बीमार हो गया था, नहीं तो तुझे यूँ भी मैं काम पर नहीं जाने देता। मैं हाथ पर हाथ धरे बैठा रहूँ और मेरी बहिन आदमी के इस जंगल को ठेल-ठालकर, बस-ट्राम पर सवार हो काम पर जाये, यह मुझे कतई अच्छा नहीं लगता, कणा।"

•

"कणा, उठकर खड़ी हो जा। मेरे साथ चल।" सुकुमार का गला आर्द्र हो गया था।

सुकुमार को बड़ा ही बुरा लग रहा था। सुकुमार को हल्की-सी उम्मीद थी कि अन्ततः कणा को इस तरह सदानन्द गुप्त के गुप्त अड्डे पर नहीं ले जाना होगा। कुछ न कुछ इन्तजाम हो जायेगा। सुकुमार इसका पता लगा लेगा कि कणा की इस हालत के लिए कौन जिम्मेदार है।

लेकिन अब महाकाल के प्लेट फॉर्म पर समय का घण्टा बजने लगा था। भवितव्य की विशाल मेल ट्रेन विदा का गम्भीर संकेत दे चुकी है। इस ट्रेन को रोक रखे, सुकुमार में ऐसी ताकत नहीं। कणा को लेकर अभी तुरन्त सवार हो जाना है—समय का संकेत महाकाल के डंके की आवाज की तरह सुकुमार के कानों में गूँज रहा था।

कणा तैयार है। इस नयी बसी-बसायी गृहस्थी को छोड़कर जाने के पहले उसने केवल एक बार करुण दृष्टि से भैया के चेहरे की ओर देखा।

लड़कियाँ बड़ी ही असहाय होती हैं। यही वजह है कि दुख के क्षण में उन लोगों के चेहरे की ओर ताकना सुकुमार को कतई अच्छा नहीं लगता।

घर से निकलने के पहले सुकुमार ने छोटी-मोटी गठरी बाँधना शुरू कर दिया।

"भैया, आज की रात के लिए मैंने खाना बना दिया है। कल सवेरे के

लिए रोटी और आलू की सब्जी रखी हुई है।" कणा को मालूम था कि भैया इन कामों में निपुण नहीं था। भैया से रसोई पकाने का काम नहीं हो सकता —एक प्याली चाय अपने हाथों से बना ले, इसकी भी उसे जानकारी नहीं।

अगले प्रातःकाल की सारी व्यवस्था के बारे में सुकुमार सुन चुका था। लेकिन उसके बाद ? भविष्य की चिन्ता बड़े लोगों की विलासिता है, सुकुमार को अगले कल के सवेरे तक कुछ सोचना नहीं है, यही काफी था।

पें-पें-पें—पंचानन कर्मकार के टेम्पो का हॉर्न आज सुकुमार के घर के सामने ही बज रहा था।

"आ गया, सर। आज मैं खुद आपको डिस्टर्ब करने पहुँच गया। आपने तो किसी दिन मुझे बुलाया नहीं।" सुकुमार को पंचानन ने शर्म में डाल दिया। उसे पंचानन की याद न आयी हो, ऐसी बात नहीं। लेकिन सुकुमार क्योंकर उसे इस परिस्थिति में बुलाकर ले आता ?

सुकुमार ने कहा, "पंचानन बाबू, गलती के लिए मुझे क्षमा करें। काम में बुरी तरह फँस गया था।"

जाने के वक्त यह किस तरह की अड़चन आ रही थी। सुकुमार आज स्वयं भी देवता को प्रणाम कर रहा था। देवता की दया ममता पर से उसका विश्वास बहुत पहले ही उठ चुका था। लेकिन देवता एम्प्लॉयमेंट एक्सचेंज के समान हैं, जवाब नहीं आयेगा, यह जानते हुए भी हाथ पर हाथ धरे बैठा नहीं जा सकता —पोस्टल ऑर्डर के साथ आवेदन-पत्र भेजते ही रहना पड़ता है।

सुकुमार ने गरदन बढ़ा कर देखा, पंचानन कर्मकार का टेम्पो किराये के माल से लदा था। हांड़ी-घड़ा चौकी से लेकर रजाई तोशक, गावतकिया, खाट वगैरह गृहस्थी का पूरा सामान ही उस पर रखा हुआ था। लगता था आज घर के निकट ही पंचानन कर्मकार को किराये का माल मिल गया था।

"बहुत ही गुस्सा आ रहा होगा ? बिना सूचना दिये सुबह-सुबह डिस्टर्ब करने पहुँच गया।" पंचानन ने फिर बातचीत करना शुरू कर दिया।

"नहीं इसमें डिस्टर्ब होने की कौन-सी बात है ?" अप्रस्तुत सुकुमार ने उधेड़-बुन के साथ कहा।

"अरे भाभीजी !" पंचानन की दृष्टि अब कणा पर गई। "गुड मॉर्निङ्ग भाभी जी ! मालिक को साथ लिए सुबह-सुबह कहाँ निकल रही हैं ? या फिर नये सिरे से हनीमून मनाये जा रही हैं ?"

पंचानन ने कहा, "मिसेज अब इस मकान में लौटने को राजी नहीं हैं--मन में बहुत चोट लगी है। अस्पताल से सीधे दक्षिणेश्वर के एक मकान में ले जाऊँगा। इसलिए आज अपना ही माल ढो रहा हूँ। आप तो जानते ही हैं कि मैं किरायेदार का माल नहीं ढोता।"

"गुड बाइ सर ! इस नाचीज को याद रखिएगा।"

सुकुमार की आँखों के सामने धुएँ का गुबार छोड़, यांत्रिक चीख की ओट में ड्राइवर की असह्य यातना को छिपाकर पंचानन का टेम्पो हावड़ा जी• टी० रोड की ओर बढ़ गया।

०

बिना हत्थे की कुरसी पर बैठे अबलाबंधु सदानन्द गुप्त तल्लीन होकर सबेरे का अखबार पढ़ रहे थे। उनका कम उम्र का नौकर तिपाई पर बैठे-बैठे दांतों से नाखून काट रहा था।

अबलाबंधु बोले, "यह मुल्क चोर-उच्चकों से भर गया है। कल भी एक नौकर गृह-वधू के कान का टॉप्स लेकर भाग गया। मगर यह नाकारा गवर्नमेन्ट कुछ भी नहीं कर रही है।"

लगा, नौकर ने नाखून काटना बन्दकर एक क्षण के लिए मालिक की बात का समर्थन किया।

सदानन्द ने अब राय जाहिर की, "अखबार पढ़ने का मन नहीं करता। हर पन्ने पर करप्शन का न्यूज भरा है। फ्रान्ट पेज में नेताओं का करप्शन, दूसरे में विज्ञापनदाताओं का करप्शन, तीसरे में सरकारी अफसरों का करप्शन, चौथे में करप्शन पर संपादकीय, पांचवें में शेयर मार्केट का करप्शन और स्पोर्ट्स पेज में क्लब के पदाधिकारियों का करप्शन। लेकिन सरकार आँख बन्द किए बैठी हुई है। यह मुल्क ज्यादा दिनों तक चल नहीं पायेगा, जगा। ये लोग किसी को ऑनेस्टली टिकने नहीं देंगे।"

कणा और सुकुमार पर नजर पड़ते ही जगा उठकर खड़ा हो गया।

"आ गये !" चेहरे के सामने से अखबार हटाकर सदानन्द उन लोगों का स्वागत किया।

"जाओ बिटिया, अन्दर चली जाओ। जगा तू बिटिया को अपने साथ लेकर तीन नंबर कमरे का ताला खोल दे। चिन्ता की कोई बात नहीं है, बेटी। और भी बहुत सारे पेशेन्ट हैं। यह हम लोगों का बिजी सीजन है।"

"जगा, तू दाँत निपोर कर क्या देख रहा है ? ताला खोलकर हैण्डबिल चिपकाने चला जा।"

अब सदानन्द गुप्त ने सुकुमार की ओर आँखें फेरी। "क्या कहूँ साहब, चिन्ताहरण राय, एम० डी० (होमियो०) ने अपना हैण्डबिल चिपकाकर मेरे हैण्डबिलों को नीचे दबा दिया है। बताइये तो, पब्लिसिटी का खर्च व्यर्थ ही कितना बढ़ जाता है। दुख की बात क्या कहूँ, चिन्ताहरण और मैं एक ही तरह के प्रोफेशन में है मगर कोई 'ऐथिक्स' नहीं है।"

सुकुमार के नोटों को सदानन्द गुप्त ने गिन लिया। "नही मिला न ! वह चिल्ला पड़े। अब भी डेढ़ सौ रुपया कम पड़ रहा है।"

सुकुमार को मालूम है कि अब भी डेढ़ सौ रुपया कम है। "मिल जायेगा, आज ही मिल जायेगा", सुकुमार आश्वासन देता है।

"खैर, तीसरे पहर पांच बजे तक मैं इन्तजार करूंगा।" मगर पेशेन्ट को आप अभी ही क्यो ले आये ? दूर रहते हैं क्या ? यहाँ उतार कर ऑफिस जा रहे हैं ? ठीक है ? पेशेन्ट की सुविधा के चलते मुझे असुविधा का सामना करना ही पड़े तो कोई बात नही।

"लेकिन एक बात जान लें। जब तक रुपया मेरे हाथ में नही आ जाता है तब तक असली काम में हाथ नही लगाऊँगा।"

"आप चिन्ता नही करें। मैं तीसरे पहर पाँच बजे तक रुपया लेकर पहुँच जाऊँगा।" सुकुमार दबी जबान में सदानन्द से वायदा करता है।

कणा से दुबारा मिलकर सुकुमार शोरगुल से भरे कलकत्ते के प्रशस्त, राजपथ पर निकल आया था। सुकुमार को बेहद गरमी लग रही थी। गला सूख गया था। निकट ही ठण्डा पानी मिलता था मगर उसकी कीमत ली जाती थी ?

"धत्त ! यह कोई अफ्रीका की मरुभूमि है कि प्यास बुझाने के लिए पानी भी खरीदना होगा ?" सुकुमार दुकान पर ही जाकर पानी पियेगा।

मगर कोयले की दुकान की बात याद आते ही सुकुमार का गला और अधिक सूखने लगा। सुकुमार ने थूक निगलने की कोशिश की। लेकिन प्यास कम होने का नाम नही ले रही थी।

आसपास कही काशी विश्वनाथ सेवा समिति का प्याऊ है या नही, सुकुमार

ने देख लिया। दूर एक झोंपड़ा दीख रहा था। सुकुमार वहाँ गया। लेकिन वहाँ ताला वन्द था—आसपास कहीं कोई आदमी नहीं था।

सड़क पर ट्यूववेल हो सकता है। थोड़ी दूर चलने के वाद ही एक ट्यूववेल मिला। लेकिन सरकारी नलकूल नाकाम होकर पड़ा था—हत्थे को शायद किसी ने उखाड़ कर वेच दिया था।

गला और ज्यादा शुष्क होता जा रहा था। गाँठ से पैसा निकालकर गिलास का पानी पिया जा सकता था। लेकिन सुकुमार पर जिद सवार हो गई थी। सुकुमार किसी भी हालत में पैसा देकर पानी नहीं पियेगा—यह क्या कोई मरुभूमि है?

आज सुकुमार को वड़ा ही वुरा लग रहा था। वह इतने दिनों तक जिन्दा है। सोमनाथ के साथ वैठकर उसने एक दिन हिसाव किया था। तीन सौ पैंसठ से उम्र का गुणा करने पर पता चला लगभग दस हजार दिन! इस दस हजार में से कोई दिन आज जैसा वुरा नहीं गुजरा था। वह जिस ओर जाना नहीं चाहता, कोई उसे ढकेलकर उसी ओर ले जा रहा था।

जी-जान से उवरने की कोशिश करने पर भी सुकुमार की शिकस्त ही हो रही थी। इस हृदयहीन शहर में उसका किसी भी चीज पर अधिकार नहीं—यहाँ तक कि अपने आप पर भी नहीं। लेकिन सुकुमार को अव भी पता नहीं था कि निकट भविष्य में और भी कौन-सा आश्चर्य उसका इन्तजार कर रहा था।

•

क्रिंग-क्रिंग।

भाभी के द्वारा वनाया गया नाश्ता सुकुमार ने खत्म कर ठण्डे पानी की ओर हाथ वढ़ाया ही था कि तभी ऑफिस-टेलीफोन ने वजना शुरू कर दिया।

"हैलो सोमनाथ वावू? हैलो? नटवर मित्तिर स्पीकिंग, हैलो···हैलो···· वीस मिनट से डायल कर रहा हूँ पर आप मिल ही नहीं रहे हैं। फोन क्यों रखा है? फोन के वड़े पदाधिकारी से कहिये कि इस मशीन को उठाकर कीर्त्तन करते हुए अपने ऑफिस के सामने लालदीघी में उसका विसर्जन कर दें। उन्हें पुण्य प्राप्त होगा और हमें भी शान्ति मिलेगी।"

फोन पर झल्लाये रहने के वावजूद वातचीत के तेवर से सोमनाथ को पता चल गया कि नटवर मित्तिर प्रसन्नता के मूड में थे।

"टेलीफोन के जेनेरल मैनेजर से जरा स्पेशल पब्लिक रिलेशन कीजिये न," सोमनाथ ने चुटकी ली।

"पब्लिक रिलेशन के बाहर चला गया है। अभी टेरोरिस्टों से संपर्क बनाने का वक्त आ गया है। मगर वैसा कैसा कर भी सकते हैं? टेलीफोन ही खराब है। लाइन अगर मिल भी जाये तो टेरोरिस्टों को आपका एक भी शब्द सुनायी नहीं पड़ेगा।"

"आप कोई-कोई बात बहुत ही दिलचस्प कह जाते हैं, मिस्टर मित्तिर।"

टेलीफोन को थामे ही नटवर मित्तिर हँसने लगे। अपनी टेलीफोन डाइरेक्टरी पर एक और बात लिखकर रख लें। बड़ा ही इम्पॉर्टेन्ट कोटेशन है। *शायद""शायद क्यों, निश्चय ही यह बात शेक्सपीयर ने कही है—'एवरी नेशन* गेट्स द टेलीफोन इट डिजर्व्स।' जैसा मुल्क वैसा ही टेलीफोन! जनाब, चोर, निकम्मा, फरेबी और हड्डी में घुन लगे इस मुल्क मे टेलीफोन बैटर क्यों होगा? नो-रिप्लाई, क्रॉस-कनेक्शन, लाइन डेड यह सब तो होगा ही। शेक्सपीयर ने शायद यही समझाने की कोशिश की है।"

"शेक्सपीयर के वक्त में टेलीफोन था?"

"रहना जरूरी नहीं है। वे लोग सत्यद्रष्टा ऋषि थे—वाल्मीकि, शेक्सपीयर, टैगोर। कलिकाल में ऐसा होगा, यह बात रामायण-युग में शेक्सपीयर को मालूम थी।"

"हैलो, हैलो, हैलो!" सोमनाथ को खुलकर हँसने का मौका नटवर मित्तिर ने नहीं दिया। "हैलो मिस्टर बैनर्जी, आपको जिस लिए टेलीफोन किया है, उसका मकसद एक खुशखबरी सुनानी है। वेरी गुड न्यूज। आपको किसी दिन सन्देश खिलाऊँगा।"

"खबर क्या है?" सोमनाथ जानना चाहता है।

"हैलो। उस सुकुमार मित्तिर को, जिसने मेरे थुथुने में मुक्का मारकर मेरा इनसल्ट किया था, मैंने खोज निकाला है। हैलो, एक और खुशखबरी है। सुकुमार मित्तिर, बाइ दिस टाइम, पुलिस की हवालात में है।"

"सुकुमार अरेस्टेड!" सोमनाथ के विस्मय का खुमार उतरे कि इसके पहले ही टेलीफोन लाइन कट गयी।

दुबारा रिंग होगा, इस उम्मीद में सोमनाथ टेलीफोन के निकट अधीर आग्रह के साथ इन्तजार करने लगा। नटवर मित्तिर इस भरी दुपहरी में कैसा बुरा समाचार दिया।

सोमनाथ सोच भी नहीं पा रहा था कि सुकुमार पुलिस के हाथ में क्यों कर पड़ सकता है !

सुकुमार को सोमनाथ अच्छी तरह पहचानता है। उन लोगों ने एक साथ बहुत सारे दिन गुजारे हैं। सुकुमार पढ़ने-लिखने में भले ही अच्छा न रहा हो, नौकरी के इंटरव्यू में भले ही सफल नहीं हो पाया हो, लेकिन आदमी के लिहाज से वह बहुत ही भला था। दुनिया में उसे कितने ही अभावों की यातना सहनी पड़ी थी ! मगर वह किसी से भी ईर्ष्या नहीं करता, किसी पर भी उसे गुस्सा नहीं, किसी के प्रति शिकवा-शिकायत नहीं।

सुकुमार बड़े ही शान्त और स्निग्ध स्वभाव का है। उसने इतनी तकलीफ झेली है, इतनी उपेक्षा के साथ उसका लालन-पालन हुआ है, फिर भी उसने आदर्श का पल्ला नहीं छोड़ा। न्याय-अन्याय का बोध भी सुकुमार में सदैव प्रबल रूप में रहा है। एक बार सुकुमार सोमनाथ के साथ ट्राम पर सवार हो खेल के मैदान की तरफ जा रहा था। कन्डक्टर ने गलती से खुदरा पैसे के साथ एक अठन्नी अधिक दे दी थी। "लगता है, आपके पास पैसा ज्यादा हो गया है।" यह कहकर सुकुमार ने कन्डक्टर को अठन्नी वापस कर दी थी, हालांकि उसी दिन पैसे की कमी की वजह से सुकुमार को पैदल चलकर घर वापस आना पड़ा था। बेचारा सुकुमार ! ईश्वर हर तरह से उसे मुसीबत में डाल रहे हैं। परीक्षा में कोई कारनामा नहीं दिखा सका, उसके लिए नौकरी की भी कोई संभावना नहीं, कोई पैतृक संपत्ति नहीं, सुख नहीं, स्वास्थ्य नहीं, मानसिक संतुलन खोकर अस्पताल से भी हो आया है। पूरे तौर पर निस्संग हो गया है। सोमनाथ को याद आया, दिली दोस्त होने के बावजूद सोमनाथ ने उसे त्याग दिया था। दोनों में अब मुलाकात नहीं होती।

सोमनाथ के अन्दर की बेचैनी और ज्यादा बढ़ती जा रही थी। अब गहरे अँधेरे में एक और मूर्त्ति उसके सामने तिर आयी—वह कणा थी। ग्रेट इंडियन होटल के गलियारे में सुकुमार की बहिन का फ्रीज होता हुआ चेहरा सोमनाथ को अच्छी तरह दिखायी पड़ रहा था।

अब सुकुमार के जिस्म में असह्य पीड़ा होने लगी। सोमनाथ को उस दिन सुनने में आया था, सुकुमार अपने सिर टिकाने लायक स्थान से भी वंचित हो गया है—किसी एक अज्ञात कारणवश कणा को अपने साथ ले अज्ञातवास करने निकल गया है।

"सोमनाथ, फिर भी तुम बैठे हो ? यह सब सुनने के बावजूद तुम्हारे अन्दर

कोई घबराहट नहीं हो रही है ? कोई उद्वेग या दुख तुम्हें महसूस नहीं हो रहा है ?" कोई जैसे सोमनाथ को अन्दर से तोड़ने की कोशिश कर रहा था।

"क्या कहते हैं ? सोमनाथ, अब भी क्या तुम मित्र से मिलने की बात नहीं सोचते ?"

"मैं क्या मुँह दिखाने लायक रह गया हूँ ? मैं कौन-सा मुँह लेकर सुकुमार के पास जाऊँगा, कैसे उसकी आँख से आँख मिलाऊँगा ?" सोमनाथ स्वयं से बहस करने लगा लेकिन उसे शान्ति नहीं मिली।

अन्दर की पीड़ा रफ्ता-रफ्ता बढ़ती ही जा रही थी। सोमनाथ ने दो-चार बार टेलीफोन डायल किया लेकिन जब नंबर न मिला तो वह जल्दी-जल्दी दफ्तर से बाहर निकल आया।

•

"बात क्या है ? आप खुद ही चले आये ?" कैमेक स्ट्रीट ऑफिस में सोमनाथ को देखकर मिस्टर नटवर मित्तिर बेहद खुश हुए।

आदर के साथ सोमनाथ को बिठाते हुए नटवर मित्तिर बोले, "सस्पेन्स ऐसी चीज होती है कि आप आये बगैर रह नहीं सके। बहरहाल, मुझे मालूम था कि खुशखबरी सुनकर आप भी सुखी होइएगा।

"फिर सन्देश का दौर आज ही चले।" नटवर मित्तिर ने बेयरा को बुलाने के लिए घण्टी बजायी।

"सन्देश नहीं चाहिए। थोड़ा-सा पानी दें।" सोमनाथ का गला सूख रहा था। अपने दफ्तर में वह थोड़ी देर पहले ही पानी पी चुका था, लेकिन उसकी छाती दुबारा फिर सहारा की मरुभूमि होती जा रही थी। नटवर बाबू से कहने से कोई फायदा नहीं कि सोमनाथ असह्य यातना से गुजर रहा था। घूमता-फिरता है, बैठता है, काम करता है, घर लौटकर सोने की कोशिश करता है, लेकिन हर वक्त अन्दर की बेचैनी छलक-छलक पड़ती है। सोमनाथ सपना देखता है—उसकी छाती के अन्दर रेत तप रही है। कहीं हरियाली का नामोनिशान नहीं है। इस मरुभूमि पर आँख जाते ही गहरी नींद में भी सोमनाथ को प्यास लगने लगती है।

एक गिलास पानी लहमे-भर में खत्म कर सोमनाथ ने दुबारा पानी की माँग की।

नटवर बाबू बोले, "अब सन्देश खाने के बाद ही पानी पीजिएगा।"

मगर सोमनाथ को पानी की ही जरूरत है। नटवर को बात समझ में नहीं आयी।

"आप सोच रहे हैं कि सन्देश आने में देर होगी। बेयरा को अब शायद दुकान भेजूंगा? दिस इज नटवर मित्तिर्स मैनेजमेन्ट। पब्लिक रिलेशन, अन्यान्य रिलेशनों की तरह मस्ट बिगिन एट होम। कब कौन-से इम्पॉर्टेन्ट क्लाइन्ट या पेशेन्ट यहाँ आ धमकें, इसका कोई ठीक नहीं रहता—इसलिए नमकीन, मिठाई, वेजिटेरियन, नॉन-वेजिटेरियन आइटम्स राउन्ड दि क्लॉक रेडी रखना पड़ता है।"

नटवर हँसने लगे। "'पेशेन्ट' शब्द आपकी समझ में आया तो? हम लोगों की लाइन में यह एक बिलकुल लेटेस्ट टर्म है। जिनके लिए पब्लिक रिलेशन में काम किया जाता है, वे हैं क्लाइन्ट, और क्लाइन्ट के लिए जिन्हें मैनेज करने की कोशिश की जाती है, वे हैं 'पेशेन्ट'। इतने दिनों तक अंग्रेजी का जो शब्द चालू था, वह है टार्जेन्ट—लक्ष्य। लेकिन इससे जनाब 'शिकारी' जैसा भाव झलकता है। जैसे किसी को लक्ष्य बनाकर मैं मनसूबा गांठ रहा हूं। हम लोगों के इस नान-वाइलेन्ट गांधियन मुल्क में इससे बहुत बड़ी असुविधा का सामना करना पड़ता है। उसके बनिस्बत पेशेन्ट—डॉक्टरी का यह शब्द स्वीट, सजेस्टिव और सिम्बॉलिक है।" नटवर मित्तिर जैसे दार्शनिक की दिव्य दृष्टि से उद्भासित हो उठे।

नटवर बाबू किसी तरह की नाहीं सुनने को राजी नहीं हुए। सोमनाथ को सन्देश खाना ही पड़ा।

नटवर मित्तिर ने स्वागत-सत्कार की हद कर दी थी। अब उन्होंने एक कीमती विलायती सिगरेट भी आगे बढ़ा दी। "जरा रिलैक्स कीजिये, मिस्टर बैनर्जी। आज मेरे लिए बहुत खुशी का दिन है। समझे न, धर्म की जीत आखिर में होती है।"

नटवर मित्तिर ने सिगरेट से ढेर सारा धुआं पिचकारी की तरह फेंका। आज मैं बहुत ही सैटिस्फाइड फील कर रहा हूं—उस सुकुमार मित्तिर को लेकर।"

"आज मैं स्वीकार कर रहा हूं, उस हरामजादे सुकुमार ने घूंसा सिर्फ मेरे जबड़े, होंठ और नाक पर ही नहीं मारा था, मेरे मन में भी उससे चोट लगी थी। बहुत दिनों से मैं टेरिबली इन्सल्टेड फील कर रहा था।"

नटवर मित्तिर ने फिर धुआं उछाला। "मामले पर गौर कीजिये। तुम

साले बूढ़े बड़े भाई हो, काम-धंधा करने के बजाय घर पर बैठे रहोगे। बहिन की जिस्म-फरोशी से पैदा किये गये पैसे की रोटी खाने में तुम्हें शर्म नहीं लगती, और जितना दोष है सब इसी नाचीज का? मैं सा'ब गुडफेप में शिउली के पिक अप करने के लिए जाने पर फॉर नथिंग मार खा बैठा। मुल्क में लॉ और ऑर्डर नहीं है वरना वहीं फैसला हो जाता।"

नटवर की आँखें जल रही थीं। "बेटे, अगर प्रेस्टिज का इतना ख्याल है तो बहिन की शादी क्यों नहीं करते? बहिन को बाजार में निकलने को मजबूर ही क्यों करते हो।"

"खैर, मैं कह रहा था, सुकुमार की बाबत मेरा रिसर्च और एनैलिसिस बड़े काम में आया।"

"आखिर में सूचना मिली, वाछेल मुल्ला के पिछवाड़े की तरफ कोयले की एक दुकान में छोकरा मैनेजरी कर रहा है। एज लक वुड हैव इट, उस दुकान के मिस्टर घोष से मेरी थोड़ी जान-पहचान है लेकिन वह भी अपने हेड ऑफिस को खराब कर मेन्टल हॉस्पिटल चले गये हैं। इसलिए सोच रहा था कि सुकुमार मित्तिर को टाइट करने के लिए कौन-सा स्पेशल इन्तजाम करूँ। तभी बिन माँगे मोती मिल गया। गॉड इज गुड। आज सुकुमार भाई जान खुद ही पुलिस के चक्कर में फँस गये।"

सुकुमार का गला फिर सूखने लगा। वह फटी-फटी आँखों से नटवर मित्तिर की ओर ताक रहा था।

नटवर मित्तिर बोले, "कितने शर्म की बात है। आपसे क्या कहूँ! मैं आज प्राइवेटली शिउली के बारे में यह पता लगाने गया था कि वह सचमुच ही कलकत्ते से चली गयी है या नहीं। कोई भी अच्छी चीज साले यहाँ नहीं रहने देंगे—झींगा मछली, भेट की मछली, आम वगैरह सभी कुछ तो बाहर के आदमी खींचकर ले जाते हैं।"

नटवर मित्तिर को जरा खाँसी आ गयी। "जाने पर देखा सा'ब, शोर-गुल मचा हुआ है। सुकुमार मित्तिर ने दुकान का पैसा चुरा लिया था। कई दिनों से थोड़ा-थोड़ा हटा रहा था। पिछली रात अस्पताल से निकलकर दुकान के मालिक मिस्टर घोष वापस आ गये हैं। आज सवेरे ही रहस्य की बिल्ली थैली से बाहर निकल आयी। थोड़ी देर पहले दुकान का कैश गबन करने के कारण हम लोगों के सुकुमार मित्तिर रँगे हाथों पकड़ लिये गये। देखिये, कैसा मामला है! बीमार आदमी की औरत और कमसिन लड़की ने उसी के विश्वास बिजनेस छोड़ दिया था और वही किस अक्लमन्दी से रुपया उड़ा रहा था?"

नटवर मित्तिर ने अपना गंजा सिर खुजलाया। "लेकिन मामूली चोर है सा'ब—सिर्फ डेढ़ सौ रुपया भर उड़ाया था। मैंने जाकर पुलिस को फोन कर दिया और कहा, मार-पीट अगर कुछ करना है तो अभी तुरन्त करो। पुलिस आने के बाद कानून को अपने हाथ में लेना हमारे मुल्क में हाई लेवेल पर कोई पसन्द नहीं करता।"

और एक अदद सन्देश खाने के लिए नटवर मित्तिर बहुत दबाव डालने लगे।

"एक चीज आज स्पष्ट हो गयी सोमनाथ बाबू। उठाईगीरी और धर्म—ये दोनों अब तक कैलकटा सिटी में मौजूद हैं।"

सिर के अन्दर का हिस्सा जैसे चक्कर-सा काट रहा था। सोमनाथ संदेश खाये बिना ही उठकर खड़ा हो गया।

नटवर तब भी कहे जा रहे थे, "उस शोरगुल और हंगामे में शिउली की फाइनल खबर की जानकारी प्राप्त नहीं कर सका। सुनने में आया है, हावड़ा साइड में कहीं रह रही है। लेकिन यह अज्ञातवास क्यों? दिस इज ए रहस्य। ए रियल मिस्ट्री।"

सोमनाथ तुम अब भी खड़े हो? स्कूटर के नजदीक खड़े होकर तुम अब भी क्या सोच रहे हो?—अन्दर से जैसे किसी ने सुकुमार की भर्त्सना की।

दिली दोस्त सुकुमार मुसीबत में पड़ा हुआ है, और तुम यहाँ निश्चल होकर खड़े हो। सोमनाथ का अभ्यन्तर अब हल्का हो रहा था। इतने दिनों तक लाज और भय से वह सुकुमार के पास नहीं जा सका था। सोचा था, सुकुमार को चाहे सब कुछ मालूम हो चाहे न हो, सोमनाथ अपना यह काला मुँह उसे कैसे दिखाएगा? मगर अब अपनी बात सोचने का वक्त नहीं है, सुकुमार बेचारा मुसीबत में फँसा हुआ है।

और कणा? अपनी चिन्ता के बीच कणा को खींचकर लाने की उसे इस क्षण कतई इच्छा नहीं थी। लेकिन वही काले गाउन वाला कापालिक अचानक अदृश्य लोक से आकर पूछने लगा, "एण्ड ह्वाट एबाउट कणा? मिस्टर सोमनाथ बैनर्जी, आपके उस पुराने केस का जजमेंट अब तक नहीं दिया गया है। सुदर्शन गोयनका के माहवार बिजनेस को छोड़कर जनाब यह सोच रहे हैं कि

पाक-साफ हो गये ? यू नो, गोयनका के पैसे के बगैर भी आपका काम चल आयेगा। क्योंकि आपको सोहिनी मिल्स का ऑर्डर मिल गया है मगर हम जानते हैं कि सोहनी मिल्स का ऑर्डर आपको कैसे मिला—आपने यह लिखकर वहाँ प्रवेश किया है कि सुदर्शन गोयनका आपका माल खरीदता है। हमें पता है कि कल आपको एक और ऑर्डर मिला है वहाँ भी आपने सिर्फ सोहिनी मिल्स का ही रेफरेन्स दिया है। आपने गोयनका का नाम नहीं लिया है। लेकिन सोहिनी मिल्स नाम के साथ ही सुदर्शन गोयनका नाम लिपटा हुआ है।"

सोमनाथ पसीने से भीग गया था। वह समझ रहा था, सुदर्शन गोयनका को उसके जीवन से पूरी तौर पर मिटाना संभव नहीं है—ग्रेट इडियन होटल का वह सर्वनाशक विष अब तक उसके व्यावसायिक और व्यक्तिगत जीवन की नस-नस में फैल चुका था।

सोमनाथ स्वयं को असहाय जैसा अनुभव कर रहा था। हे राम, मैं किस विपदा में पड़ गया ? मात्र एक दिन की गलती के कारण मैं आहिस्ता-आहिस्ता सिर से पैर तक विषाक्त हो गया ? सोमनाथ बैनर्जी विषकन्या की तरह विषपुत्र हो गया है।

"इस तरह गुमसुम होकर खड़े-खड़े क्या सोच रहे हैं भाई साहब, सोचना है तो पार्क के अन्दर चले जाइये," जनारण्य का एक अनजाना राहगीर सोमनाथ को धक्का देकर और अपनी नाखुशी जाहिर कर चला गया था।

सोमनाथ ने अब देर नहीं की। वह करीब-करीब अपने मन को दृढ़ कर चुका था।

•

सोमनाथ का स्कूटर तीर की तरह आगे बढ़ रहा था। थोड़ी देर पहले ही बाठेल मुल्ला के पिछवाड़े की कोयले की दुकान से उसने सारी बातों का पता लगा लिया था। वहाँ पता चला कि सुकुमार को कोतवाली ले जाया गया है।

एक आदमी ने कहा, "बिलकुल गँवार आदमी है साहब। मामूली डेढ़ सो रुपये के लिए भी कोई इस तरह अपनी इज्जत में बट्टा लगाता है ?"

"छिप-छिपकर जरूर ही रेस खेलता होगा।" एक दूसरे आदमी ने अपनी राय जाहिर की।

एक और आदमी ने कहा, "देखकर कभी ऐसा नहीं लगता था कि पेट में इतना पाप भी होगा।"

"चालू माल है भैया, इतने-इतने तमाचे लगने के बावजूद यह नहीं बताया कि रुपया लेकर क्या करने जा रहा था।" सोमनाथ से अब यह सब बरदाश्त नहीं हो रहा था।

सोमनाथ ने और वक्त जाया नहीं किया। स्कूटर की चाल उसने और ज्यादा तेज कर दी।

सोमनाथ कोतवाली पहुँच गया था। डेस्क सार्जेन्ट से बहुत अनुनय-विनय करने के बाद सोमनाथ को मुजरिम से मिलने की अनुमति प्राप्त हुई।

सोमनाथ लॉकअप की तरफ बढ़ रहा था। कितने आश्चर्य की बात थी कि सोमनाथ को अब जरा भी डर नहीं लग रहा था। अभी मुलाकात होगी, यह सोचकर भी उसके पांव थरथरा नहीं रहे थे।

अन्ततः दोनों मित्रों में भेंट हुई। आखिरी मुलाकात के बाद जैसे लाखों युग बीत चुके हों—इस बीच असंख्य पुनर्जन्मों के बीच से गुजरकर सोमनाथ और सुकुमार दोनों ही—दो दूसरे व्यक्तियों के रूप में बदल चुके थे।

"सुकुमार, मेरी आंखों की ओर मत देखो। वक्त के साथ-साथ मैं भी जहरीला हो गया हूँ," सोमनाथ ने सोचा था कि शुरू में वह यही बात कहेगा।

लेकिन हवालात में बन्द लहू-लुहान सुकुमार को देखकर वह एक शब्द भी न कह सका।

"सोमनाथ! तू यहाँ!" सुकुमार को यकीन ही नहीं हो रहा था। हवालात की सलाखों को अपने दुर्बल हाथों से थामे सुकुमार बहुत देर तक फटी-फटी आंखों से सोमनाथ की ओर ताकता रह गया था।

सोमनाथ देख रहा था, सुकुमार का दाहिना गाल लाल हो गया है। दांत से भी थोड़ा-बहुत लोहू गिर रहा है। उसे वहाँ काफी मारा-पीटा गया था।

सोमनाथ को बेहद तकलीफ महसूस होने लगी। उसका अपना दाहिना गाल भी अचानक दर्द करने लगा था।

"मैं चोर हूँ। मैंने मालिक का रुपया निकाल लिया था। मुझे तेरे चेहरे की ओर देखने का साहस नहीं हो रहा है, सोम।" सुकुमार ने बस इतना ही कहा। उसने देखा, उसके किसी जमाने के दिली दोस्त की आँखें छलछला

आयी थीं। मानो दुनिया-भर का तमाम अपराध सुकुमार ने नहीं बल्कि सोम ने किया हो।

इन कुछ ही घण्टों के भीतर सुकुमार पत्थर की तरह जड़ हो गया था। वह हालांकि सोमनाथ की ओर ताक रहा था मगर उसकी जबान से शब्द नहीं निकल रहे थे।

"सुकुमार !" सोमनाथ ने ही अन्ततः कहा। जैसे बहुत खोजने के बाद उसे दो-चार शब्द मिले हों। सोम क्या कह रहा था ? "सुकुमार, मैं आ गया हूँ।"

यह आना ही जैसे सबसे मुश्किल काम था। समय के कुटिल षड्यंत्र से दो नदियाँ जैसे एक दूसरे से बहुत दूर चली गयी थीं और अन्ततः उनका फिर से मिलन हो गया था।

सुकुमार के होंठ भी किसी अव्यक्त इच्छा को प्रकट करने की चेष्टा में थरथराने लगे। दुनिया की तमाम रोशनी जब बुझने-बुझने पर थी, सुकुमार को जब विपत्ति का कोई ओर-छोर दिखायी नहीं पड़ रहा था उसी समय उसका प्रिय मित्र सोमनाथ अचानक सामने आकर खड़ा हो गया था। भगवान् के समक्ष उसका माथा झुक गया। बड़ी कठिनाई से वह कह सका 'सोम' और फिर तो जैसे आँसू का बाँध ही टूट गया।

"किसी को न पाकर मैं, मैं तेरे बारे में ही सोच रहा था, सोम," सुकुमार की आँखों से एक अजीब रोशनी निकलकर सोमनाथ के चेहरे पर केन्द्रित हो रही थी।

"मैं आ गया हूँ, तू अब फ़िक्र मत कर, सुकुमार। मुझे बहुत दिन पहले ही आना चाहिए था। मैं फिर आऊँगा, ऐसा तो सोचा भी नहीं था। लेकिन अब मैं तेरे लिए मैं सब कुछ कर सकता हूँ। तुझे मैं यहाँ से निकाल ले जाऊँगा।"

"सोम !" सुकुमार फटी-फटी आँखों से ताक रहा था।

"तू मेरे लिए खामख्वाह इतनी तकलीफ़ उठायेगा ?"

"मुझे यह काम करना ही है, सुकुमार ! करना ही है।" सोमनाथ की बात प्रलाप जैसी लग रही थी।

अब सुकुमार जैसे टूट गया था। उसे सोमनाथ की मदद लेनी ही चाहिए। लेकिन अपने लिए नहीं बल्कि दूसरे ही काम के लिए। कणा के लिए।

"सोम, तू सचमुच ही मेरा उपकार करेगा ? अगर ऐसी बात है तो फिर यहाँ एक क्षण भी बर्बाद मत कर। तू सीधे कणा के पास चला जा। डेढ़ सौ रुपयों के कारण वहाँ बहुत त्रस्त हो रही होगी।"

"फणा ? कणा कहाँ है ? उसे क्या हुआ है ?"

सुकुमार ने अब कोई बात छिपाकर नहीं रखी—पुराने मित्र को सब कुछ साफ-साफ बता दिया।

"कणा प्रेग्नेन्ट है।" सुकुमार के ये शब्द फर्श पर गिरे काँसे के थाल की तरह झनझना कर बज उठे।

"किसने यह बर्बादी की, क्यों की और कब की—यह सब मालूम नहीं। लेकिन मैं कणा को गहरे में नहीं डूबने दूँगा सोम। कणा ने ही मेरे खाने-पहनने का इन्तजाम किया था, कणा ने ही मेरा इलाज कराया था। कणा न होती तो न मालूम मेरा क्या हाल होता।" सोमनाथ ने देखा, उसके प्यारे दोस्त की आँखें छलछला आयी थीं। "मेरी तीव्रतम इच्छा यही थी कि कणा को सुखी बनाऊँ। कणा की शादी कर दूँ। वह सब मैं नहीं कर सका। अब मैं कणा को सिर्फ जिन्दा रखना चाहता हूँ। उसे खामख्वाह हम लोगों के लिए बड़ी से बड़ी तकलीफ उठानी पड़ी है सोम।"

"देरी मत करना, सोम," सुकुमार अब गिड़गिड़ा रहा था। "मेरे बारे में उसे मत बताना। कहना कि मुझे एकाएक थोड़ी देर के लिए एक जगह रुक जाना पड़ा है।"

●

कनोरिया कोर्ट का फकीर चन्द्र सेनापति अवाक् हो गया। सोमनाथ बाबू फिर कर्ज माँग रहे हैं! प्रथम आषाढ़ के दिन सोमनाथ बाबू ने पहले-पहल कर्ज लिया था। लेकिन निश्चित तिथि के बहुत पहले ही उसे चुका भी दिया था। आज सोमनाथ फिर उसके सामने हाथ फैला रहा था। हालाँकि सेनापति की धारणा थी कि सोमनाथ की हालत अब अच्छी हो गयी है।

सोमनाथ बहुत जल्दी में है, यह बात फकीर चन्द्र सेनापति को उसका चेहरा देखते ही समझ में आ गयी। बिना एक क्षण बर्बाद किये उसने सोमनाथ के हाथों में नोट थमा दिये।

राजपथ पर शाम उतर आयी थी। ट्रैफिक और बस, टैक्सी, मोटर, रिक्शा, ठेला, टेम्पो तथा संख्यातीत लोगों के जटिल जंगल को पार करती हुई सोमनाथ की टैक्सी कणा की तलाश में तेजी से भागी जा रही थी।

रुपये के लिए सोमनाथ मनोरिया कोर्ट के फकीर चन्द्र सेनापति के पास अपना स्कूटर गिरवी रख आया था। आदमी और यातायात वाहनों से बचकर जमीन के नीचे की रेलगाड़ी की तरह अपनी मंजिल पर जल्दी-जल्दी पहुँचने के लिए वह छटपटा रहा था।

लेकिन सोमनाथ की अनुनय पर ध्यान दिये बगैर महाकाल के मालिक ने समय की गति-सीमा अपनी मर्जी से निर्धारित कर दी थी। इच्छा रहने पर भी और तेजी से दौड़ा नहीं जा सकता था।

समय की माप करने के लिए कलाई घड़ी की ओर जैसे ही सोमनाथ ने देखना चाहा उसे याद आया कि भाभी के द्वारा उपहार-स्वरूप भेंट की गयी कीमती घड़ी को भी तो उसने स्कूटर के साथ ही फकीर चन्द्र सेनापति के पास बंधक रख दिया था।

पिछले आषाढ के प्रथम दिन अपनी साल-गिरह के अवसर पर सुदर्शन गोयनका के पीछे दौड़ लगाने के लिए सोमनाथ को घड़ी बंधक रखनी पड़ी थी। उसी समय कणा से पहली बार मुलाकात हुई थी। आज फिर सोमनाथ कणा की तलाश में टैक्सी दौड़ा रहा था।

सोमनाथ समय की सीमा से पीछे छूट गया था या नहीं यह जानने का कोई उपाय नहीं था। घड़ी न रहने के कारण उसे काफी असुविधा का सामना करना पड़ रहा था। लेकिन सोमनाथ बहुत दिनों के बाद हल्कापन महसूस कर रहा था।

कणा का चेहरा उसने कितने कम समय के लिए देखा था। फिर भी उसकी तसवीर को याद करने में सोमनाथ को कोई कठिनाई नहीं हो रही थी।

कणा अब उसे बहुत दूर की अनपहचानी जैसी लड़की नहीं लग रही थी। आज इतने दिनों के बाद सोमनाथ ने नये सिरे से इस बात की खोज कर ली थी।

कणा, तुम साधारण लड़की नहीं हो—तुम हम लोगों में से बहुतों की अपेक्षा अधिक ऊँचाई पर हो, तुम अपनी महिमा से जगमगा रही हो। गृहस्थी की आवश्यकता के कारण तुमने अपने आपको बलिवेदी पर चढ़ा दिया है, अभी तुम सदानन्द के कसाईखाने मे किस हालत मे मिलोगी, कौन जाने!

चलती हुई टैक्सी की सीट पर बैठे सोमनाथ में जैसे पहली बार कणा की आँखों की ओर ताकने की हिम्मत पैदा हुई।

प्रथम आषाढ की उस शाम कणा मुँह घुमाकर बाहर की ओर ताक रही थी और दुविधा में पड़ा सोमनाथ अपना सिर झुकाये था। थकन से चूर, उदास,

संगीहीन, दुविधाग्रस्त सोमनाथ ने उसके वाद कितने ही दिन और कितनी ही रातें कणा के आमने-सामने होने के निमित्त अपनी सारी कल्पना-शक्ति नियोजित की थी मगर वह सफल नहीं हो सका था। काले गाउन वाले उस कापालिक के अतिरिक्त और किसी ने इस वीच सोमनाथ से आँखें नहीं मिलायी थीं। क्वार की इस शाम सोमनाथ ने अपनी सामर्थ्य के वाहर काम किया था। कणा और वह जैसे सचमुच ही आमने-सामने खड़े होकर दृष्टि-विनिमय कर रहे थे।

"कणा, उस दिन तुम्हारी समझ में आ गया था कि मैं कौन हूँ? अगर समझ में आ गया था तो फिर मुझे एक वार मौका क्यों नहीं दिया? कणा, उस दिन क्या तुमने घवराहट की यातना से मुझे वचाया था या फिर तुमने यही देखना चाहा था कि भैया का मित्र कितने नीचे तक उतर सकता है?"

कणा की तसवीर रफ्ता-रफ्ता सोमनाथ की दृष्टि के सामने वड़ी होती जा रही थी। "कणा, मैं सव समझ गया। तुम मेरी निगाह में सचमुच ही वहुत ऊँचाई तक उठ चुकी हो।"

सोमनाथ को सुकुमार का चेहरा भी दिखायी पड़ रहा था। पहले की तरह ही वह अपनी गोल-गोल आँखें फैलाये मित्र की ओर ताक रहा था, जैसे कह रहा हो, "तू ही क्यों आया? और कोई भी तो नहीं आया है।"

"कणा, तुम्हें अभी सदानन्द के अखाड़े में किस हालत में देखूंगा, मालूम नहीं। तुम्हरा भैया अव भी जानना चाहता है कि तुम्हारी इस हालत के लिए जिम्मेदार कौन है?"

सोमनाथ को अपना शरीर अव वहुत हल्का जैसा लग रहा था। उसे अपने सवाल का जवाव मिल गया था। "जिम्मेदार मैं हूँ—कणा की देह का स्पर्श न करने के वावजूद मेरे सिवा दूसरा कौन उसकी इस दशा के लिए जिम्मेदार हो सकता है?

•

खुली नाली, कूड़े-कचरे से भरे कूड़ेदान और लगभग छः लावारिस कुत्तों को पार कर, अँधेरे में टेढ़ी-मेढ़ी गली से होता हुआ सोमनाथ सदानन्द गुप्त के गोपन सदन में आकर हाजिर हुआ।

अपने काम के लिए तैयार होकर सदानन्द गुप्त वार-वार घड़ी की ओर ताक रहे थे। सुकुमार को देर करते देखकर वह ऊव भी रहे थे। उनकी धारणा

थी कि सुकुमार मित्तिर उन्हें धोखा देने के फेर में है। सदानन्द गुप्त जो कहते हैं, वही करते हैं। जब तक पूरा पैसा हाथ में नहीं आ जाता तब तक वह शिउली के काम में हाथ नहीं लगायेंगे।

सदानन्द-सदन के कर्मचारी सोमनाथ को रोकने की कोशिश कर रहे थे—बहुत ही गुप्त अड्डा है—यहाँ जिसको-तिसको जब-तब अन्दर नहीं जाने दिया जाता है। लेकिन सोमनाथ रोक-थाम की परवाह किये बगैर अन्दर घुस ही गया।

अजनबी आवाज सुनकर सदानन्द गुप्त आगे बढ़ आये।

"सुकुमार ने आपको डेढ़ सौ रुपया भेजा है। अभी दे रहा हूँ। उसके पहले मैं एक बार शिउली से मिल आता हूँ," यह कहकर सुकुमार जल्दी-जल्दी आगे बढ़ गया।

एक सौ साल पुराने इस अंधकूप की तीखी बदबू सोमनाथ के पूरे जिस्म में सिहरन जगा रही थी। दोमंजिले की सीढ़ी से सोमनाथ एक तरह से दौड़ता हुआ तीन नम्बर कमरे की ओर जा रहा था।

कणा को पैरों की आहट सुनायी पड़ी। "भैया, तुम्हें इतनी देर हो गयी। वे लोग तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं।" कणा ने सोचा था, उसका भैया ही अभी लौटकर आया है।

लेकिन दरवाजा खोलकर सोमनाथ को कमरे के अन्दर आते देखकर कणा चिहुँक उठी। कणा ने मात्र एक बार सोमनाथ के चेहरे की ओर देखा और फिर अपना मुँह घुमा लिया।

सोमनाथ मन्त्र-मुग्ध की तरह कणा के दहशतभरे चेहरे की ओर ताक रहा था।

सोमनाथ ने देखा, अनागत आशंका की यातना और अपमान कणा को पूरी तरह दग्धकर नाशक अधःपतन के अन्तिम स्तर पर ले आये थे। क्लान्त, शीर्ण और विध्वस्त कणा पहचान में ही नहीं आ रही थी।

समस्त लज्जा को भूलकर सोमनाथ कणा की ओर अपलक ताक रहा था।

सोमनाथ ने देखा, अविवाहित मातृत्व की आसन्न सम्भावना ने विशाल विषधर साँप की तरह कणा के दुर्बल असहाय शरीर को जकड़ लिया था। उसका ऊपर उठा फन अन्तिम आघात के लिए कणा के सिरहाने खड़ा जीभ लपलपा रहा था।

प्रथम आषाढ़ के उस दिन से ही, जब कणा से सोमनाथ का प्रथम और अन्तिम साक्षात्कार हुआ था, एक अवर्णनीय दुर्वह अपराध का बोझ ...

ढोता चला आ रहा था। भगीरथ चेष्टा करने के बावजूद आजादी का सुख जीना तो दूर की बात, उस बोझ का वजन ही दिन-दिन बढ़ता गया था। चाहे शयन-स्वप्न का क्षण हो चाहे जागरण का, सोमनाथ को यह व्याधि धीरे-धीरे अकर्मण्य ही बनाती गयी थी।

छाती की इस छोटी-सी मरुभूमि का दायरा क्रमशः बढ़ते-बढ़ते समस्त हृदय को लीलने के लिए आगे बढ़ता ही जा रहा था।

सोमनाथ महसूस कर रहा था कि उसका गला फिर सूखने लगा है। टॉल टैंक का तमाम पानी पी जाने पर भी यह प्यास नहीं बुझेगी, सोमनाथ इस बात को समझता है। काले गाउन वाला वह कापालिक भी जैसे मुजरिम सोमनाथ को कणा के सामने हाजिर करने के लिए दबे पाँवों से यहाँ आकर उपस्थित हो गया था।

सुकुमार ने जितना बताया था, सदानन्द डॉक्टर का पूरा बकाया चुका देने के बावजूद कणा को सम्भावना से मुक्त करने लायक पैसा सोमनाथ की जेब में मौजूद था।

लेकिन कठघरे में बन्दी मुजरिम सोमनाथ को छिपकर कोई सलाह दे रहा था। "कबूल कर लो, अपना गुनाह कबूल कर लो। जो लोग कबूल कर लेते हैं उन्हें मृत्युदण्ड नहीं मिलता।"

आसन्न मातृत्व के स्थूल लक्षण कणा की असहाय देह पर हर जगह उभर आये थे। इस देह की ओर देखने पर सोमनाथ को इतने दिनों के बाद दूर दिगन्त में आशा का प्रकाश दिखायी पड़ा। देर हुई है मगर बहुत ज्यादा देर नहीं। सदानन्द गुप्त ने अब भी अपने गन्दे काम की शुरुआत नहीं की थी।

सोमनाथ ने अपने मन को दृढ़ कर लिया। अब सिर्फ एक काम ही शेष था। मन को समेटकर बोला "कणा, मैंने देर जरूर कर दी, मगर जब आ गया हूँ तो अब तुम्हें चिंता नहीं करनी है।"

सोमनाथ की आवाज सुनकर कणा अपना चेहरा छिपा लेना चाहती थी। इस शर्म को वह कहाँ जाकर रख दे? "भैया! भैया कहाँ हैं?" कणा दयनीय स्वर में चीख पड़ी।

"तुम्हारे भैया से समाचार सुनकर ही मैं दौड़ा-दौड़ा आया हूँ कणा! तुम्हारे भैया ने पैसा भेज दिया है। उसे थोड़ी देर होगी। मगर कणा……"

कणा ने सोचा, उसके भैया का भूतपूर्व मित्र मौखिक क्षमा माँगने आया है।

कोई और वक्त होता तो कणा, हो सकता है, क्रोध और अपमान से टूटकर

बिखर जाती । लेकिन बार अनिश्चित जीवन और अँधेरी मौत के बीचों
खड़ी कणा इतनी कठिन नहीं हो सकी ।

संत्रस्त हिरनी की तरह उसने एक बार सोमनाथ की ओर देखा, उ
बाद शान्त स्वर में बोली, "आप अकारण क्षमा क्यों माँग रहे हैं, सोमन
बाबू ?"

"मैं क्षमा चाहने नहीं, तुम्हें ले जाने के लिए आया हूँ ।"

"कहाँ ? मैं यहाँ से कहीं भी नहीं जाऊँगी ।" कणा फिर दयनीय स्वर
चीख पड़ी । लेकिन उसके बाद ही उसकी आँखें फिर सोमनाथ की आँखों
टकरा गयीं ।

कणा समझ रही थी, अनिर्वाप्य अग्नि से दग्ध होकर कोई दूसरा ही सोमन
अविश्वसनीय सपने की तरह उसके सामने आकर खड़ा था ।

सदानन्द गुप्त की महिला सहयोगी कणा के कमरे में झाँकने पर लज्जा
दोहरी हो गयी । उसने देखा, मरीजा और आगन्तुक स्टैच्यू की तरह एक-दू
की ओर देख रहे थे । उन लोगों के मुँह से यद्यपि शब्द बाहर नहीं निकल
थे पर दोनों की आँखों में आँसू के कतरे थे, यह उसने साफ-साफ देखा था ।

"सोम, तू फिर आ गया ? कणा का पैसा दे दिया ? ऑपरेशन हो गया
कणा कैसी है ?" गहरी रात में निद्राहीन सुकुमार ने लॉकअप के बीच ख
होकर सोमनाथ से पूछा था ।

"मेरे पास काफी रुपया था, मगर जरूरत नहीं पड़ी ।" सोमनाथ ने शान
स्वर में उसे सूचना दी ।

"....क्यों ? सदानन्द क्या और अधिक रुपये की माँग कर रहा है ?" कम
जोर सुकुमार निराशा से बुझ गया । "मैंने सोचा था, कणा, आज ही छुटका
पा जायेगी ।"

गंभीर सोमनाथ मात्र एक क्षण के लिए असमंजस में पड़ा उसके बाद गंभी
होकर बोला, "कणा को उस गन्दी जगह से हटाकर मैं ले आया हूँ, सुकुमार
उसे अभी तुरन्त हावड़ा के राजवल्लभ साहा लेन में रख आया हूँ ।"

"क्यों ? फिर कौन-सी गड़बड़ी हो गयी ?" सुकुमार के मुख से दयनीय चीख-सी निकल पड़ी।

सोमनाथ ने बिना किसी असमंजस के कहा, "तू अब चिन्ता मत कर सुकुमार। कणा की हालत के लिए जो व्यक्ति जिम्मेदार है उसका पता चल गया है।"

सुकुमार सिर झुकाये न रहता तो वह देखता कि उसका मित्र इतनी-सी बात करने के बाद ही हाँफने लगा था।

"कौन ? ;कौन है वह आदमी ?" सुकुमार लॉकअप में ही उत्तेजित हो उठा। यदि मुमकिन होता तो वह अभी तुरन्त बाहर निकल आता।

सोमनाथ को अब शर्म का अहसास नहीं हो रहा था। सीने के अन्दर की यातना की धधकती आग अन्ततः बुझकर ठण्डी हो चुकी थी। बिना किसी उत्तेजना के सोमनाथ ने कहा, "उस आदमी से तुम अपरिचित नहीं हो, सुकु-मार। वह अपनी सारी जिम्मेदारी स्वीकार कर रहा है। जमानत पर रिहा होने के बाद कल घर जाने पर कणा से तुझे सारी बातें मालूम हो जायेंगी। सुकुमार, अब तू तो चिता में अपने को मत घुला।"

यह बात करते ही सोमनाथ को अचानक अपने में बहुत ही, बल्कि, एकदम हलकेपन का अहसास होने लगा। ऐसा महसूस हुआ जैसे उसके वक्षस्थल की मरुभूमि किसी अलौकिक आशीर्वाद के फलस्वरूप पुनः स्निग्ध हरी और नरम घासों से परिपूर्ण हो उठी हो।

•

रात काफी गहराने के बाद सोमनाथ जोधपुर पार्क स्थित अपने मकान में वापस आया। आज घर में कोई और दूसरा मर्द नहीं था। सोमनाथ के बड़े भैया आवश्यक काम से बंबई गये हुए थे।

दरवाजा खोलकर उद्विग्न कमला भाभी ने पूछा, "बुलबुल और मैं कब से तुम्हारा इन्तजार कर रही हैं। पुलिस को इत्तिला करने के बारे में भी सोच रही थीं। इतनी देर क्यों हुई ?"

"आज हर जगह देर हो रही थी, भाभी जी," सोमनाथ ने शान्त स्वर में जवाब दिया।

"यह क्या ? तुम्हारा स्कूटर नहीं देख रही हूँ ? हाथ में घड़ी भी नहीं है ? बात क्या है" कमला भाभी चिन्तित हो उठीं।

"सब कुछ है, आप किसी तरह की चिन्ता न करें, बाद में सब कुछ ले आऊँगा, भाभी जी।" सोमनाथ उन्हें आश्वस्त करता हुआ बोला।

"भाभीजी, आपसे एक बात कहनी है।" कमला भाभी के अंचल को हौले से खींचते हुए सोमनाथ उन्हें अपने कमरे में ले गया।

भाभीजी ने समझा, उनके लाड़ले देवर को कहने में कुछ शर्म लग रही थी।

"मेरे सामने यह दुविधा क्यों ? जो कहना है, कह डालो ?"

"बात शादी के बारे में है, भाभी जी।"

"अप्रत्याशित समाचार से कमला भाभी गद्‌गद हो उठीं।

"लगता है, आखिर मे किसी ने तुम्हारे दिल को जीत लिया।"

सोमनाथ का स्वर अब बहुत ही कोमल हो उठा था "भाभी जी, पहले आपकी अनुमति लेने का मौका नहीं मिला।"

सोमनाथ को एक झटका जैसा लगा।" भाभीजी, इस गृहस्थी पर कलंक का टीका लग जायेगा। बेहतर तो यही होगा कि मैं इस घर को छोड़कर कहीं और रहने चला जाऊँ।"

"ओह सोम ! तुम तो यह जानते ही हो कि जिसे भी तुम ले आओगे, उसे मैं पूरे आदर के साथ अपना लूँगी।"

"भाभी जी।"

"क्या हुआ ?" सीधी कमला भाभी सचमुच ही व्याकुल हो उठी थीं।

"भाभी जी, वह माँ बनने वाली है।" यह कह कर सोमनाथ ने अपना चेहरा दूसरी ओर कर लिया। "उसका नाम कृष्णा है।"

यह समाचार सुनते ही [illegible] ने [illegible] के आनन्द की कोई सीमा न रही। "यह [illegible] नहीं है, दीदी ! [illegible] है ! [illegible] [illegible] ही [illegible] [illegible] !"

"[illegible] ! [illegible] [illegible]। [illegible]

[illegible]

कमला भाभी ने बुलबुल को जाने नहीं दिया। "अपनी करनी के लिए वह यथेष्ट अनुतप्त हो चुका है, अब उसे ज्यादा शर्म में मत डालो," यह कह कर कमला भाभी ने बुलबुल की साड़ी का आँचल कसकर पकड़ लिया।